‘तारतम पीयूषम्’

संयोजक
महात्मा चन्द्र

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञान पीठ, सरसावा
जिला-सहारनपुर उ०प्र०

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट
सरसावा, जिला-सहारनपुर (उ०प्र०)
फोन : ९१ ७०८८१२०३८१
वेबसाइट : www.spjin.org

विक्रम सम्वत्- २०७९

सर्वाधिकार प्रकाशाधीन - इस पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री सर्वाधिकारी श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र ट्रस्ट के पास सुरक्षित है। अतः किसी भी व्यक्ति या संस्था के द्वारा इस पुस्तक का नाम, फोटो, कवर डिजाइन एवं प्रकाशित लेख इत्यादि को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक या पूर्ण रूप से किसी पुस्तक, पत्रिका, समाचार पत्र या वेबसाइट में प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक की अनुमति लेना अनिवार्य है, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे खर्चे के जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के मुकदमे के लिए न्याय क्षेत्र सरसावा, जिला-सहारनपुर ही होगा।

प्रथम संस्करण- १००० प्रतियां

मुद्रक
ज्ञानपीठ प्रेस
सरसावा, सहारनपुर (उ०प्र०), २४७२३२

न्यौछावर-

भूमिका

"आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन।
सुध तो नहीं कछु साथ को, पर तो भी अपने सजन।।"

प्राणाधार सुन्दरसाथ जी! श्री प्राणनाथ जी की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का उत्तरदायित्व उस प्रत्येक सुन्दरसाथ का है, जिसे भी **"ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्टि को, तो मैं अंगना नार"** का अर्थ मालूम है अथवा जिसे भी यह ज्ञात है कि उसने परमधाम में एक दूसरे को जगाने वा वायदा किया था।

इस वायदे को पूरा करने के लिये कुछ सुन्दरसाथ अत्यन्त प्रशंसनीय तरीके से वाणी के प्रचार का कार्य कर रहे हैं, जिनके कार्यों को देखकर धीरे-धीरे अन्य सुन्दरसाथ में भी जागनी की उमंग बढ़ रही है। परन्तु, यह समस्या उन सभी सामान्य सुन्दरसाथ के सामने रहती है कि यदि हम ज्ञान से जागनी की सेवा करना चाहें तो कैसे करें ? क्योंकि हमें तो वाणी का ज्ञान ही नहीं है, हम अगर प्रवचन/चर्चा करना चाहें तो पता ही नहीं है कि किन विषयों पर किन चौपाइयों को बोलें ?

सुन्दरसाथ की इसी उहा-पोह की स्थिति को ध्यान में रखते हुये श्री राजन स्वामी जी के आदेशानुसार श्री प्राणनाथ जी की तारतम वाणी की उन चौपाइयों का संकलन किया गया है, जिसे स्मरण करके कई विषयों पर धाराप्रवाह चर्चा की जा सकती है।

चूंकि परमधाम में एक दूसरे को जगाने का वायदा करते वक्त कोई भी महाराज, विद्वान या प्रचारक नहीं था, केवल ब्रह्मसृष्टि थी, अतः सभी सुन्दरसाथ के चरणों में यही प्रार्थना है कि तारतम वाणी की इस अनमोल निधि को वैश्विक स्तर पर प्रचार करने में अपने उत्तरदायित्व को समझें।

मैं आशा करता हूं कि यह पुस्तक इस कार्य में सबकी सहायक सिद्ध होगी। इसमें जो भी त्रुटियां रह गई हों, उन्हें सूचित करने की कृपा करें, जिससे इसे संशोधित किया जा सके।

आपकी चरणरज
महात्मा चन्द्र
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृ. संख्या
१. अपनी अक्ल से कोई नही बोल सकता।-	१
२. तारतम महिमा -	१
३. यह वाणी केवल सुन्दरसाथ के वास्ते आयी है।-	७
४. श्री प्राणनाथ जी की पहचान-	८
५. सुन्दरसाथ की रहनी	१५
६. हम दुखी क्यों होते हैं	२०
७. सुन्दर बाई ही श्यामा जी हैं।	२०
८. माया से कैसे छूटे	२२
९. धनी (श्री प्राणनाथ जी) हमको नहीं छोड़ेंगे	२४
१०. वाणी धनी की मेहेर से आयी है	२५
११. आड़िका लीला को सत्य नहीं मानना	२६
१२. मुहम्मद साहब के समय में रूहें नहीं थीं।	२७
१३. दमदार चौपाई	१३
१४. गादी पूजा यमपुरी का साधन है-	३३
१५. अपने ऊपर बुजरकी लेना गुनाह है।	३४
१६. शब्दातीत आये शब्द में	३५
१७. श्री प्राणनाथ जी की महिमा	३६
१८. वाणी की महत्ता	३९
१९. श्री राजजी के चरणो की महिमा	४२
२०. जीव के वल्लभ श्री कृष्ण है आत्मा के नहीं	४३
२१. चाकला मंदिर का प्रमाण	४३
२२. शुकदेव जी भागवत लाये	४४
२३. नरसैंया का विषय	४५
२४. जीव और मन	४५
२५. रास का वर्णन तारतम में है भागवत में नहीं	४६
२६. तारतम का सार	४६
२७. प्रेम और सेवा का महत्व	४६
२८. नये सुन्दरसाथ के लिये प्रकास वाणी है-	४७
२९.श्री कृष्ण की पहचान	४८
३०. संसार को ठगने के लिये	५२
३१. व्यास की बुद्धि के प्रमाण	५२
३२. कलियुग की पहचान	५४
३३. आशिक माशूक	५५
३५. कुमारिकाओं की पहचान	६४
३६. ब्रह्मसृष्टि की पहचान	६५
३७. रास खेल कर घर आये	६८
३८. हम इकठ्ठे जागेंगे	६८
३९. जागनी अभियान का कार्य	६९
४०. साकुंडल साकुमार का आना	७०
४१. महाप्रलय का समय	७१

४२. श्री प्राणनाथ जी सबको आवेश देंगे ७२
४३. श्री प्राणनाथ जी की मेहेर से एकरस होंगे ७२
४४. ब्रह्मसृष्टि अभी परमधाम नहीं गयी है। ७२
४५. श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी ७३
४६. जागनी केवल धनी के हाथ में है ७६
४७. जागनी में ब्रज रास भूल जाएंगे। ७६
४८. जीव आत्मा का भेद ७६
४६. श्री इंद्रावती जी ने तालीम नहीं लिया ७८
५०. तारतम और जागृत बुद्धि ७८
५१. महामति और प्राणनाथ में अन्तर ८१
५२. यह श्री प्राणनाथ जी की वाणी है महामति की नहीं ८३
५३. सतगुरू की पहचान और महिमा ८४
५४. मोमिन दुनी एवं ईश्वरीय सृष्टि की हकीकत ६०
५५. वाणी पर विश्वास का फल ६४
५६. खीजड़ा के पेड़ की पहचान ६६
५७. जीव के वल्लभ श्री कृष्ण है आत्म के नहीं ६६
५८. फिरकों का बेवरा ६७
५६. धाम धनी कहने से सुख मिलता है प्रभु कहने से नहीं १००
६०. दो स्वरूप १००
६१. सखियों के विश्वास को तोड़ रखा है। १००
६२. श्री कृष्ण और श्री प्राणनाथ जी १००
६३. घर जाने का रास्ता १०१
६४. बेहद वाणी का महत्व १०१
६५. त्रिधा लीला १०२
६६. श्री राज अपने धनी को कहते हैं १०५
६७. पुरियों में उत्तम नवतनपुरी का निर्णय १०५
६८. पहेलियों का खुलासा १०५
६६. तारतम की हकीकत १०६
७०. अपने काम के लिये तन रखा १०७
७१. ज्ञानियों का अहंकार तोड़ने के लिये १०७
७२. महामति नाम दिया गया १०८
७३. हर बह्मसृष्टि के पास से ज्ञान फैलेगा १०६
७४. धनी ने ही वाणी का फैलाव रोका १०६
७५. इश्क की महत्ता ११०
७६. पुरूष केवल एक ही है १११
७७. हिन्दुस्तानी भाषा में चालाकी नहीं चलती ११२
७८. धनी का प्यार ११२
७६. सुध देना ही तारतम है कंठी बांधना नहीं ११४
८०. हिन्दुस्तानी भाषा सबसे सुगम है। ११५
८१. हिन्दु मुसलमानों को एक करना ११५
८२. जबराईल अस्राफील की पहचान ११५
८३. भागवत की निरर्थकता ११७
८४. ईश्क के दर्द और ज्ञान का मार्ग अलग अलग है। ११८

८५. पारब्रह्म का ज्ञान अब तक दुनिया में नहीं था।	११९
८६. नारायन भी निराकार के पार नहीं जा सके	१२०
८७. विरह की अवस्था	१२१
८८. सुन्दरसाथ साथी है चेले नहीं	१२२
८९. नवतन पुरी से भी अच्छा हिन्दुस्तान (दिल्ली)	१२२
९०. कुरान तारतम की महत्ता	१२३
९१. महंमद की पहचान	१२४
९२. मोमिन ही कुरान के मायने समझते हैं।	१२८
९३. दाड़िम की तरह रुहें बैठी है।	१२८
९४. धनी मोमिनों के ही वास्ते आये हैं	१३३
९५. कुरान के भेद केवल इमाम मेंहदी ही जानते हैं।	१३३
९६. इमाम मेंहेदी की पहचान	१३३
९७. मुस्लिम की रहनी	१३४
९८. अहंकार का त्याग	१३६
९९. नहाने से दिल पवित्र नहीं होता	१३७
१००. संध्या आरती का महत्व	१३८
१०१. धनी की पहचान न करने वाले बदनसीब है।	१३८
१०२. कुलजम स्वरूप के वारिश मोमिन है।	१३९
१०३. इमाम मेंहदी की सिफत	१३९
१०४. महाप्रलय से पहले मोमिन परमधाम जायेंगे।	१४१
१०५. श्री श्यामा जी के वास्ते खेल बना।	१४१
१०६. श्यामा जी के पंचभौतिक तन के बराबर भी जबराईल नहीं है।	१४१
१०७. मेयराज की हकीकत	१४२
१०८. महंमद की सिफत	१४३
१०९. खुदा की सूरत	१४४
११०. खेल को एक क्षण भी नहीं हुआ	१४५
१११. मोमिन दुनियां को मुक्ति देने आये हैं।	१४५
११२. मोमिनों की बुजरकी	१४५
११३. नबी और नारायन की पहचान	१४७
११४. हिन्दु और मुस्लिम में अन्तर	१४७
११५. हिन्दुओं में कोई भवसागर से पार नहीं हुआ	१४८
११६. ज्ञानी अगुए भटकाते हैं।	१४८
११७. अगुओं का पश्चाताप	१४८
११८. विरह और इश्क के बिना कल्याण नहीं	१५१
११९. परब्रह्म सबसे परे है।	१५२
१२०. दज्जाल की हकीकत	१५३
१२१. इमाम का प्रताप	१५५
१२२. तीनों सूरतों का विवरण	१५६
१२३. सबका मेल होना	१६०
१२४. धनी की लीला एक समय में एक ही तन से होती है।	१६०

१२५. धनी के आने से पहले किसी को भी सुध नहीं थीं। १६१
१२६. जीव सृष्टि के हिन्दुओं को सुध नहीं हुई १६२
१२७. फरिश्तों का विवरण १६२
१२८. बांग देने का रहस्य १६३
१२९. फरदारोज को खुदा का आना १६४
१३०. कजा और जीवों का अखण्ड होना। १६४
१३१. हुकम का विवरण १६५
१३२. नूह तूफान की हकीकत १६६
१३३. बहिश्तों के सुख का अन्तर १६७
१३४.धनी एवं श्यामा जी के तन और अंग १६८
१३५. कुरान में परमधाम का वर्णन १६९
१३६.कुरान में महत्वपूर्ण बातें १७०
१३७. नूर नाम तारतम का है। १७१
१३८. सुन्दरसाथ को प्राणों का प्रीतम कहना। १७१
१३९. अहंकारी का नाश होता है। १७२
१४०. मोमिन दुनी एवं ईश्वरीय सृष्टि की हकीकत। १७२
१४१.अबलीस एवं अजाजील की हकीकत १७४
१४२. हिन्दू और मुसलमानों की भूल १७५
१४३. छत्रसाल जी की महिमा १७७

१४४. श्री कृष्ण ही महंमद है। १७७

१४५. लैलत कदर के तीन तकरार १७८
१४६. इस्राफील जिब्रील की पहचान १७९
१४७. कर्मकाण्ड से धनी की पहचान नहीं हो पाती १८०
१४८. इश्क रब्द १८१
१४९.आखिरत के निसान १८८
१५०. निजानन्द सम्प्रदाय का महत्व १८९
१५१. हादी की पहचान १९०
१५२. खेल मागने के गुनाह की हकीकत १९१
१५३. वाहेदत में इस दुनिया का कोई भी नहीं जा सकता। १९१
१५४. इस्राफील और जिब्रील मोमिनों के लिए आये १९२
१५५. भिस्तों का व्योरा १९२
१५६.अर्स या दुनिया में केवल एक मिलता है। १९३
१५७. महमंद की सिफारिश १९३
१५८. अर्स और सबका धनी एक है। १९४
१५९.परब्रह्म का स्वरूप १९५
१६०. अक्षर अक्षरातीत १९६
१६१. अक्षर ब्रह्म की कुदरत १९७
१६२. कयामत के सात निशान १९८
१६३. परब्रह्म का स्वरूप २००
१६४. मोमिनों की सिफत २०१
१६५.निगम की हकीकत २०३

१६६.श्री प्राणनाथ जी के आगमन की भविष्यवाणी २०३
१६७.जगदीश का अर्थ प्राणनाथ २०५
१६८. वेद कतेब का ज्ञान समान है। २०५
१६६. वेद कतेब की सफकत बुध जी छीन लेंगे। २०५
१७०. पाँचो स्वरूप का वर्णन २०६
१७१. तीन कार्य करने के लिए धनी आये २०७
१७२.सारा ब्रह्माण्ड निराकार से परे का ज्ञान नहीं जानता २०७
१७३. अलिफ लाम मीम का अर्थ २०८
१७४. परमधाम में सबका एक ही स्वरूप है। २०८
१७५. साधुओं की भूल २०६
१७६. ब्रह्मसृष्टि की पहचान २१०
१७७. माया की हकीकत २११
१७८.दुख की उपयोगिता २१२
१७६. आतम रोग २१४
१८०. दुनिया ज्ञान नहीं सुनना चाहती २१५
१८१. जागनी अभियान की शोभा २१६
१८२. पदमावती पुरी की महिमा २१७
१८३. श्री कृष्ण की हकीकत हम जानते हैं। २१८
१८४. मैं खुदी को दूर करना २१६
१८५. धनी के हुक्म से ही रूहें कुछ भी करती है। २२१
१८६. अक्षर ब्रह्म को सत्स्वरूप कहा जाना। २२२
१८७. निज बुद्धि जागृत बुद्धि से अलग है- २२२
१८८. इश्क सुख लज्जत २२२
१८६. धनी की साहेबी २२४
१६०.खेल मांगने का गुनाह २२५
१६१.रूहों का मेला अभी होना है २२६
१६२. झूठे खेल में रूहें भूल जायेंगी २२६
१६३. महंमद साहब की भविष्यवाणी २२७
१६४.सांसारिक रिश्ते स्वार्थ के होते हैं २२८
१६५. दुनिया वालों की भूल २२८
१६६.जो कुरान को न माने वह मोमिन नहीं २२६
१६७. मोमिन, दुनी एवं ईश्वरीय सृष्टि की रहनी २२६
१६८. बेहद का मार्ग २३६
१६६. अनुभव व्यक्त नहीं होता २३७
२००. शास्त्र वेद २३८

२०१.धनी की मेहर	२३८
२०२.मोमिनों के प्रतिबिम्ब की पूजा होगी	२४०
२०३.परआतम के अनुसार ही आतम करती है	२४२
२०४.हमारे धनी श्याम श्यामा जी हैं	२४३
२०५.जागनी	२४६
२०६.श्री प्राणनाथ जी और बिहारी जी	२४६
२०७.गादीपतियों की भूल (वाणी के दुश्मन)	२५०
२०८.श्री प्राणनाथ जी के आगमन की भविष्यवाणी	२५०
२०६.विनम्रता	२५२
२१०.मानव जन्म उत्तम	२५२
२११. धनी के दिखाने से ही परमधाम दिखता है	२५३
२१२.परमधाम का तेज	२५३
२१३.परमधाम की वहदत	२५४
२१४.परमधाम का नूर	२५६
२१५.श्री राज जी के वस्त्र एवं आभूषण	२५८
२१६.श्री राजजी का श्रृंगार	२६०
२१७.श्री श्यामा जी के वस्त्र एवं आभूषण	२६४
२१८.श्री श्यामा जी का श्रृंगार	२६८
२१६.चितवनी के लिये	२७०
२२०.नैनों की पुतली में माशूक	२७२
२२१.इश्क	२७३
२२२.परमधाम में धनी का नाम आसिक है	२७६
२२३.हमारे धनी श्यामा श्याम हैं	२८०
२२४.परमधाम में मोमिनों के सेवक	२८३
२२५.महालक्ष्मी कैसे	२८४
२२६.एक हिंडोले में राज श्यामा जी व १२००० रूहें बैठती हैं	२८५
२२७.पशु पक्षियों की बोली	२८५
२२८.बेसुमार ल्याए सुमार में	२८६
२२६.धनी की मेहर	२८६
२३०.श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी	२८७
२३१.हुकम का विवरण	२८७
२३२.आतम का फरामोशी से जागना	२६०
२३३.दोनों तन धनी के कदमों में	२६२
२३४.केवल पढ़ने से ही धनी नहीं मिलते	२६३
२३५.याद करने के योग्य	२६४
२३६.तारतम और जागृत बुद्धि	२६७
२३७.झूठे खेल में रूहें भूल जायेंगी	२६७
२३८. सबको हक बनाया	२६८
२३६.जागनी अभियान का कार्य	२६८
२४०.मोमिनों की बुजरकी	२६८
२४१.अंग्रेजी शब्द का प्रयोग	२६६
२४२.मोमिनों की सिफत	२६६
२४३.परमधाम का वर्णन असम्भव है	२६६

२४४.धनी का प्यार ३००
२४५.रूहों की नजर के आगे ब्रह्मांड नहीं रहेगा ३०१
२४६.मोमिनों की सरियत हकीकत मारफत ३०१
२४७.इश्क और इलम का मार्ग अलग अलग है ३०३
२४८.बंदगी क्या है? ३०४
२४९.रूहों के ऊपर धनी का व्यंग्य ३०५
२५०.ब्रह्मसृष्ट ईश्वरी एवं जीव सृष्टि ३०५
२५१.वसीयतनामा ३०६
२५२.झण्डे के निसान ३०६
२५३.परआतम के अनुसार ही आतम करती है ३०७
२५४.मोमिन क्या ढूंढते है ३०७
२५५.कुरान के छिपे मायने ३०७
२५६.मोमिन एवं दुनिया में दुश्मनी क्यों ३०८
२५७.कहनी सुननी रहनी ३०८
२५८.श्री कृष्ण प्रणामी और निजानन्दी ३०८
२५९.इन्द्रियों के सुख झूठे हैं ३०९
२६०.जिकरिया और एहिया ३०९
२६१.साहेब शब्द का प्रयोग ३१०
२६२.मुहम्मद भी माशूक हैं ३१२

***

१. अपनी अक्ल से कोई नही बोल सकता

एम चौद लोकमां कोई नव कहे, जे पार मायानों आ लहे।
मोटी मत धणीमां रहे, बीजा भार पुस्तक केरा वहे।।
रास प्र.१ चौ ३८

२. तारतम महिमा

चाल- हवे मायानों जे पामसे पार, तारतम करसे तेह विचार।
ब्रह्मांड मांहें तारतम सार, एणे टाल्यो सहुनो अंधकार।।
लोक चौद मायानों फंद, सहु छलतणा ए बंध
ा।
समझया विना सहुए अंध, तारतम केहेसे सहु सनंध।।
नहीं राखूं संदेह एक, पैया काढूं सहुना छेक।
आ वाणी थासे अति विसेक, कहूं पारना पार विवेक।।
रास प्र६.१/ ४१,४२,४३

भेज्या बेसक दारू हैयाती, तुम पे मेरे हाथ हबीब।
किए चौदे तबक मुरदे जीवते, तुम को ऐसे किए तबीब।।
सि. २६/११६

रूह अल्ला अर्स अजीम से, नूर आला ले आए।
सो ए नूर कोई ज्यों कर, सकेगा छिपाए।।
मारफत सागर २/२४

तमे तारतमना दातार, अजवालूं कीधूं अपार।
साथ तणां मनोरथ जेह, सर्वे पूरण कीधां तेह।।
तारतम तणे अजवास, पूरण मनोरथ कीधां साथ।
तम तणे चरण पसाय, जे उत्कंठा मनमां थाय।।
रास प्र.२ /१०,११

ए निध बीजे कोणे न अपाय, धणी विना केहेने सामूं न जोवाय।
एणें अजवाले थए सूं थाय, आ पोहोरा मां धणी ओलखाय।।
आप तणी पण खबर पडे, घर पर आतम रूदे चढे।
ए अजवालूं ज्यारे थयूं, त्यारे वली पाछूं सूं रह्यूं।।

रास.२ /१३,१४

जदिप ते जीते विद्याए, पण एने अजाण्यूं नव जाय।
ज्यारे वालोजी सहाय थाय, झख मारे त्यारे मायाय।।

रास २ /१६

आ अजवालूं जो जोइए, जीव तारतम मोटो सार।
वालाजी ने ओलखे, तो तू नव मूके निरधार।।

रास १३/४

सिणगार सर्वे सोहे, वालोजी खंत करी जुए।
जाणिए मूलगां रे होय, तारतम विना नव कोय, जाणें एह रे धन।।

रास.१३ / ४

ऐणे समे तारतमनी समझण, ते में केम केहेवाय जी।
अनेक विधनूं तारतम इहां, तेणे घर लीला प्रगट थायजी।।

प्र. गु. २/१२

पेहेले फेरे ता ए निध न हुती, अजवालूं तारतम जी।
तो आ फेरो थयो आपणने, साथ जुओ विचारी मन जी।।

प्र. गु.२/१४

सुंदरबार्द अंतरगत कहावे, प्रकास वचन अति भारी जी।
साथ सकल तमे मली सांभलो, जो जो तारतम विचारी जी।।

प्र. गु. ३/२

एक वचन न आवे अस्तुत, सोभा दीधी जेम कालबुत।
अस्तुतनी आंही केही बात, प्रगट थावा कीधी विख्यात।।

प्र. गु. ४/६

भरम टले ओलखाय धणी, अने सेवा थाय मारा वालाजी तणी।
ओलखाय वल्लभ तो टले माया पास, एटला माटे प्रगट थयो रास।।

प्र. गु. ४/ २८

महा ने प्रले लगे, कोई करे रे अभ्यास।
सर्वे विद्या सास्त्रनी, लिए करी विस्वास।।
तोहे केमे न आवे रे, विद्या एवी रे वाण।
ते खिण मांहें दई करी, वालो करता चतुर सुजांण।।

प्र. गु. ५/ ४५,४६

मायानी तां एह सनंध, निरमल नेत्रे थैए अंध।
ते माटे कीधो प्रकास, तारतम तणो अजवास।।

प्र. गु. ६/१५

ते लईने आव्या धणी, दया आपण ऊपर छे घणी।
जाणे जोसे माया अलगां थई, तारतमने अजवाले रही।।

प्र. गु.६/१६

भले तारतम कीधो प्रकास, सकल मनोरथ सिध्यां साथ।
वचने सर्व अजवालो करयो, अने बीजो देह माया माहें धरयो।।

प्र. गु. ६/१७

दोऊ गिरो जो उतरी, दोऊ अर्सों से आई सोए।
सो आप अपने अर्स में, बिना लदुन्नी न पोहोंचे कोए।।

सि. २७/४२

तारतम पखे विछोडो नहीं, सुपन मां माया जोइए सही।

सुपन विछोड पण धणी नव सहे, तारतम वचन पाधरा कहे।।
प्र. गु. ११/५

पांण पांहिंजो पस तूं, अंख उघाडे न्हार।
खीर पाणी जी परंख पधरी, हिन तारतम महें विचार।।
प्र. गु. १४/५

सार काढे सुध करीने, वाणी वेहद गाए।
धन अवतार ते बुध तणो, जे रह्यो आवीने पाए।।
प्र.गु. २०/१४

ते नहीं वैकुंठ नाथने, जे रस बुध अवतार।
चरण ग्रह्या वालाजी तणां, कांई ए निध पाम्यो सार।।
प्र. गु. २०/१५

ए बंने सरूपमां जोतज एक, ते में जोयूं करी विवेक।
इंद्रावती करे विनती, तमे निध दीधी मूने तारतम थकी।।
प्र. गु. २४/२

तारतम जोत उद्योत छे, तेणे सूं थाय।
एकी दृष्टे घर जोइए, बीजी माया जोवाय।।
प्र. गु. ३१/१०६

तारतम रस पाई करी, साथ घेर पोहोंचाडूं।
धंन धंन कहिए तारतम, जेणे थयूं अजवालूं।।
प्र. गु. ३१/१३८

वाले ओलखी ने आप मोसूं, कीधूं ते सगपण सत।
सनकूल द्रष्टे हूं समझी, आ जाण्यूं जोपे असत।।
सनंध सर्वे कही करी, ओलखाव्या एधाण।
हवे प्रगट थई हूं पाधरी, मारी सगाई प्रमाण।।
हवे साथ मारो खोली काढूं, जे भली गयो रामत मांहें।
प्रकास पूरण अमकने, हवे छपी न सके क्यांहें।।
क.गु. १/५०,५१,५२

अब जोर कर जाओ माया में, इनके संग होए तुम।

उजाले तारतम के पेहेचान, ज्यों मूल स्वरूप देखे हम।।
प्र.हि.२०/६२

ना तो बैकंठनाथ को कैसी खबर, बिना तारतम क्या जाने मूल घर।
और भी खबर कछुए ना कही, तो भी निध भारी कर ग्रही।।
प्र.हि.२६/५१

तारतम के उजाले कर, रोसन कियो इन सूल जी।
कई कोट ब्रह्मांड देखाई माया, पाया अंकूर पेड़ मूल जी।।
प्र.हि.३०/३५

तारतम रस बेहद का, सब जाहेर किया।
बोहोत विधें सुख साथ को, खेल देखते दिया।।
तारतम रस वानी कर, पिलाइए जाको।
जेहेर चढ़्या होए जिमी का, सुख होवे ताको।।
जो जीव नींद छोड़े नहीं, पिलाइए वानी।
ल्याए पिउ वतन थें, बल माया जानी।।
जेहेर उतारने साथ को, ल्याए तारतम ।
बेहद का रस श्रवनें, पिलावें हम।।
प्र.हि.३१/१३६,१३७,१३८,१३६

रूहअल्ला की किल्ली से, खुले बका द्वार देहेलान।
ए तीन सूरत कही महंमद की, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
स.२३/४२

तो भी दुनियां अर्स देखे नहीं, यों देखावत कतेब वेद।
पावे न लाम इलम बिना, कोई इन विध का है भेद।।
सि.२३/८०

एही रस तारतम का, चढ़्या जेहेर उतारे।
निरविख काया करे, जीव जागे करारे।।
जागे सुख अनेक हैं, इतही अलेखे।
वतन सुख लीजिए, जीव नैनों भी देखे।।

सुख बड़े तारतम के, क्यों जाहेर कीजे।
वानी माएने देखके, जीव जगाए लीजे।।
प्र.हि. ३१/१४२,१४३,१४४

मोह जेहेर ऐसा जान के, ल्याए तारतम।
सब विध का ए औखद, प्रकासे खसम।।
प्र.हि. ३१/१६०

इन वचनों में अछरातीत, श्री धाम धनी साथ सहीत।
ए देखो तारतम को उजास, धनी ल्याए कारन साथ।।
प्र.हि. ३४/१७

लेस है कालमाया को, बढ़्यो साथ में विकार।
सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार।।
क.हि. २१/१८

भेज्या बेसक दारू हैयाती, तुम पे मेरे हाथ हबीब।
किए चौदे तबक मुरदे जीवते, तुम को ऐसे किए तबीब।।
श्रृं.२६/११६

चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ।
सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ।।
खि.१३/५४

चौदे तबकों ढूंढ़या, सब रहे दूर से दूर।
रूह-अल्ला के इलम बिना, हुआ न कोई हजूर।।
कई दुनियां में बुजरक हुए, किन बका तरफ पाई नाहें।
सो इलम नुकता ईसे का, बैठावे बका माहें।।
खि.७/२,३

ए बल इन कुंजीय का, काहूं हुता न एते दिन।
रूहअल्ला पैगाम उमत को, द्वार खोल्या बका वतन।।
ए बल देखो कुंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक।

ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब खिलवत का इस्क।।
ए बल देखो कुंजी का, जिन देखाई निसबत।
ए जो रूहें जात हक की, जिन बेसक देखी वाहेदत।।
ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत।
हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत।।

सा. १३/२६,३१,३२,३३

३. यह वाणी केवल सुन्दरसाथ के वास्ते आयी है।-

न केहेवाय माया मांहें आ वाणी, पण साथ माटे कहेवाणी।
साथ आवसे रूदे आंणी, ते में नेहेचे कह्यूं जाणी।।
भारे वचन छे निरधार, साथ करसे एह विचार।
जो न कहूं सतनो सार, तो केम साथ पोहोंचसे पार।।

रास. १/४४,४५

पर करूं साथ पीछले की बड़ी जतन, देख वानी आवसी इन बाट वतन।
देखियो साथ दया धनी, ए कृपा की बातें हैं अति घनी।।

प्र.हि. २४/२३

सनमंधी साथ को कहे वचन, जीव को एता कौन कहे जी।
ए वानी सुन ढील करे क्यों वासना, सो ए विखम भोम क्यों रहे जी।।

प्र.हि.३०/२८

निरमल हिरदे में लीजो वचन, ज्यों निकसे फूट बान जी।
ए कह्या ब्रह्मसृष्ट ईश्वरी को, ए क्यों लेवे जीव अग्यान जी।।
प्र.हि. ३०/४६

इत भी उजाला अखंड, पर किरना न इत पकराए।
ए नूर सब ए क होए चल्या, आगूं अछरातीत समाए।।
क.हि. २४/३३

वतन बातें केहेवे को, मैं देखती नहीं कोई काहूं।
देखां तो जो होए दूसरा, नहीं गांउं नांउं न ठांउं।।
क.हि.२४/४४

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएं केहेलाए साथ कारन।
न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन।।
कि.८६/५

जो बात निजस नाबूद, हक कलाम न कहे तिन में।
जो हक दोस्त गिरो मासूक, कहे हक कलाम तिन से।।
मा.सा. १५/३५

४. श्री प्राणनाथ जी की पहचान-

साखी-साथ मलीने सांभलो, जागी करो विचार।
जेणे अजवालूं आ कर्यूं, परखो पुरूख ए पार।।
आपण हजी नथी ओलख्या, जुओ विचारी मन।
विविध पेरे समझावियां, अने कही निध तारतम।।
रास. १/४६,४७

हवे एह धणी केम मूकिए, वली वली करो विचार।
मूल बुध चेतन करी, धणी ओलखो आ वार।।
रास. १/५०

आ जोगवाई छे जो घणी, सहाय आपणने थया धणी।
बेठ्या आपण मांहें कहे, पण साथ माहें कोई विरलो लहे।।

रास. २/१६

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत।
फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित।।

खु.१४/७

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।।
सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।।

कि.५२/२५,२६

आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार।
सो सत वानी सबों की करी, अब आए करो दीदार।।

कि. ५३/७

धनी मैं अरधांग अछर मुझ माहीं,बुध जी बोले सो कई प्रकार।
हुकम महंमद नूर ईसा भेला, कजा इमाम मेंहेदी सिर मुद्दार।।

कि. ५४/२

बृजलीला लीला रास मांहें, हम खेले जान के जार।
जागनी लीला जाग पेहेचान, पिउ सों जान विलसे करतार।।

कि.५४/१५

यों कई छल मूल कहूं मैं केते , मेरे टोने ही को आकार।
ए माया अमल उतारे महामत , ताको रंचक न रहे खुमार।।

कि. १२०/११

थे हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली और नजरी।
झगड़ दोऊ जुदे हुए , देने खबर पैगंमरी ।।
तब केतिक गिरो उधर भई , और केतिक मेरे साथ।
दई जाहेर मसनंद नसलिएं , दूजी बातून मेरे हाथ।।
उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महंमद का होए।।

कि. १२२/२,३,४

वृजतणी लीला कही, वली विसेखे रास।
श्रीधाम तणा सुख वरणवे, दिए निध प्राणनाथ।।

रास . १/४६

ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहूं अनुपम वात।
चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रूठा प्राणनाथ।।

रास २/१७

बेहूगमां बे भामनी, वचे कान्ह कंठे कामनी।
कंठ बांहोंडी बंने स्यामनी, एम फरत प्राणनाथ री।।

रास १६/७

फुंदडी मेलीने हाथ, चटकासूं घाली बाथ।
रामत करे निघात, कंठ बांहोंडी फरे साथ रंगे प्राणनाथ।।

रास ३८/११

एकीगमां साथ स्यामाजी, कांई बीजी गमां प्राणनाथ।
क्रीडा कीजिए जलमां, विलसिए वालाजीने साथ।।

रास ४५/६

बीडी ते लई आरोगिया, वली लीधी सहु साथ।
साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोने प्रीसे प्राणनाथ।।

रास ४६/१८

इन समें हुती माया की लेहेर, तो न आया आतम को वेहेर।
तब मेरी निध गई मेरे हाथ, श्री धाम तरफ मुख कियो प्राणनाथ।।

प्र.हि. ५/१७

जल छे लोक के लेऊँ लिखनहारी, एक बूंद न छोडूं कहूँ न्यारी।
सब जल मिलाए लेऊँ मेरे हाथ, गुन लिखने मेरे श्री प्राणनाथ।।

प्र.हि. १२/७

सेवा कीजे पेहेचान चित धर, कारन अपने आए फेर।
भी अवसर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।।

प्र.हि. १३/३

तो वचन तुमको कहे जांए, जो तुम धाम की लीला माहें।
बृजवाला` पिउ सो एह, वचनअपन को केहेत हैं जेह।।
रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने।
धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथको बुलावन आए।।

प्र.हि. २६/ ६१,६२

तब श्री मुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूंढ काढ़नो अपनो साथ।
माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए है हम।।

प्र.ही. ३७/८२

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान।
याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राणनाथ।।

प्र.हि. ३७/ १०२

मांगा किया राधाबाई का, पर ब्याहे नहीं प्राणनाथ।
मूल सनमंधे एके अंगे, विलसत वल्लभ साथ।।

क.हि. १६/३१

तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग।
ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावती के संग।।
इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग।
जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग।।
बुध तारतम जित भेले, तित पेहेले जानो आवेस।
अग्या दया सब पूरन, अंग इंद्रावती प्रवेस।।
सुख देऊं सुख लेऊं, सुख में जगाऊं साथ।
इंद्रावती को उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।

क.हि. २३/ ६५,६६,६७,६८

आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद।
महंमद मेहेंदी आए बिना, कौन मिटावे वाद।।

सं. ३०/४१

सुनियो दुनियां आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम।।

सं. ३३/१

प्रतिबिंब लीला या दिन थें, फेर के गोकुल आए।
चले मथुरा द्वारका, बैकुंठ बैठे जाए।।
तारतम नूर प्रगट्या, तिन तेजें फोरयो आकास।
लागी सिखर पाताल लो, अब रहे ना पकरयो प्रकास।।
किरना सबमें कुलांभियां, गयो वैराट को अग्यान।
दृढ़ाए चित चौदे लोकको, उड़ाए दिया उनमान।।
अब जोत पकरी ना रहे, बीच में बिना ठौर।
पसरके देखाइया, बृज अखंड जो और।।

क.हि. १६/ ७,८,६,१०

ए हवा सुन्य जुलमत कही, एही हिजाब रात अंधेर।
ऊपर तले बीच दुनियां, फिरवली गिरदवाए फेर।।

मा.सा. ३/६६

ए सबे बीच अंधेरी, किन तरफ न पाई हक।
काहूं न पाया अर्स बका, कई हुए रात बीच बुजरक।।

मा.सा. ३/६७

गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।
तब जो वासना बाई रतन, लीलबाई के उदर उतपन।।

प्र.हि. ६/२

ए गुन गिन किए जीवें अपने हाथ, पल पल पसरे गुन प्राणनाथ।
ए सब तो कहूं जो गुन ठाढ़े रहे, ए गुन मन की न्यात दौड़े जाए।।

प्र.हि. १२/४१

पिउ तुम आए माया देह धर, साथ की म त फिर गई क्यों कर।
हांसी करसी पिउ साथ पर, क्या करसी माया जब मांगी घर।।

प्र.हि. १२/४६

मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबों की ताप।
आतम संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करी मोहे सुध।।

प्र.हि. ३७/१००

जाऊं वारने आंगने बेलूं, जित ले बैठो संझा समें साथ।
बातें होत चलने धाम की, घर पैंड़ा देखाया प्राणनाथ।।
भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज।
जहां बैठो उठो पाँउ धरो, धनी मेरे श्री राज।।

प्र.हि. २३/२,३

सोई सुहागिन आइयां, खसम की विरहिन।
अंतरगत पिया पकरी, ना तो रहे ना तन।।
ए सुध पिया मुझे दई, अन्दर कियो प्रकास।
तो ए जाहेर होत है, जो गयो तिमर सब नास।।
प्यारी पिया सोहागनी, सो जुबां कही न जाए।
पर हुआ जो मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए।।
अंग बुध आवेस देए के, कहे तूं प्यारी मुझ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हों तुझ।।
दुख पावत हैं सोहागनी, सो हम सह्यो न जाए।
हम भी होसी जाहेर, पर तूं सोहागनियां जगाए।।

क.हि. ६/२५,२६,२७,३०,३१

सोई सुध दई फुरमानें, सोई ईसे दई खबर।
मेरे मुख सोई आइया, तीनों एक भए यों कर।।

प.३०/८

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
तामें दोए देसी हक साहेदी, हकी खोले सब हकीकत।।

श्रृं. ३/२५

तुम हीं उतर आए अर्स से, इत तुम हीं कियो मिलाप।
तुम हीं दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप।।

श्रृं.२३/३१

महंमद मेंहेंदी ईसा अहमद, बड़ा मेला इसलाम।

जित सूर फूंक्या असराफीले, होसी चालीस सालों तमाम।।

श्रृं २६/१०४

जब पट खोल्या महंमदें, सो नूर बूंदें लई जिन।
तिन दिए पैगाम हक के, सबमें किया बका दिन।।

मा.सा. ३/१८

जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक।
हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक।।

स.३३/२१

अंदर मेरे बैठ के , कई विध कियो विस्तार।
सो रोसनी जुबां क्यों कहे , वाको वाही जाने सुमार ।।

कि. ६६/१७

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान ।
सो साहेब काजी होए के , जाहेर क रसी कुरान ।।
और भी फुरमान में लिख्या,कोई खोल ना सके किताब।
सोई साहेब खोलसी , जिन पर धनी खिताब ।।

कि. १०४/५,८

बैठाई आप जैसी कर , सो खोल देखाई नजर।
अजूं मांगत मेरे धनी , और ऐसे तुम कादर।।
नर नारी बूढ़ा बालक , जिन इलम लिया मेरा बूझ।
तिन साहेब कर पूजिया, अर्स का एही गुझ।।

कि. १०६/१६, २१

अंदर मेरे बैठ के , कई विध कियो विस्तार।
सो रोसनी जुबां क्यों कहे , वाको वाही जाने सुमार ।।

कि. ६६/१७

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान ।
सो साहेब काजी होए के , जाहेर करसी कुरान ।।
और भी फुरमान में लिख्या,कोई खोल ना सके किताब।

सोई साहेब खोलसी , जिन पर धनी खिताब ।।

कि. १०४/५,८

बैठाई आप जैसी कर , सो खोल दे`खाई नजर।
अजूं मांगत मेरे धनी , और ऐसे तुम कादर।।
नर नारी बूढ़ा बालक , जिन इलम लिया मेरा बूझ।
तिन साहेब कर पूजिया , अर्स का एही गुझ।।

कि. १०६/१६, २१

५. सुन्दरसाथ की रहनी

पख पचवीस छे अति भला, पण ए छे आपणो धरम।
साख्यात तणी सेवा कीजिए, ए रूदे राखजो मरम।।

रास. १/८१

जदिप ते जीते विद्याए, पण एने अजाण्यूं नव जाय।
ज्यारे वालोजी सहाय थाय, झख मारे त्यारे मायाय।।
ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहूं अनुपम वात।
चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रूठा प्राणनाथ।।
वचन कह्या ते मनमां धरो, रखे अधखिण पाछा ओसरो।
आ पोहोरो छे कठण अपार, रखे विलंब करो आ वार।।

रास. २/१६,१७,१८

भरम भूंडो तमे परहरो, जेम थाय अजवालुं अपार।
वचन वालाजी तणे, तू म ूलगां सुख संभार।।

रास. ३/१०

पेरे पेरे में तूने कह्यूं रे, सुण रे धणीना वचन।
अधखिण वालो न वीसरे, जो तू जुए विचारी मन।।
अनेक वचन तूने कह्या, मान एकनो करे विचार।
अर्ध लवे तारो अर्थ सरे, भूंडा एवडो तू कां केहेवराव।।
हवे रे तूने हूं जे कहूँ, ते तू सांभल द्रढ करी मन।
पचवीस पख छे आपणा, तेमां झीलजे रात ने दिन।।

ए माहेंथी रखे नीसरे, पल मात्र अलगो एक।
मनना मनोरथ पूरण थासे, उपजसे सुख अनेक।।
रास. ३/२०,२१,२२,२३

कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, इहां विलंब कीधांनी नहीं वार।
ए अजवालूं सर्वे कीधूं मारे वाले, आपणने आ वार।।
रास. ४/१२

अपने घर इत नाहीं साथजी, चौदे भवन में कित जी।
ता कारन पिउजी करें रे पुकार, तुम क्यों सूते इत जी।।
ओ दुख के घर सो भी ना छोड़े, तुम याद ना करो सुख के घर जी।
सास्त्र सबों पे साख देवाई, तुम अजहूं ना देखो चित धर जी।।
पिउ पुकार पुकार थके, तुम अजहुं जल बिन गोते खात जी।
दिन उगते संझा होत है, पीछे आड़ी पड़ेगी रात जी।।
प्र.हि. ३०/ १६,१७,१६

आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन।
सुध तो नहीं कछू साथ को, पर तो भी अपने सजन।।
प्र.हि. १६/६

जीव खरा होए जुदा मन करे, कपट रत्ती न हिरदे धारे।
यों करके तुमको सेवे, वचन विचार अंदर जीव लेवे।।
सनकूल करे तुमारा चित, संसे भान करे जीव के हित।
पिउ चित पर चलेगा जोए, साथ में घरों सोभा लेसी सोए।।
प्र.हि. २४/६,७

विरह सुनते पिउ का, आह ना उड़ गई जिन।
ताए वतन सैयां यों कहें, नाहीं न ए विरहिन।।

जो होवे आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध
ा।
सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां थें बुध
ा।।

क.हि. ६/१५,१६

ए खेल किया रूहों वास्ते, ए मोमिन आऐ जेह।
खेल देख जाए वतन, बातें करसीं एह।।

सं. १८/४

जब साहेब की सुध सुनी, तब जाए ना रह्यो रूहन।
ओ ख्वाबी दम भी ना रहें, तो क्यों रहें अर्स मोमिन।।
खाना पीना दीदार, रोजा निमाज दीदार।
एक दोस्ती जानें हक की, दुनी सब करी मुरदार।।

सं. २२/४१,४३

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे।
सो इत दीन दुनी का, कछू ना लाहा ले।।
लाहा तो ना लेवही, पर सामी हांसी होए।
ए हांसी अर्स के मोमिन, जिन कराओ कोए।।

सं. २२/ ५७,५८

ए नाहीं अवगुन और ज्यों , मेरे तो लेप बजर।

ए बिध सोई जानहीं, जिनकी अंतर खुली नजर।।

कि. ४१/१४

कमर बांधे देखा देखी , जाने हम भी लगे तिन लार।

ले कबीला कांध पर, हंसते चले नर नार।।

कि. ६३/२

दुध तो देख्या नहीं , देख्या ऊपर का फैन।
दौड़ करें पड़े खैंच में, ए भी लगे दुख देन।।
लेने को बुजरकियां, सेवें चातुरी चैन।
सेवा करत सब खैंच की, ए यों लगे दुख देन।।
देखा देखी न छूटहीं, सेवत हैं दिन रैन।
खुस बखत होवें खैंच में , ए यों लगे दुख देन।।
निपट नजीकी सेवहीं , दौड़े एक दूजे पें लेन।
खैंचा खैंच ऐसी करें, ए भी लगे दुख देन।।
अर्थ अंदर का लेवहीं, समझें इसारत सेन।
खैंच उनकी भी ना गई , वे भी लगे दुख देन।।
तारतम सब समझहीं, धाम सैयां हम बेहेन।
तित भी क्रोध छूटा नहीं, ए भी लगे दुख देन।।

कि. ६३/५,६,७,१०,१३,१५

जो जो खिन इत होत है ,लीजो लाभ साथ धनी पेहेचान।
ए समया तुमें बहुरि न आवे, केहेती हों नेहेचे बात निदान।।
अब जो घड़ी रहो साथ चरने, होए रहिय तुम रेनु समान।
इत जागे को फल एही है, चेत लीजो कोई चतुर सुजान।।

ज्यों ज्यों गरीबी लीजे साथ में ,त्यों त्यों धनी को पाइए मान।
इत दोए दिन का लाभ जो लेना, एही वचन जानो परवान।।
अब जो साइत इत होत है, सो पिउ बिना लगत अगिन।
ए हम सह्यो न जावहीं ,जो साथ में कहे कोई कटुक वचन।।
ज्यों ज्यों साथ में होत है प्रीत, त्यों त्यों मोही को होत है सुख।
ज्यों ज्यों क्रोध करत हैं साथ में, अंत वाही को है जो दुख।।

कि. ८६/१०,११,१२,१३,१४

मोमिन रखे मोमिन सों, जो तन मन अपना माल।
सो अरवा नहीं अर्स की, न तिन सिर नूर जमाल।।
जब लग भूली वतन, तब लग नाहीं दोस।
जब जागी हक इलमें, तब भूली सिर अफसोस।।
अर्स तन रूह मोमिन , लोभ न झूठा ताए।
मोमिन जुदागी न सहें , ज्यों दूध मिसरी मिल जाए।।
लिखी फकीरी ताले मिने , अपने हादी के।
कदम पर कदम धरें , मोमिन कहिए ए।।
एक हक बिना कछू न रखें , दुनी करी मुरदार।
अर्स किया दिल मोमिन , पोहोंचे नूर के पार।।

कि. ११८/३,६,१५,१६,१७

आया नजीक बखत मोमिनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत।
जो सुपने कदम न भूलिए, हंसिए हकसों ले निसबत।।

श्रृं.६/२०

खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत।
दम न छोड़ें मासूक को, जाको होए हक निसबत।।

श्रृं. २०/३

एता मता तुम को दिया, सो जानत है तुम दिल।
बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल।।

श्रृं.२७/१

६. हम दुखी क्यों होते हैं।

धनी न देवें दुख तिल जेता, जो देखिए वचन विचारी जी।
दुख आपन को तो जो होत है, जो माया करत हैं भारी जी।।
अंतरध्यान समें दुख दिए, ए आंसका उपजत जी।
तिन समें संसार न किया भारी, साथें दुख देखे क्यों तित जी।।
दुख तो क्यों ए न देवे रे पिउजी, ए विचार के संसे खोइए जी।
ए याद वचन तो आवे रे सखियो, जो माया छोड़ते घनों रोइए जी।।

प्र.हि. २/६-८

अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनके जुगत जी।
कई कई विध कह्या मैं तुमको, अजहूँ ना हुए त्रपत जी।।

प्र.हि. ३/४

७. सुन्दर बाई ही श्यामा जी हैं।

सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी।
भेजे धनिऐं आवेस देय के, अब न्यारे न होऐं एक खिन जी।।
सुपने में मनोरथ किए, तो तित भी पिउजी साथ जी।
सुंदरबाई ले आवेस धनी को, न छोड़े अपना हाथ जी।।

प्र.हि. २/२,५

सुंदरबाई अंतरगत कहे, प्रकास वचन अति भारी जी।

साथ वचन ए चित्त दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी।।

प्र.हि. ३/२

श्री सुंदरबाई धनी धाम दुलहिन, इंद्रावती पर दया पूरन।
हिरदे बैठ कहे वचन एह, कारन साथ किए सनेह।।

प्र.हि. ४/२

कारज यों सब हुए पूरन, श्री सुंदरबाई की सिखापन।
हिरदे बैठ केहेलाया रास, पेहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास।।

प्र.हि. ४/१८

अब अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरन तुमारे जीव में ग्रहूं।
इन चरनों मोहे सुध भई, पेहेली निध सुंदरबाईऐं दई।।

प्र.हि. २४/१

हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो।
तीनों कांडों बड़ा सुकदेव, ताकी बानी को कहूँ भेव।।

प्र.हि. ३२/१

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार।।

प्र.हि. ५/१

साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार।
मैं श्रीसुंदरबाई के चरने रहूँ, एह दया मुख किन विध कहूँ।।

प्रगटवाणी ६७

रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्टसब आइयां इत।
यामें सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार।।

प्र.हि.३७/६६

धर्यो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर।
इत दया करी अति धनी, अंदर आए के बैठे धनी।।

दिया जोस खोले दरबार, देखाया सुन्य के पार के पार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सुन्दरबाई, ताको धनीजीएँ दई बडाई।।
सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार।
श्री धाम धनीजी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग।।

प्र.हि. ३७/७२,७३,७४

८. माया से कैसे छूटे

जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी।
पचीख पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी।।

प्र.हि. ३/५

ज्यों तुम पेहेले भरे पांउ, योंही चलो जिन भूलो दाउ।
भी देखो ए पेहेले वचन, प्रेम सेवा यों राखो मन।।

प्र.हि. ४/२०

ए नींद उड़ाए के कहे वचन, श्री ध ााम धनी जीव जानी मन।
जब देख्या धनी नीके फिकर कर, तो अजूं न गई नींद है अंदर।।
ए वचन कहे मैं नींदज मांहें, जब नीके देखूं धनी धाम के तांहें।
न तो क्यों कहूँ धनी को एह वचन, पर कछुक तासीर है भोम इन।।

प्र.हि. २४/८,६

साथ वेगे बुलाओ कहे इंद्रावती, ए कठन माया दुख होए लागती।
ए दुख देख्या मांहें दुस्तर, कोई न पेहेचाने आप न सूझे घर।।

प्र.हि. २४/१३

साथ कारन जीव सगाई जान, सेवियो धाम धनी पेहेचान।
यों केहेके पकड़ न देवे कोए, यों देते न लेवे सो अभागी होए।।

प्र.हि. २६/१०

ए नींद तुम को क्यों कर उड़सी, जोलों न उठो बल कर जी।
सेवा करो समें पिउ पेहेचान, याद करो आप घर जी।।
ए अमल तुमको क्यों रे उतरसी, जो जेहेर चढ़्या अति भारी जी।
पिउजी के बान तो तोड़े संधान, पर तुमको केहे केहे हारी जी।।

जो जानो घर पाइए अपना, तो एक राखियो रस वैराग जी।
सकल अंगे सुध सेवा कीजो, इन विध बैठो घर जाग जी।।
प्र.हि. ३०/४०,४२,४३

मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल।
जब तुम छल पेहेचानिया, तब चले न याको बल।।
क.हि. १२/१८

वस्तोगते दुख ना कछू, जो पीछे फेरो दृष्ट।
जो देखो वचन जागके, तो नाहीं कछुए कष्ट।।
क.हि. २३/२५

लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी।
याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी।।
क.हि. २३/२६

ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल।
उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल।।
सं. १२/१८

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार।।
प्र.हि. ५/१

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन।
निकाल देऊं जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अर्स रोसन।।
सं. २५/३

ए माया जाकी सोई जाने, क्यों कर समझे और।
बुध जी के रोसन थें, प्रकास होसी सब ठौर ।।
किल्ली ल्याए वतन थें , सब खोल दिए दरबार।
माया से न्यारा घर नेहेचल , देखाया मोहजल पार।।
कि. ५२/७,८

रूहें उन मुलक से, फिर ना सकें वतन।
फरेब क्योंए ना छूटहीं, हक के इस्क बिन।।

खि. १६/७७

६. धनी (श्री प्राणनाथ जी) हमको नहीं छोड़ेंगे

अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों।।

क. हि. २१/१७

वलीने वसेके अपर महिनो, अधको ते आव्यो जेठ।
हवे कसने पूरो कसोटिए, तमे पारखूं लेओ छो मारू नेठ।।

ख. ७/१०

सोई घड़ी ने सोई पल, मायाऐं बीच डारयो वल।
साथ को खिन न्यारे ना करे, बिना साथ कहूं पांउ ना ध
ारे।।

प्र.ही. ६/१०

आपन में बैठे आधार, खेल देखाया खोल के द्वार।
अब माया कोटान कोट करे प्रकार, तो इत साथ को न छोडूं निरध
ार।।
बिछोहा नहीं कछू पख तारतम, सुपन में माया देखें
हम।
सुपन बिछोहा धनी ना सहे, तारतम वचन प्रगट
कहे।।

प्र.हि. ११/१,५

तुम तुमारे गुन ना छोड़े, मैं बोहोत करी दुष्टाई।
मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल
सगाई।।

प्र.हि. २२/११

अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों।।

क.हि. २१/१७

अब बिछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सह्यो न जाए।

अब नेक वाओ इन माया की, जानों जिन आवे ताए।।

क.हि. २३/१५

१०. वाणी धनी की मेहेर से आयी है

पर सांचा तो जो होए गलतान, तो भले मुख निकसी ए बान।
ए बानी मेरी नाहीं यों, और किव करत हैं ज्यों।।

प्र.हि. २१/२०

धड़थें सिर कोई न्यारा करे, तो आधा वचन ना मुखथें परे।
जो कोई सारे सकल संधान, तो कह्या न जाए पाओ लुगा निरवान।।

प्र.हि.२६/६

इन अमल को बड़ो विस्तार, सो ए देखना नहीं निरध ार।
पेहेले आपन को बरजे सही, श्री मुख बानी धनिऐं कही।।
धनी कहावे तो यों कहूँ, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊँ।
ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे।।
ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई।
ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यें लगे घाए।।
मेरी बुधें लुगा न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखंड घर सुख।
अब साथ कछुक करो तुम बल, तो पूरन सोभा ल्यो

नेहेचल।।

प्र.हि. २६/३,५,७

ना कछू मन में ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदे एती मत।
एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए।।

प्र.हि. ४/१

मोहे एक वचन ना आवे अस्तुत, पर सोभा दई ज्यों कालबुत।
अस्तुत की इत कैसी बात, प्रगट होने करी विख्यात।।

प्र.हि. ४/६

ए तुम नेहेचे करो सोए, ए वचन महामती से प्रगट न होए।
अपने घर की नहीं ए बात, जो किव कर लिखिए विख्यात।।
ए बोहोत विध मैं जानूं घना, जो किव नहीं ए काम अपना।
पर ए तो नहीं कछू किव की बात, केहेलाया बैठ हिरदे साख्यात।।

प्र.हि. ४/१४,१५

११. आड़िका लीला को सत्य नहीं मानना

आवसे साथ उछाह अति घणां, पण तमे वचन मूको रखे तारतम तणां।
बेहेर दृष्टतणो जोई अजवास, आनंद मन उपजसे साथ।।

प्र.गु. ४/४३

१२. मुहम्मद साहब के समय में रूहें नहीं थीं।

तार्थे गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए।
तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अर्स जाहेर क्यों

होए।।
एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग।
एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग।।
तो मोहोलत कर पीछे फिरे, हम आवेंगे आखिर।
महंमद मेंहेदी रूह अल्ला, इन मोमिनों की खातिर।।
सं. २४/६३,६४,६५
सो तो दिया मैं तुम को, सो खुले ना बिना तुम।
जो मेरी सुध द्यो औरों को, तित चले तुमारा हुकम।।
श्रृं. २६/२६
हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए-रोए।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।।
तुम कहोगे रसूल को, हम क यों आए कहां वतन।
मलकूत बिना कछू और है, आगे तो खाली हवा सुंन।।
मा.सा. १/५६,६०
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।
तूं भूल` तो मैं तुझे, देऊंगी तुरत जगाए।।
मा.सा. १/६८
लिखे आयतों हदीसों, हक के सुकन।
समझेगी सोई रूह, जाके असल अर्स में तन।।
मा.सा. २/८
कहूं हुकमें साहेदी, जो हकें फुरमाई।
सो देखो आयतों हदीसों, ज्यों दिल होवे रोसनाई।।
सिजदा कराया इमामें, ऊपर हक कदम।
ए आसिक रूहों सिजदा, करें खासलखास दम दम।।
मा.सा. ४/१६,१७
ए तीनों फरिस्ते नूर से, हुए पैदा तीनों तालब।
जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तिन तैसा पाया मरातब।।

जिन जैसी करी दोस्ती, तिन तैसी पाई बकसीस।
दूर नजीक या अंदर, देखो माएने आयत हदीस।।

मा.सा. ५/५३,५४

तब अबाबकर यारों कह्या, क्या भाई न तुमारे हम।
रसूल कहे भाई और हैं, यार हमारे तुम।।

मा.सा. ६/३७

और कह्या बीर्च के, मेरे पीछे होसी इमाम।
मैं डरता हों तिन से, गुम करसी गिरो तमाम।।
नाम मेरा चलावसी, कहेंगे तरीका महंमद।
सुंनत जमात कौल तोड़ के, जुदे पड़सी कर जिद।।

मा.सा. ७/६,११

जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार।।
जो लों न चीन्हें महंमद को, तो लों सुध ना जमाने।
तब लग सुध न बका फना, ना सुध नफा नुकसाने।।

मा.सा. १२/३५,५०

जो उतरे होवें अर्स से, रूहें तौहीद के दरम्यान।
सो लेसी अर्स अजीम को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
जो मुरदार करी दुनी मोमिनों, सो दिल मजाजी खान पान।
नूर बिलंद पोहोंचे पाक होए के, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।

सनंध २३/२१,२२

तार्थे गुझ नबी न राखहीं, पर सुनने वाला न कोए।
तिन बखत ना रूहें बका की, तो गुझ अर्स जाहेर क्यों होए।।
एता भी रसूलें कह्या, रूहें मेरे ना कोई संग।
एक हुकम अली बिना, ना मोमिन वतनी अंग।।
नूर पार अर्स मोमिन, हुते ना तिन बखत।
तो महंमद मेंहेदी मोमिन, आए अर्स से आखिरत।।

सनंध २४/६३,६४,६७

रूहें गिरो तब इत आईं नहीं, तो यों करी सरत।
कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत।।

खुलासा २/२८

भाई महंमद के मोमिन, कोई था न उस बखत।
तो सरा चल्या तोरे बल, कह्या हम फेर आवसी आखिरत।।
महंमद कहे भाई मेरे, आवेंगे आखिरत।
गिरो रबानी अहमदी, याकी बीच आयतों हदीसों सिफत।।

मा.सा. १६/१,३२

१३. दमदार चौपाई

महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर।
इन झण्डे कौल महंमद के, आखिर किया चाहिए जहूर।।

मा.सा. १३/५

झंडा नूरका महंमदी, ताए कबूं न होए नुकसान।
जेते दिन जित फुरमाया, रह्या तेते दिन तित ईमान।।
और ठौर हुकमें खड़ा किया, सो जाए लग्या नूर आसमान।
जो एक ठौर कदी न देखिए, तो और ठौर बिलंद हुआ जान।।

मा.सा. १३/१०,११

हक बिना जो कछु कहे, सो होवे मुसरक।
और जरा नहीं कहूं कितहूं, यों कहे इलम हक।।

मा.सा. १७/५८

सब साहेदी दई जो हदीसों, और अल्ला कलाम।
सो साहेदी ले पीछा रहे, तिन सिर रसूल न स्याम।।

छो.क्या. १/७७

जो कदी वह आगे च ली, जिमी बैठी वह जिमी माहें।
पांचों पोहोंचे पांचों में, रूह अपनी असल छोड़े नाहें।।

छो.क्या. १/८७

जान बूझके भूलिए, इलम पाए बेसक।

देखो दिल विचार के, क्यों राजी करोगे हक।।
जीवते मारिए आपको, सब्द पुकारत हक।
जो जीवते न मरेंगे मोमिन, तो क्या मरेंगे मुनाफक।।
छो.क्या. १/ १०३,१०४

हांसी इसही बात की, मेरा इलम तुमको जगाए।
तुम बका करोगे दम खेल के, पर सकोगे न आप उठाए।।
छो.क्या २/५५

फुरमान हकें लिख भेजिया, दिया हाथ रसूल के।
रूह अल्ला पर भेजिया, किन खबर न पाई ए।।
छो.क्या. २/७४

और जो पैदा जुलमत से, सो तुम जानत हो सब।
ए क्यों छोड़ें हवा को, जिनों असल देख्या एही रब।।
सो खासी गिरो महंमद की, तामें ए बात होत निस दिन।
मुख छोटे बड़े एही सुकन, और बोले न बका बिन।।
सराब मेरी सुराही का, सो रूहों मस्ती देवे पूरन।
दे इलम लदुन्नी लज्जत, हक बका अर्स तन।।
जो बैठे हैं होए पहाड़ ज्यों, सो उड़ाए असराफीलें सूर।
सूरें खोले मगज मुसाफ के, हुए जाहेर तजल्ला नूर।।
तब उड़े काफर हुते जो पहाड़ से, हुए मोमिनों बान चूर।
लगे और बान अर्स इलमें, तिन हुए कायम नूर हजूर।।
जब पेहेले मोको सब जानसी, तब होसी तुमारी पेहेचान।
हम तुम अर्स जाहेर हुए, दुनी कायम होसी निदान।।
मैं तुमारा मासूक, तुम मेरे आसिक।
और तुम मासूक मैं आसिक, ए मैं पुकार्‌या माहें खलक।।
जिन हरबराओ मोमिनों, हुकम करत आपे काम।
खोल देखो आंखें रूह की, जिन देखो दृष्ट चाम।।
किन उठाए हिंदू ठौर सिजदे, किन मिलाए आखिर निसान।

किन खड़े किए मोमिन, कराए पूरन पेहेचान।।
बड़ाई तुमारी बका मिनें, निपट दई निहायत।
तुमें खुदा कर पूजसी, ऐसी और ना काहू सिफत।।

श्रृं. २६/३५,३६,५८,५६,६०,७४,७५,६३,१०५,१२४

हवे हूं जीतूं तूंने जोपे करी, में ओलखियो आधार।
में अनेक वार जीत्यो रे आगे, वलीने वसेके रे आवार।।
केही पेरे वाद करीस तूं मोसूं, तूं छे म्हारो जाण्यो।
जिहां जेणी पेरे कहीस रे वाला, तिहां आवीस मारो ताण्यो।।
जो ए क पग पर राखूं तूंने, तो हूं इंद्रावती नार।
दिन घणा तूं छपयो मोसूं, हवे नहीं छपी सके निरधार।।
हवे जेम नचवूं तेम नाचो रे वाला, आव्या इंद्रावतीने हाथ।
ते वसीकरण नी दोरिए बांधूं, जेम देखे सघलो साथ।।
इंद्रावतीने एकांते हाथ आव्या, हवे जो जो अमारो बल।
ते वसीकरण करूं रे तमने, जेणे अलगां न थाओ नेहेचल।।
में तूंने परख्यो पूरे चेहेनें, अंग ओलख्यूं हूं अरधंग।
में तूने जीत्यो सघली पेरे, श्री धाम धणी हूं अभंग।।

ख. ८/२४,२५,२६,२७,३५,४०

जिन जानो पाया नहीं, है पावनहार प्रवान।
सो ए छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासों तान।।

क.हि. २/४२

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास।
तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास।।

क.हि. १८/३६

ए माया हमारियां, याके हमपे विचार।
और उपजे सब इनथें, ए हमारी आग्या-कार।।

क.हि. २०/६

ब्राह्मण कहें हम उत्तम, मुसलमान कहें हम पाक।
दोऊ मुठी एक ठौर की, एक राख दूजी खाक।।

सं. ४०/४२

और खावंद जो खेल के, जाको दुनियां सब पूजत।
सो कहे हमों न पाइया, हक क्यों कर है कित।।

खु. ८/७

डुखडा न डिसे आकार, दिलडा डुख पसंन।
से डुख डिसे दिल रांदमें, डुख न बकामें तन।।

सिं. ७/२०

जागियां तो भी खेल न छोड़ें, फेर फेर दुखको दौड़ें।
धनी याद देत घर को सुख, तो भी छूटे ना लग्यो जो विमुख।।

प.३/१८६

बिना विचारे रेहेत है, तुम पे हक इलम।
ए सहूर रूहें पोहोंचहीं, तबहीं उड़े तिलसम।।

खि. १५/७४

अब आप जगाए के धनी, हाँसी करसी मिनों मिने घनी।
अब केहेती हों साथ सबन, घर जागोगे इन वचन।।

प. ३/१८७

आप फरामोसी देय के, ऊपर से जगावत।
क्यों जागें बिना हुकमें, हक इन विध हांसी करत।।

प. ११/६७

सो भी रूह साहेदी देत है, जो नूर-जलाल पास नाहें।
सो रोसनी नूरजमाल की, लज्जत आवत मोमिनों माहें।।
जब लग ख्वाब नजरों, तब लों देत देखाई यों कर।
ना तो सुख नूर-जमाल को, बैठे लेवें कायम घर।।

खि.३/५३,५४

इलमें ऐसे बेसक किए, इत बैठे पाइए सुध।
हम इत आए बिना, देखी खेल की सब विध।।
हम तेहेकीक रूहें अर्स की, इन इलमें किए बेसक।
ए देख्या खेल झूठा जान के, क्यों छोड़े बरनन हक।।

कह्या रसूलें फुरमान में, अर्स दिल मोमिन।
हम और क्यों केहे लाइए, बिना अर्स हक वतन।।
सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाके अक्स का दिल अर्स।
हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस-परस।।
श्रृं. २१/ १५,१६,१७,८१

बैठे बातें करें बका अर्स की, सोई भिस्त भई बैठक।
दुनी बातें करे दुनी की, आखिर तित दोजक।।
श्रृं. २३/१४४

सब अंग हमारे हक हाथ में, इस्क मांगें रोए रोए।
सब अंग हमारे बांध के, हक आप करें हांसी सोए।।
श्रृं. २६/५७

मैं लिख्या है तुम को, जो एक करो मोहे साद।
तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद।।
श्रृं. २६/२३

१४. गादी पूजा यमपुरी का साधन है-

इन विध सेवें स्याम को, कहे जो मुनाफक ।
कहावें बराबर बुजरक, पर गई न आखिर लों सक।।
मूल न लेवें माएना, लेत उपली देखा देख।
असल सरूप को दूर कर, पूजत उनका भेख।।
इन फुरमान में ऐसा लिख्या, करे पातसाही दीन।
बड़ी बड़ाई होएसी, पर उमराओं के आधीन।।
कहे कुरान बंद करसी , इनके जो उमराह।
एक तो करसी बन्दगी , और जो कहे गुमराह।।
मैं करूं खुसामद उनकी , मैं डरता हों उनसे।
जो कहावें मेरे उमराह , और मेरे हुकम में ।।
एही बड़ा अचरज , कहावत हैं बंदे ।
जानों पेहेचान कबूं ना हुती, ऐसे हो गए दिल के अंधे।।
कि. ६४/१६,१७,२०,२१,२२,२४

१५. अपने ऊपर बुजरकी लेना गुनाह है।

क्यों छूटोंगी ए गुन्हे हो नाथ, सांची कहूं मेरे धाम के साथ।
तुम साथ मिने मोहे देत बड़ाई, पर मैं क्यों छूटोंगी बज्रलेपाई।।
प्र.हि. १०/१७

इतने मनोरथ होंए पूरन, तब जानों दया हुई अति घन।
फेर फेर दया को तो कह्या घना, जो कर न सकी कछू बस आप अपना।।

प्र.हि. १०/२३

एही खूबी मेरे अंग को, देत नाहीं दरद।
एही हांसी बुजरकी, करत इस्क को रद।।
एही बुजरकी साथ जी, भया गले में तौक।
धनी को न देवे देखने, एही खूबी इन लोक।।
कि. ६२/ ६,८

जिन दयाएं परदा उड़ाइया, मैं फेर फेर मांगों सो मेहेर।
इस्क दीजे मोहे अपना, जासों लगे बुजरकी जेहेर।।
कि. ६२/१३

बुजरकी मारे रे साथ जी, बुजरकी मारे।
जिन बुजरकी लई दिल पर, तिनको कोई ना उबारे।।
जेती बुजरकी बीच दुनी के, सो सब कुफर हथियार।
कुफरों में कुफर बुजरकी, काम क्रोध अहंकार।।
इन माया में कोई बुजरकी, छूट खुदा जो लेवे।
सो तेहेकीक आपे अपना, पाया फल सो भी खोवे।।
खोवे जोस बंदगी खोवे, और साहेब की दोस्ती।

बिना इस्क जो बुजरकी , सो सब आग जानो तेती ।।
मोको मार छुड़ाई बंदगी , सो भी बुजरकी इन।
ऐसी दुस्मन ए बुजरकी , मैं देखी न एते दिन ।।
जो कोई मारे इन दुस्मन को, करे सब दुनियां को आसान।
पोहोंचावे सबों चरन धनी के, तो भी लेना ना तिन गुमान।।

कि. १०२/१,४,५,६,६,११

१६. शब्दातीत आये शब्द में

ए सोभा सब्दातीत है घनी, और सब्द में जुबां आपनी।
ए सुख विलसूं होए निरदोस, होए फेरा सुफल दया तुम जोस।।

प्र.हि. १०/२२

सोभा पिउ की सब्दातीत, सो आवत नहीं जुबांए।
जोगवाई जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती मांहें।।

प्र.हि. २०/३

क्या कहूं सब्द तुमें पोहोंचे नांहें, मेरी जुबां भई माया अंग मांहें।
तुम सब्दातीत भए मेरे पिउ,मेरी देह खड़ी माया ले जिउ।।

प्र.हि. २४/११

बेहद को सब्द न पोहोंचहीं, तो क्यों पोहोंचे दरबार।
लुगा न पोहोंच्या रास लों, इन प ार के भी पार।।
कोट हिस्से एक लुगे के, हिसाब किया मिहीं कर।
एक हिस्सा न पोहोंच्या रास लों, ए मैं देख्या फेर फेर।।

क.हि. २४/४१,४२

अब सब्दातीत की सब्द में, सोभा बरनी न जाए।

जो कछू कहूं सो सब्द में, बोलूं कौन जुबांए।।

स. ३६/२

बेहद को सब्द न पोहोंचहीं, ए हद में करें विचार।
कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार।।

सं. ३०/१६

अछर अछरातीत कहावहीं, सो भी कहियत इत सब्द।
सब्दातीत क्यों पावहीं , ए जो दुनियां हद ।।

कि. १०७/७

सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखे हक।
सब्दातीत न आवे सब्द में, मैं कही इन बुध माफक।।

सागर १४/३४

अर्स चीज न आवे इन अकलें, तो क्यों आवे रूह मूरत।
जो ए भी न आवे सहूर में, तो क्यों आवे हक सूरत।।

श्रृं. २१/४१

१७. श्री प्राणनाथ जी की महिमा

आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी।।

प्र.हि. ३६/७

ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर।
पार वतन देखाय के, उडाऊं सब अंधेर।।

क.हि. १८/५

ल्याए ल्याए रूहों पिलावहीं, इस्क प्याले मद।
जिन कोईं हिसबो खेल में, याको न लगे सब्द।।
करी कजा चौदे तबकों, उड़ाए दई सब हद।
जिन कोई हिसबो खेल में, याको ना लगे सब्द।।

स. ३७/६२,६३

जलती जलती दुनियां, जासी पैगंमरों पे।
ताए सब पैगंमर यों कहे, तुम छूट न सको हम से।।

खु. ७/१३

ज्यों चढ़ती अवस्था, बाल किसोर बुढ़ापन।
यों बुध जाग्रत नूर की, भई अधिक जोत रोसन।।

खु. १३/७३

मोहे अपनों सब दियो, रही न कोई सक।
सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक।।

कि. ६१/१८

पेहेले प्रले करके, उठाए लिए ततखिन।
मेरे हाथ कराए के, दई सोभा चौदे भवन।।

कि. ६१/२२

सो नूर सरूप आवें नित , नूर तजल्ला के दीदार ।
आस पुराई इन की, मेरे ऐसे इन आकार।।

कि. ६१/२६

सोई वचन मेरे धनीय के, हाथ कुंजी आई दिल को।
उरझन सारे ब्रह्मांड के, मैं सुरझाऊं इन सों।।
मेरे धनी की इसारतें, कोई और न सके खोल।
सो भी आतम ने यों जानिया,ए जो स्यामा जी कहे थे बोल।।

खि. १/२३,२६

दुनियां चौदे तबक में, काहू खोली नहीं किताब।
साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब।।

खि ११/७३

मोहे दिल में ऐसा आइया, ए जो खेल देख्या ब्रह्मांड।
तो क्या देखी हम दुनियां , जो इनको न करें अखंड।।

कि.६६/१६

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।
मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।

प. २/१२

लिख्या यों फुरमान में, सब आवेंगे पैगंमर।
जासी जलती दुनियां सबपे, कोई सके न मदत कर।।
आखिर महंमद छुड़ावसी, और आग न छूटे किन से।
सब जलें आग दोजख की, ए लिख्या जाहेर फुरमान में।।

श्रृं. १/३७,३८

खिताब हादी सिर तो हुआ, जो फुरमान और न कोई खोलत।
हक कदम हिरदे मोमिनों, जो असल हक निसबत।।

श्रृं. ७/७

ए सब हक रसनाएं किया, इलम प्यारा लग्या सबन।
सो इलमें आरिफ पूजें मोहे, असल अर्स में हमारे तन।।

श्रृं १६/५४

बका तरफ कोई न जानत, ए जो चौदे तबक।
सो रात मेटके दिन किया, पट खोल अर्स हक।।

श्रृं. २१/६

ए वेद कतेब पुकारहीं, कोई पोहोंच्या न अपनी अकल।
बिना हादी गोते खावहीं, जो तन मोमिन अर्स असल।।

मा.सा. ४/८७

करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान।।

सं. ३६/१८

१८. वाणी की महत्ता

साथ को घरों ले जाना सही, कोई माया में ना सके रही।
खैंचे सबों को ए बानी, फिरसी घरो धनी पेहेचानी।।

प्र.हि. ६/६

सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, जबरूत या लाहूत।
इत जरा सक कहूं ना रही, ए बल कुंजी कूवत।।
महामत कहे ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम।

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम।।

सा. १३/५०,५३

लखमीजी तहां श्रोता भई, कई विध कसनी कर कर रही।
तो भी न पाया एक वचन, तुम धाम धनी ले बैठे धन।।

प्र.हि. २९/६४

महंमद नूर है हक का, कुल सैयन महंमद नूर।
इन झण्डे कौल महंमद के, आखिर किया चाहिए जहूर।।
लैलत कदर बीच मोमिनों, आए खोली रूह नजर।
हक इलम ले रूहअल्ला, करी इमामें फजर।।

मा.सा. १६/५,६

चसमें पहाड़ जारी करे, चसमें कायम पानी भरे।
कह्या जिमी ए बादल पानी, जिनसे साबित भई जिंदगानी।।

ब.क्या. ८/७१

ए इसारतें हक मुसाफ की, पाइए खुले हकीकत मारफत।
ए हक इलमें पाइए मेहेर से, जो होए मूल निसबत।।
ए अर्स गुझ बिना लदुन्नी, क्यों कर बूझ्या जाए।
हक खिलवत बातें गैब की, दें अर्स दिल मोमिन बताए।।

मा.सा. १६/५,६

सकसुभे क्योंए भाजे नहीं, हक इलम बिन।
ना तो मिलो सब आदमी, या देव फरिस्ते जिंन।।

मा.सा. १७/३४

सेहेरग से नजीक हक अर्स, बीच हक इलम देवे बैठाए।
ऐसा इलम लदुन्नी, रूहअल्ला ले आए।।

मा.सा. १७/११७

नूर सागर सूर मारफत, सब दिलों करसी दिन।
रात गुमराही कुफर मेट के, करे चौदे तबक रोसन।।

मा.सा. ४/७१

जब हक इलमें मारफत खुली, तब देख्या बका अर्स सूर।

सो सूर हुआ सिर सबन के, बरस्या बका हक नूर।।
मा.सा. १३/२२

या बानी के कारने, कई करे त पसन।
या बानी के कारने, कई पीवें अगिन।।
या बानी के कारने, कई दमे देह।
या बानी के कारने, कई करें कष्ट सनेह।।
या बानी के कारने, कई गले हेम।
या बानी के कारने, कई लेवे अंनसन नेम।।
या बानी के कारने, कई भैरव झंपावे।
या बानी के कारने, तिल तिल देह कटावे।।
या बानी के कारने, कई संधान सारे।
या बानी के कारने, कई देह जारे।।
या बानी के कारने, करें कई बिध ताब।
सो मुख थें केते कहूं, हुए जो बिना हिसाब।।
किन एक बूंद न पाइया, रसना भी वचन।
ब्रह्मांड धनियों देखिया, जो कहावें त्रैगुन।।
प्र.हि. ३१/ ६५,६६,६७,६८,६६,१००,१०१

उड़्यो अंधेर काढ़्यो विकार, निरमल सब होसी संसार।
ए प्रकास ले धनी आए इत, साथ लीजो तुम मांहें चित।।
प्र.हि. ३३/३०

सत जो ढांप्या ना रहे, उड़ाय दियो अंधेर।
नूर पिया पसरे बिना, क्यों मिटे दुनियां फेर।।
ए जो सब्द खसम के, जिन तुम समझो और।
आद करके अबलों, किन कह्या ना पिया ठौर।।
ए अकथ केहेनी खसम की, काहूं ना कथियल कोए।
जो किनका कथियल कहूं, तो पिया वतन सुध क्यों होए।।
क.हि. १०/ ६,१०,११

ए बानी तो करूं जाहेर, जो करना सबों एक रस।

वस्त देखाए बिना, वैराट न होवे बस।।

क.ह. २३/८३

एक कह्या न जावहीं, दो भी कहिए क्यों कर।
भेले जुदे जुदे भेले, माएने मुसाफ इन पर।।
ऐसे माएने गुझ कई, तिन गुझों में भी गुझ।
ए माएने अपने आप बिना, और न काहूं सुझ।।

स. १/४,५

ए नूर बका किने ना पाइया, कर कर गए सिफत।
ए सुध नूर बका को नहीं, जो तैं पाई न्यामत।।

खि. ६/१०

इलम हक और दुनी का, कही जाए ना तफावत।
ए सुकन सुन रूह मोमिन, आवसी अर्स लज्जत।।

खि.६/२३

हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें।।

खि. १०/३३

सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इस्क।।

खि. १३/५०

बातून खुले ऐसा हु आ, सेहेरग से नजीक हक।
तुम बैठे बीच अस ॅ के, कदम तले बेसक।।

खि. १३/५३

त्रिलोकी त्रैगुन में, कहूं नाहीं बेसक इलम।
सो हकें भेज्या तुम ऊपर, ए देखो इस्क खसम।।

श्रृं. २/३५

रूहें भूलियां खिलवत खेल में,ताए रूहअल्लाह इलम ल्यावत।
सो कायम करे त्रैलोक को, जो असल हक निसबत।।

श्रृं. ७/८

जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुन जीव गोते खाए।
दम ख्वाबी बानी वाहेदत की, सुनते ही उड़ जाए।।

श्रृं. १३/३६

१९. श्री राजजी के चरणो की महिमा

जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुध जी पोहोंचे तित।
मेरे हिरदे चरन धनी के, इनें ए फल पाया इत।।

प्र.हि. २०/१५

चरन ग्रहों नूर जमाल के, जिनने अर्स किया मेरा दिल।
सो बयान करत है हुकम, हक सुख लेसी मोमिन मिल।।

श्रृं. २/४२

ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल माहें।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन,आई न्यामत हक हैं जांहें।।

श्रृं. ३/४

आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन।
एह जुदागी क यों सहे, रूह बिना अपने तन।।

श्रृं. ३/१

फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट।।

श्रृं. ६/१

२०. जीव के वल्लभ श्री कृष्ण है आत्मा के नहीं

बड़ी मत सो कहिए ताए, श्री कृष्ण जी सों प्रेम उपजाए।
मत की मत तो ए है सार, और मत को कहूँ विचार।।

प्र.हि. २१/५

२१. चाकला मंदिर का प्रमाण

वारने जाऊं बनराए वल्लभ की, जाकी सुख सीतल छाया।
देखो ए बन गुन भव औखदी, देखे दूर जाए माया।।
जाऊं वारने आंगने बेलूं, जित ले बैठो संझा समें साथ।
बातें होत चलने धाम की, घर पैंड़ा देखाया प्राणनाथ।।
भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज।
जहां बैठो उठो पाँउ धरो, धनी मेरे श्री राज।।
बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार।
वारने जाऊं इन जिमी के, जहां बसत मेरे आधार।।
बलि जाऊं पाटी पलंग सिराने, चादर सिरख तलाई।
पौढ़त पिउजी ओढ़त पिछौरी, ऊपर चंद्रवा चटकाई।।
बल बल जाऊं मैं दुलीचा चाकला, बल जाऊं मंदिर के थंभ।
जिन थभों कर धनी अपने, जुगतें दिए बंध।।
बैठत हो जित महाबलिया, बल बल जाऊं ठौर तिन।
साथ सबेरा आए के बैठत, करो धाम धनी बरनन।।
देखत मंदिर में कई बिध, वस्त सकल पूरन।
टूक टूक कर वार डारों, मेरे जीव के और तन।।
सेवा करत बाई हीरबाई, उछव रसोई जित।
अंतरगत तुम नित आरोगो, मैं बल बल जाऊं तित।।

प्र.हि. २३/ १,२,३,४,५,६,७,८,१३

२२. शुकदेव जी भागवत लाये

फुरमान दूजा ल्याया सुकदेव, सो ढांप्या था एते दिन।
सो प्रगट्या अपने समें पर, हुआ हिंदुओं में रोसन।।

खु. २/४५

कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं ना सुनी।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी।।
नौतन पुरी भली पेरे, चितसों चरचानी।
साथी जो बेहद के, तिनहूं पेहेचानी।।

बेहद वाट देखावहीं, पिउ आए के पास।
तारतम ले आए धनी, ए जोत उजास।।
जाहेर हुई जो साथ में, देखो रास प्रकास।
तारतम वानी वतन की, जिन कियो तिमर सब नास।।
तामे फल श्री भागवत, सुकजी मुख भाख।
पाती ल्याया बेहद की, साथ की पूरी साख।।
ना तो ए क्यों ऐसे वरनवे, क्यों कहे पंच अध्याई।
ए रस छोड़ और वचन, मुख काढ्यो न जाई।।
होवे अस्कंध द्वादस थें, इत कोट गुने।
पर क्या करे आग्या इतनी, बस नांहीं अपने।।
ए तो कोहेड़ा हद का, बेहदी समाचार।
ए देखावें हम जाहेर, साथ को खोल द्वार।।
सुकजी इत ले आइया, बेहद के बोल।
फेर टालो अंदर क ा, देखो आंखां खोल।।

प्र.हि. ३१/ ५,२०,२१,२२,२४,६७,६२,७७,७८

और एक कागद काढ़िया, सुकदेवजी का सार।
हदियों का कोहेड़ा, बेहदी समाचार।।

क.हि. १८/६

अछर केरी वासना, कहे जो पांच रतन।
कागद ल्याया बेहद का, सुकदेव मुनी धंन धंन।।

क.हि. २३/६३

फुरमान एक दूसरा, सुकजी ल्याए भागवत।
ए खोल सके न त्रैगुन, यामें हमारी हकीकत।।

खु. ८/१०

२३. नरसैंया का विषय

नरसैयां इन पेंडे खड़ा, लीला बेहद गाए।
बल करे अति निसंक, मिने पैठ्यो न जाए।।
जो बल किया नरसैऐं, कोई करे ना और।

हद के जीव बेहद की, लीला देखी या ठौरा।।
नरसैयां दौड़्या रस को, वानी करे रे पुकार।
रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे चार।।
द्वारने इन बेहद के, लेहेरें आवें सीतल।
सो इत खड़ा लेवहीं, रस की प्रेमल।।
इन दरवाजे नरसैयां, प्रेमें लपटाना।
लीला पीछले साथ में, सुख ले समाना।।
लीला सुकें बरनन करी, बृज रास बखाना।
बेहद की बानी बिना, ठौर ठौर बंधाना।।

प्र.हि. ३१/ ५५,५६,५७,५८,५९,६०

२४. जीव और मन

यों धोखा रह्या सब मांहें, समझ काहूं ना परी क्यांहें।
अब समझाऊं देखो बानी, दूध विछोड़ा कर देऊँ पानी।।
जो तुमें साख देवे आतम, तो सत माएने जानो तारतम।
इन अंतर देखो उजास, या जीव को बड़ो प्रकास।।
चौदे लोक उजाला करे, जो निज वतन दृष्टें धरे।
याको नूर सदा नेहेचल, नेक कहूँगी याको आगे बल।।

प्र.हि. ३२/ १६,१७,१८

२५. रास का वर्णन तारतम में है भागवत में नहीं

अब सुकजी की केती कहूँ बान, सार काढ़ने ग्रह्यो पुरान।
सबको सार कह्यो ए जो रास, ए जो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास।।
अब कहूं इन रास को सार, जो तारतम वचन है निरधार।
तारतम सार जागनी विचार, सबको अर्थ करसी निरवार।।
निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार।
अछर पार घर अछरातीत, धाम के यामें सब चरित्र।।
इत ब्रह्मलीला को बड़ो विस्तार, या मुखथें कहा कहूँ प्रकार।

ए तारतम को बड़ो उजास, धनी आएके कियो प्रकास।।
प्र.हि. ३३/२५,२६,२७,२८

२६. तारतम का सार

अब सुकजी की केती कहूँ बान, सार काढ़ने ग्रह्यो पुरान।
सबको सार कह्यो ए जो रास, ए जो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास।।
अब कहू इन रास को सार, जो तारतम वचन है निरधार।
तारतम सार जागनी विचार, सबको अर्थ करसी निरवार।।
निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार।
अछर पार घर अछरातीत, धाम के यार्में सब चरित्र।।
प्र.हि. ३३/ २५,२६,२७

ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी तारतम को फल।
तारतम फल जागिए इन घर, कहे महामती ए हिरदे धर।।
प्र.हि. ३४/२४

२७. प्रेम और सेवा का महत्व

कहे इंद्रावती सुंदरबाई चरनें, सेवा पिउ की प्यार अति घने।
और कछू ना इन सेवा समान, जो दिल सनकूल करे पेहेचान।।
प्र.हि. २४/२५

सनेहसों सेवा कीजो धनी, घर की पेहेचान देखियो अपनी।
तुम प्रेम सेवाएँ पाओगे पार, ए वचन धनी के कहे निरधार।।
प्र.हि. ३४/१६

जिन सुध सेवा की नहीं, ना कछू समझे बात।
सो काहे को गिनावे आप साथ में, जिन सुध ना सुपन साख्यात।।
कि. ६३/१

कई सेवें धनीय को, करके प्रेम सनेह।
हम सैयों को पेहेचान पेड़ की, होसी धाम में धंन धंन एह।।

कि. ७७/६

कैयों जनम सुफल किए, ऐसा पिउ का समया पाए।
सेवा सनमुख जनम लों, लिया हुकम सिर चढ़ाए।।

कि. ७८/८

पतिव्रता पणे सेविए , न थाय वेस्या जेम ।
एक मेलीने अनेक कीजे , तेणी थाय धणीवट केम।।

कि. १२८/४४

सनेहसों सेवा कीजो धनी, घर की पेहेचान देखियो अपनी।
तुम प्रेम सेवाएँ पाओगे पार, ए वचन धनी के कहे निरधार।।

प्र.हि. ३४/१६

२८. नये सुन्दरसाथ के लिये प्रकास वाणी है–

पीछला साथ आवेगा क्योंकर, प्रकास वचन हिरदे में धर।
चरने हैं सो तो आए सही, पर पीछले कारन ए बानी कही।।
आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास।
एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं ।।

प्र.हि. ३४/२०,२१

२९.श्री कृष्ण की पहचान

बार मासना पख चौवीस, तेना त्रणसे ने साठ दिन।
त्रणसे ने साठ वचे रात थई, तमे हजिए न सुणो वचन।।
एक दिन रात मांहें साठ घडी, एक घडी मांहें साठ

पाणीवल।

एक पाणीवल मांहें साठ पल थाय, तमे एवडा रूसणा कीधां सवल।।

ख. ७/८,६

वचन कहे वसुदेव को, फिरे बैकुंठ अपनी ठौर।
पीछे प्रगटे दोए भुजा, सो सरूप सनंध और।।
वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार।
सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार।।
इनमें भी है आंकड़ी, बिना तारतम समझी न जाए।
सो तुम दिल दे समझियो, नीके देऊं बताए।।
सात चार दिन भेख लीला, खेले गोवालों संग।
सात दिन गोकुल मिने, दिन चार मथुरा जंग।।
धनक भान गज मल मारे, तब हुए दिन चार।
पछाड़ कंस वसुदेव छोड़े, या दिन थें अवतार।।

क.हि. १८/,१३,१४,१६,१८,१६

इन जुबां क्यों कहूं बड़ाई, तुमें सब्द ना पोहोंचे कोए।
जो कछू कहूं सो उरे रहे, ताथे दुख लागत है मोहे।।

प्र.हि. २३/१६

लोक जाने आए असुरों कारन, विष्णु कृष्ण देह धर पूरन।
ए हुकमें असुर कई देवे उड़ाए, ऐसा बल हैं बैकुंठराए।।
क्या समझें लोक अंदर की बात, दिखलावने लखमीजी को आए साख्यात।
उठ बैठे श्री कृष्णजी पूरन किया काम, यों लखमीजी की भानी हाम।।
रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने।
धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथको बुलावन आए।।

प्र.हि. २६/ ५६,५७,६२

मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस।।
दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अछर जोस धनी ध
ाम।
ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले आनंद
घन।।
आय जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्री कृष्णजी को अति चिंता
भई।
यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णुमय भए निरध
ार।।

प्र.हि. ३७/२६,३०,६१

अंतराए नहीं एक खिन की, अखंड हम पे उजास।
रास लीला श्रीकृष्ण गोपी, खेले सदा अविनास।।

क.हि. १६/६

बताए देऊं बिध सारी, बृज बस्यो जिन पर।
अग्यारा बरस लीला करी, रास खेल के आए घर।।
गोकुल जमुना त्रट भला, पुरा ब्यालीस बास।
पुरा पासे एक लगता, ए लीला अखंड विलास।।
बास बस्ती बसे घाटी, तीन खूने गाम।
कांठे पुरा टीवा ऊपर, उपनंद का ए ठाम।।
तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर।
इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर।।
पुरा पटेल सादूल का, बसे तरफ दूजी ए।
तरफ तीसरी वृखभानजी, बसे नाके तीनों ले।।
नंदजी के पुरे सामी, दिस पूरव जमुना त्रट।
छूटक छाया वनस्पति, बृध आड़ी डालों बट।।
सकल बन छाया भली, सोभित जमुना किनार।

अनेक रंगे बेलियां, फल सुगंध सीतल सार।।
तीन पुरे तीन मामों के, बसे ठाट बस्ती मिल।
आप सूरे तीनों ही, पुरे नंद के पाखल।।
गांगा चांपा और जेता, ए मामा तीनों के नाम।
दखिन दिस और पछिम दिस, बसे फिरते गाम।।
क.हि. १६/ ११,१२,१३,१४,१५,१६,१७,१८,१६

आए मिलो रे वैष्णव पारखी, तुम देखियो विचारी सब अंग।

टीका वल्लभी बानी सुकदेव की, ताके एक अखर को न कीजे भंग।।

इत वृन्दावन रास लीला रातडी अखंड, खेलें पिउ गोपी जन।

तो ऊधव संदेसे किन पर लाइया, कहो किनने किए रुदन।।

इत रात अखंड सो तो टाली न टले, भी कहया आगे ऊग्या रे दिन।

सखियां पिउ उठे सब घर से , ए घर कौन रे उतपन।।

बृज अखंड ब्रह्मांड में हुआ, विचार देखो रे बुधवंत ।

एक रंचक न राखी चौदे लोक की, महाप्रले कहयो ऐसो अंत।।

बृज ने रास अखंड कहे प्रगट, सो तो नित नित नवले रंग।

एक रंचक रहे जो ब्रह्मांड की, तो टीका को होवे रे भंग।।

रात दिन अखंड कहे बृज में, दिन नाहीं वृन्दावन रास।

रात अखंड लीला खेलहीं, दोऊ कैसे अखंड विलास ।।

बृज रास लीला दोऊ नित कही, खेलें दोऊ लीला बाल किसोर।

तो मथुरा आए कंस किनने मारया, कौन भई तीसरी लीला और।।

कहो के भूल्या टीका करता, के भूले तुम अर्थ।

सो जुबां काटिए जो टीका को टेढ़ा कहे, तुम भूले करत अनर्थ।।

तुम आंकडी न पाई इत अखंड कहया, तोए न खुले रे द्वार।

तुम समझे नहीं बानी सुकदेव की, तो हिरदे रह्यो रे अंध ाकार।।

अर्थ टीका का जो तुम पाया होता, तो अंधेर को होत नास।

अनेक ब्रह्माण्ड जाके पल थें उपजे, ताको देखत इत उजास।।

तुमको बल जो खुल्या होता इन बानी का,तो भटकत नहीं रे भरम।

इतथें देखो अखंड लीला प्रगट, तब समझत माया को मरम।।

तुम सब मिल दौड़े अखंड सुखको, सुन प्रेम टीका के वचन।

अर्थ पाए बिना प्रेमें ले पटके, कहूं उलटाए दिए रे अगिन।।

इन बृज रैन को ब्रह्मा बोहोत तलफया, पर पाई नहीं रे निरवान।

सो सुखे तुम कैसे पाओगे, देखो अपनी चाल के निसान।।

ए झूठा भवजल अथाह कह्या, ताको पार न पायो किन क्यांहें।

याको गौपद बच्छ गोपी कर निकसी,सो पार जाए मिलियां अखंड मांहें।।

अब केता कहूं तुमको जाहेर, ए अर्थ प्रगट कह्यो न जाए।

निघात डारे छोड़ लज्या अहंकार, नेहेचल सुख दीजे रे ताए।।

कि. १३/ ५,६,७,८,६,१०,११,१२,१३,१४,१५,१६,१७,१८,१६

हम संग खेलें कई रंगे, जाते जमुना पानी।
आठों पोहोर अटकी अंगे, एक छब एह बानी।।
घर घर आनंद उछव, उछरंग अंग न माए।
विलास विनोद पिया संगे, अह निस करते जाए।।
सुंदर बालक मधुरी बानी, घर ल्यावें गोद चढ़ाए।

सेज्याऐं खिन में प्रेमें पूरा, सुख देवें चित चाहे।।
बाछरू ले बन पधारे, आठवें दसवें दिन।
कबूं गोवरधन फिरते, मांहें खेलें बारे बन।।
अखंड लीला अहनिस, हम खेलें पिया के संग।
पूरे पिउजी मनोरथ, ए सदा नवले रंग।।
श्री राज बृज आए पीछे, बृज वधू मथुरा ना गई।
कुमारका संग खेल करते, दान लीला यों भई।।

क.हि. १९/ ४०,४१,४२,४३,४४,४५

इत खेलत स्याम गोपियां, ए जो किया अर्स रूहों विलास।
है ना कोई दूसरा, जो खेले मेहेबूब बिना रास।।

सनंध ३९/१३

३०. संसार को ठगने के लिये

अर्थ आडे कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल।
अखरा अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल।।
जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत।
सो अर्थ दृढ क्यों होवही, जो एती तरफ फिरत।।
सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने को टुकड़े होए।
आपसमें जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए।।

क.हि. १७/ १०,११,१२

३१. व्यास की बुद्धि के प्रमाण

सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने को टुकड़े होए।
आपसमें जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए।।
ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान।
त्रास स्वांत न होवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान।।
ए बानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान।
सो खेंचा खेंच ना छूटहीं, लिए क्रोध गुमान।।
ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़।

बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़।।
सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नही पंडित।।
एक अर्थ न कहें सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान।।
ए खेल जाको सोई जाने, दूजा खेल सारा छल।
ए छल के जीव न छूटे छल थें, जो देखो करते बल।।
एक उरझन वैराट की, दूजी वेद की उरझन।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन।।

क.हि. १७/ १२,१३,१४,१५,१६,१७,१८,१६

वेद पुराण भारथ सहू बांध्या, त्यारे दाझ रूदे मा समाणी।
ततखिण आव्या गुर जी पासे, बोल्या नारदजी वाणी।।
घणी खंडनी कीधी व्यासजी नी, पूरी वचनोने श्रवणा न दीधी।
वाणी सर्वे नाखी उडाडी , अवतारनी लाज न कीधी।।
सवला रोस भराणां रिखी जी , जोई व्यास वचन।
सास्त्र सर्वे बांधीने , ते वोल्या बूडता जन।।
वैराट धणी ज्यारे नव लाध्यो, त्यारे कां ना रह्यो तूं गोप।
विश्व विगोई स्या माटे , तें उलटा वचन कही फोक।।
विसमां वचन देखी व्यासजीना, पूरी ते दृष्ट चढ़ावी।
श्री कृष्ण जी विना बीजूं सर्वे मिथ्या,एम कह्यूं समझावी।।
वचन तणों अहंमेव व्यासजीनों, नाख्यो ते सर्व उडाडी।
दया करीने खंडनी कीधी , दीधी आंख उघाडी।।
तेणे समें कह्यूं नारदजीएं, न वले जिभ्या मारी एम।
कठण वचन कह्या व्यासजीने, में केम केहेवाय तेम।।
आटलूं पण हूं तोज कहूं छूं ,रखे केणे अजाण्यूं जाय।
आ दुनियां भेला साध तणाय,त्यारे सूं करुं में न रेहेवाय।।

हाकली गुरगम दीधी नारदजीएं, ते लई व्यास घर आव्या।
सार वचन लई ग्रन्थ सघलाना , रदे ते माहें समाव्या।।
सार तणो विचार करीने , बांध्या द्वादस स्कंध।
त्यारे ठरयो रदे एणे वचने , मन पाम्यो आनन्द।।
उदर सुकजी उपना , अने आंहीं उपनूं भागवत।
व्यासे वचन कही प्रीछव्या , ग्रही परसव्या संत।।
सारनूं सार थयूं भागवत, वचन थया विवेक।
वली अमृत सीच्यूं सुकदेवें , तेणे थयूं रे विसेक।।
अहनिस अर्थ करे समझावे, केहनो रंग न पलटो थाय।
बेहेराने कालो संभलावे ,बांध्या ते माटे जाय ।।

कि. १२६/
१०१,१०२,१०३,१०४,१०५,१०६,१०७,१०८,१०६,११०,१११,११२,११६

भट जी चोखूं तमने केम कहे , जेणे माड्युं ए ऊपर हाट।
सूथी देखाडे संजमपुरी , तमे अपगरो एणी वाट।।

कि. १२८/३८

३२. कलियुग की पहचान

दैत ऐसा जोरावर, देखो व्याप रह्या वैराट।
काम क्रोध अहंकार ले, सब चले उलटी बाट।।
वैराट सारा लोक चौदे, चले आप अपनी मत।
मन माने खेलें सब कोई, ग्रास लिए असत।।

क.हि. १८/२८,३०

३३. आशिक माशूक

रूहों कह्या हक हादीय सों, हम तुमारे आसिक।
तुम हमारे मासूक, इनमें नाहीं सक।।
तब कह्या बड़ीरूहने, इस्क मेरा ताम।
हक रूहों की मैं आसिक, मेरा याही में आराम।।

तब हकें कह्या हादी रूहों को, तुम मासूक मेरे दिल।
इत इस्क मेरा पाए ना सको, जो सहूर करो सब मिल।।
मा.सा. १/ २४,२५,२६

आसिक कहावे आपको, फेरे बोलावना भरतार।
जाए न बोलाई खसम की, सो और बे-एतबार।।
गुझ मासूक का आसिक, सो केहेना न कासों होए।
जो कई पड़े कसाले, तो बाहेर माहें रोए।।
एक तो गुझ जाहेर किया, और गैयां न बोलावते सोए।
ऐसी एक भी कोई ना करे, सो आपन करी दोए।।
सिं. १४/१८,१६,२०

करवट लेते सूते नींदमें, नाला मारत जे।
याद बिगर किए अंग आवहीं, स्वाद आसिक मासूक के।।
छो. क्या. १/४३

मीठा गुझ मासूक का, काहूं आसिक कहे न कोए।
पड़ोसी पण ना सुनें, यों आसिक छिपी रोए।।
आसिक कहिए तिन को, जो हक पर होए कुरबान।
सौ भंतें मासूक के, सुख गुझ लेवे सुभान।।
जो पड़े कसाला कोटक, पर कहे न किनको दुख।
किसी सों ना बोलहीं, छिपावे हक के सुख।।
गुझ सुख लेवे हक के, रहे सोहोबत मोमिन।
अपना गुझ मासूक का, कबूं कहें न आगे किन।।
तिन आगे भी ना कहे, जो हक के खबरदार।
पर कहा कहूं मैं तिनको, जो बाहेर करें पुकार।।
हक बोलावें सरत पर, आपन रेहेने चाहें इत।
लेवें गुझ मासूक का, कहें दुनियां को हकीकत।।
सिंधी १४/७,८,६,१०,११,१२

आसिक कहावे आपको, फेरे बोलावना भरतार।
जाए न बोलाई खसम की, सो और बे-एतबार।।

गुझ मासूक का आसिक, सो केहेना न कासों होए।
जो कई पड़े कसाले, तो बाहेर माहें रोए।।
एक तो गुझ जाहेर किया, और गैयां न बोलावते सोए।
ऐसी एक भी कोई ना करे, सो आपन करी दोए।।

सिंधी १४/१८,१६,२०

जाहेर कीजे माएने, काजी एह कजाए।
पेहेचान आसिक मासूक की, भी नीके देऊं बताए।।
जिन कोई कहे पट बीचमें, मासूक और आसिक।
कबूं आसिक परदा ना करे, यों कह्या मासूक हक।।
परदा आड़ा मासूक, कबूं आसिक करे ना कोए।
आसिक मासूक तब कहिए, एक अंग जब होए।।
ना न्यारा आसिक मासूक, ए तो एकै किया प्रवान।
तो बीच कह्या क्यों फरिस्ता, जो जाए आवे दरम्यान।।

स. ३६/५५,५६,५७,५८

तो कहया मासूक महंमद, आसिक अपना नाम।
बाध्यां आप हुकम का, केहेवत यों कलाम।।

स. ३६/६४

मासूक आसिक दोऊ जाने दुनी, हक मोमिन मांहें खिलवत।
उतरी अरवाहें अर्स से, तो भी पढ़े न पावें वाहेदत।।

खु. १/८२

कई अवतार किताबाँ कर, बहु ग्यानी कहावें तीर्थंकर।
औलिए अंबिए पैगंमर, हक की नाहीं कहूं खबर।।

खु. १८/११

आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम।
इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम।।

खि. १५/१

आगूं आसिक ऐसे कहे , जो माया थें उतपन।

कोट बेर मासूक पर , उड़ाए देवें अपना तन।।

कि. ६१/१

नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग।
दुगदुगी कलंगी ए जोत, छबि रूह हिरदे रही लाग।।
होए बरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम।
एक अंग छोड़ जाए और लगे, सो नाहीं आसिक को काम।।

सा. ५/१३१

हकें सुख अर्स देखाइया, इलम दे करी बेसक।
हम क्यों रहें इन मासूक बिना, जो कछुए होए इस्क।।

प. २२/१२

मासूक तुमारी अंगना , तुम अंगना के मासूक।
ए हुकमें इलम दृढ़ किया, अजूं रूह क्यों न होत टूक टूक।।

श्रृं. २/४५

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।।

खि.१३/१

तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवे हक।
बोहोत प्यारी बड़ीरूह मुझे, मैं तुमारा आसिक।।

खि.१३/७

आसिक कबूं ना अटके , करत अंग कुरबान ।
ना जीव अंग आसिक के , जीव पिउ अंग में जान।।
अंग आसिक आंगू हीं फना, जीवत मासूक के माहें।
डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए।।

तो अंग आधा अरधांग , मासूक का आसिक।

तो दोऊ तन एक भए , जो इस्क लाग्या हक।।

सोई ९कहावत आसिक , जिन अंग जोस फुरत ।

अहनिस पिउ के अंग में , रेहेत आसिक की सुरत।।

कि. ६१/११,१२,१३,१४

मासूक की नजर तले , आठों जाम आसिक

पिए अमीरस सनकूल , हुकम तले बेसक ।।

न्यारा निमख न होवहीं , करने पड़े न याद।

आसिक को मासूक का , कोई इन विध लाग्या स्वाद।।

रोम रोम बीच रमि रह्या , पिउ आसिक के अंग।

इस्कें ले ऐसा किया , कोई हो गया एकै रंग ।।

इन जुबां इन आसिक का , क्यों कर कहूँ सो बल।

धाम धनी आसिक सों , जुदा होए न सकें एक पल।।

कि. ६१/१५,१६,१७,१८

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन।।

सा. ५/२६

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रूच रूच के, एही तुमारा विश्राम।।

सा.८/१

एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए।
ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए।।
एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए।।
जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए।
एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए।।

सा.८/२८,२६,३०

जो खेलें झीलें चेहेबच्चे, जल फुहारे उछलत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।

श्रृं.८/४५

आसिक इ न चरन की, आसिक की रूह चरन।
एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन।।
ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक।।
असल अरवाहें अर्स की, जो हैं रूह मोमिन।
एक निसबत जानें हक की, जिनों मासूक प्यारे चरन।।

श्रृं. ३/१,५,६

जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान।
हकें मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या माहें फुरमान।।

श्रृं.२०/७२

इस्क बोले सुनें इस्क, सब इस्कै की बिसात।
जो गुझ दिल मासूक की, सो आसिक से जानी जात।।
मोमिन आसिक हक के, सो हक की जानें दें खबर।
हकें तो किया अर्स अपना, जो थे मोमिन दिल इन पर।।

आसिक मासूक दो अंग, दोऊ इस्कें होत एक।
तो आसिक मासूक के दिल को, क्यों ना कहे गुझ विवेक।।
तो मोमिनों दिल अपना, जीवते अर्स केहेलाया।
जो इस्क मासूक के दिल का, ऊपर सरूपै देखें पाया।।
श्रृं.२०/१०१,१०४

जैसा केहेत हों हक को, यों ही हादी जान।
आसिक मासूक दोऊ एक हैं, ए कर दई मसिएं पेहेचान।।
जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग।
हक खिन में कई रूप बदलें, याही विध हादी रंग।।
श्रृं.२१/११५,११६

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन।।
श्रृं.२२/२

ए हुकम तिन मासूक का, जो आप उलट हुआ आसिक।
सो हुकम विरहा ना सहे, बिना मासूक एक पलक।।
श्रृं.२४/२४

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हक इस्क बोले बेसक।
इस्क रब्द वाहेदत में, हक उलट हुए आसिक।।
श्रृं.२८/४४

मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल।
मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल।।
श्रृं.२९/२

सो तुम अजूं न समझे, मैं कर लिख्या मासूक।
ए सुकन सुन तुम मोमिनों, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक।।
श्रृं.२९/१५

दोस्त मेरे मोमिन, और मासूक हादी बेसक।
तो नाम लिख्या अपना, मैं तुमारा आसिक।।
तित पोहोंच्या मेरा मासूक, कई गुझ बातें करी हजूर।

सो फिरचा तुम रूहों वास्ते, आए जाहेर करी मजकूर।।
श्रृं.२६/२२,८४

आसिक न्हारे नजरे, मासूक वेठी रोए।
हेडी कडे उलटी, आसिक से न होए।।
सिंधी ७/२५

मासूक तुमारी अंगना , तुम अंगना के मासूक।
ए हुकमें इलम दृढ़ किया, अजूं रूह क्यों न होत टूक टूक।।
श्रृं. २/४५

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।।
खि.१३/१

तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवे हक।
बोहोत प्यारी बड़ीरूह मुझे, मैं तुमारा आसिक।।
खि.१३/७

आसिक कबूं ना अटके , करत अंग कुरबान।
ना जीव अंग आसिक के , जीव पिउ अंग में जान।।
अंग आसिक आंगू हीं फना, जीवत मासूक के माहें।
डोरी हाथ मेहेबूब के, या राखे या फनाए।।
तो अंग आधा अरधांग , मासूक का आसिक।
तो दोऊ तन एक भए , जो इस्क लाग्या हक।।
सोई कहावत आसिक , जिन अंग जोस फुरत ।
अहनिस पिउ के अंग में , रेहेत आसिक की सुरत।।

कि. ६१/११,१२,१३,१४

मासूक की नजर तले , आठों जाम आसिक।
पिए अमीरस सनकूल , हुकम तले बेसक ।।
न्यारा निमख न होवहीं , करने पड़े न याद।
आसिक को मासूक का , कोई इन विध लाग्या स्वाद।।
रोम रोम बीच रमि रह्या , पिउ आसिक के अंग।
इस्कें ले ऐसा किया , कोई हो गया एकै रंग ।।
इन जुबां इन आसिक का , क्यों कर कहूँ सो बल।
धाम धनी आसिक सों , जुदा होए न सकें एक पल।।

कि. ६१/१५,१६,१७,१८

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन।।

सा. ५/२६

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम।
सेज बिछाई रूच रूच के, एही तुमारा विश्राम।।

सा.८/१

एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए।
ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए।।
एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए।।
जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए।

एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए।।

सा.८/२८,२९,३०

जो खेलें झीलें चेहेबच्चे, जल फुहारे उछलत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।।

श्रृं.८/४५

आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन।
एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन।।
ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक।।
असल अरवाहें अर्स की, जो हैं रूह मोमिन।
एक निसबत जानें हक की, जिनों मासूक प्यारे चरन।।

श्रृं. ३/१,५,६

जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान।
हकें मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या माहें फुरमान।।

श्रृं.२०/७२

३४. श्री इन्द्रावती जी का सुन्दरसाथ से पांव पकड़ कर विनती करना।

इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी।।

प्र.हि. १/५

अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी।
चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी।।

प्र.हि. २/१६

चरनों लाग कहें इंद्रावती, गुन न देखे किन एक रती।
धनी जगाए के देखावसी गुन, तब हांसी होसी अति घन।।

प्र.हि. १२/५०

तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो बिखे रस लाग।
पांउ पकड़ कहे इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग।।
प्र.हि. १७/२१

सो देख के ना हुई चेतन , मूढ़मती अभागी।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांऊं लागी।।
कि. १०१/११

ए प्रगट बानी कही प्रकास की, इंद्रावती चरने लागे जी।
सो लाभ लेवे दोनों ठौर को, जाकी वासना इत जागे जी।।
प्र.हि. ३०/५३

श्री धामतणां साथ सांभलो, हूं तो कहूं छूं लागीने पाय।
जे रे मनोरथ कीधां आपणे, ते पूरण एणी पेरे थाय।।
रास. ४/२

रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माय।
इंद्रावती बाई कहे धामना साथने, हूं नमी नमी लागूं पाय।।
रास . ७/१२

३५. कुमारिकाओं की पहचान

कुमारका हम संग रेहेती, पिउ खेलते सखियन।
मूल सनमंध कुमारकाओं का, या दिन थें उतपन।।
अखंड लीला अति भली, नित नित नवले रंग।
इन जोतें सब जाहेर किया, हम सखियां पिया के संग।।
क.हि. १६/ ५०,५१

यों साथ पिछला आइया, इत इन दरवाजे।
मूल साथ फेर आवसी, ए किया जिन काजे।।
प्र.हि. ३१/४६

और कुमारका बृज वधू संग जेह, सुरत सबे अछर की एह।
जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नाहीं धाम।।
बेन सुनके चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार।

इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहें, अंग याके रास में नांहें।।

प्र.हि. ३७/३६,३७

३६. ब्रह्मसृष्टि की पहचान

एही गिरो पैगंमरों आखिरी, जिन लई महंमद बूंदें नूर।
ए सोई उतरे अर्स से, जिन किए कौल हजूर।।

मा.सा. १२/७८

वाहेदत भी इनको कहे, जो हादी हक जात।
त्यों नूर हादी का उमत, इन बीच और न समात।।
सुंनत जमात इन को कही, गिरो एक तन जुदी न होए।
ए हक इलमें बेसक हुए, याकी सरभर करें नारी सोए।।
वाहिद तन मोमिन कहे, एही जमात सुंनत।
एही फिरका नाजी कह्या, इनों हक हिदायत।
कुंन केहेते जुलमत से, कहे पल में पैदा मोहोरे खेल।
सो सरभर करें हक जात की, तो लटकाए गले में जेल।।
और गिरो महंमद मोमिनों, ए उन पर हुए मेहेरबान।
तो दोस्त कहे दुस्मनों, ए मोमिनों बड़ी पेहेचान।।
एही औलिया अंबिया, एही कहे हैयात।
दूजा हैयात जरा नहीं, बिना वाहेदत हक जात।।

मा.सा. १६/७,८,९,१३,१४,१५

जिन विध लिख्या कुरान में, हदीसों में भी सोए।
ए अर्स दिल मोमिन जानहीं, जो नूर बिलंद से उतर्‍या होए।।

छो.क्या. २/८१

एक लवा सुने जो वासना, सो संग न छोड़े खिन मात्र।
होसी सब अंगों गलित गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र।।
ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग।
सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग।।

क.हि. २३/ ५९,६०

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार।

सोहागिन आतम पिउ की, वतन पार के पार।।
अब कहूं नेक अंकूर की, जाए कहिए सोहागिन।
सो विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना ऐते दिन।।

क.हि. ६/ २३,२४

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे ना तन।।
ऊपर काहूं ना देखावहीं, जो दम ना ले सके खिन।
सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन।।
आकीन ना छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन।
प्यारी पिउ के कारने, जीव को ना करे जतन।।
रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल सोहागनी, कबहूं ना दुखावे किन।।

क.हि. ११/ ३,४,५,६

सोहागिनतोलों खोज हीं, जोलों पाइए पिउ वतन।
पिउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निसदिन।।
ओतो आगे अंदर उजली, खिन खिन होत उजास।
देह भरोसा ना करे, पिया मिलन की आस।।
विचार विचार विचारहीं, बेधे सकल संधान।
रोम रोम ताए भेदहीं, सब सब्द के बान।।
पार वतन के सब्द, अंग में जो निकसे फूट।
गलित गात सब भीगल, पिया सब्दें होए टूक टूक।।
खिन खेले खिन में हंसे, खिन में गावे गीत।
खिन रोवे सुध ना रहे, ए सोहागिन की रीत।।

क.हि. ११/ १०,११,१२,१३,१४

यों केती कहूं निसानियां, हैं हिसाब बिन।
पर ए मीठा लगसी मोमिनों, औरों लगसी सखत सुकन।।

मा.सा. ५/७

ए लछन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर।
ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं तत्पर।।
क.हि. १२/५

आसिक खुद खसम की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए बिध अर्स रूहन।।
रूह खसम की क्यों र हे, आप अपने अंग बिन।
पर हकें पकड़ी अंतर, ना तो रहे ना तन।।
सं. २२/२०,२१

फुरमान हाथों ना छूटहीं, जोलों पाइए हक वतन।
मासूक वतन पाए बिना, दरद ना जाए निसदिन।।
मोमिन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास।
देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस।।
सं. २२/ २८,२६

एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान।
खोलें हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
हरफ मुकता इनों वास्ते, रखे बातून मांहें फुरमान।
सो खासे करसी जाहेर, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
जो उतरे होवें अर्स से, रूहें तौहीद के दरम्यान।
सो लेसी अर्स अजीम को, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
सं. २३/८,६,२१

राह पकड़े तौहीद की, धरे महंमद कदमों कदम।
सो जानों दिल मोमिन, जिन दिल अर्स इलम।।
खु. १/१६

पेहेचान हक अर्स रूहन की, ए केहेते आवसी इस्क।
ए सुन रूहें ना सेहे सकें, बिछोहा अर्स हक।।
सं. ३६/६८

३७. रास खेल कर घर आये

बताए देऊं बिध सारी, बृज बस्यो जिन पर।
अग्यारा बरस लीला करी, रास खेल के आए घर।।

क.हि. १६/११

या ठौर लीला करके, हम घर आए सब मिल।
या इंड कल्पांत करके, फेर अखंड किए मिने दिल।।
हम तो सब धाम आए, अछर आपने घर।
अखंड रजनी रास लीला, खेल होत या पर।।
हमही खेले बृज रास में, हमही आए इत।
घरों बैठे हम देखहीं, एही तमासा तित।।

क.हि. २०/२५,२६,२७

३८. हम इकठ्ठे जागेंगे

भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर।
हम उठसी भेले सबे, जब जासीं हमारे घर।।

क.हि. २०/३४

३९. जागनी अभियान का कार्य

आवेस मुझपे पिया को, तिन भेली करूं सोहागिन।
सब सोहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन।।

क.हि. २१/१३

अब भेले तो सब चलिए, जो अंग न काहूं अटकाए।
तो तुमें होवे जागनी, जो सांचवटी बताए।।।

क.हि. २३/३८

ए गुसा किया मेरे जीव के सिर, ना तो और किवकी भांत कहूं क्योंकर।
आतम मेरी है अति सुजान, अछरातीत निध करी पेहेचान।।
अब सांचा तो जो करे रोसन, जोत पोहोंची जाए चौदे भवन।
ए समया तो ऐसा मिल्या आए, चौदे भवन में जोत न समाए।।
यों हम ना करे तो और कौन करे, धनी हमारे कारन दूजा देह धारे।
आतम मेरी निज धाम की सत, सो क्यों ना करे उजाला अत।।

प्र.हि. २१/२१,२२,२३

नैन चढ़ाए साथ न जागे, यों न जागनी होए।
मूल घर देखाइए, तब क्यों कर रेहेवे सोए।।
खंडनी कर खीजिए, जागे नहीं इन भांत।
दीजे आप ओलखाए के, यों साख देवाए साख्यात।।

क.हि.२३/६,१०

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।।

खि. १३/१

रोसन किल्ली दई हमको, यों कर किया हुकम।
खोल दरवाजे पार के, इत बुलाए लीजो सृष्टब्रह्म।।

प.२/१४

जो अरवाहें अर्स की, सो आए मिलेंगी तुझ।
तुझ अन्दर मैं आइया, ए केहे फुरमाया मुझ।।

प.३२/६

किन कायम अर्स न पाइया, ए गुझ रही थी बात।

अब तू उमत जगाए अर्स की, बीच बका हक जात।।
सो ढूंढ़ों प्यारी उमत, मेरे हक जात निसबत।
जो रूहें भूली वतन, ताए देऊँ हक बका न्यामत।।

प. ३२/ १०,१३

मोहे कह्या आप श्री मुख, तेरी अर्स से आई आतम।
तोको दिया अपनायत जानके, हक बका अर्स इलम।।

सि.१/४५

४०. साकुंडल साकुमार का आना

विलास तब विध विध के, होसी हरख अपार।
करसी आनंद विनोद, आवसी सकुंडल सकुमार।।
आए रहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड।।

क.हि. २१/१४,१५

पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ।
ए जिमी झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख।।
सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी प्रमान।
जगाए सुख देऊं धाम के, मिलाए मूल निसान।।

क.हि. २३/४४,४५

हित के के बुजरक आइया, जे नजीकी हक जा।
ए वडा दीन दुनी में, रूहें चाईन पातसा।।

सं. ३५/१६

मिल के साथ आवे दौड़ता, मिने सकुंडल सकुमार।
निजधाम से आई सखियां, जुथ चालीस सहस्त्र बार।।
खेलें मिल के रास जागनी, भेलें इहां से चौबीस हजार।
करसी लीला बरस दस तोड़ी, हांस विलास आनन्द अपार।।

कि. ५४/ १३,१४

साथ सुनो एक वचन , आवे बाई सकुंडल सकुमार।
रास खेल घर चलसी, भेले इन भरतार।।

कि. ५५/२६

४१. महाप्रलय का समय

आए रहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड।।

क.हि. २१/१५

तडे धणिए मूंके चयो, जे ब जण्यूं आईंन।
खिल्ले थ्यूं न्हारे रांद अडां, तांजे सांगाईंन।।
रूहअल्लाएं ईं चयो, पांण न्हारे कढ्यूं तिन।
पांण से न्हारे न कढ्यूं, आंऊं हुइस गाल में इन।।
आंऊं बेठिस हिनजे घर में, मूंके रख्याई भली भत।
केयांई सभे बंदगी, जांणी तोहिजी निसबत।।
ते लाएं पिरम आंऊं हेकली, मूं बी न गडजी कांए।
जे त ेजो दर उपटे, मूज्यूं आसडियूं पुजाए।।

सिंधी ५/१२,१३,२३,२८

ले चलसी सब साथ को, पार बेहद घर।
पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर।।
बैकुंठ जाए विष्णु को, सब देसी खबर।
विष्णु को पार पोहोंचावसी, सब जन सचराचर।।

प्र.हि. ३१/१७,१८

हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर।
बैकुंठ विष्णु जगावसी, बुध देसी सारी खबर।।
खबर देसी भली भांतें, विष्णु जागसी तत्काल।
तब आवसी नींद इन नैनों, प्रलेय होसी पंपाल।।

क.हि. २३/६७,६८

बरस पांच हजार पर, सात सै सैंतालीस।
होसी नेहेचल नूर नजरों, जित दिन हजार बरीस।।
अछर के दोए चसमें, नहासी नूर नजर।
बीसा सौ बरसों कायम, होसी वैराट सचराचर।।

सं. ४२/ ८,२४

४२. श्री प्राणनाथ जी सबको आवेश देंगे

हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर।।

क.हि. २१/१६

४३. श्री प्राणनाथ जी की मेहेर से एकरस होंगे

लेस है कालमाया को, बढ़्यो साथ में विकार।
सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार।।

क.हि. २१/१८

४४. ब्रह्मसृष्टि अभी परमधाम नहीं गयी है।

पीछला साथ आवेगा क्योंकर, प्रकास वचन हिरदे में धर।
चरने हैं सो तो आए सही, पर पीछले कारन ए बानी कही।।

प्र.हि. ३४/२०

भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर।
हम उठसी भेले सबे, जब जासी हमारे घर।।

क.हि. २०/३४

पौढ़े भेले जागसी भेले, खेल देख्या सबों एक।
बातां करसी जुदी जुदी, बिध बिध की विसेक।।

क.हि. २३/२६

ए नेक रखी रात खैंच के, सो भी वास्ते तुम।
ना तो लेते अंदर, केती बेर है हम।।

सं. ३८/६६

जब मुसाफ हादी गिरो चली, पीछे दुनी रहे क्यों कर।
खेल किया जिन वास्ते, सो जागे अपनी सरत पर।।

खुलासा. २/३३

महामत जागसी साथ जी भेले, जहां बैठे मिने दरबार।

हम उठ के आनन्द करसी झीलना, हंस हंस करसी सिनगार।।

कि. ५४/१६

४५. श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी

चांद सूरज दोऊ हादी कहे, म हंमदी सूरत।
कही गिरो सितारों की, खासलखास उमत।।

मा.सा. १६/१११

बुजरकी दलील फुरमाई, आदम पर बकसीस बड़ाई।
मेहेर करी ऊपर सूरत, इन मेहेर की करी न जाए सिफत।।
जो कह्या इन सेती नूर, सच्चे सूर कहावें जहूर।
इनका रंग है तकव्वल, सिर बिलंदी ताल सकल।।
एह बात ए पैदास कही, सो सिफत सब महंमद पर भई।
ए तीनों सिफतों भया रसूल, ए सजीवन मोती कह्या अमोल।।
इन मोती को मोल कह्यो न जाए, ना किनहूं कानों सुनाए।
सोई जले जो मोल करे, और सुनने वाला भी जल मरे।।
बाजे कहे साहेब इस्क, सबसे जुदा ए आदम हक।
जैसे जात पाक सुभान, एह मरातबा किया बयान।।
जो सिफत आदम की कही न जाए, तो महंमद की क्यों कहूं जुबांए।
ए दोऊ सिफत सरूप जो एक, तीसरा साकी इनमें देख।।

ब.क्या. ८/५१,५२,५४,५५,५६,५६,

रूहअल्ला रोसन ज्यादा कह्या, दूजा अपना नाम।
एक बदले बंदगी हजार, ए करसी कबूल इमाम।।

ब.क्या. ६/६

जो जाग बैठे धाम में, ताए आवेस को क्या कहिए।
तारत तेज प्रकास पूरन, तिनथें सकल बिध सुख लहिए।।
आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी।
आवेस जागनी तारत में, जो देखो जाग विचारी।।

क.हि. २३/ ४७,४८

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतार का क्या काम।
जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम।।
जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास।
तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास।।
समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन।
पुरूख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन।।

क.हि. १८/ ३८,३९,४०

लीला दोऊ पेहेले करी, दूजे फेरे भी दोए।
बिना तारतम ए माएने, न जाने कोए।।
एक में उपज्या तारतम, दूजे मिने उजास।
सब विध जाहेर होएसी, जागनी प्रकास।।

प्र.हि. ३१/ १२६,१२७

अवतार जो नेहेकलंक को, सो अस्व अधूरो रह्यो।
पुरूख देख्यो नहीं नैनों, तुरी को कलंकी तो कह्यो।।
अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए।
विकार काढ़े विस्व के, सब किए अवतार से सोए।।

क.हि. १८/ ३६,३७

आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नींद होए।
पर जो सुख दीसे जागनी, हम बिना न जाने कोए।।

क.हि. २३/४६

धंन पिया धंन तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई।
धंन धंन सखी मैं सोहागनी, जो मो में ए निध आई।।
ए बानी सबमें पसरी, पर किया न साथे विचार।
पीछे दया कर दई धनिएँ, अंग इंद्रावती विस्तार।।
तीन लीला माया मिने, हम प्रेमें विलसी जेह।
ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह।।
एक सुख सुपनके, दूजे जागते ज्यों होए।

तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए।।
पेहेले दृष्टें हमारे जो आइया, तेते मिने उजास।
हम खेलें तिन उजासमें, और लोक सब को नास।।
क.हि. २३/ ५१,५३,७४,७५,७६

पांच चीज जीव सब उड़ गए, मसी बका से ल्याए औखद।
सो खिलाए जिवाए कोई न सक्या, बिना एक महंमद।।
सं. २८/२६

मुसलमान कई भेखसों, पीर मरद फकर।
पीछा कोई ना रेहेवहीं, हुई बधाइयां घर घर।।
सं. ३६/१०

ब्रह्मसृष्ट हुती बृज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन।
सो लछ अव्वल को ल्याय रूह अल्ला, पर न था आखिरी इलम पूरन।।
श्रृं. १/४७

जबरू लाहूत अर्स कहे, देवें रूह अल्ला हकीकत।
ए बका मता दोऊ अर्सों का, सो महंमद पे मारफत।।
सं. ३७/३४

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध
नांहें।।
विध विध के सुख और कई, देत दायम
अनेक।
पर लीला जो जागन की, कदी वचन न पाया
एक।।
लरी सुंदरबाई पिउसों, इन आगम के कारन।
पर पाया नहीं पड़ उत्तर, एक आधा भी
सुकन।।
इन पड़ उत्तर वास्ते, बाईजीऐं किए

उपाए।
विलख विलख वचन लिखे, सो ले ले रूहें
पोहोंचाए।।
यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी
पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई
खबर।।
महंमद कहे मैं हुकमें, सब रूहें मुझ मांहें।
मैं चल्या अर्स मेयराज को, पर पोहोंच सक्या
नाहें।।
मैं ल्याया धनीय की, इसारतें जिन खातिर।
सो ताला अजूं खुल्या नहीं,तो मैं पोहोंचों क्यों
कर।।

सं. ४१/ १६,१६,२०,२१,२२,६३,६४

कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए।
फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे।।

खि. १४/७०

सो सुन्दरबाई धाम चलते , जाहेर कहे वचन।
आडी खड़ी इन्द्रावती , कहे मैं रेहे ना सकों तुम बिन।।
दई दिलासा बुलाए के , मैं लई सिखापन।
रूह अल्लाह के फुरमान में , लिखे जामे दोए तन।।
मूल सरूप बीच धाम के , खेल में जामें दोए।
हरा हुल्ला सुपेत गुदरी , कहे रूह अल्ला के
सोए।।
हदीसों भी यों कह्या, आखिर ईसा बुजरक।
इमाम ज्यादा तिन सें , जिन सबों पोहोंचाए
हक।।
खासी गिरो के बीच में , आखिर इमाम खावंद होए।

ए जो लिख्या फुरमान में , रूहअल्ला के जामें दोए।।

कि. ६४/ ३,४,५,६,७

४६. जागनी केवल धनी के हाथ में है

ए पैए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल।
आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल।।

क.हि. २३/४६

किस वास्ते हलके जगावत, ऊपर करत बोहोतक सोर।
हाए हाए ए सुध कोई ना ले सके, हक के इस्क का जोर।।

खि. १२/२८

४७. जागनी में ब्रज रास भूल जाएंगे।

खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल।
अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल।।

क.हि. २१/१२

४८. जीव आत्मा का भेद

वासना को तो जीव न कहिए, जीव कहिए तो दुख लागे जी।
झूठकी संगते झूठा केहेत हों, पर क्या करों जानों क्यों‌ए जागे जी।।

प्र.हि. ३०/४६

ए कठन वचन मैं तो केहेती हों, ना तो क्यों कहूं वासना को जीव जी।
जिन दुख देखे गुन्हेंगार होत हो, आग्या ना मानो पिउ जी।।

प्रकास बानी तुम नीके कर लीजो, जिन छोड़ो एक खिन जी।
अंदर अर्थ लीजो आतम के, विचारियो अंतस्करन जी।।
अंदर का जब लिया अर्थ, तब नेहेचे होसी प्रकास जी।
जब इन अर्थें जागी वासना, तब वृथा ना जाए एक स्वांस जी।।
प्र.हि. ३०/ ५०,५१,५२

एक लवा सुने जो वासना, सो संग न छोड़े खिन मात्र।
होसी सब अंगों गलित गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र।।
ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग।
सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग।।
वासन जीव का बेवरा एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात।
जीव का अंग सुपनका, वासना अंग साख्यात।।
भी बेवरा वासना जीवका, याके जुदे जुदे हैं ठाम।
जीव का घर है नींद में, वासना घर श्री धाम।।
क.हि. २३/ ५६,६०,६१,६२,

जो जीव होसी सुपन के, सो क्यों उलंघे सुंन।
वासना सुन्य उलंघ के, जाए पोहोंचें अछर वतन।।
ए सबे तुम समझियो, वासना जीव विगत।
झूठा जीव नींद न उलंघे, नींद उलंघे वासना सत।।
वासना उतपन अंग थें, जीव नींद की उतपत।
कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत।।
क.हि. २४/ २१,२२,२६

बंदगी सरीयत की, और हकीकत बंदगी।
नासूत दुनियां अर्स मोमिन, है तफावत एती।।
खुलासा. १०/५५

तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग।
ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावती के संग।।

४६. श्री इंद्रावती जी ने तालीम नहीं लिया

इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग।
जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग।।

क.हि. २३/ ६५,६६

ए हक बातन की बारीकियाँ, सो हक के दिए आवत।
ना सीखे सिखाए ना सोहबतें, हक मेहेरें पावत।।

श्रृं. ४/१२

५०. तारतम और जागृत बुद्धि

और न कोई बुध मुझ जैसी, मैं ही बुध अवतार।
धाम धनी ग्रहूं इन विध, और अखंड करूं संसार।।
ए बुध रही हमारे आसरे, जो सबथें बड़ा अवतार।
बुधजी बिना माया ब्रह्म को, कोई कर न सके निरवार।।
सुन्य निराकार निरंजन, तिनके पार के पार।
बानी गाऊं तित पोहोंच के, इन चरनों बुध बलिहार।।
जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुध जी पोहोंचे तित।
मेरे हिरदे चरन धनी के, इनें ए फल पाया इत।।
ए सार पाए सुखउपजे, धंन धंन ए बुध अवतार।
अबलों किन ब्रह्मांड में, किन खोल्या न ए दरबार।।

प्र.हि. २०/ १२,१३,१४,१५,१६

वतन देखत जाहेर, दूजी दोए लीला जो करी।
ए सब याद आवहीं, इत दोए दूसरी।।
याद आवें सारे सुख, और जीव नैनों भी देखे।
तारतम सब सुख देवहीं, विध विध अलेखे।।

प्र.हि. ३१/ १२६,१३०

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर।

तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर।।

क.हि. २३/१०३

निज बुध आवे अग्याएँ, तोलों ना छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।।

क.हि. १/३६

गोप हुता दिन एते, बड़ी बुध का अवतार।
नेक अब याकी कहूं, ए होसी बड़ो विस्तार।।
कोइक काल बुध रास की, लई ध्यान में सकल।
अब आए बसी मेरे उदर, वृध भई पल पल।।
अंग मेरे संग पाई, मैं दिया तारतम बल।
सो बल ले वैराट पसरी, ब्रह्मांड कियो निरमल।।
दैत कलिंगा मार के, सब सीधा होसी तत्काल।
लीला हमारी देखाए के, टालसी जम की जाल।।
याको संघारसी एक सब्दसों, बेर ना होसी लगार।
लोक चौदे पसरसी, इन बुध सब्दको मार।।

क.हि .१८/ २४,२५,२६,२७,२६

ए तो अछरातीत की, लीला हमारी जेह।
पेहेले संसा सबका भान के, पीछे भी नेक कहूं बिध एह।।

क.हि. १६/३

बोहोत धन ल्याए धनी धामथें, बिध बिध के प्रकार।
सो ए सब मैं तोलिया, तारतम सबमें सार।।
तारतम का बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप।
मूल सरूप के चित्त की बातें, तारतम में कई रूप।।

क.हि. २३/ ५४,५५

सास्त्र सब्द मात्र जो बानी, ताको कलस बानी सब्दातीत।
ताको भी कलस हुओ अखंड को, तापर धजा धरूं तिनथें रहित।।

बानी जो अद्वैत की, सो कहावे सब्दातीत।
सो जाग्रत बुध अद्वैत बिना, क्यों सुध पावे द्वैत।।
एते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।
सो बुध जी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन।।
परिकरमा २/ २,६,११

५१. महामति और प्राणनाथ में अन्तर

ता कारन तुम सुनियो साथ, प्रगट लीला करी प्राणनाथ।
कोई मन में ना धरियो रोष, जिन कोई देओ महामती को दोष।।
ए तुम नेहेचे करो सोए, ए वचन महामती से प्रगट न होए।
अपने घर की नहीं ए बात, जो किव कर लिखिए विख्यात।।
प्र.हि. ४/१३,१४

बुध मूल अछर की, आई हमारे पास।
जोगमाया को ब्रह्मांड, तिन हिरदे था रास।।
ए हुती पिया चरने, दिन एते गोप।
वचन कोई कोई सत उठे, सोए करूं क्यों लोप।।
बृज रास में हम रमे, बुध हती रास में रंग।
अब आए जाहेर हुई, इत उदर मेरे संग।।
इंद्रावती पिया संगे, उदर फल उतपन।
एक निज बुध अवतरी, दूजा नूर तारतम।।
दोऊ सरूप प्रगटे, लई मिनों मिने बाथ।
एक तारतम दूजी बुध, देखसी सनमुख साथ।।
क.हि. २३/ ८८,८६,६०,६१,६२

आऊं जोए इमाम जी, सिंधाणी सिरदार।
डिन्यो धणी सभ पांहिजो, मूंही हथ मुदार।।
सं. ३५/८

इमामें मोहे सब दियो, राख्यो न कछुए बीच।
गुन अंग सोभा देय के, आप हुए नेहेचित।।
सं ३६/६

कायम सदी तेरहीं, उथींदा निरवाण।
महामत जोए इमामजी, जाहेर क्याऊं फुरमान।।
सं. ३५/३०

इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहियत है तोहे।
दुख बिना चरन कमल को, सखी कबहूं न मिलिया कोए।।
कि. १६/१२

छल मोटे अमने अति छेतरया, थया हैया झांझरा न सेहेवाए मार।
कहे महामती मारा धणी धामना, राखो रोतियों सुख देयो ने करार।।
कि. ३७/४

अब मिल रही महामती, पिउ सों अंगों अंग ।
अछरातीत घर अपने, ले चले हैं संग।।
कि. ४६/७

ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।
ए प्रगटया पूरण पार ब्रह्म, महामती तणों आधार।।
कि. ५१/१०

पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई नई रे नवों खंडों आरती।।
कि. ५६/१६

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत।।
कि.५६/८

वसीयत नामे साहेदी , आए लिखे बड़ी दरगाह।

सो मिलाए दिए कुरान से, महामत हुकम खुदाए।।
कि. १०८/४८

ऐसी बड़ाई केती कहूं, जो करी अलेखे अपार।
सो नेक कही मैं गिरो समझने, समझेगी रूह सिरदार।।
कि. १०९/२६

५२. यह श्री प्राणनाथ जी की वाणी है महामति की नहीं

ए बानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी।
हरखें साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह।।
प्र.हि. ६/५

धनीकहावे तो यों कहूँ, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊँ।
ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे।।
ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई।
ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यो लगे घाए।।
मेरी बुधें लुगा न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखंड घर सुख।
अब साथ कछुक करो तुम बल, तो पूरन सोभा ल्यो नेहेचल।।
प्र.हि. २६/ ३,५,७

आधे अखर का पाओ लुगा, कबूं ना बाहेर।
श्री धाम थें ल्याए धनी, तो हुए जाहेर।।
प्र.हि. ३१/१४६

ए बानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहें प्राणनाथ।
ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याए धामथें वचन।।
प्र.हि. ३७/१०

ए कलाम आए हक से, ए नुकता कह्या जे।
ए जाने विचारे मोमिन, जिन वास्ते हुआ ए।।
खु. १/६

जेती बातें मैं कही, तिन सब में चतुराए।
ए चतुराई भी तुम दई, ना तो एक हरफ न काढ़्यो जाए।।
खि. १०/२६

महामति कहे सुनो साथ, देखो खोल बानी प्राणनाथ।
धनी ल्याए थाम से वचन, जिनसे न्यारे ना होए चरन।।
कि. ७६/२५

हके दई किताबें मेहर कर, जो जिस बखत दिल चाहे।
सोई आयत आवत गई, जो रूह देत गुहाए।।
परिकरमा ३०/४

५३. सतगुरू की पहचान और महिमा

कह्या हक सेहेरग से नजीक, सो हक अर्स मोमिन दिल।
ना ऊपर तले दाएं बाएं, ए बतावें मुरसद कामिल।।
ए मुरसद कामिल बिना, और न काहूं खोलाए।
अब हादिएं ए पट तो खोल्या, जो गिरो सरतें पोहोंची आए।।
मा.सा. ४/५८,६४

मृगजलसों जो त्रिखा भाजे, तो गुर बिना जीव पार पावे।
अनेक उपाय करे जो कोई, तो बिंदका बिंद में समावे।।
देत देखाई बाहेर भीतर, ना भीतर बाहेर भी नाहीं।
गुर प्रसादें अंतर पेख्या, सो सोभा बरनी न जाई ।।
सतगुर सोई मिले जब सांचा, तब सिंध बिंद परचावे ।
प्रगट प्रकास करे पार ब्रह्म सों,तब बिंद अनेक उड़ावे ।।
कि. २/७,८,६

सब्दा कहे प्रगट प्रवान, सब्दा सतगुरसों करावे पेहेचान।
सतगुर सोई जो अलख लखावे,अलख लखे बिन आग न जावे।।
सास्त्र ले चले सतगुर सोई, बानी सकल को एक अर्थ होई ।

सब स्यानों की एक मत पाई, पर अजान देखे रे जुदाई ।।
सास्त्रों में सबे सुध पाइए, पर सतगुर बिना क्यों ल खाइए।
सब सास्त्र सब्द सीधा कहे,पर ज्यों मेर तिनके आड़े रहे।।
सो तिनका मिटे सतगुर के संग, तब पारब्रह्म प्रकासे अखंड।
सतगुर जी के चरन पसाए, सब्दों बड़ी मत समझाए।।
यामें बड़ी मत को लीजे सार,सतगुरु याहीं देखावें पार।
इतहीं बैकुंठ इतहीं सुन्य, इतहीं प्रगट पूरन पारब्रह्म।।

कि. ३/३,४,५,६,८

सतगुर साधो वाको कहिए, जो अगम की देवे गम।
हद बेहद सबे समझावे , भाने मन को भरम।।
महामत कहे गुर सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटीसे उलटाए के, पिय प्रेमें करे सनमुख।।

कि. ४/१२,१३

सास्त्र पुरान भेख पंथ खोजो, इन पैंड़ों में पाइए नाहीं।
सतगुर न्यारा रहत सकल थें , कोइ एक क ुली में कांहे।।

कि. ५/७

सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घरा।
सब चीन्ह परे आखिर की , ज्यों भूलिए नहीं अवसर।।

कि. १४/११

चित में चेतन अंतरगत आपे, सकल में रह्या समाई ।
अलख को घर याको कोई न लखे,जो ए बोहोत करे चतुराई।।

कि. १८/६

कौन मैं कहां को कहां थें बिछुरयो, कौन भोम ए छल।
गुर सिष्य ग्यान कथें पंथ पैंडे, पर एती न काहू अकल।।
या घर में या बन में रहे, पर कहा करे बिना सतगुर।
तो लों मकसूद क्यों कर होवे, जो लों पाइए ना अखंड घर।।
सतगुर सोई जो वतन बतावे, मोह माया और आप।
पार पुरुख जो परखावे, महामत तासों कीजे मिलाप।।

कि. २०/४ से ६

महामत सो गुर पाइया, जो करसी साफ सबन।
देसी सुख नेहेचल, ऐसी कबहूं न करी किन।।

कि. २१/१०

यामें सतगुर मिले तो संसे भाने, पैंडा देखावे पार।
तब सकल सबद को अर्थ उपजे, सब गम पड़े संसार।।
तब बल ना चले इन नारी को, लोप न सके लगार।
महामत यामें खेलत पिया संग, नेहेचल सुख निरधार।।

कि. २२/७,८

खोज बड़ी संसार रे तुम खोजो साधो, खोज बड़ी संसार।
खोजत खोजत सतगुर पाइए, सतगुर संग करतार।।
सतगुर क्यों पाइए कुली में, भेखे बिगारयो वैराग।
डिंभकाइए दुनियां ले डबोई, बाहेर सीतल मांहें आग।।
बैठत सतगुर होए के, आस करें सिष्य केरी।
सो डूबे आप सिष्यन सहित, जाए पड़े कूप अंधेरी।।
जो मांहें निरमल बाहेर दे न देखाई, वाको पारब्रह्मसों पेहेचान।
महामत कहे संगत कर वाकी, कर वाही सों गोष्ट ग्यान।।

कि. २६/१,३,६,७

निबेरा खीर नीर का, महामत करे कौन और।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुर बतावें ठौर।।

कि. २७/२२

ए धोखे गुर सर्वग्यन भाने, जिन पाया सब विवेक।
बाहेर उजाला करके, आखिर देखावें एक।।
महामत सो गुर कीजिए, जो बतावे मूल अंकूर।
आतम अर्थ लगावहीं, तब पिया वतन हजूर।।

कि. २८/१७,१८

अब संग कीजे तिन गुर की, खोज के पुरुख पूरन।
सेवा कीजे सब अंगसों, मन कर करम वचन।।

कि. ३४/१७

सतगुर संग करे आप ग्रही, व चने धमावे निसंक।
रस थई कस पूरे कसोटी ,त्यारे आडो न आवे प्रपंच।।
हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित मांहें।
निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें।।
हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह।
सर्वा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह।।
महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सब्दातीत सुजाण।
चरण सों चित पूरी बांधजो, जिहां लगे पिंडमा प्राण।।

कि.७०/६,१३,१४,१५

हम चडी सखी संग रे ,रूड़ा राज सों राखो रंग,सखी रे हमचडी ।।टेक।।
सतगुर मारो श्री वालोजी, तेह तणें पाए लागूं।
मूल सगाई जांणी मारा वाला , अखंड सुखडा मांगूं
।।

कि. १२४/ १

गुरगम टाली बंध न छूटे, जो कीजे अनेक उपाय।
जेणी भोमें रे आप बंधाणां, ते भोम न ओलखी जाय।।
आप न ओलखे बंध न सूझे, करम तणी जे जाली।
खोलतां खोलतां जे गुरगम पाम्यो, तो ते नाखे बंध बाली।।
केम ओधरिया आगे जीव, जेणे हता करमना जाल।
गुरगम ज्यारे जेहेने आवी , ते छूटया तत्काल।।

कि. १२६/५६,६०,६१

चौदे भवन जेने इछे , कोई विरला ने प्राप्त होय।
ए प ामी केम खोइए , तूं तां रतन अमोलक जोय।।
हवे सुधर सो संगत थकी , जो मलसे एहवो साध
ा।

सास्त्र अर्थ समझावसे , त्यारे टलसे सघली ब्राध
।।
संगत करसो साध नी, ए रूदे करसे प्रकास।
त्यारे ते सर्वे सूझसे, थासे अंधकारनो नास।।
कि. १२८/५०,५२,५३

ज्यारे अंध अगनान उड़ी गयुं , त्यारे प्रगट थया पारब्रह्म।
रंग लाग्यो ए रस तनो, ते छूटे वलतो केम।।
कि. १२८/ ५५
सतगुर संग करे आप ग्रही, वचने धमावे निसंक।
रस थई कस पूरे कसोटी ,त्यारे आडो न आवे प्रपंच।।
हवे जेणे आपणने ए निध आपी, तेहना चरण ग्रहिए चित मांहें।
निद्रा उडाडीने सुपन समावे, त्यारे जागी बेठा छैए जांहें।।
हवे एणे चरणें तमें पांमसो, अखंड सुख कहिए जेह।
सर्वा अंगे चित सुध करी, तमें सेवा ते करजो एह।।
महामत कहे संमंधी सांभलो, मारा सब्दातीत सुजाण।
चरण सों चित पूरी बांधजो, जिहां लगे पिंडमा प्राण।।
कि.७०/६,१३,१४,१५
हम चडी सखी संग रे ,रूड़ा राज सों राखो रंग,सखी रे हमचडी
।।टेक।।
सतगुर मारो श्री वालोजी, ते तणें पाए लागूं।
मूल सगाई जांणी मारा वाला , अखंड सुखडा मांगूं
।।
कि. १२४/ १
गुरगम टाली बंध न छूटे, जो कीजे अनेक उपाय।
जेणी भोमें रे आप बंधाणां, ते भोम न ओलखी जाय।।
आप न ओलखे बंध न सूझे, करम तणी जे जाली।
खोलतां खोलतां जे गुरगम पाम्यो, तो ते नाखे बंध बाली।।

केम ओधरिया आगे जीव, जेणे हता करमना जाल।
गुरगम ज्यारे जेहेने आवी, ते छूटया तत्काल।।
कि. १२६/५९,६०,६१

चौदे भवन जेने इछे, कोई विरला ने प्राप्त होय।
ए पांमी केम खोइए , तूं तां रतन अमोलक जोय।।
हवे सुधर सो संगत थकी , जो मलसे एहवो साध
।।
सास्त्र अर्थ समझावसे , त्यारे टलसे सघली ब्राध
।।
संगत करसो साध नी, ए रूदे करसे प्रकास।
त्यारे ते सर्वे सूझसे, थासे अंधकारनो नास।।
कि. १२८/५०,५२,५३

ज्यारे अंध अगनान उड़ ी गयुं , त्यारे प्रगट थया पारब्रह्म।
रंग लाग्यो ए रस तनो, ते छूटे वलतो केम।।
कि. १२८/ ५५

५४. मोमिन दुनी एवं ईश्वरीय सृष्टि की हकीकत

पांउं तले पड़ी रहे, याको इतहीं खान पान।
एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अर्स सुभान।।
इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान।
और आसिक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान।।
खाना दीदार इनका, या सों जीवे लेवे स्वांस।
दोस्ती इन सरूप की , तिनसे मिटत प्यास।।
सागर ५/ ८८,८९,९०

एह इलम ए इस्क, और निसबत कही जो ए।
ए तीनों सिफत माहें मोमिनों, निसबत हक की जे।।

सागर १४/२१

दुनियां सरीयत फरज बंदगी, और फरिस्तों बंदगी हकीकत।
रूहों हकीकत इस्क, और इनपे है मारफत ।।
रूहें आसिक सोई लाहूती, जाके अर्स-अजीम में तन।
कह्या हकें दोस्त रूहें कदीमी, जो उतरे अर्स से मोमिन।।
अर्स कह्या दिल मोमिन, जो मोमिन दिल आसिक।
सो मोमिन कछुए न राखहीं, बिना अर्स बका हक।।
सोई मोमिन जानियो, जो उड़ावे चौदे तबक।
एक अर्स के साहेब बिना, और सब करे तरक।।

सिनगार १/ २७,२८,२९,३०

माहें मैले बाहेर उजले, सो तो कहे मुनाफक।
मासिवा-अल्लाह छोड़ें मोमिन, तामें कुफर नहीं रंचक।।
पाक दिल पाक रूह, जामें जरा न सक।
जाको ऊपर ना डिंभक, एक जरा न रखे बिना हक।।
अर्स अरवाहों को चाहिए, खोलें रूह की नजर।
तब देखें आम खलक को, ज्यों खेल के कबूतर।।
तो न लेवे निमूना इनका, ना लेवें इनकी रसम।
हक बिना कछुए ना रखें, अर्स अरवाहों ए इलम।।
ए बातून अर्स बारीकियां, सो होए मुतलकियों इलम।
अर्स बका करें जाहेर, सबों भिस्त देवें हुकम।।
बरनन करें बका हक की, हम जो अर्स अरवा।
लेवें सब मुतलकियां, हम सें रहे न कछू छिपा।।

सिनगार १/ ४१,४२,५१,५२,५७,५८

जित रहे आग इस्क की, तित देह सुपन र हे क्यों कर।

बिना मोमिन दुनी न छूटहीं, दुनी ज्यों बिन जलचर।।
ब्रह्मसृष्ट घर इस्क में, और दुनियां घर कुफर।
मोमिन जलें न आग इस्कें, दुनी जाए जल बर।।
आग इस्कें जलें ना मोमिन, आसिकों इस्क घर।
इनों लगे जुदागी आग ज्यों, रूहें भागें देख कुफर।।
रूहें आइयां अर्स अजीम से, द ई न ु कते इलमें जगाए।
और उमेदां सब छोड़ाए के, हकें आप में लैयां लगाए।।

सिनगार. २०/ ६४,६५,६६,६७

मोमिन असल सूरत अर्स में, अबलों न जाहेर कित।
खोज खोज कई बुजरक गए, सो अर्स रूहें ल्याई हकीकत।।
नख सिख लों बरनन किया, और गाया लड़ाए लड़ाए।
मोमिन चाहिए विरहा सुनते, तबहीं अरवा उड़ जाए।।
यों चाहिए मोमिन को, रूह उड़े सुनते हक नाम।
बेसक अर्स से होए के, क्यों खाए पिए करे आराम।।
हक अर्स याद आवते, रूह उड़ न पोहोंचे खिलवत।
बेसक होए पीछे रहे, हाए हाए कैसी ए निसबत।।
क्यों न खेलावें खिलवत में, रूह अपनी रात दिन।
हक इलमें अजूं जागी नहीं, कहावें अर्स अरवा तन।।

सिनगार २२/७५,७७,१३६,१४०,१४१

ए जो दुनी पैदा जुलमत, सो इनों की करे सरभर।
मजाजी क्यों होए सके, रूहें हक बराबर।।
ए जो मोमिन नूर बिलंद के, दिल जिनों अर्स हक।
सरभर इनों की दुनी करे, हुआ सिर गुनाह बुजरक।।

मा.सा. १६/ ७४,७५

और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंद से उतारे।
काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियाँ में विस्तरें।।
और जो अंधेरी से पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे।

फिरे मन के फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर।।

ब.क्या. ६/१६,२०

आखिर मोमिन आकिल, कहा जिनका दिल अ र्स।
तो हक दिल का जो इस्क, सो मोमिन पीवें रस।।

श्रृं.२/१४

सोई कहिए मोमिन, जिन दिल हक अर्स।
सो ना मोमिन जिन ना पिया, ह क सुराही का रस।।
हकें दिल को अर्स तो कह्या, करने मोमिन पेहेचान।
कहे मोमिन उतरे अर्स से, तन अर्स एही निसान।।
रूहें उतरी अपने तनसे, और कह्या उतरे अर्स से।
तन दिल अर्स एक किए, हकें कदम धरे दिलमें।।

श्रृं.६/२०,२१,२२

रूहें इन कदम के वास्ते, जीवते ही मरत।
सो क्यों छोड़ें प्यारे पांउं को, जाकी असल हक निसबत।।
रूहें होवें जिन किन खिलके, हक प्रगटे सुनत।
आए पकड़ें कदम पल में, जाकी असल हक निसबत।।

श्रृं.७/५६,६१

अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत।।
हम अरवाहें जो अर्स की, तिन सब अंगों इस्क।
सो क्यों जावे हम से, जो आड़ा होए न हुकम हक।।
अर्स रूहें पेहेचान जाहेर, इनों कौल फैल हाल पार।
सोई जानें पार वतनी, जाको बातून रूहसों विचार।।
अर्स अल्ला दिल मोमिन, और दुनी दिल सैतान।
दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान।।

श्रृं.२३/१,६,४०,४८

जो मोमिन होते इन दुनी के, तो करते दुनी की बात।

चलते चाल इन दुनी की, जो होते इन की जात।।
जो यारी होती मोमिन दुनी सों, तो दुनी को न करते मुरदार।
रूहें इनसे जुदी तो हुई, जो हम नाहीं इन के यार।।
दुनी चलन इ न जिमी का, चलना हमारा आसमान।
मोमिन दुनी बड़ी तफावत, ए जानें मोमिन विध सुभान।।
हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल।।
चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।
आदमी छोड़ वजूद को, ले न सके रूह की चाल।
दुनियां बंदी हवाए की, मोमिन बंदे नूरजमाल।।
श्रृं.२३/५८,५६,६०,६१,६२,६३

दुनी रूहें एही तफावत, चाल एक दूजे की लई न जाए।
रूह मोमिन पर ईमान के, दुनी पर बिन क्यों उड़ाए।।
मोमिन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क।
इस्क आए पीछे बंदगी, ए जानें मासूक या आसिक।।
आसिक की एही बंदगी, जाहेर न जाने कोए।
और आसिक भी न बूझहीं, एक होत दोऊ से सोए।।
कहे पर इस्क ईमान के, सो मोमिन छोड़ें न पल।
सो दुनी का है नहीं, उत पांउं न सके चल।।
हकें फुरमाया चौदे तबक, है चरकीन का चरकीन।
सो छोड़े एक मोमिन, जिनमें इस्क आकीन।।
सो दुनी को है नहीं, जासों उड़ पोहोंचे पार।
ईमान इस्क जो होवहीं, तो क्यों रहें बीच मुरदार।।
दुनी दिल मजाजी कह्या, मोमिन हकीकी दिल।
बिना तरफ दुनी क्यों पावहीं,जो अर्सें रहे हिल मिल।।
श्रृं .२३/६५,६७,६८,७३,७४,७५,७७

ए बारीक बातें रूह मोमिनों, सो समझें रूह मोमिन।
सो आदमी कहे हैवान, जो इस्क इमान बिन।।
मोमिन तन असल से , अर्स मता कछू न छिपत।
तो बका सूरज फुरमान में, कह्या फजर होसी इत।।
ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमिनों की सरभर।
हक देखे जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर।।
हक देखे जो खड़ा रहे, तो दूजा कह्या जाए।
दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नींद उड़े उड़ जाए।।
ए इलमें सुनो अर्स बारीकियां, जो सहे अर्स हक रोसन।
ताए भी दूजा क्यों कहिए, कहे कुल्ल मोमिन वाहिद तन।।
दुनी दिल पर अबलीस, और पैदास कही जुलमात।
काम हाल इनों अंधेर में, हवा को खुदा कर पूजत।।
मोमिन उतरे अर्स अजीम से, दुनी तिन सों करे जिद।
ए अर्स से आए हक पूजत, दुनी पूजना हवा लग हद।।
बैठे बातें करे बका अर्स की, सोई भिस्त भई बैठक।
दुनी बातें करे दुनी की, आखिर तित दोजक।।

श्रृं.२६/८६,६०,११४,११५,११६,१२६

रूह का एही लछन, बाहेर अन्दर नहीं दोए।
तन दिल दोऊ एकै, रूह कहियत है सोए।।

श्रृं.२३/८

सोई मोमिन जाको सक नहीं , और दिल अर्स हक हुकम।
पट खोले नूर पार के, आए दिल में हक कदमें।।

श्रृं.२६/४५

ए और कोई बूझे नहीं, बिना अर्स के तन।
जो नूर बिलंद से उतरी, दरगाही रूहें मोमिन।।

मा.सा.२/११

ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन।
एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन।।
निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पांउं गिरो के पर।।

छोटा. क्या.१/ १६,१७

५५. वाणी पर विश्वास का फल

विस्वास करके दौड़े जे, तारतम को फल सोई ले।
तिन कारन करों प्रकास, ब्रह्मसृष्टि पूरन करूं आस।।

प्र.हि. १६/२०

५६. खीजड़ा के पेड़ की पहचान

वारने जाऊं बनराए वल्लभ की, जाकी सुख सीतल छाया।
देखो ए बन गुन भव औखदी, देखे दूर जाए माया।।
जाऊं वारने आंगने बेलूं, जित ले बैठो संझा समें साथ।
बातें होत चलने धाम की, घर पैंड़ा देखाया प्राणनाथ।।
भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज।
जहां बैठो उठो पाँउ धरो, धनी मेरे श्री राज।।
बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार।
वारने जाऊं इन जिमी के, जहां बसत मेरे आधार।।
बलि जाऊं पाटी पलंग सिराने, चादर सिरख तलाई।
पौढ़त पिउजी ओढ़त पिछौरी, ऊपर चंद्रवा चटकाई।।
बल बल जाऊं मैं दुलीचा चाकला, बल जाऊं मंदिर के थंभ।
जिन थभों कर धनी अपने, जुगतें दिए बंध।।
बैठत हो जित महाबलिया, बल बल जाऊं ठौर तिन।
साथ सबेरा आए के बैठत, करो धाम धनी बरनन।।
देखत मंदिर में कई बिध, वस्त सकल पूरन।
टूक टूक कर वार डारों, मेरे जीव के और तन।।

भले तुम देह धरी मुझ कारन, कर रोसन टाल्यो भरम।
जीव मेरा बोहोत सखत था, मेहेर नजरों भया नरम।।
बल जाऊं मैं चरन कमल की, बल जाऊं मीठे मुख।
बलिहारी सोभा सुंदरता, जिन दरसन उपजत सुख।।
प्र.हि. २३/१,२,३,४,५,६,७,८,९,१०

५७. जीव के वल्लभ श्री कृष्ण है आत्म के नहीं

बड़ी मत सो कहिए ताए, श्री कृष्णजी सों प्रेम उपजाए।
मत की मत तो ए है सार, और मत को कहूँ विचार।।
प्र.हि. २१/५

लिख्या चौथे सिपारे, सुख उमत को खुदा के सारे।
कहे मक्के के क ाफर, आराम करते बीच घर।।
जो पूजें मक्के के पत्थर, इनों एही जान्या सांच कर।
और जिनको खुदाए की पेहेचान, सहें दुख न छोडें ईमान।।
ब.क्या. ३/१,२

५८. फिरकों का बेवरा

तब फेर कह्या रसूल ने, सुध नहीं तुमें किन।
ए नीके मैं जानत, माएने किताब इन।।
पीछे मूसा के इकहत्तर, तामें फिरका नाजी एक।
और सत्तर नारी कहे, ए समझो विवेक।।
बहत्तर ईसा के भए, नाजी एक तिन में।
और नारी फिरके इकहत्तर, कह्या रसूलें जानिक से।।
यों तिहत्तर मेरे होवहीं, नारी बहत्तर नाजी एक।
ताको हिदायत हक की, जो हुआ नेकों में नेक।।
मूसे ईसे र सूल के, सबों नारी कहे फिरके।
कह्या एक नाजी तिनों में, खासलखास अर्स का जे।।

यों एक नाजी अव्वल से, पाया वाही ने फल आखिरत।
वास्ते नूर नबीय के, देखाए करी कयामत।।
बुजरकी अर्स रूहों की, सिर अपने लेवें।
सिफत एक नाजीय की, सो बहत्तरों को देवें।।

मा.सा. ३/ २७,२८,२९,३०,३१,३३,३६

फिरका जो तेहेत्तरमां, कह्या नाजी हक इलम।
मोमिन दिलों पर लदुन्नी, लिख्या बिना कलम।।
तिन दिलों पर सूरज, ऊग्या मारफत।
जिनों पाई अर्स इलमें, हक की हिदायत।।

मा.सा. १६/ ९९,१००

क्यों पाक ना पाक क्यों, क्यों रेहेनी फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
क्यों उजू निमाज क्यों, क्यों कर बांग बयान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
क्यों कसौटी अंग की, क्यों रोजे रमजान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
क्यों सुंनत क्यों इंद्रियां, क्यों राखे कैद आन।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।

स. २०/१२,१३,१४,१५

ए गिरो कई बेर बचाई तोफान से, और डुबाई कुफरान।
एही उमत खास महंमदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।
एही नाजी फिरका तेहत्तरमा, जिनमें लुदंनी पेहेचान।
खोलें हक इसारतें रमूजें, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।

स. २३/७,८

मैं दुनियां ल्याया जो दीन में, सो मैं देखत हों अब।
फिरके होसी मेरे तेहेत्तर, आखिर होएगी तब।।
तब ए बुजरक आवसी, साहेब जमाने के।

हक करसी हिदायत तिनको, इनों संग नाजी फिरका जे।।
खु. २/ ७६,८०

हकें कलाम लिखे अपने, कहे मैं भेजे मोमिनों पर।
सो फिरका खोले इसारतें रमूजें, बिन मोमिन न कोई कादर।।
हकें लिख्या मैं करूँ हिदायत, एक नाजी फिरके को।
हुआ हजूर ले हक इलम, जले बहत्तर दोजखमों।।
खु. ३/३७,३८

तो भए तेहत्तर फिरके महंमद के, तामें एक नाजी कह्या नेक।
और बहत्तर कहे दोजखी, ए बेवरा कह्या विवेक।।
स.४/३६

देसी पैगंमर की साहेदी, गिरो अदल से उठाई जे।
करी हकें हिदायत इन को, बहत्तर नारी एक नाजी ए।।
शृं.२३/१३४

सब दुनियां का इलम, लिख्या कुरान में ए।
सो कोई इलम पोहोंचे नहीं, बनी असराईल मूसा के।।
कहे फुरमान इलम मूसे का, और बड़ा इलम खिजर।
इलम खुदाई बूंद के, न आवे बराबर।।
फिरके इकहत्तर मूसा के, हुए ईसा के बहत्तर।
एक को हिदायत हक की, यों कह्या पैगंमर।।
महंमद के तेहत्तर हुए, तिनको हुआ हुकम।
जिन को हिदायत हक की, तामें आओ तुम।।
खु. ६/१४,१५,१६,१७

गिरो एक बुजरक कही , रूह अल्ला आये तिन पर।
इत जादे पैगंमर दो भए , एक नसली और नजर।।
तिनसे र ाह जुदी हुई , गिरो दोए हुई झगर।
एक उ रझे दीन जहूद के , उतरी किताबें दूजे पर।।
सो भाई न माने किताब को , रोसनाई ढांपे फेर फेर।
तब आया दूजे पर महंमद , सब किताबें ले कर।।

एही फिरका नाजी कह्या , दे साहेदी फुरमान।
एक नाजी नारी बहत्तर , एही नाजी की पेहेचान।।
एही गिरो खासी कही , जिनमें महंमद पैगंमर।
हकीकत मारफत खोल के , जाहेर करी आखिर।।

कि. १२१/८,६,१०,११,१२

फिरके बनी असराईल, हुए पीछे मूसा महत्तर।
एक नाजी नारी सत्तर, कहे फुरमान यों कर।।
याही भांत ईसा के, फिरके बहत्तर कहे।
एक नाजी तिन में हुआ, और नारी इकहत्तर भए।।
तेहत्तर फिरके कहे महंमद के, बहत्तर नारी एक नाजी।
नारी जलसी आग में, नाजी हिदायत हक की।।

श्रृं.२४/२,३,४

ुआ खासलखास जो, रूह मोमिनों मेला।
बहत्तर से जुदा कह्या, नाजी फिरका अकेला।।
जिन को लिखी आयतों हदीसों, हिदायत हक।
हकें इलम अपना, तिन को दिया बेसक।।

मा.सा. २/४२,४३

५९. धाम धनी कहने से सुख मिलता है प्रभु कहने से नहीं

दाझ बुझत है एक सब्द में, जब कहूं धनी श्रीधाम।
इन वचनें आतम सुख पायो, भागी हैड़े की हाम।।

प्र.हि. २३/२०

चेतो सबे सत वादियों, सुनियो सो सतगुरू मुख बान।
धनी मेरा प्रभु विस्व का, प्रगटिया परवान।।

कि. ५५/२

६०. दो स्वरूप

दोऊ सरूप में जोत जो एक, सो मैं देख्या करके विवेक।

ए चरन फलें कहे इंद्रावती, तारतम जोत करूँ विनती।।
प्र.हि. २४/२

६१. सखियों के विश्वास को तोड़ रखा है।

वतन से आइयां सैयां, सबे बांध के होड़।
सो याद न रह्या कछुए, इन नीदें दैयां सब तोड़।।
प्र.हि. २५/३

६२. श्री कृष्ण और श्री प्राणनाथ जी

तो वचन तुमको कहे जांए, जो तुम धाम की लीला मांहें।
बृजवालो पिउ सो एह, वचन अपन को केहेत हैं जेह।।
रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने।
धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथको बुलावन आए।।
प्र.हि. २६/ ६१,६२

पोते प्रगट पधार्या छो, आडा देओ छो वृज ने रास।
इंद्रावतीसूं अंतर कां कीधूं, तमे देओ मूने तेनो जवाब।।
आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो छो प्राणनाथ।
दरपणनूं सूं काम पडे, ज्यारे पेहेर्यूं ते कंकण हाथ।।
खटरूती ८/ ९,१०

६३. घर जाने का रास्ता

जो जानो घर पाइए अपना, तो एक राखियो रस वैराग जी।
सकल अंगे सुध सेवा कीजो, इन विध बैठो घर जाग जी।।
जो जानो इत जाग चलें, तो लीजो अर्थ प्रकास जी।
जीव को कहियो ए कह्या सब तोको, सिर लिए होसी उजास जी।।
प्र.हि. ३०/ ४२,४३

महामत कहे ए मोमिनों, ए सुख अपने अर्स के।
एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे।।
प. १६/१८

६४. बेहद वाणी का महत्व

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी।
बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी।।
उपाय किए अनेकों, पर काहूं ना लखानी।
ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी।।
ना तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी।
भगवानजी को महादेवजी, पूछे बेहद वानी।।
कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं ना सुनी।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी।।
एक सब्द के कारने, लखमी जी आप।
नेक भी जाहेर ना हुई, अंग दिए कई ताप।।
याही रस के कारने, कैयों किए बल।
कैयों कलप्या अपना, पर काहूं ना प्रेमल।।
प्र.हि. ३१/ १,२,३,५,६,१०

ए वानी मेरे मुख थें ना परे, ना तेरे श्रवना संचरे।
ए जोग आपन नाहीं दोए, तो इन लीला को सुख क्यों होए।।
प्र.हि.३३/१४

६५. त्रिधा लीला

एह ब्रह्मांड तीसरा, हुआ उतपन।
धाख रही कछू अपनी, तो फेर आए देखन।।
ए जो ब्रह्मांड उपज्या, जिनमें राख्या सेर।
साथ घरों सब पोहोंचिया, और इत आए फेर।।
ज्यों हरे ब्रह्माएँ बाछरू, गोवाला संघातें।
ततखिन सो नए किए, आप अपनी भांतें।।
गोकुल मिने आप अपने, घर सब कोई आया।
खबर ना पड़ी काहूँ को, ऐसी रची माया।।
एह दृष्टांते समझियो, राह राख्या इन विध।

ए बाल माया देखियो, और ऐसी किध।।
साथ चल्या सब वतन, अपने पिउ साथ।
और खेले रास में अखंड, इत उठे प्रभात।।
सोई गोकुल जमुना त्रट, जानों सोई बृजवासी।
रास लीला जाने खेल के, इत आए उलासी।।
जाने सोई ब्रह्मांड, जो खेलत सदाए।
ए ब्रह्मांड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए।।
दोऊ ब्रह्मांडों बीच में, सेर राख्या सार।
खबर ना पड़ी कांहू को, बेहद का बार।।
इत फेर उठे जाने प्रतिबिंब, यामें साथ पिउ।
खेल आए जाने हम नहीं, धोखा रह्या जिउ।।
धोखा इनों का भी ना मिट्या, तो कहा करे और।
बेहद वानी के माएने, क्यों होवे दूजे ठौर।।
टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार।
छोड़ वसुदेव भेख उतारिया, या दिन थें अवतार।।

प्र.हि. ३१/३७,३६,४०,४१,४२,४३,४४,४५,४६,४७,४८,५३

काल माया को ए जो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्मांड।
ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अछर की सुरत का सब।।
याही सुरत की सखियां भई, प्रतिबिंब वेद रूचा जो कही।
जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ, सोक्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिंब।।
जो ऊधो ने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन।
याही विरह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह।।
अछर हिरदे रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो।
ए प्रतिबिंब लीला भई जो इत, सो कारन ब्रह्मसृष्ट के सत।।

जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए।
ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल।।
सारे अर्थ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत।
याही इंड में श्री कृष्णजी भए, सो अग्यारे दिन बृज मथुरा रहे।।
दिन अग्यारे ग्वालो भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस।
सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे।।
गल मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो।
काला ग्रह में दरसन दिए जिन, आए छुड़ाय बंध थें तिन।।
वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतार्यो भेख किए अस्नान।
जब राज बागे को कियो सिनगार, तब बल पराक्रम ना रह्यो लगार।।
आय जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्री कृष्णजी को अति चिंता भई।
यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णुमय भए निरधार।।
तब बैकुंठे में विष्णु ना कहे, इत सोलेकला संपूरन भए।
या दिन थें भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार।।

प्र.हि. ३७/ ५२,५३,५४,५५,५६,५७,५८,५९,६०,६१,६२

बताए देऊं बिध सारी, बृज बस्यो जिन पर।
अग्यारा बरस लीला करी, रास खेल के आए घर।।
गोकुल जमुना त्रट भला, पुरा ब्यालीस बास।
पुरा पासे एक लगता, ए लीला अखंड विलास।।।
बास बस्ती बसे घाटी, तीन खूने गाम।
कांठे पुरा टीवा ऊपर, उपनंद का ए ठाम।।
तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर।

इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर।।
पुरा पटेल सादूल का, बसे तरफ दूजी ए।
तरफ तीसरी वृखभानजी, बसे नाके तीनों ले।।
नंदजी के पुरे सामी, दिस पूरव जमुना त्रट।
छूटक छाया वनस्पति, बृध आड़ी डालों बट।।
सकल बन छाया भली, सोभित जमुना किनार।
अनेक रंगे बेलियां, फल सुगंध सीतल सार।।
तीन पुरे तीन मामों के, बसे ठाट बस्ती मिल।
आप सूरे तीनों ही, पुरे नंद के पाखल।।
गांगा चांपा और जेता, ए मामा तीनों के नाम।
दखिन दिस और पछिम दिस, बसे फिरते गाम।।

क.हि. १६/ ११,१२,१३,१४,१५,१६,१७,१८,१६

६६. श्री राज अपने धनी को कहते हैं

लखमीजी कहे सुनो अब राज, मेरे आतम अंग उपजत दाझ।
नहीं दोष तुमारा धनी, अप्राप्त मेरी है घनी।।

प्र.हि. २६/३४

६७. पुरियों में उत्तम नवतनपुरी का निर्णय

पेहेले बीज उदे हुआ, पुरी जहाँ नौतन।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धंन धंन।।

प्र.हि. ३१/१०४

इनमें जो ठौर अव्वल, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदय हुई, नेहेचल बात वतन।।

क.हि. १३/४

६८. पहेलियों का खुलासा

एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पाँउ कुंजर बंधाए।
तिनके पर्वत ढांपिया, सो तो काहूँ न देखिया।।
चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताकी काहूँ ना परी कल।

सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे।।
तूल का भी कोटमा हिसा, मन एता भी नहीं ऐसा।
सो ए गया जीव को निगल, यों सब पर बैठा चंचल।।
यों तिनके पर्वत ढांपिया, यों गज चींटी पाँउ बांधिया।
जो जीव करे उजास, तो मन को आगे ही होए नास।।

प्र.हि. ३२/ ३,४,२०,२१

सूई के नाके मंझार, कुंजर कई निकसे हजार।
ए अर्थ भी होसी इतहीं, तारतम आसंका राखे नहीं।।

प्र.हि. ३५/५

सुपन मूल तो नींद जो भई, जब जाग उठे तब कछुए नहीं।
याको पेड़ कछू ना रह्यो लगार, कथुए के पाँउ का तो मैं कह्या आकार।।
बिना पेड़ देखो विस्तार, एता बड़ा किया आकार।
एतो पेड़ कह्या आकार, तो ताको क्यों ना होए विस्तार।।
यों सूई के नाके मांहें, कई लाखों ब्रह्मांड निकसे जाएं।
अब ए नीके लीजो अर्थ, गुन लिखने वालो समरथ।।

प्र.हि. ३५/ १०,११,१२

दो हिजाब जर मोति के, बीच राह साल सत्तर।
हम महंमद दोऊ हिजाब में, आखिर बातें करी इन बेर।।

मा.सा. १/१७

६८. तारतम की हकीकत

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ।

कहे तूं दे पड़उतर, जो मैं पूछत हों तुझ।।
तूं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।
तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार।
विध सारी याकी कहो, इन जिमी के प्रकार।।
तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत।।
सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल।।
मैं न पेहेचानों आपको, ना सुध अपनो घर।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर।।

क.हि. १/ ५,६,७,८,९,१०

ए लीला जानें सृष्ट ब्रह्म की, जाए पोहोंच्या होए तारतम।
ए दृष्ट पूरन तब खुले, जाए अव्वल आखिर इलम।।
जोलों मुतलक इलम न आखिरी, तोलों क्या करे खास उमत।
पेहेचान करनी मुतलक, जो गैब हक खिलवत।।

श्रृं. १/१५,४८

और लिख्या जो पीछे रहे, तिन दिलों नहीं आकीन।
सो ए लिख्या सौं खाए के, अब लग था झण्डा दीन।।
जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखत।
आए लिखे नामें वसीयत, जाहेर करी कयामत।।
तो आए नामें वसीयत, जो पेहेले फुरमाए।
सो ए देखो बीच आयतों, दिलसों अर्थ लगाए।।

मा.सा. १६/ ८०,८१,८२

जाको हक इलम पोहोंचिया, तिन हुआ सब दीदार।
अंतर कछुए ना रह्या, वह पोहोंच्या नूर के पार।।
लिया लदुन्नी जिनने, सो क्यों सोवे कबर माहें।
जिने मूल सरूप देख्या अपना, उठ जागे सोवे नाहें।।

छो.क्या. १/८१,८४

७०. अपने काम के लिये तन रखा

मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यों जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ।।

क.हि. ८/६

७१. ज्ञानियों का अहंकार तोड़ने के लिये

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतई को विस्तार।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने ना कियो निरधार।।
ए अलख किनहूं ना लखी, आदै थें अकल।
ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल।।

क.हि. २/ १६,१७

एक अर्थ न कहे सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़े छल बान।।
वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह।
देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह।।

सं. १७/१६,२३

बेहद को सब्द न पोहोंचहीं,ए हद में करें विचार।
कोई इत बुजरक कहावहीं, सो केहेवे निराकार।।
फेर इनों को पूछिए, क्या बेचून बेचगून।
क्या है सुन्य निरंजन, कछू खबर न दई इन।।
निराकार आकारों ना सुध, ना सुध आप खसम।
ना सुध छल ना वतन, ए बुजरकों बड़ी गम।।

सं. ३०/ १६,१७,१८

कहा कहूं बल दज्जाल को, जोर बड़ा जालिम।
पेहेले पढ़े सब लिए, पीछे छोड़्या न कोई आलम।।

सं. ३१/२५

जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान।

यो जंजीरा मुसाफ की, कई विध करी बयान।।

खुलासा १५/८

७२. महामति नाम दिया गया

हुई पेहेचान पिउसों, तब कह्यो महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन श्री धाम।।

क.हि. ६/५

श्रीधनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन।
ए पांचो मिल भई महामत, वेद कतेबों पोहोंची सरत।।

प्रगट वाणी १०१

मिलाप हुआ जब मेहेंदी से, तब कह्या महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन बका धाम।।
तूं देख दिल विचार के, उड़ जासी असत।
सारों के सुख कारने, तूं जाहेर भई महामत।।

सं ११/ ५,४२

खिताब दिया ऐसा खसमें, इत आए इमाम।
कुंजी दई हाथ भिस्त की, साखी अल्ला कलाम।।

कि ६६/४

स्याम स्यामाजी आए देख्यो खेल बनाए, सब उठियां हँसकर।
खेलें महामति देखलावें इन्द्रावती, खोले पट अन्तर।।

प. ४०/१०

७३. हर ब्रह्मसृष्टि के पास से ज्ञान फैलेगा

केतेक ठौरों सोहागनी, तिन सब ठौरों उजास।
पर जब इत थें जोत पसरी, तब ओ ले उठसी प्रकास।।

क.हि. १०/१२

केतेक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास।
पर इतथें नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास।।

सं २२/४४

७४. धनी ने ही वाणी का फैलाव रोका

कोई दिन राखत हों गुझ, सो भी सैयों के सुख काज।
जब सैयां सबे मिलीं, तब रहे ना पकर्‌यो अवाज।।
क.हि. १०/१३

ए अगम अकथ अलख, सो जाहेर करें हम।
पर नेक नेक प्रकासहीं, जिन सेहे न सको तुम।।
जो कबूं कानो ना सुनी, सो सुनते जीव उरझाए।
तार्थें डरती मैं कहूं, जानूं जिन कोई गोते खाए।।
नातो सब जाहेर करूं, नाहीं तुम सों अंतर।
खेंच खेंच तो केहेती हूं, सो तुमारी खातिर।।
क.हि. २४/३,४,५

केतेक ठौर हैं मोमिन, तिन सब ठौरों है उजास।
पर इतथें नूर पसरया, तब ओ ले उठसी प्रकास।।
सं. २२/४५

७५. इश्क की महत्ता

जो सुनके दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर।
जैसा इस्क जिन पे, सो अब होसी जाहिर।।
जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानों निरधार।।
क.हि ११/ २६,२७

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद।
न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद।।
एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन।।
और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए।
इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए।।
नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन।

इस्क आगे चल गया, सब्द समाना सुंन।।

सं. ६/ ३,४,५,६

इस्क बंदगी अल्लाह की, सो होत है हजूर।
फरज बंदगी जाहेरी, सो लिखी हक से दूर।।

खु. १०/५८

महामत रूहों हक सों हुआ, बहस इस्क वास्ते।
सो इस्क बिना क्यों पैठिए, बीच हक अर्स के।।

खि. ११/८३

इस्क खेल हाँसी इस्क, इस्क फरामोस मोमिन।
इस्कें रसूल होए आइया, वास्ते इस्क न पाया किन।।
इस्कें फुरमान आइया, वास्ते इस्क न खुल्या किन।
वास्ते इस्क के गैब हुआ, इस्कें खुले ना खुदा बिन।।
सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत नाहीं घाए।
सो भी वास्ते इस्क के, जो उड़त नहीं अरवाहे।।

खि. १२/ ४३,४४,४८

ए हक देखावें इस्क, ता`बेर न पल एक होए।
सौ साल सोहोबत कीजिए, बिना हुकम न समझे कोए।।

खि. १२/ ५७

एक रोसी एक हँससी, होसी खूबी बड़ी खुसाल।
बिना इस्क बीच अर्स के, कोई देखे न नूरजमाल।।

खि. १३/२८

और भी पेहेचान इस्क की, जो बढ़ के घट जाए।
इस्क रूहों का हक सों, क्यों कहिए बका ताए।।

खि. १६/६६

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ।
सो जीव खिन एक लों , रहे ना सके बिना पिउ।।

कि. ६७/ २

प्रेम नाम दुनियां मिने, ब्रह्मसृष्टि ल्याई इत।
ए प्रेम इनों जाहिर किया, ना तो प्रेम दुनी में कित।।
ए दुनियां पूजे त्रिगुन को, करके परमेस्वर।
सास्त्र अर्थ ऐसा लेत है, कहे कोई नहीं इन ऊपर।।

प. ३६/२,३

७६. पुरूष केवल एक ही है

पार पुरूख पिया एक है, दूसरा नाहीं कोए।
और नार सब माया, यामें भी विध दोए।।
जा` रूह असलू ईस्वरी, दूजी रूह सब जहान।
पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान।।

क.हि. १२/ २,३

कोई दूजा मरद न कहावहीं, एक मेहेंदी पाक पूरन।
खेलसी रास मिल जागनी, छत्तीस हजार सैयन।।

सं. ४२/१६

७७. हिन्दुस्तानी भाषा में चालाकी नहीं चलती

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़।
बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़।।
सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नही पंडित।।
एक अर्थ न कहें सीधा, ए जाहेर हिंदुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान।।

क.हि. १६/ १५,१६,१७

७८. धनी का प्यार

कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, न सहूं मुख करमाने।।

क.हि. २१/२८

अब दुख न देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन।

उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन।।
साथजी इन जिमी के, सुख देऊं अति अपार।
हँस हँस हेते हरख में, तुम नाचसी निरधार।।
प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर।
मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर।।
मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं।
ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं।।
अब ल्योरे मेरे साथ जी, इन जिमी ए सुख।
मैं तुमारे न सेहे सकों, जो देखे तुम दुख।।
लेहेर लगे तुमें मोह की, सो आतम मेरी न सहे।
अब खंडनी भी न करूं, जानों दुखाऊं क्यों मुख कहे।।
अब क्यों देऊं कसनी, मुख करमाने न सहूं।
तिन कारन सब्द कठन, मेरे प्यारों को मैं क्यों कहूं।।
अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग।
सुख देऊं भली भांतसों, ज्यों होए न बीच में भंग।।

क.हि. २३/४,१६,१७,१८,३२,३३,३४,३६

दुख पावत हैं मोमिन, सो हम सह्यो न जाए।
हम भी होसी जाहेर, पेहेले सोहागनियां जगाए।।

सं ११/३५

महामत कहे ए मोमिनों, देखो खसम प्यार।
ईसा महंमद अन्दर आए के, खोल दिए सब द्वार।।

खु. १७/८२

हक को काम और कछू नहीं, देवें रूहों लाड़ लज्जत।
ए तो बिगर चाहे सुख देत हैं, तो मांग्या क्यों न पावत।।

श्रृं. २४/२८

तेहेकीक अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल-असल।।

खि. ३/५९

हकें न छोड़े अव्वल से, अपना इस्क दिल ल्याए।
आप इस्क न छोड़ी निसबत, पर मैं गई भुलाए।।
नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन।
तिनको भी हकें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन।।

खि. ६/ ३१,४०

कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत।
सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत।।

खि. १२/१००

बोहोत लाड़ किए मुझसों, इनों अर्स में मिल।
एक लाड़ किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल।।

खि. १३/३६

इनों बोहोत लाड़ किए मुझसों, मैं एक किया इनों सों।
सो एक मेरे लाड़ में, सब बेहे गैयां तिनमों।।

खि. १६/ ६२

सो चींटी सहूर दे समझाई, धनिएं आप जैसे कर लिए।
कर सनमंध अछरातीत सों , ले धनी धाम के किए।।

कि. ८१/६

महामत कहे मेहेबूब जी , मोहे खेल देखाया बुजरक।
करो मीठी बातें मुझसों , मेरे मीठे खसम हक।।

कि. १०६/२७

करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन।।

सा. ६/१८

इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम।।

सा. ८/३

हक सुराही ले हाथ में, दें मोमिनों भर भर।
सुख मस्ती देवें अपनी, और बात न इन बिगर।।

श्रृं. २/२४

दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम।
दें चाह्या सरूप सबन को, इन विध कादर खसम।।

श्रृं. २१/३२

७९. सुध देना ही तारतम है कंठी बांधना नहीं

असतसों उलटाए के, सतसों कराऊं संग।
परआतम सों बंध बांधूं, ज्यों होए न कबहूं भंग।।

क.हि. २३/४३

ऐसी कुंजी हकें दई, जो सहूरें कुलफ लगाए।
तो फरामोसी क्यों रहे, पर हाथ हुकम जगाए।।

खि. १५/६६

८०. हिन्दुस्तानी भाषा सबसे सुगम है।

सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख।
अब कहूं भाखा मैं किनकी, यामें भाखा तो कई लाख।।
बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।
सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन।।
बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।
सबको सुगम जानके, कहूंगी हिंदुस्तान।।
बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर।
करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर।।

सं. १/ १३,१४,१५,१६

८१. हिन्दु मुसलमानों को एक करना

एते दिन इन हुकमें, जुदे जुदे खेलाए।

सो ए हुकम इमाम का, अब लेत सबों मिलाए।।
सं. ३/७

८२. जबराईल अस्राफील की पहचान

महंमद सिफायत सब को, कुल्ल सैयन महंमद नूर।
सो बिन फरिस्ते क्यों होवहीं, तो लिया बीच रूह हजूर।।
साथ महंमद मेंहेंदी असराफील, ले मगज मुसाफी बल।
तो आया बीच अर्स अजीम के, पोहोंच्या बीच बड़े नूर असल।।
ना तो असराफील है नूर का,क्यों फरिस्ता सके आगे आए।
पर मगज मुसाफ नूर में, रूह महंमद लिया मिलाए।।
ए नूरी तीनों फरिस्ते, इनों की असल एक।
एक किया महंमद मोमिनों वास्ते, हक इलमें पाइए विवेक।।

मा.सा. ५/ २१,२३,२४,२५

हैयात किए सब इन ने, ए जो कहे बुजरक।
और बका सब को किए, जिमी आसमान खलक।।
मा.सा. १२/८८
आसमान जिमी जड़ मूल से, एक फूंके देवे उड़ाए।
कायम करे सब दूजी फूंके, बका भिस्तमें उठाए।।
महामत कहे ए मोमिनों, हादिएं खोले कयामत निसान।
हक अर्स बका जाहेर हुए, फरिस्ते नूरै नूर किया जहान।।
मा.सा. १२/९०,९१
असराफील गावे फुरकान, जाहेर करे निसान।
मगज मुसाफ के बातून, कर देवे पेहेचान।।
खुलासा मुसाफ का, असराफील बतावे।
तब सूरज मारफत का, हक अर्स दिल नजरों आवे।।
ठौर सबों के सब को, फरिस्ता बतावे।
पाक असराफील इन विध, कुरान को गावे।।

खासलखास रूहें उमत, गिरो फरिस्तों खास कहावे।
गिरो रूहों गिरो फरिस्ते, दोऊ अपने ठौर पोहोंचावे।।
एही सुंनत-जमात, महंमद बेसक दीन।
सकसुभे ना इनमें, जित असराफील अमीन।।
मा.सा. १५/९,१०,१३,१४,१५

लिख्या फलाने सिपारे, ऐसी खुस न कबूं आवाज।
ए फरिस्ता कबूं न आइया, ए जो आया आज।।
आया असराफील आखिर, महंमद मेंहेंदी साथ।
मुसाफ असराफील को, दिया अपने हाथ।।
ए किताबें जो आखिरी, आखिरी रसूल ल्याए।
सो मगज मुसाफ जाहेर कर, असराफीलें गाए।।
मा.सा. १७/३,८,१२

और न कोई पोहोंचिया, बड़े अर्स में इत।
आगे जाए जबराईल ना सक्या,कहे पर मेरे जलत।।
और हुए कई फरिस्ते, और कई पैगंमर।
जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर।।
असराफीलें बीच अर्स के, सब हकीकत लई।
सो ए मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही।।
ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया।।
कह्या पैगंमर आखिरी, असराफील भी आखिर।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर।।
असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के माहें।
और जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नाहें।।
मा. १७/ २१,२२,२६,२७,२९,३०

और न कोई पोहोंचिया, बड़े अर्स में इत।
आगे जाए जबराईल ना सक्या,कहे पर मेरे जलत।।
और हुए कई फरिस्ते, और कई पैगंमर।

जिन किनों पाई बुजरकी, ना जबराईल बिगर।।
असराफीलें बीच अर्स के, सब हकीकत लई।
सो ए मगज मुसाफ के, गाए के जाहेर कही।।
ना तो जबराईल महंमद पर, कलाम अल्ला ले आया।
पर माएना छिपा जो मगज, सो असराफीलें पाया।।
कह्या पैगंमर आखिरी, असराफील भी आखिर।
ए जुदे क्यों होवहीं, देखो सहूर कर।।
असराफील फिरवल्या, अर्स अजीम के माहें।
और जबराईल जबरूत की, हद छोड़ी नाहें।।
मा. १७/ २१,२२,२६,२७,२६,३०

८३. भागवत की निरर्थकता

मैं ना पेहेचानों आपको, ना सुध अपनों घर।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर।।
ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तिनहूं घेर।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाइए न काहूं सेर।।
ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध ना सूझे सल।
ए सुध काहूं ना परी, कई गए कर कर बल।।
ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप ना गम।
इत दीपक उजाला क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम।।
सं. ४/ १०,२१,२२,२३
कल्प विरिख तिहां वेद थयो, तेहेनूं फल निपनूं भागवत।
बन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम सुकें परसव्या संत।।
ए रस सनमुख साध लई ने, वैकुण्ठ सुन्य समाय।
बीजा काष्ट भखी जन जे हेठां उतरया,तेतां जल बिना लेहेरें पछटाय।।

कि.६८/ २२,२३

८४. ईश्क के दर्द और ज्ञान का मार्ग अलग अलग है।

ग्यान संग स्यानप मिली, तित क्यों कर आवे दरद।
ना आपे ना दरद किनें, सो होए जाए सब गरद।।
दरदी दरदा जानहीं, ग्यानी जाने ग्यान।
ए राह दोऊ जुदी परी, मिले ना काहू तान।।
दिवाना मूरख मिले, स्यानप मिले सैतान।
दरद ग्यान दोऊ जुदे, मिले न पिंड पेहेचान।।
कबूं मूढ़ दरदे मिले, पर दरद ना कबूं सैतान।
बीज अंकूर दोऊ जुदे, वैर सदाई जान।।
ग्याने प्यारी स्यानप, दरदे सेती वैर।
दरदें प्यारी दिवानगी, स्यानप लगे जेहेर।।
इत जुध किए कई सूरमों, पेहेन टोप सिल्हे पाखर।
वचन बड़े रण बोलके, उलट पड़े आखिर।।

स. ४/ ३०,३१,३२,३३,३४,३५

जिन जानो पाया नहीं, है पावन हार प्रवान।
सो छिपे इन छल थें, वाकी मिले ना कासों तान।।
सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ।
खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ।।
सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास।
प्रेमै में मगन भए, ताए होए गयो सब नास।।
प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए।
सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए।।
सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल।
या विध कोई न समझे, बात पड़ी है बल।।

स. ५/ ५४,५५,५६,५७,५८

ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम।
जोलों इस्क न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम।।

इस्क को सुख और है, और सुख इलम।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम।।

सा. ५/१३८,१३६

इस्क मिलावा और है ,और मिलावा मारफत।
इलमें लई कई लज्जतें, इस्क गरक वाहेदत।।

श्रृं. ५/३६

८५. पारब्रह्म का ज्ञान अब तक दुनिया में नहीं था।

वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम।
एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम।।
आद मध्य और अबलों, सब बोले या विध।
केवल विदेही होए गए, तिन भी न कही ए सुध।।
तबक चौदे ख्वाब के, याको पैड़े नींद निदान।
नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों कर करे पेहेचान।।
ए ख्वाबी दम सब नींद लो, दम नींदै के आधार।
जो कदी आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार।।

स. ५/ १०,११,४८,४६

जो हक काहूं न पाइया, ना किन सुनिया कान।
पाया न वाके अर्स को, जो कौन ठौर मकान।।
सब बुजरकों ढूंढ़या, किन पाई न बका तरफ।
दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ।।

सा. १४/१४,१५

दुनिया चौदे तबक की, सब दौड़ी बुध माफक।
सुरिया को उलंघ के, किन पाया न बका हक।।
पढ़ पढ़ वेद कतेब को, नाम धरे आलम।
एती खबर किन ना परी, कहां साहेब कौन हम।।

प. ३२/ २,३

किन कायम द्वार न खोलिया, अव्वल से आज दिन।
जो कोई बोल्या सो फना मिने, किन पाया न बका वतन।।

अर्स बका हक बरनन, सो बीच फना जिमी क्यों होए।
अव्वल से आज दिन लगे, बका सब्द न बोल्या कोए।।
श्रृं. १/४,५

हक चतुराई ना चौदे तबकों,हक बका कही न किन तरफ।
ला मकान सुन्य छोड़ के ,किन सीधा कह्या न एक हरफ।।
श्रृं. २/५१

इत वाहेदत कबूं न जाहेर, झूठे हक को जानें क्यों कर।
सुध वाहेदत क्यों ले सकें, जो उड़ें देखें नजर।।
श्रृं.२१/१००

वेद कतेब पढ़ पढ़ गए, किन पाई न हक तरफ।
खबर अर्स बका की, कोई बोल्या न एक हरफ।।
श्रृं. २३/७८

८६. नारायन भी निराकार के पार नहीं जा सके

ए खेल सारा सुन्य का, फिरे मने मन फेर।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर।।
केतेक बुजरक कहावहीं, सो याही सुन्य को चाहें।
सो गले सब इतहीं, आगे ना निकसे पाए।।
फिरे जहां थें नारायन, नाम धराया निगम।
सुन्य पार ना ले सके, हटके कह्या अगम।।
सुन्य की बिध केती कहूं, ए इंड जाके आधार।
नेत नेत केहेके फिरे, निगम को अगम अपार।।
स. ५/३७,३६,४०,४१

८७. विरह की अवस्था

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।।
विरहिन होवे पिया की, वाको कोई न उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आँगन न सोहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।।
ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए।
राज पृथी पांव दाब के, निकसी या बिध होए।।
विरहा न देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।
आठों जाम जब विरहनी, स्वांस लियो हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।

स. ७/६,७,८,६,१०,११

बिछुरो तेरो व ल्लभा, सो क्यों सहे सोहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, होए गई सब अगिन।।
विरहा जाने विरहनी, वाको आग न अंदर समाए।
सो झालें बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।।
विरहा न छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड न देखों ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।।
विरहिन विरहा बीच में, कियो सर्रा अपनो घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।।

स.८/२,३,४,५

यों चाहिए रूहन को, सुनते बिछोहा पिउ।
करते याद जो हक को, तबहीं निकस जाए जिउ।।
फिराक सुनते हक की, वजूद पकड़े क्यों इत।
जो रूह असल वतन की, ए नहीं तिन की सिफत।।

खु. ६/२७,२८

८८. सुन्दरसाथ साथी है चेले नहीं

मैं अंग इमाम को, मोमिन मेरे अंग।
बीच आए तिन वास्ते, करूं सब एक संग।।

स. ११/४६

अब ढूंढों रूहें अर्स की, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी मोमिन, खसम अंग निज नूर।।
स. १२/१

ए जो पीर मुरीद दोऊ कहे, कुफरान या दज्जाल।
अर्स रूहों को देखाए के, उड़ाए देसी ए ताल।।
स. १८/२

जब दुख मेरी रूहन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम अर्स अजीम के, अपने रूह नहीं दोए।।
स. २२/६१

दूजा जले इन राह में, ए वाहेदत का मैदान।
तीन सूरत महंमद या रूहें, ए एकै दिल मोमिन अर्स सुभान।।
स. २३/३६

८६. नवतनपुरी से भी अच्छा हिन्दुस्तान (दिल्ली)

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन।।
तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिंदुस्तान।
जहां मेंहदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान।।
सं.१३/४,५

६०. कुरान तारतम की महत्ता

तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिंदुस्तान।
जहां मेंहदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान।।
जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुख से ना निकसे दम।
अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुस्लिम।।
स. १३/५,६

लोक जाने ज्यों और है, ए भी फुरमान तिन रीत।
पर दिल के अंधे न समझहीं, ए फुरमान सब्दातीत।।
ए कागद नहीं फरेब का, और कागद सब छल।

अबहीं इमाम देखावहीं, रसूल किताब का बल।।
स. २०/६०,६१

ए नूर खुद वतनी, सो क्यों कर सह्यो जाए।
नूर मत आगे तो करी, जाने जिन कोई गोते खाए।।
स. २०/५७

ए कलमा जिन कानो सुन्या, ताए भी देसी सुख।
तो मुस्लिम का क्या केहेना, जो हक कर केहेवे मुख।।
ए कलमा जिन जिमिऐं, किया होए पसार।
तिन जिमी के लोक को, जिन कोई कहो कुफार।।
स. २१/४५,४६

बड़ा जाहेर ए माएना, कहे हक पे ल्याया फुरमान।
इन कलमे की दोस्ती, कह्या मिलसी रेहेमान।।
स. २२/४

चौदे तबक की दुनी के, मैं देखे सब कागद।
सो सारे ही बंद हुए, बिना एक महंमद।।
स. २८/२३

एही किताब बोहोतन पे, पर माएने पाए किन।
अब देखो आलम में, इन किताब नूर रोसन।।
सनंध ३०/१२

कागद चौदे तबक के, मैं देखी हकीकत।
सब गावें लीला जागनी, पर बड़ी महंमद की मत।।
ए तीनों गिरो कही जाहेर, पर ए बीच मारफत राह।
ए कलाम अल्ला में बेवरा, योहीं कह्या रूह अल्लाह।।
स. ४२/३

हक सूरत हादी साहेद, मसहूद है उमत।
सो हक खिलवत सब जानहीं, और ए जाने खेल रोज कयामत।।

कलाम अल्ला जो फुरमान, सो इन सबसे न्यारा जान।
ल्याया पैगंमर आखिरी, हक के कौल परवान।।
खु. २/९,१०

दुनियां चौदे तबकों, और मिलो त्रैगुन।
माएने मगज मुसाफ के, कोई खोले न हम बिन।।
खु. १४/५

सिफत तो सारी सब्द में , चौदे तबक के माहें।
कलाम अल्ला न्यारा सबन से , सो क्यों कहूं सिफत जुबांए।।
कि. १२१/१

आसमान जिमी के बीच में, बातें बिना हिसाब।
तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब।।
सा. १३/४५

ऐसी दारू ल्याए रूहअल्ला, जासों मुरदा जीवता होए।
पर फरामोसी इन हाँसी की, उठ न सके कोए।।
प. ३३/११

अर्स अल्ला दिल मोमिन, और दुनी दिल सैतान।
दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान।।
सि. २३/४८

दुनी जाने मोमिन दुनी से, ए नहीं बीच इन खलक।
एता भी न समझै, पुकारत कलाम हक।।
सि. २३/८२

ए पट खोल करें जाहेर, तब हुई तौहीद मदत।
दिल पाक करो इन आबसें, मुसाफ तब मोंह देखावत।।
मा.सा. ४/५७

जो हक मुख आपे कही, करता हों इसारत।
सो हक की हादी बिना, और न कोई समझत।।
छो.क्या. २/८८

९१. महंमद की पहचान

ए क्यों उपज्या है क्या, क्यों कयामत संग सुभान।
ए सब इमाम खोलसी, क रसी जाहेर माएने कुरान।।
क्यों फरेब से न्यारे रहिए, क्यों चलिए सरियान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
रूह कौन मोमिन कौन मुस्लिम, कौन रूह कुफरान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
ए किया जिन खातिर, आदम और हैवान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
ए किया जिन खातिर, आदम और हैवान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
नासूत मलकूत जबरूत, लाहूत चौथा आसमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।

स. २०/७,८,६,२५,२८,४०

खातिर तुम अर्स मोमिन, मैं ल्याया हक फुरमान।
कौल करत हों तेहेकीक, इत ल्याऊं बुलाए सुभान।।
जो किनहूं पाया नहीं, ना कछू सुनिया कान।
तिनका जामिन होए के, मैं इत मिलाऊं आन।।

स. २२/५,६

नूर पार थें रसूल आवहीं, ए देखो हकीकत।
हक भेजे अपना फुरमान, आगे आलम तो गफलत।।
दूसरा तो कोई है नहीं, ए ख्वाबी दम सब जहान।
तो रसूल आया किन वास्ते, हक पे ले फुरमान।।
ए न आवे ख्वाबी दम पर, अपना नूरी जेह।
देखो आंखें दिल खोल के, कोई मतलब बड़ा है एह।।
आसमान जिमी के लोक को, अर्स बका नाहीं खबर।
तो तिनका कासिद महंमद, होए अर्स से आवे क्यों कर।।
बेसहूर ऐसी दुनियां, माहें अबलीस आदम नसल।
तो कहे महंमद को कासिद, जो लानत ऊपर अकल।।

पैगंबर यों पुकारिया, मैं अल्ला का रसूल।
संग मेरे सो चले, जो चीन्हे सब्द घर मूल।।
मेरा वतन नूर के पार है, हवा से ख्वाबी दम।
इनों को मेरी खातिर, देसी भिस्त खसम।।
ए छल मोहोरे झूठ के, तिन पर क्यों आवे नूर जात।
ए दिल के फूटे यों तो कहें, जो पाई न नबी की बात।।
नूरी हक का तिन पर भेजिए, जो कोई नूरी हक का होए।
पर झूठे ख्वाबी दम पर, नूर पार थें न आवे कोए।।
ए न आवे ख्वाबी बुत पर, जाको नहीं हक सों अंतर।
पर जिन आंख कान न अकल, सोए समझे क्यों कर।।
ऐसा हलका कहे रसूल को, सो सुन होत मोहे ताब।
पर दोस देऊं मैं किनको, आगे तो दुनियां ख्वाब।।
और जो टेढ़ा कहे रसूल को, मैं तिनका निकालूं बल।
पर गुस्सा करूं मैं किन पर, आगे तो सब मृग जल।।
ए अपना नूरी तहां भेजिए, जो होवे अर्स मोमिन।
सो ए रूहें हम मोमिन, हक मासूक के तन।।
कोई केहेसी रसूलें ना खोले, बिना हुकम माएने कुरान।
सो तो आप नबी खुद हुकम, याकी हम रूहों पें पेहेचान।।
जिन कोई कहे रसूल को, रदा खुद दरम्यान।
आसिक ए मासूक कह्या, सो बिन देखे मिले क्यों तान।।
इन कुरान के माएने, जो खोलत रसूल तब।
तो इत आखिर इमाम, काहे को आवत अब।।
जो खोलत रसूल माएने, तो खेल रेहेत क्यों कर।
जो अर्स अजीम करते जाहेर, तो तबहीं होती आखिर।।

स. २४/६,७,८,११,१२,४१,४२,४३,५६,६०,६१,६२

सत छाया जीव पर पड़े, सो तबहीं मुरछाए।
ख्वाब न देखे सांच को, वह देखत ही मिट जाए।।
पर अंधे यों न समझहीं, जो इनका नाम रसूल।

सो तो पार से आया हक पे, याको जुलमत ना मूल।।
बात मासूक की सो करे, आगे आसिक अरधंग।
कहे कुरान पुकार के, रसूल न छाया संग।।

स. २६/४१,४२,४३

ए सांचा नूरी सांई का, इनके सब्द अगम।
फरिस्ते आदम जो मिलो, किन निकसे ना मुख दम।।
आप रसूल नहीं हद का, इनों अर्स-अजीम असल।
दुनी सुरिया उलंघ ना सके, पूरी हद की भी नहीं अकल।।
आदम मिलो कई औलिए, अंबिए बड़े आकीन।
नूरी कहावें फरिस्ते, पर किन रसूल को ना चीन।।

स. ३०/८,६,२०

रसूल आया हुकमें, तब नाम धराया गैन।
हुकम बजाए पीछा फिर्‍या, तब सोई ऐन का ऐन।।

स. ३६/६२

मसी और इमाम, जब देसी मेरी साहेदी।
मैं गुझ करी नूर जमाल सों, सो होसी जाहेर बुजरकी।।

खु. २/७८

हक जाहेर हुए बिना, मेरी बड़ाई जाहेर क्यों होए।
कायम सूर ऊगे बिना, क्यों चीन्हे रात में कोए।।

खु. २/८५

दे साहेदी खुदा की सो खुदा, ऐसा लिख्या बीच कुरान।
एक छूट दूजा है नहीं, यों बरहक महंमद जान।।

खु. ७/२७

इन उमत भाइयों वास्ते, महंमद आए तीन बेर।
दुनी क्या जाने बिना निसबत, बिना इलम रात अंधेर।।
जब जोड़े मिले मुकाबिल, तब जाहेर हुए रात दिन।
रात कुफर फना मिट गई, हुआ हक बका अर्स रोसन।।

मा.सा. १६/३५,३६

जिंन देव या आदमी, या जिमी आसमान फरिस्ते।
तीन सूरत महंमद की, है हादी सिर सब के।।
अव्वल कह्या महंमद, और बीच आखिर।
खाली नहीं बिना खलीफे, महंमद के बिगर।।
नूर महंमद कह्या हक का, दुनी सब महंमद नूर।
जरा एक महंमद बिना, नहीं कांहू जहूर।।
कही सूरत महंमद की, खावंद जमाने तीन।
इन तीनों सिर खिताब, गिरो रबानी हकीकी दीन।।

मा.सा. १७/७४,७६,८३,८४

काफर कौल कयामत के, जानते थे झूठ कर।
सो सरत महंमद की सत हुई, अग्यारहीं सदी आखिर।।
कोई एक कौल महंमद का, हुआ न चल विचल।
पर क्यों बूझें औलाद आदम की, जिनकी अबलीस नसल।।
साँचे कौल महंमद के, फिरवले सब पर।
जो कछू कह्या सो सब हुआ, पर समझे नहीं काफर।।

छो.क्या. २/६७,६८,६६

६२. मोमिन ही कुरान के मायने समझते हैं।

क्यों आवन क्यों गवन, क्यों कर विरहा मिलान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
एक खेल दूजा देखहीं, थिर चर चारों खान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।
रसूल आए किन वास्ते, किन पर ल्याए फुरमान।
ए सब इमाम खोलसी, करसी जाहेर माएने कुरान।।

स. २०/२३,२४,३१

६३. दाड़िम की तरह रुहें बैठी है।

गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए।।
बैठियां सब मिलके, अंग सों अंग लगाए।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए।।

खि. १६/४३,५०

इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल।
देखों इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल।।

सा. ४/ ४

सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए।
यों सबे हिल मिल र हीं, सरूप कहे न जावें दोए।।
देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक।
बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक।।
ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग।।
एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग।
दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग।।

सा. २/५,७,६,१२

अतंत शोभा लेत है, कबूं ना बैठियां यो कर।
यो बैठियां भर चबूतरें, द ूजा सोभा अति सागर।।
रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर।
केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिलकर।।
ओर चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए।
बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए।।

सा. २/१४,२१,३०

इन बिध कई रंग वस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए।
तिनमें भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए।।

सा. २/५

इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल।
देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल।।

सा. ४/४

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल।।

सा. ११/१

आगे बारे सहस्त्र बैठियां हिल मिल, जानों एकै अंग हुआ मिल।
याको क्यों कहूं सरूप सिनगार, जाने आतम देखनहार।।

प. ३/१८१

गले बाय सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए।।

खि. १६/४३

बैठियां सब मिलके, अंग सों अंग लगाए।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए।।

खि. १३ /५०

सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए।
यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए।।
देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक।
बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक।।
ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग।।

सा.२/५,७,६

एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग।
दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग।।

अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर।
यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर।।
रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर।
केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर।।

सा.२/१२,१४,२१

और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए।
बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए।।

सा.२/३०

इन बिध कई रंग व स्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए।
तिनमें भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए।।

सा.२/२५

गले बाय सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए।।

खि. १६/४३

बैठियां सब मिलके, अंग सों अंग लगाए।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए।।

खि. १३ /५०

सुन्दर साथ भ राए के, बैठियां सरूप एक होए।
यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए।।
देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे न जरों विवेक।
बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक।।
ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग।।

सा.२/५,७,६

एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग।
दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग।।
अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर।
यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर।।
रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर।
केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर।।

सा.२/१२,१४,२१

और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए।
बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए।।

सा.२/३०

इन बिध कई रंग वस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए।
तिनमें भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए।।

सा.२/२५

इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल।
देखों इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल।।

सा. ४/ ४

६४. धनी मोमिनों के ही वास्ते आये हैं

क्यों नूर क्यों नूर तजल्ला, क्यों कर वतन खसम।
खोलसी माएने इमाम, खातिर मोमिनों हम।।

स. २०/४६

६५. कुरान के भेद केवल इमाम मेंहदी ही जानते हैं।

माएने इन मुसाफ के, कोई खोल न सके और।
कह्या रसूलें इमाम थें, जाहेर होसी सब ठौर।।
मगज माएने मुसाफ के, सो होए न इमाम बिन।

सो इत बोहोतों देखिया, पर सुध ना परी काहू जन।।
गुझ का गुझ कौन पावहीं, बिना मेंहेदी इमाम।
ए रूह अल्ला जानहीं, मेरे अल्ला के कलाम।।
ए नूर के पार के माएने, सो सारों को अगम।
एक लुगा बिना इमाम, निकसे ना मुख दम।।

स. २०/४,५,६,५३

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम।
और हक कलाम कौन खोल सके,जो मिले चौदे तबक तमाम।।

खि. ४/५८

६६. इमाम मेंहेदी की पहचान

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम।
बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम।।

स. २१/४

मोमिन अंदर उजले, खिन खिन बढ़त उजास।
देह भरोसा ना करें, इमाम मिलन की आस।।

स.२२/२६

मैं नूर अंग इमाम का, खासी रूह खसम।
सुख देऊं जगाए के, मोमिन रूहें तले कदम।।

स. २२/४६

जब आया रब आलमीन, तब आया सबों आकीन।
और मजहब सब उड़ गए, एक खड़ा महंमद दीन।।
करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान।।

स. ३६/१६,१८

ईसा महंमद मेहेंदीय की, जो लों ना पेहेचान तुम।
तो लों तुममें कजाए का, क्योंकर चलसी हुकम।।

स. ३६/३७

जो हरफ जुबां चढ़े नहीं, सो क्यों चढ़े कुरान।

और जुबां ले आवसी, इमाम एही पेहेचान।।
बोलें न मेंहेदी एक जुबां, जुबां बोलें कई लाख।
आगे बिन जुबां बोलसी, बिन अंगों बिन भाख।।
खेल में मेंहेदी तोतला, जुबां कजा ए ठौर।
आगे तो नूर-तजल्ला, तहां जुबां बोल है और।।
स. ३९/२,३,४
महंमद चाहे सबों मिलावने, ए सब जुदागी डारत।
ए सब गुमाने जुदे किए, दुस्मन राह मारत।।
खु. १/७६
करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए।
लिख्या है कुरान में, सो बिना इमाम न होए।।
पढ़्या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब।
खु. १५/४,५
ए सब किताबें इन पे, तामें किल्ली कुरान।
रूह अल्ला महंमद मेंहेदी, एही इमाम पेहेचान।।
खु. १५/६
महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम।।
खु. १५/२१
भए जहूदों के बड़े बखत, पाई बुजरकी आए आखिरत।
इत जाहेर हुए इमाम हक, सोई काफर जो ल्यावे सक।।
उल्लू न चाहे ऊग्या सूर, जिन अंधों का दुस्मन नूर।
ए सुन वाका जो न ल्यावें ईमान, सोई चमगीदड़ उल्लू जान।।
ब.क्या. ७/१६,२०

९७. मुस्लिम की रहनी

कसनी लेवे आप सिर, साफ रोजे रमजान।
रात दिन याही जोस में, या दीन मुसलमान।।

माएने ले चीन्हें आपको, करे रसूल पेहेचान।
वतन सुध करे हक की, या दीन मुसलमान।।
रसूल आए किन ठौर से, किन वास्ते जिमी हैरान।
ए सुध सारी लेवहीं, या दीन मुसलमान।।
स. २१/१३,१४,१५

न्यारा रहे सबन थें, ए जो बीच जिमी आसमान।
संग करे खुद दरदी का, या दीन मुसलमान।।
भली बुरी किनकी नहीं, डरता रहे सुभान।
सोहोबत खूनी की ना करे, या दीन मुसलमान।।
साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट ना लगे गुमान।
बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान।।
रेहेवे निरगुन होए के, और निरगुन खान पान।
नजीक न जाए बदफैल के, या दीन मुसलमान।।
प्यारा नाम खुदाए का, फेरे तसबी लगाए तान।
रात दिन लहे बंदगी, या दीन मुसलमान।।
दरदा ले द्वारे खड़ी, खसम की गलतान।
रूह लगी रसूलसों, या दीन मुसलमान।।
हराम छोड़ हक लेवहीं, ए जो करी बयान।
आपा रखे आप वस, या द ीन मुसलमान।।
जो अंदर झूठी बंदगी, देखलावे बाहेर।
तिनको मुस्लिम जिन कहो, वह ख्वाबी दम जाहेर।।
स. २१/२१,२२,२८,२६,३०,३१,३२,३५

जो दुख देवे किनको, सो नाहीं मुसलमान।
नबिऐं मुसलमान का, नाम धरया मेहेरबान।।
स. ४०/२४

६८. अहंकार का त्याग

साफ रखे सबों अंगों, ज्यों छींट ना लगे गुमान।

बांधे दिल गरीबी सों, या दीन मुसलमान।।
स. २१/२८

हकें हाथ हिसाब लिया मोमिनों, तोड़या गुमान दे नुकसान।
तित बैठे अपना अर्स कर, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।
स. २३/३१

जो कोई खप करे या निध की, सो नाखे आप निघात।
महामत कहे ताए अखंड सुख दीजे, टालिए संसारी ताप।।
कि. १०/११

इलम चातुरी खूबी अंग की, मोहे एही पट लिख्या अंकूर।
एही न देवे देखने, मेरे दुलहे के मुख का नूर।।
एही अंकूर साथ कारने , करत मिलाप अंतराए।
न तो एकै आह इन पिया की, देवे सब उड़ाए।।
कि. ६२/४,५

जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे।
तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा।।
ब.क्या. ८/१७

६६. नहाने से दिल पवित्र नहीं होता

दिल पाक जोलों होए नहीं, कहा होए वजूद ऊपर से धोए।
धोए वजूद पाक दिल, कबहूं ना हुआ कोए।।
पाक हुआ दिल जिनका, तिन वजूद जामा पाक सब।
हिरस हवा सब इंद्रियां, तिन नहीं नापाकी कब।।
इन कलमें के सब्द से, सब छूटेगा संसार।
तो कहा कहूं मैं तिनको, जिन पेहेचान कह्या नर नार।।
ए कलमा इन दुनी का, सब दुख करसी दूर।
तिनको भी भिस्त होएसी, जिनके नहीं अंकूर।।
तबक चौदे जो कोई, रूह होसी सकल।

इन कलमें की बरकतें, तिन सुख होसी नेहेचल।।

स २१/४०,४१,४८,४६,५०

ए बानी तो अपरस करे आतम, तुम अपरस करो बाहेर अंग।

आकार अपरस किए कहा होए, इने आतम सों कैसो सनमंध।।

कि. १२/८

ए सुच कैसे होवहीं , तुम देखो याकी विध।
अनेक आचार कर कर थके , पर हुआ न कोई सुध।।
निस दिन ग्रहिए प्रेम सों, जुगल सरूप के चरन।
निरमल होना याही सों , और धाम बरनन।।
इन विध नरक जो छोड़िए, और उपाय कोई नाहें।
भजन बिना सब नरक है , पच पच मारिए माहें ।।
धनी बिना अंग निरमल चाहे , सो देखो चित ल्याए।
क्यों निरमल अंग होवहीं , जो इन विध रच्यो बनाए।।

कि. १०६/१ से ४

या तो खड़ी रहे रू खिलवतें, या तो देवे तवाफ।
हौज जोए या अर्स में, तूं इन विध हो रहे साफ।।
पाक पानी से न होइए, ना कोई और उपाए।
होए पाक मदत तौहीद की, हकें लिख भेज्या बनाए।।

सि. २४/६४,६५

पाक न होइए इन पानिएं, चाहिए अर्स का जल।
न्हाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल।।
पाक होना इन जिमिएं, और न कोई उपाएं।
लीजे राह रसूल इस्कें, तब देवें रसूल पोहोंचाए।।

सि. २५/४४,४५

१००. संध्या आरती का महत्व

बांग आवाज कानों सुनी, कुफर कहिए क्यों ताए।

सो रूह आखिर कजा समें, औरों भी लेसी बचाए।।

स. २१/४७

कही पाँच बिने मुस्लिम की, सोई पाँच बिने मोमिन।
वे करें बीच फना के, ए पांच बका बातन।।
जो मोमिन बिने पाँच अर्स में, सो होत बंदगी बातन।
जिन बिध होत हजूर, सो करत अर्स दिल मोमिन।।

खु. ४/६७,७२

ए तिलसम क्योंए न छूटहीं, जहां साफ न होवे दिल।
अर्स दिल अपना करके, चलिए रसूल सामिल।।

सि. २५/४३

पाक न होए पानी खाक से, और इलाज न पाकी कोए।
बिना पाक न हुकम छुए का, एक पाक हक से होए।।

मा.सा. ४/५२

१०१. धनी की पहचान न करने वाले बदनसीब है।

जाहेर दुलहा छोड़के, ढूंढ़त माएने गुझ।
ए खोज तिनों की देख के, होत अचम्भा मुझ।।
हाथ पकड़ देखावहीं, आप आए दरम्यान।
ए छोड़ और जो ढूंढहीं, तिन दिल आंख न कान।।
और माएने सो ढूंढ़हीं, ठौर ना जाको दिल।
रसूल रहीम मिलावहीं, और ढूंढे कहा बे अकल।।

स. २२/६,११,१३

१०२. कुलजम स्वरूप के वारिश मोमिन है।

हकें कौल किया जिन रूहन सों, सोई वारस हैं फुरकान।
जिन वास्ते आए हक मासूक, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।

स. २३/५

१०३. इमाम मेंहदी की सिफत

हकें सिफत लिखी नामें पैगंमरों, बीच हदीसों कुरान।

सो कही सिफत सब महंमद की, ए जाने दिल अर्स सुभान।।

स. २३/१०

मेहेर करी बड़ी महंमदें, आठों भिस्तों पर।
दोऊ गिरो दोऊ अर्सों, पोहोंचे रूहें फरिस्ते यों कर।।

खु. १/६८

सास्त्र सबे जो ग्रन्थ, ताके करते थे अनरथ।
बिना इमाम न कोई समरथ, जो पट खोल के करे अर्थ।।

खु. ११/४

रात अंधेरी मिट गई, हुआ उजाला दिन।
रब आलम जाहेर भए, सुर असुरों ग्रहे चरन।।

खु. १३/१०१

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।।

खु. १५/४७

रसूल कहे मैं आखिरी , मेरे पीछे न आवे कोए ।
कह्या रूह अल्ला की आवसी, और मेंहेदी इमाम सोए ।।
रूह अल्ला दो जामे पेहेरसी , दूसरे ऊपर मुद्दार।
सोई इमाम मेंहेदी , याकी बुजरकी बेसुमार ।।
मैं आया हों अव्वल , आखिर आवेगा खुदाए ।
काजी होए के बैठसी , करसी सबों कजाए ।।

कि. १०८/६,७,८

महामत कहें कोई दिल दे, ए देखेगा मजकूर।
तिन रूह पर इमाम का , बरसे वतनी नूर।।

कि. १२२/८

कई बड़े कहे पैगंमर, पर एक महंमद पर खतम।
कई फिरके हर पैगंमरों, गिरो सब कहे नाजी हम।।
कई कहावें खावंद कलमें, कई साहेब सहीफे किताब।

होए न काम महंमद बिना, जिन सिर आखिरी खिताब।।
जहूद नसारे पैगंमर, कई केहेलाए रात के माहें।
दिन ऊगे महंमद बुर्राक के, आगूं दौड़े सब जाएं।।
कि. ३/२०,८१,८२

जब रसूल आवें फेर कर, खोलसी द्वार हकीकत।
खतम है याही पर, होवे तबहीं अदालत।।
नबियों सिर नबी कह्या, सिर पैगंमरों पैगंमर।
आगे होए लेसी सब को, बीच बका पट खोल कर।।
मा.सा. ६/२५,३०

रसूल आखिरी अल्लाह का, ल्याया आखिरी किताब।
खोले रूहअल्ला आखिरी, दे मेंहेंदी को लिया सवाब।।
आई कुंजी इलम ईमामपे, जिन सिर आखिरी खिताब।
कजा महंमद जुबांए, सब पीवसी सरबत आब।।
एही बड़े पहाड़ दो निसान, बका बतावें बैत-अल्ला।
दे मुसाफ मगज साहेदियां, दिन देखावें नूरतजल्ला।।
मा.सा. १२/५३,५४,८१

एक दीन तब होवही, जब साफ होवे दिल।
ए हक बिना न होवहीं, जो चौदे तबक आवें मिल।।
सो ए खिताब रूहअल्ला का, या महंमद सिर खिताब।
या तो सिर इमाम के, जो आखिर खोलसी किताब।।
सोई खोले ए माएने, जिन लई मजल इन ठौर।
ए बानी वाहेदत की, दूजा केहेते जल मरे और।।
छो.क्या. २/२४,२५,२६

१०४. महाप्रलय से पहले मोमिन परमधाम जायेंगे।

उठाई गिरो एक अदल से, कयामत बखत रेहेमान।
देसी महंमद की साहेदी, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।
स. २३/१५

१०५. श्री श्यामा जी के वास्ते खेल बना।

ए सब किया महंमद वास्ते, चौदे तबक की जहान।
सो महंमद आए उमत वास्ते, ए दिल मोमिन अर्स सुभान।।
स. २३/१३

ए खेल हुआ वास्ते महंमद, महंमद आया वास्ते रूहन।
रूहअल्ला इलम ल्याए इनों पर, ए सब हुआ वास्ते मोमिन।।
खु. ४/१७

ए खेल हुआ महंमद वास्ते, और अर्स उमत।
आखिर जाहेर होए के, खोलसी हकीकत।।
खु. १७/१८

खेल किया महंमद वास्ते, जैसे खेल के कबूतर।
खासलखास गिरो रबानी, वह इनों की करे बराबर।।
खेल किया महंमद वास्ते, महंमद आया वास्ते उमत।
ताए एक दम न्यारी ना करें, मेहेर कर धरी तीन सूरत।।
मा.सा. १६/३३,३४

१०६. श्यामा जी के पंचभौतिक तन के बराबर भी जबराईल नहीं है।

मुरग अंदर बैठा खाक ले चोंच में, ना जबराईल तिन समान।
ए माएने मेयराज रूहें जानहीं, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
स. २३/२४

१०७. मेयराज की हकीकत

पोहोंचे महंमद मेयराज में, दो गोसे फरक कमान।
इत रूहें रहें दरगाह मिने, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
नब्बे हजार हरफ कहे नबी को, तामें कछू गुझ रखाए रेहेमान।
सो माएने जाहेर किए, जो दिल मोमिन अर्स सुभान।।
पोहोंच्या मेयराज में गुनाह मोमिनों, ए सुन उरझे मुसलमान।
ठौर गुन्हे न पोहोंच्या जबराईल, ए जाने दिल मोमिन अर्स सुभान।।

स. २३/२५,२६,३०

हक सूरत किन देखी नहीं, है कैसी सुनी न किन।
तरफ न जानी चौदे तबक में, महंमद पोहोंचे ठौर तिन।।
करी महंमदे मजकूर तिनसे, सुने हरफ नब्बे हजार।
जहूद तिन साहेब को, कहे सुन्य निराकार।।

खु. २/५६,६०

मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल।
बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल।।

खु. ३/६

जबराईल पोहोंच्या नूर लग, मैं पोहोंच्या पार हजूर।
मैं वास्ते उमत के, बोहोत करी मजकूर।।
कह्या सुभाने मुझको, हरफ नब्बे हजार।
कह्या तीस जाहेर कीजियो, और तीस तुम पर अखत्यार।।
बाकी जो तीस रहे, सो राखियो छिपाए।
बका दरवाजे खोलसी, आखिर को हम आए।।
कौल किया हकें मुझ से, हम आवेंगे आखिर।
ज्यों आवे ईमान उमत को, तुम जाए देओ खबर।।

खु. १२/१०,११,१२,१३

महंमद ईसा अर्स में, पोहोंचे हक हजूर।
कर अर्ज सब मेयराज में, बेसक करी मजकूर।।

खि. ७/२७

१०८. महंमद की सिफत

महंमद आया वास्ते मोमिन, ले हक पे फुरमान।
सब दुनियां करी एक दीन, भिस्त दई सब जहान।।
ए जो खेल कबूतर, कहे अर्स से आया रसूल।
सो कहे हमारा रसूल, दोजख में जले इन भूल।।

स. २४/१८,१६

महंमद आया नूर पार से, याही खेल के मांहें।

पर इन खेल में का नहीं, सो भी सक राखों नांहें।।
नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटंतर।
रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर।।
स.२५/१०,११

रसूल बड़ा सबन में, जिन हक की दई खबर।
कह्या मासूक का सब हुआ, आई कजा आखिर।।
तारीफ रसूल की तो करूं, जो इन जिमी का होए।
या ठौर बात जो नूर पार की, कबहूं ना बोल्या कोए।।
या सुध पार के पार की, किन मुख ना निकसे दम।
बुजरकी महंमद की, करत जाहेर खसम।।
स. २७/१७,१८,१६

प्रताप बड़ा महंमद का, जिन दिया सबों को सुख।
चौदे तबक की दुनी के, दूर किए सब दुख।।
स. २८/२

कई पेहेलवान कहावें दुनी में, ढूंढ ढूंढ हुए सरद।
सुन्य सुरिया पार न ले सके, बिना एक महंमद।।
बड़े बड़े सुभट सूरमें, पर हुआ न कोई मरद।
जो सुध ल्यावे नूर पार की, बिना एक महंमद।।
कई रोते फिरे रात दिन, पर हुआ न दीदार खुद।
कौन सुख देवे तिनको, बिना एक महंमद।।
कई वली पैगंमर आदम, ए कहावें सब मुरसद।
और मुरसद कोई न हुआ, बिना एक महंमद।।
स. २८/१२,१४,१७,१८,२०

एक लुगा झूठ ना होवहीं, जो बोले हजरत।
आगे ही थें सब कह्या, पर क यों समझे रूह गफलत।।
स. ३०/३४

तारीफ महंमद मेहेंदी की, ऐसी सुनी न कोई क्यांहें।

कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें।।
स. ३०/४३

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लो महंमद औरों बराबर।
दई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैंगमर।।
तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक।
हकें मासूक कह्या तो भी न समझें, क्या करे आम खलक।।
बका पोहोंच्या एक महंमद, कही जिनकी तीन सूरत।
तित और कोई न पोहोंचिया, जो लई इनों बका खिलवत।।
खु. २/७०,७१,७३

१०६. खुदा की सूरत

कहें हक को सूरत नहीं, तो फुरमान भेज्या किन।
दुनी सुध नहीं भेज्या किन पर, करसी कौन रोसन।।
एती सुध ना हमको, खोलसी कौन हकीकत।
कौन करसी कयामत जाहेर, कौन केहेसी हक मारफत।।
स. २४/३४,३५

खासल खास रूहें इस्क, और खासे बंदगी दिल।
आम वजूद जदल से, जिनों नासूती अकल।।
खि. ६/१७

हक सूरत किन पाई नहीं, ना अर्स पाया किन।
तरफ भी किन पाई नहीं, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।।
कह्या चौदे तबक जरा नहीं, तो बका सुध होसी किन।
हक सूरत अर्स कायम, सब दिल बीच कह्या मोमिन।।
सि. ६/६०/६१

जो हक अंग देख्या होए, हक जमाल न छोड़े तिन।
जाके अर्स की एक रंचक, त्रैलोकी उड़ावे त्रैगुन।।
सि. ११/२१

११०. खेल को एक क्षण भी नहीं हुआ

कोई केहेसी खेल कदीम का, सो अब आइयां क्यों कर।
ए माएने गुझ वतन के, सो भी सब देऊं खबर।।
खेल रचे खिन ना हुई, सो भी कहूं तुमें समझाए।
ए वतन के पाव पल में, कई पैदा फना हो जाए।।

स. २४/५६,५७

हजूर खिन एक ना हुई, इत चली जात मुद्दत।
ए क्या हक को खबर है नहीं, वह कहां गई निसबत।।

प.१८/१२

१११. मोमिन दुनियां को मुक्ति देने आये हैं।

जैसा खेल अव्वल का, ए जो रूहों देख्या ब्रह्मांड।
बरकत इन मोमिन की, सब दुनियां करी अखंड।।

स. २४/८३

निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।
मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आए ब्रह्म आतम सत।।

कि. ७६/१

११२. मोमिनों की बुजरकी

ऐ खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित।
तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत।।

स. २५/८

मोमिन मेरे अहेल हैं, हकें लिख्या माहें कुरान।
खोल इसारतें रमूजें, इनों जरे जरा पेहेचान।।
और जिन छुओ कुरान को, यों हकें लिखी हकीकत।
वाको नापाकी ना टरे, बिना तौहीद मदत।।
सो मदत तौहीद की, पाइए ना मोमिनों बिन।
ए दुनियाँ को चाहें नहीं, जाको हक बका रोसन।।
सो पाक मोमिन कहे, जिन लिया हकीकी दीन।

सो हक बिना कछू ना रखें, ऐसा इनका आकीन।।
खि. ८/२७,२८,२९,३०

लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान।।
मोती कहे जो इन को, जाको मोल न काहूं होए।
बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए।।
मोमिन बड़े मरातबे, नूर बिलंद से नाजल।
इनों काम हाल सब नूर के, अंग इस्कै के भीगल।।
औलिया लिल्ला दोस्त , जाके हिरदे हक सूरत।
बंदगी खुदा और इनकी, बीच नाहीं तफावत।।
एही गिरो इसलाम की, खड़ियां तले अर्स।
या दुनियां या दीन में, सब में इनको जस।।
लोक जिमी आसमा के, साफ जो करसी सब।
बुजरकी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब।।
कि. ७१/१,३,४,६,७,८

ब्रह्मसृष्ट वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान।
कई बिध की बुजरकियां, देखो साहेदी कुरान।।
कि. ७२/२

हकें अर्स किया दिल मोमिन, सो मता आया हक दिल सें।
तुमें ऐसी बड़ाई हकें लिखी, हाए हाए मोमिन गल ना गए इन में।।
सा. १/६

कही दुनियां हुई कुंन सों, सो जुलमत उड़ें उड़त।
ताको भिस्त देसी हादी हुकमें, गिनो मोमिनों की बरकत।।
श्रृं. २३/१३८

११३. नबी और नारायन की पहचान

नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटंतर।
रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर।।

सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल।
अपने अपने मुख से, जाहेर करें मजल।।
सो सब्द लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख।
जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख।।
स. २५/११,१२,१३

बैकुंठ मिने नारायन जी, जिन मुख स्वांसा वेद।
ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद।।
नारायन कहावें निगम, कहें मोहे खबर नहीं खुद।
नबी हक रसूल कहावहीं, कहे मैं ल्याया कागद।।
ए नबिऐं जाहेर कह्या, मैं हक पे आया रसूल।
दीन मुस्लिम जो होएसी, सो लेसी सब्द घर मूल।।
मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम।
याको मेरी खातिर, भिस्त देसी खसम।।
स. २५/२९,३०,३१,३२

११४. हिन्दु और मुस्लिम में अन्तर

रसूलें खुद को देख के, हुकम लिया दृढ़ाए।
जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढ़ाए।।
हिंदू और मुस्लिम के, बीच पड्यो है भरम।
रसूल कहे सब हुकमें, और निगमें दृढ़ाए करम।।
रसूल हक हुकम बिना, और न काढ़े बोल।
करम दृढ़ाए निगमें दिए, हिंदुओं सिर डमडोल।।
स. २५/३४,३५,३६

तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जब्द।
वैर लगाया या विध, कोई सुने न काहू को सब्द।।
तो सत सब्द के माएने, ले न सक्या कोए।
डूबे हिंदू स्यानपें, सो गए प्यारी उमर खोए।।
जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात।

और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात।।
तारी अरवाहें सबन की, चौद तबक की सृष्ट।
अवता र तीर्थंकर हो गए, किन तारे ना गछ इष्ट।।

स. २५/३८,३९,४०,४१

११५. हिन्दुओं में कोई भवसागर से पार नहीं हुआ

कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम।
यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम।।

स. २५/४२

११६. ज्ञानी अगुए भटकाते हैं।

कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास।
पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विस्वास।।
कुफर सारा काढ़सी, एक पलक में धोए।
खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए।।

स. २६/२,३

११७. अगुओं का पश्चाताप

याही दोजख अगनी जलें, और जले दुनी के दम।
आप जलें अपनी मिने, कहें हाए हाए भूले हम।।
खुदा न देवे दुख किन को, पर मारत है तकसीर।
पटक पटक सिर पीटहीं, रोसी राने राए फकीर।।
खुद काजी कजाए का, रसूलें किया अति सोर।
सो सोर याद जो आवहीं, हाए हाए झालें बढ़े त्यों जोर।।
जलसी खुद देखे पीछे, ऐसा बड़ा खसम।
कलमा रसूल का सुन के, हाए हाए पकड़े नहीं कदम।।
ज्यों ज्यों दुलहा देखहीं, त्यों त्यों उपजे दुख।
ऐसे मौले मेहेबूबसों, हाए हाए हुए नहीं सनमुख।।
खुद की सुध दई रसूलें, पर आया नहीं आकीन।
अंग मरोर जिमी परे, हाए हाए जिन रसूल को न चीन।।

एता मासूक पुकारिया, पर तो भी न छूटा फंद।
दंत बीच जुबां काटहीं, हाए हाए हुए बड़े अंध।।
जाए जाए समसेर लेवहीं, अब कीजे आप घात।
दिल दे कबहूं ना सुनी, हाय हाए पैगंमर की बात।।
ले ले छुरी पेट डारहीं, आकीन न आया अंग।
कही बात नबिऐं खुद की, हाए हाए लग्या न तासों रंग।।
बात न सुनी रसूल की, तिन सीखां लगियां कान।
इस्क हक का छोड़ के, हाए हाए डूबे जाए ग्यान।।
बातां सुनियां दूर से, पर लई न जाए के सुध।
सो गुन अंग इंद्री जलो, हाए हाए जलो सो बुध।।
आकीन जिन आया नहीं, सुनके महंमद बैन।
और विचार सबे जलो, हाए हाए जलो सो चातुरी चैन।।
धिक धिक ग्याता ग्यान को, जिन उलटी फिराई मत।
सो अगुए जलो आग में, हाए हाए करी बड़ी हरकत।।
बिना आकीने इस्क, कबहूं न उपज्या किन।
स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन।।
ख्वाब के सुख कारने, किया आपसों छल।
सब्द ना सुने रसूल के, हाए हाए खांए गोते बिना जल।।
कुरान जिनों न विचारिया, जलो सो तिनकी मत।
जो न जागी रसूल हुकमें, हाए हाए आग परो गफलत।।
बैठे उठे न पर सके, सके न रोए विकल।
आखिर जाहेर हुए पीछे, आग हुए जल बल।।
जिमी सकल जहान जो, हिंदू या मुसल्मीन।
हाथ काट पेट कूटहीं, हाए हाए जि रसूल को न चीन।।
सुध सीधी रसूलें दई, पर समझे नहीं चंडाल।
तिन अंग आग जो धखहीं, हाए हाए झंपे न क्यों ए झाल।।
खसम के आगे अब, क्यों उठावें सिर।
सब अंग आग जो हो रही, हाए हाए झालें उठें फेर फेर।।

देह काफर जले जो आग में, सो तो अचरज कछुए नांहें।
पर जो जले जान बूझ के, हाए हाए तिन आग लगी दिल मांहें।।
कुरान को पढ़ पढ़ गए, पर पाई न हकीकत किन।
तो मासूक प्यारा न लग्या, हाए हाए जिमी हुई अगिन।।
कई महंमद के कहावहीं, पर पूरे न लगे दिल दे।
तो मुसाफ न पाया मगज, हाए हाए जान बूझ जले ए।।
कलाम अल्ला आया हाथ में, पर मारफत न पाई किन।
सो भी आग छोड़े नहीं, हाए हाए तांबा जिमी हुई तिन।।
जान बूझ के जो भूले, चले न फुरमाए पर।
सो ल टके सूली आग की, हाए हाए जो हुए बेडर।।
दुस्मन बैठा दिल पर, सो तो जलाया चाहे।
सो जाहेर फरेब देत है, हाए हाए कोई न चीन्हे ताए।।

स. २६/४ से १७,२०,२२ से ३२

पढ़ों पढ़ाई दुनियां, अगुओं उलटी गत।
ए होसी सब जरदरू, अबहीं इन आखिरत।।

स. २७/६

जब काफर देखे अगुओं, तब जाने काले नाग।
करी दुनी को जरदरूं, इनहूं लगाई आग।।
दुनियां अगुओं देखहीं, तब जाने जैसे जेहेर।
यों दुनियां बीच अगुओं, बड़ा जो पड़सी वैर।।
ज्यों घायल सांप को चींटियां, लगियां बिना हिसाब।
त्यों अगुओं को दुनियां, मिल कर देसी ताब।।
आग दुनी को एक है, अगुओं को आग दोए।
एक आग दुनी की, दूजे अपने दुख को रोए।।
और आग सब सोहेली, पर ए आग सही न जाए।
अब देखोगे आपहीं, रेहेसी सब तलफाए।।

स. २७/७,८,६,१०,११

११८. विरह और इश्क के बिना कल्याण नहीं

आग सबों को ि वरह को, देकर करसी साफ।
जिन जैसी तैसी तिनों, आखिर ए इंसाफ।।
विकार सारे अंग के, काम क्रोध दिमाक।
सो बिना विरहा ना जलें, होए नहीं दिल पाक।।
आखिर भी इस्क बिना, हुआ न काहूं सुख।
सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कह्या आप मुख।।
अव्वल जो रसूलें कह्या, आखिर सोई प्रवान।
इस्क सांचा हक का, और आग सब जान।।

स. २७/१२,१३,१४,१५

सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इस्क।।

खि. १३/५०

पर ए देख्या अचरज , जो विरहा सब्द सुनत।
क्यों तन रह्या जीव बिना, हाए हाए ए सुनत न अरवा उड़त।।
आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरहा ना निकसत।
जब दिल विरहा जानिया, तब आह अंग चीर चलत।।
ए हांसी कराई हुकमें, इस्क दिया उड़ाए।
मुरदा ज्यों इस्क बिना, गावत विरहा लड़ाए।।

सि. २३/१२,१३,१४

ए छल झूठा देख के, तुम लई जो तिनकी बुध।
तो नजर बाहेर पड़ गई, जो भूले अर्स की सुध।।
जात भेख ऊपर के, ए सब छल की जहान।
जो न्यारा मांहें बाहेर से, तुम तासों करो पेहेचान।।

स. १२/४,५

कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस।।
चार बेर चौका देओ, लकड़ी जलाओ धोए जल।

अपरस करो बाहेर अंग को, पर मन ना होए निरमल।।

सीखो सबे संस्कृत, और पढ़ो सो वेद पुरान।

अर्थ करो द्वादस के, पर आप न होए पेहेचान ।।

साधो सबे जोगारंभ, अनहद अजपा आसन।

उड़ो गड़ो चढ़ो पांच में, आखिर सुन्य न छोड़ी किन।।

कि. १४/२,३,८,६

११६. परब्रह्म सबसे परे है।

दुनियां जो छाया मिने, सो करे अटकलें अनेक।
छाया सूर न देखहीं, पीछे कहे ताए रूप न रेख।।
क्यों सब्द आगे चले, तुम कर देखो विचार।
छाया पार किरना रहे, सूरज किरनों पार।।
पैदास जुलमत काल की, सो तो है सब नास।
खेलें काल के मुख में, ताए अबहीं करेगो ग्रास।।
हक सूरत नूर के पार है, तहां सब्द न पोहोंचे बुध।
चौदे तबक छाया मिने, इनें नहीं सूर की सुध।।
कोई ना उलंघे काल को, निराकार हवा ला सुंन।
याको कोई ना उलंघ सके, ए ग्रासे सब उतपन।।

स. २६/३१,३२,३३,३४,३५

लिख्या जो रसूल ने, तिन तो कह्या अगम।
तबक चौदे ख्वाब के, न्यारा रह्या खसम।।

४०/२

नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर।
तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर।।

दरिया ला मकान का, तिनकी लेहेर मलकूत।
तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत।।
ए तले ला मकान के, दोऊ फना के मांहें।
ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नांहें।।
खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन।
कदी ले इलम आगूं चले, गले ला मकान जो सुंन।।
ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूंढ़ें हक को अटकल।
रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल।।
ए सबें सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल।
ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल।।
इन विध चले जात हैं, आखिर अव्वल से।
यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किनने।।

खु. १६/३०,३१,३२,३५,३६,३९,४०

जो रूहें अर्स अजीम की, खासल खास उमत।
ले पोहोंचे नूरतजल्ला, महंमद तीन सूरत।।

खु. १६/५१

१२०. दज्जाल की हकीकत

दज्जाल नजरों न आवहीं, सब में किया दखल।
जाने दोस्त को दुस्मन, कोई ऐसी फिराई कल।।
अंदर जो बांधे या बिध, कही न जाए करामत।
सत असत कर देखहीं, असत लग्या होए सत।।
मन चित बुध अहंकार, काम क्रोध गफलत।
आउध ए दज्जाल के, स्यानप ग्यान असत।।

स. ३१/६,७,८

जुध बड़ा दज्जाल का, लिए जो सारे जीत।
भागे भी ना छूटहीं, कोई ऐसा बड़ा पलीत।।
जो बुजरक बड़े कहावहीं, तिन जुध किए मिल मिल।
सो फरिस्ते उलटाए के, ले डारे गफलत दिल।।

कोई न छोड़्या दज्जालें, जीत लिए सकल।
ऐसे अंधे कर लिए, कोई सके न काहूं चल।।
दुनियां ब ाहेर देखहीं, अजूं आया नहीं दज्जाल।
बंदगी करते आवसी, तब लड़सी तिन नाल।।

स. ३१/१२,१५,१७,२०

ए आदम औलाद सब जानत, इन बदला मांग लिया हक पें।
क्यों छूटे बंध दुस्मन के, तो किन चल्या ना इनसें।।
क्यों करें जंग दज्जाल सें, काफर या मुसलमान।
औलाद आदम सब ताबीन, पातसाह दिलों सैतान।।
तो क्या चले बंदन का, जिनदिल पर ए पातसाह।
सब जानें दुस्मन मारसी, हक तरफ चलते राह।।
मोमिन उतरे नूर बिलंद से, तो कह्या अर्स कलूब।
तिन तरफ क्यों आए सके, जिनका हक मेहेबूब।।

स. ३१/३०,३१,३२,३५

कुदरत रूप दज्जाल को, किनहूं न जान्या जाए।
तब सबों को सुध परी, जब ईसे दिया उड़ाए।।
इमाम तो मारे इनको, जो ए आपे होए वजूद।
इमाम के आवाज से, होए गया नाबूद।।

स. ३१/४३,४४

१२१. इमाम का प्रताप

ए जो खेल था कुदरती, काहूं खोल न देखी नजर।
सो उड़ाए दई पेड़ जुलमत, जब आए इमाम आखिर।।
त्रिगुन त्रैलोकी मोह की, कहां तें हुई किन पर।
सो संसे न रह्या किन का, जब आए इमाम आखिर।।
वेद कतेब के माएने, सब दृढ़ हुए दिल धर।
किए मगज माएने जाहेर,जब आए इमाम आखिर।।
इलम ले ले अपना, सब जुदे हुए झगर।
सो सारे एक दीन हुए, जब आए इमाम आखिर।।

गैबी मार दज्जाल का सब में गया पसर।
सो साफ हुई सब दुनियां, जब आए इमाम आखिर।।
मुस्लिम को मुस्लिम की, हिंदुओं हिंदुओं की तर।
ए समझे सब अपनी मिने, जब आए इमाम आखिर।।
अलख जो अगम कहावहीं, ताकी कर कर थके फिकर।
सो सक सुभे सब उड़ गई, जब आए इमाम आखिर।।
पार सुध किन ना हती, बाहेर अंदर अंतर।
सो सारे संसे गए, जब आए इमाम आखिर।।
ढूंढ़ ढूंढ़ के सब थके, ए जो लैलत-कदर।
ए दरवाजा खोलिया, जब आए इमाम आखिर।।
बड़े सुख मोमिन लेवहीं, रस इस्क पिएं भर भर।
औरों को भी पिलावहीं, जब आए इमाम आखिर।।
बेचून बेचगून बेसबी, है बेनिमून क्यों कर।
सो जाहेर हुआ सबन को, जब आए इमाम आखिर।।
सेहेरग से हक नजीक, ए खोली ना किन नजर।
सो पट उड़ाए जाहेर किए, जब आए इमाम आखिर।।
किन पाया ना मगज मुसाफ का, जो ल्याया आखिरी पैगंमर।
किया जाहेर यासों हक बका, जब आए इमाम आखिर।।
लेवे खिताब इमाम का, बातून खुले ना इन बिगर।
सो खोलके भिस्त दई सबों, जब आए इमाम आखिर।।

स. ३२/६,७,११,१२,१३,२०,२२,२५,२६,३१,३७,३८,४१,४२

जो लों जाहेर हक ना हुए, तो लों मारे दिमाक।
हक प्रगटे कुफर मिट गया, सब दुनियां हुई पाक।।

स. ३३/२१

१२२. तीनों सूरतों का विवरण

नूर अकल ले लदुन्नी, हुकमें किया पसार।
महंमद मेंहेदी ईसा आवसी, आगे चेतावें नर नार।।

स. ३३/१७

महंमद बिना मेंहेदीय की, करदे कौन पेहेचान।
इन विध माएने तो लिखे, जो निसबत अव्वल की जान।।
एही कलाम अल्लाह के, अपनी देत खबर।
काजी ईसा मेंहेदी महंमद, ए जुदे होंए क्यों कर।।
स. ३६/२८,२६

कहां अर्स कहां हक बका, कहां है नूर मकान।
क्यों पावे महंमद तीन सूरत, जो लों ना ए पेहेचान।।
जब ईसा मेंहेदी महंमद मिले, तब मिले सब आए।
फेर पीछा क्या देखहीं, परदा दिया उड़ाए।।
स. ३६/४६,६६

ए तीनों सूरत हादीय की, आई जुदी जुदी हम कारन।
आखिर खेल देखाए के, सब समझाई रूहन।।
स. ३६/६४

बसरी मलकी और हकी, लिखी महंमद तीन सूरत।
होसी हक दीदार सबन को, करसी महंमद सिफायत।।
खु. १/७८

लिख्या नामे मेयराज में, हरफ नब्बे हजार।
तीस तीस तीनों सरूपों पर, दिए जुदे जुदे अखत्यार।।
एक जाहेर किए बसरिएँ, दूजे रखे मलकी पर।
तीसरे सूरत हकी पे, सो गुझ खोल करसी फजर।।
कही सूरत तीन रसूल की, हुई तीनों पर इनायत हक।
किया तीनों का बेवरा, हरफ नब्बे हजार बेसक।।
राह चलाई बसरिएँ फुरमानें, दई कुंजी मलकी हकीकत।
हकी हक सूरत, किया जाहेर दिन मारफत।।
ए अव्वल कह्या रसूलें, होसी जाहेर बखत कयामत।
मता सब मेयराज का, करी जाहेर गुझ खिलवत।।
खु. २/४,५,६,७,८

बसरी मलकी और हकी, तीन सूरत महंमद की जे।

ए तीनों सूरत दे साहेदी, आखिर अर्स देखावें ए।।

सि. २४/१०

रसूल कहे फुरमान में, मेरी तीनों एक सूरत।
सो पोहोंची नजीक हक के, और कोई न पोहोंच्या तित।।
बसरी मलकी और हकी, माहें फैल तीनों के।
सो खोले फुरमान को, आखिर सूरत हकी जे।।

खि. १४/७२,७३

महंमद की फुरमान में, कही तीन सूरत।
बसरी मलकी और हकी, एक अव्वल दो आखिरत।।

सा. ५/८

कई सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बनमाली।
इन बिध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली।।

सा. १३/१२

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर।
आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धरा।

सा. १३/३८

तीन सूरत महंमद की, गुझ हक का जानें सोए।
हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए।।

सा. १४/३६

चौथी तरफ नाहीं कह्या, सो मेरी परीछा लेन।
जाने मेरे इलम से रूह आपै, केहेसी आप मुख बैन।।

प. ३०/१७

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
तामें दोए देसी हक साहेदी, हकी खोले सब हकीकत।।

श्रृं. ३/२५

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
कारज सारे सिध किए, अव्वल बीच आखिरत।।
ए तीनों मिल किया जहूर, अव्वल आखिर रोसन।

हक बैठे इन इलम में, तो दिल अर्स हुआ मोमिन।।
श्रृं. २६/१,२

अव्वल सूरत एक बसरी, पीछे सूरत मलकी।
कही तीसरी आखिर, सूरत जो हकी।।
ए तीनों बातून में एक हैं, जो देखिए हकीकत।
तब सबे सुध पाइए, होए बका मारफत।।
मा.सा. १७/१८,१६

बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब।।
छो.क्या. १/८

अव्वल से बीच अब लग, तरफ पाई न बका की।
महंमद एता ही बोलिया, जासों ईसा पावें साहेदी।।
सो लई रूहअल्ला साहेदी, दूजी साहेदी आप दई।
त्यों करी इमामें जाहेर, ज्यों सब में रोसन भई।।
लई ईसे महंमद की साहेदी, बका जाहेर किया इमाम।
हक हादी रूहन की, करी खिलवत जाहेर तमाम।।
इन आखिर दिनों इमाम, बानी बोले न बका बिन।
सो सिर ले सुकन गिरोहने, कायम किए सबन।।
श्रृं .२६/५०,५१,५२,५३

ए तो बुजरकी मंहमद की, मेयराज हुआ इनपर।
महंमद साहेदी ईसे मेहेंदी बिना, कोई पूजा देवें क्यों कर।।
श्रृं.२६/१०८

१२३. सबका मेल होना

जिन्होंने कबूं कानों ना सुनी, जात बरन भेख धर।
आवत सब उछरंग में, हुई बधाइयां घर घर।।
करने दीदार हक का, आए मिली सब जहान।
साफ हुए दिल सबन के, उड़ गई कुफरान।।

खाए पिऐं सब मिलके, बंदगी एक खसम।
नाम न्यारे सब टल गए, हुई नई एक रसम।।
मेला अति बड़ा हुआ, पसर गई पेहेचान।
सेहेदाने सबों घरों, चारों खूंटों बजे निसान।।
स. ३६/१३,१८,१६,२०

१२४. धनी की लीला एक समय में एक ही तन से होती है।

नूर हक के अंग का, होवे एकै ठौर।
इत थें दूजे पसरे, पर न होवे काहूं और।।
स.३६/३६

इलम सहूर मेहेर हुकम, ए चारों चीजें होएं एक ठौर।
तिन खैंच लिया मता अर्स का, पट नहीं कोई और।।
अर्स तन दिल में ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहें।
सुख लज्जत अर्स तन खैंचहीं, तब क्यों रहे अन्तर माहें।।
श्रृं. ११/७८,७६

१२५. धनी के आने से पहले किसी को भी सुध नहीं थीं।

सुध नाहीं फरिस्तन की, ना पेहेचान रूहन।
ना पेहेचान मुतकी की, ना पेहेचान मोमिन।।
सुध ना उतरने पुल-सरात, ना सुध सरा तरीकत।
ना पेहेचान हकीकत की, ना पेहेचान हक मारफत।।
पेहेचान आप ना नासूत की, ना पेहेचान मलकूत।
ना सुध बका जबरूत की, ना सुध अर्स लाहूत।।
ए पेहेचान काहूं ना परी, क्या बेचून बेचगून।
ना पेहेचान ला मकान की, ना बेसबी बेनिमून।।
ना पेहेचान हवाए की, जामें चौदे तबक झूलत।
जिन से आए काफर, ना सुध तिन जुलमत।।
ना सुध खासी गिरोह की, जो कहावत है बुजरक।

जिन को हिदायत हक की,तिन सोहोबतें पाइए हक।।
ना सुध निराकार की,ना सुध निरगुन सुंन।
ना सुध ब्रह्म क्यों व्यापक, कैसी सूरत निरंजन।।
स. ३६/३८,३६,४०,४१,४२,४३,४४

माएनें ऊपर का सबों लिया, और लिया अहंकार।
फिरके फिरे सब हक से, बांधे जाए कतार।।
कहे सब एक वजूद है, और सब में एकै दम।
सब कहे साहेब एक है, पर सबकी लड़े रसम।।
क्यों निसान कयामत के, क्यों कर फना आखिर।
कहे सब विध लिखी कुरान में, सो पाई न काहूं खबर।।
क्यों कर लैलत कदर है, क्यों कर हौज कौसर।
ए सुध किनको न परी, कौन किताबें क्यों कर।।
खु. १०/११,१२,१३,१४

त्रैगुन सिफत कर कर गए,ए जो खावंद जिमी आसमान।
खोज खोज खाली गए, माहें थके ला मकान।।
मलकूत साहेब फरिस्ते, हक ढूंढ़या चहूं ओर।
रहे बेचून बेसबीय में, ना पाया बका ठौर।।
खि. ६/८,६

१२६. जीव सृष्टि के हिन्दुओं को सुध नहीं हुई

ना सुध ब्रह्मसृष्ट की, सुध सृष्ट ना ईस्वरी।
हिंदु जो जीव सृष्ट के, तिन ए सुध ना परी।।
स. ३६/४५

विजिया अभिनंदन बुधजी, और निहकलंक अवतार।
वेदों कह्या आखिर जमाने, एही है सिरदारा।।
इनमें लिखी आखिर, सो सुध ना परी काहू जन।
पढ़ पढ़ गए कई वेद को, पर उनों पाया न कयामत दिन।।
स. ३६/४६,४७

ए खांवद काहूँ न पाइया, खोज खोज थके सब मिल।

चौद तबक की दुनी की, पोहोंचे ना फहम अकल।।
खु. ६/३३

१२७. फरिश्तों का विवरण

पांच फरिस्ते नूर से, खड़े मिने हुकम।
पाव पल में पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।।
यामें एक रसूल संग, ए जो जबराईल।
सो नूर से आवत रूहन पर, हकें भेज्या रोसन वकील।।
ए जो ले खड़े खेल को, और कहे जो चार।
ए असलकतरा नूर का, जिनको एह विस्तार।।
यामें एक फरिस्ता, तिन से उपजे सब।
सरत आखिर असराफील, नूर से आया अब।।
स. ३७/२,३,४,५

अजाजील असराफील, इन दोऊ की असल एक।
पैदा अजाजील से, सो भी कहूं विवेक।।
कतरे से पैदा हुआ, इन से उपजे दोए।
तामें एक सबों को पालहीं, एक करत कबज रूह सोए।।
ए दोऊ जो पैदा हुए, सो ले खड़े सब छल।
नूर की नजरों चढ़े, तिनों आया सबों बल।।
यों चारों पैदा हुए, खड़े रहे जिन खातिर।
सोई काम सोई जाएगा, ए भी दोऊ देऊं खबर।।
एक पैदा कर वजूद खेलावहीं, दूजा पाले तिन।
तीसरा किन किन लेवहीं, चौथा उड़ावे सबन।।
यों नूर नजर चारों पर, इन बिध हुई पैदास।
फेर कहूं बेवरा इन का, ए जो खेलें खेल लिबास।।
अजाजील को गफलतें, हुकमें दिया उलटाए।
ले तखत बैठाया छलके, सब फरेब जुगत बनाए।।
अजाजील से फरिस्ते, उपजे बिना हिसाब।
सो दम सबों में इनका, ए जो खेलें मिने ख्वाब।।

पाले मेकाईल इन को, रूह कबज करे अजराईल।
ए खेल समेत फरिस्ते, आखिर उड़ावे असराफील।।
ला हवा से तेहेतसरा लग, ए सब खेल में पातसाह एक।
कहे या बिन और कोई नहीं, एही है एक नेक।।

स. ३७/६,७,८,६,१०,११,१३,१४,२१,२२

१२८. बांग देने का रहस्य

रसूलें हम वास्ते, मुनारे मुल्लां चढ़ाए।
जिन कोई मोमिन भूलहीं, ठौर ठौर पुकार कराए।।
कोई भूली राह बतावहीं, ताए बड़ा सवाब।
ढिंढोरा फिराइया, कर कर एह जवाब।।

३४/४३,४४

१२६. फरदारोज को खुदा का आना

एही फरदा रोज कयामत, जो कही हजरत।
सो ए हुए सबे जाहेर, जिनको दुनी ढूंढ़त।।

स. ३७/५१

रूहेंगिरो तब इत आईं नहीं, तो यों करी सरत।
कह्या खुदा हम इत आवसी, फरदा रोज कयामत।।
जब एक रात एक दिन हुआ, सो एही फरदा कयामत।
अहेल किताब मोमिन कहे, हादी कुरान सूरत।।

खु. २/२८,२६

दसमी सदी भी हिसाब में, गिनती में आई।
इतथें सुरू हुई, रूहअल्ला की रोसनाई।।
हजार मास जो लैल के, हुए सदी अग्यारहीं भर।
लिखी जो इसारतें, भई पूरी मिल बेहेतर।।

मा.सा. १५/६,७

१३०. कजा और जीवों का अखण्ड होना।

ए कहूं फना पेहेले जिन विध, होसी इन आखिरत।

ज्यों पावें सुख भिस्तमें, उठ के रूह कयामत।।
ए कजा हुई दुनियां मिने, खोले हकीकत मारफत।
तिन मता बका अर्स का, जाहेर करी न्यामत।।
एनूर कजा का या बिध, जिन टाली फेर अंधेर।
जो न राखूं ले हुकम, तो भोर होत केती बेर।।
कयामत काजी मोमिनों, पेहेले होसी जब।
फैलसी नूर आलम में, काजी कजा का सब।।
स. ३७/५४,५५,५७,५८

काजी कजा के नूर की, बजसी कई करनाल।
नूर अकल असराफील, बजाए स्वर रसाल।।
पेहेले दिए सब उड़ाए के, चौदे तबक दम जे।
काजी कजा के नूर से, भिस्त में बैठे नूर ले।।
पेहेले सब फना कर, उठाए लिए ततखिन।
साफ किए सब नूर ने, यों भिस्त भई वतन।।
या भिस्त में इन सुख को, केतो कहूं विस्तार।
दिल चाह्या सब पावहीं, सब बिध सुख करार।।
स. ३७/६०,६५,६८,७८

चौदे तबक नूरने, फेर किया मंडल।
खेल चाल दिल चाहते, नूर अरवा नूर बल।।
सुन्य चाही तिन सुन्य दई, भिस्त चाही तिन भिस्त।
नूर चाह्या तिन नूर दिया, यों पाई अपनी किस्त।।
मोमिन रूहें कदमों लिए, फरिस्ते नूर समाए।
तीसरे सारे भिस्त में, सो बैठे नूर की छांए।।
उड़ाया कतरा नूर का, सो जाए रह्या मिने नूर।
फेर नजर करी भिस्त पर, हुई रोसन भर पूर।।
काजी कजा करके, ले उठसी रूह मोमिन।
पेहेले ए कयामत होएसी, पीछे अरवाहें सबन।।
स. ३७/७६,७७,७९,८३,८६

१३१. हुकम का विवरण

तब हम मोमिन मिल के, खेल मांग्या हादी हक पे।
तब हुकमें पेहेले पैदा किया, हमारी नजर हुई खेल में।।
तब सरूप हुकम के, खेल किया मिने पल।
हाथ फुरमान ले आइया, रसूल हमारा चल।।
हम भी देखें खेल को, हुकमें मोमिन मिल।
ढूंढ़ें अपने खसम को, पेड़ हुकमें फिराई कल।।
ए खेल सब हुकमें हुआ, सब खेलें हुकम मांहें।
हुकमें सब होसी फना, हुकम बिना कछू नांहें।।
स.३८/६,७,८,६
हुकमें जड़ चेतन करे, करे चेतन को जड़।
हुकमें सेती हारिए, हुकमें मारे पकड़।।
कई दीन फिरके मजहब, खेल फरिस्ते दम।
ए खेल किया हुकमें देखने, सब पर एक हुकम।।
हुकमें करहीं बंदगी, हुकमें इस्क ले।
हुकमें चोरी कर ल्यावहीं, हुकमें जाए सिर दे।।
चले रहे सब हुकमें, बैठे सोवे हुकम।
बिना हुकम रूह सबके, मुख ना निकसे दम।।
स. ३८/११,१३,१६,१७
करम काल सब हुकमें, बांधे खोले हुकम।
भिस्त दोजख हुकमें, हुकमें देवे कदम।।
दाना दिवाना हुकमें, हुकमें दोस निरदोस।
दूर नजीक करे हुकमें, हुकमें अपना जोस।।
सब पर हुकम हक का, कहे पुकार रसूल।
जल थल चौदे तबकों, कोई ज रा ना हुकमें भूल।।
सरूप रसूल हुकम, आगे खड़ा खसम।
हुकमें देखाया रूहन को, बैठे देखें तले कदम।।
अजाजील भूल्या नहीं, पर हुकमें भुलाया ताए।

ओ तो सिर ले हुकम, खड़ा है एक पाए।।
नूरी फरिस्ता हुकमें, ले डारया उलटाए।
ए मोमिनों खातिर हुकम, कई विध खेल बनाए।।
स. ३८/१८,१६,२८,३०,३३,३५
पाँउ ना उठे हुकम बिना, मुख ना निकसे दम।
दिल चितवन भी ना करे, फरिस्ता बिना हुकम।।
जिन आदम में महंमद, हुकमें आए मोमिन।
अजाजील अब हुकमें, पकड़ कदम हुआ रोसन।।
ए खेल किया हुकमें, हुकमें आए रसूल।
हुकमें मोमिन आए के, गए खेल में भूल।।
बांधे आप हुकम के, काजी हुए इत आए।
कौल किया मोमिनोंसों, सो पाल्या खेल देखाए।।
स. ३८/३६,४१,४६,४६
हम तो हुए इत हुकम तले, मैं न हमारी हममें।
एमैं बोले हक का हुकम, यों बारीक अर्स माएने।।
हुकम किया चाहे बरनन, ले हक हुकम मुतलक।
करना जाहेर बीच झूठी जिमी, जित छूटी न कबूं किन सक।।
दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर।
हकें हुकम हाथ अपने लिया,जो दिया था महंमद के सिर पर।।
श्रृं. १/६३,६४,६५
अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम।
दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम।।
श्रृं. २/१

१३२. नूह तूफान की हकीकत

इत खेलत रूहें अर्स की, जो स्यामें उतारी किस्ती पर।
सो रूहें पोहोंची इन बाग में, और तोफाने डूबे काफर।।
ए नूर तोफान कह्या रसूलें, और गुझ रह्या रूहों रोसन।
किस्ती पार उतारी सबों सुनी, सुध ना परी पोहोंची बाग किन।।

स. ३६/२६,२७

१३३. बहिश्तों के सुख का अन्तर

नूर रास भी बरन्यो ना गयो, तो भिस्त बरनन क्यों होए।
बोहोत बड़ी तफावत, रास भिस्त इन दोए।।
निबेरा भिस्त रास का, कहूं पावने रूहों हिसाब।
भिस्त को सुख है जागते, रास को सुख है ख्वाब।।
रास भिस्त या जो कछू, ए सब पैदा असल नूर।
तिन असल नूर की क्यों कहूं, जो द्वार आगूं हजूर।।
रास भिस्त लेहेरें कही, कही नूर मकान की बिध।
आगे तो नूर तजल्ला, सो ए देऊं नेक सुध।।

स. ३६/३२,३५,३६,४५

१३४.धनी एवं श्यामा जी के तन और अंग

नूरजमाल अंग का नूर जो, बड़ी रूह रूहों सिरदार।
बड़ी रूह के अंग का नूर जो, रूहें बुजरक बारें हजार।।
हम रूहें हमेसा बका मिने, रूह अल्ला के तन।
असल तन हमारे अर्स में, और कछू न जानें हक बिन।।
हम सब में इस्क हक का, ऊपर बरसे हक का नूर।
हम हमेसा हक खिलवतें, हम सब हक हजूर।।
हकें हुकम किया दिल पर, तब खेल मांग्या हम एह।
तब हमको खेल देखाइया, खेल हुआ नूर का जेह।।
हकें दिया इलम अपना, तिनका तो हकै से काम।
और हम को क्या हक बिना, रात दिन लेना क्यों आराम।।

स. ३६/४८,५१,५२,६१,७१

रूहें तन हादीय का, हादी तन हैं हक।
नूर तन नूर जमाल का, इत जरा नाहीं सक।।

खि. ३/३७

बड़ीरूह कहे प्यारे मुझे, मेरा साहेब बुजरक।

और प्यारी रूहें मेरे तन हैं, ए जानो तुम बेसक।।
तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवे हक।
बोहोत प्यारी बड़ीरूह मुझे, मैं तुमारा आसिक।।
खि. १३/६,७

साथ अंग सिरदार को, सिरदार धनी को अंग ।
बीच सिरदार दोऊ अंग के , करे न रंग को भंग।।
कि. ६५/६

बरनन करूं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इनका जहूर।।
हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और।
इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर।।
सा. ६/१,३०

देखो कौन सरूप बड़ी रूह का, आपन रूहें जाको अंग।
हक प्याले पिलावत, बैठाए के अपने संग।।
ए सिरदार कदीम रूहन के, हक जात का नूर।
तिन नूर को नूर सब रूहें, ए वाहेदत एकै जहूर।।
प. ३२/४६,५१

१३५. कुरान में परमधाम का वर्णन

किया बरनन श्री धाम का, कई विध लिखे निसान।
साथ को सुख उपजावने, ठौर ठौर किए बयान।।
जमुना जरी किनार पर, कई दयोहरियाँ तलाब।
भांत भांत रंग झलकत, यों कई जवेर जड़ाव।।
नीर उजले खीर से, खुसबोए जिमी रेत सेत।
पसु कई विध खेलहीं, यों कागद निसानी देत।।
सबज बन कई रंग के, जवेर कई झलकत।
सैयां बरनन इसारतें, कई पंखी मिने घूमत।।
कह्या मैं तारतम तुमको, मूल वचन जिन पर।
सो सारे इनमें लिखे, निसान अपने घर।।

स. ४१/५-६

कह्या अव्वल महंमद ने, हक अमरद सूरत।
मैं देखी अर्स अजीम में, पोहोंच्या बका बीच खिलवत।।
हौज जोए बाग जानवर, जल जिमी अर्स मोहोलात।
और अनेक देखी न्यामतें, गुझ जाहेर करी कई बात।।

सि. ३/१६,१७

हुआ मेयराज महंमद पर, तिनमें बका सब बात।
महंमद पोहोंच्या हजूर, तहां देखी हक जात।।
देखे मोती पूर नूर से, कह्या मुंह पर कुलफ तिन।
इन कुलफ को खोलेगा, तेरा दिल रोसन।।
गुनाह तेरी उमत का, कुलफ मुंह मोतियन।
देख दाहिने हाथ पर, जो हक मुख कहे सुकन।।
किस वास्ते फिकर करे, देख दाहिने हाथ पर।
कुलफ मोतियों के मुंह पर, सब नूर आया महंमद नजर।।
हकें कह्या गुनाह किया उमतें, कह्या कुलफ ऊपर दिल।
ए जो दई फरामोसी खेल में, जो उतरते मांग्या रूहों मिल।।
कहूं पेहेले जंगल जरी जवेर, रोसन नूर झलकत।
जोए किनारें दरखत, पाक खुसबोए बेहेकत।।
देख्या हौज अर्स का, द्योहरियां गिरदवाए।
और जंगल पूर मोतियों से, दिया महंमद को देखाए।।

छोटा.क्या. २/३ से ६

देखी सूरत अमरद, तासों किया मजकूर।
सो ए दुनी में महंमदें, सब मेयराजें किया जहूर।।

छोटा. क्या. २/१६

१३६.कुरान में महत्वपूर्ण बातें

सो सुध सारी ल्याइया, लीला आगूं से निसान।
जागनी की सुध सब लिखी, तुम लीजो साथ चित आन।।
अव्वल मध और आखिर, यामें तीनों की हकीकत।

पर ए पावें एक इमाम, जित हुकम नूर महामत।।
ज्यों आया नूर तारतम, श्री देवचंदजी के पास।
सो विध सब इनमें लिखी, ज्यों कर हुआ प्रकास।।
फुरमान ल्याए महंमद, सब लिखी हमारी बात।
जरा एक ना घट बढ़, सब अंग निसानी जात।।
श्री देवचंदजी सों जुध किया, कुली दज्जाल जिन पर।
ईसा दो जामें पेहेरसी, सो लिखी सारी खबर।।
श्री देवचंदजी सों हम मिले, मुझ अंग हुआ रोसन।
सो बातें सब इनमें लिखी, निसान नाम सोई दिन।।
बोहोत बातें कई और हैं, सो केते लिखों निसान।
साथ हम तुम मिलके, हँस हँस करसी बयान।।
यामें कई विध हाँसियां, पियाजी लिखी चित ल्याए।
सो आप मिने बैठ के, हंससी साथ मिलाए।।
वैराट सब पुकारहीं, सो भी इनमें लिखे सब्द।
कई विध लीला जागनी, पर भली गाई महंमद।।

स. ४१/२३-२६,५८,५६

क्यों सदर- तुल- मुन्तहा, क्यों है अर्स अजीम।
क्यों कौल फैल हकके, क्यों हक सूरत हलीम।।
क्यों अर्स आगूं जोए है, क्यों अर्स ढ़िग है ताल।
क्यों पसु पंखी अर्स के, क्यों बाग लाल गुलाल।।
क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे।
क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर के।।
ए नाम निसान सब लिखे, खुसबोए जिमी उज्जल।
और कह्या पानी दूध सा, ताल जोए का जल।।
जोए किनारे जरी द्योहरी, पूर जवेर दरखत।
ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत।।

सा. १३/२२-२६

१३७. नूर नाम तारतम का है।

रूहअल्ला ईसा मसी, नूर नाम तारतम।
मूल बुध असराफील, ए हमारी मिने हम।।

स. ४१/६६

१३८. सुन्दरसाथ को प्राणों का प्रीतम कहना।

प्रीतम मेरे प्रान के, आतम के आधार।
ए दिल भीतर देखियो, है अति बड़ो विस्तार।।

स. ४२/१

प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर।
मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर।।

क.हि. २३/१७

१३९. अहंकारी का नाश होता है।

ए मिलके मरद चलें ज्यों महीपत,जांनो पड़ता अंबर पकड़सी।

मोहे अचंभा ए डरें नहीं किनसो,पर ए खेल केते दिन रेहेसी।।

देखत काल पछाड़त पल में, तो भी आंख न खोलें।

आप जैसा और कोई न देखें, मद छाके मुख बोलें।।

इनमें से नाठया मैं निसंक कायर होए, फेर न देख्या ब्रह्मांड।

सुन्य निरंजन छोड़ मैं न्यारा, जाए पड़या पार अखंड।।

अब तो कछुए न देखत मद में, पर ए मद है पल मात्र।

महामत दिवाने को कह्यो न माने, सो पीछे करसी पछताप।।

कि. १९/८,९,१०,११

१४०. मोमिन दुनी एवं ईश्वरीय सृष्टि की हकीकत।

देखो दोऊ पलड़े, एक दुनी और अर्स अरवाए।

रूहें फरिस्ते पूजें बका सूरत, और लिख्या दुनियाँ खुदा हवाए।।
ए जो गिरो अर्स अजीम की, तिन पे हकीकत मारफत।
बड़ी बड़ाई रूहन की, बीच लाहूत बका वाहेदत।।
नूर मकान से पैदा हुई, ए जो गिरो फरिस्तन।
कायम वतन से उतरे, सो पोहोंचे न हकीकत बिन।।
ए बेवरा सिपारे आम में, इन्ना इन्जुलना सूरत।
रूहें फरिस्ते दे सलामती, करें हुकम फजर बखत।।
ए पैदा बनी-आदम की, ए जो सकल जहान।
सो क्यों कर आवे अर्स में, बिना अपने मकान।।
खु. १/६,१०,११,१२,१३

भया निकाह आदम हवा, दुनी निकाह अबलीस।
ए जाहेर लिख्या फुरमान में, पूजे हवा अपनी खाहिस।।
तिन हवा हिरस से पैदा हुई, अपनी खाहिसें जे।
सो फैल कर जुदे पड़े, ए जो फिरे दुनियां के फिरके।।
तोड़ हवा कुल ले ईमान, सोई कह्या सिरदार।
हवा तरक कर लेवे तौहीद, ए बल पैगंमरी हुसियार।।
पूजे हवा कौल तोड़ के, ए फौज सबे अबलीस।
लेने बुजरकी जुदे पड़े, कर एक दूजे की
रीस।।
खु. १/१५,१६,२६,२७

मोमिन रूहें करें कुरबानियाँ, और मता वजूद समेत।
छोड़ दुनी इस्क लेवहीं, दिल अर्स हुआ इन
हेत।।
दुनी दिल पर अबलीस, दिल मोमिन अर्स हक।
कुरान कौल तो ना विचारहीं, जो इनों अकल नहीं रंचक।।
खु. १/३६,३८

केहेलावें महंमद के, चलें ना महंमद साथ
डारें जुदागी दीन में, कहें हम सुन्नत

जमात।।
दुनी ना छोड़े तिन को, जो मोमिनों मुरदार करी
दुनी हवा को हक जानहीं, रूहों हक सूरत दिल ध
ारी।।

खु. १/४४,४८

मोमिनों के माल का, दावा किया सबन।
तब हो गए खेल कबूतर, हुआ जाहेर बका अर्स
दिन।।
गुनाह एही सबन पर, ए जो झूठी सकल जहान।
दावा किया वाहेदत का, पछतासी हुए
पेहेचान।।

खु. १/५५,५६

दिल अर्स मोमिन कह्या, जामें अमरद सूरत।
खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत।।

खु. ३/३१

दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल।
हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल।।
आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए।
कह्या हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए।।

खु. ४/२२,४३

एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार।।

खु. १४/११

खासल खास रूहें इस्क, और खासे बंदगी दिल।
आम वजूद जदल से, जिनों नासूती अकल।।

खि. ७/७

१४१.अबलीस एवं अजाजील की हकीकत

लोक लानत जाने अबलीस को, सो तो सब दिलों पातसाह।

लोक ढूंढ़ें बाहेर दज्जाल को, इन किए ताबे अपनी राह।।
खु. १/३०

जो लों हक सूरत पावें नहीं, तो लो महंमद औरों बराबर।
दई कई बुजरकियां, लिखे लाखों पैंगमर।।
खु. २/७२

फरिस्ता नजीकी बुजरक, किया सब जिमी सिजदा जिन।
दई लानत न किया सिजदा, रद किया वास्ते मोमिन।।
खु. ३/३४

दिल मजाजी और हकीकी, कहे कुरान में दोए।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अर्स की होए।।
दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह।
सो औरों दुस्मन और आपका, मारत सबकी राह।।
खि. १४/१३०,१०४

सिपारे चौबीसमें मिने, लिखी सूरत अबलीस।
जल थल सबों में ए कह्या, याको पूजे कर जगदीस।।
कह्या दरिया जंगल से, नेहेरें चलें दज्जाल।
सो नेहेरें जंगल से क्यों चलें, ए फिरके चले इन हाल।।
ए जो कहे बनी - आदम, सब पूजत डाली हवा।
कह्या निकाह अबलीस से, दुनियां जो दाभा।।
कह्या गधा जो दज्जाल का, ऊंचा लग आसमान।
एही हवा तारीकी सिर सबों, जासों पैदा ए जहान।।
तो दुनियां ताबें दज्जाल के, पातसाह सैतान दिलों पर।
दुनी सिफली अबलीस बिना, एक दम न सके भर।।
राह अंधेरी रात की, सब की चली सरीयत।
बैठा दिल पर दुस्मन, लेने न दे हकीकत।।
ए जो बीच दुनी के, जाहेर परस्त जेता।
तिन फिरकों सबों का, खुलासा एता।।
मा.सा. ३/ २,३,४,५,६,७,८

तो जोरा किया दज्जाल ने, देखो आए नामे वसीयत।
लिखाए महंमद मेंहेदिए, तो भी देखें ना पोहोंची कयामत।।
खु. १/३२

एहीं बड़ी इसारत, इमाम की पेहेचान।
सबको सब समझावहीं, यों केहेवत है कुरान।।
खु. १३/७८

१४२. हिन्दू और मुसलमानों की भूल

रे हूं नाहीं रे हूं नाहीं सिव साध संत री भगत नाहूं वैष्णव अपरस आचार।
जात कुटम कुल नीच ना ऊंच, ना हूं बरन अठार।।
रे हूं नाहीं व्रत दया संझा अगिन कुंड, ना हूं जीव जगन।
तंत्र न मंत्र भेख न पंथ, ना हूं तीरथ तरपन।।
कि. ११/१,२,३

सबों दावा किया अर्स का, हिंदू या मुसलमान।
वेद कतेब दोऊ पढ़े, परी न काहूं पेहेचान।।
कह्या दावा सब का तोड़्या, दिया मता मोमिनों को।
लिए अर्स वाहेदत में, और कोई आए न सके इनमों।।
कि. १/६६,७०

काफर न माने हक सूरत, ताको कछू अचरज नांहें।
केहेलाए महंमद के पूजें हवा, ए बड़ा जुलम दीन माहें।।
खु. २/६४

कहे दुनियां ला मकान को, बेचून बेचगून।
खुदा याही को बूझहीं, बेसबी बेनिमून।।
खुदा याही को कहें, याही को कहें काल।
आखिर सब को खाएसी, एही खेलावे ख्याल।।
यासों सुन्य निरगुन कहें, निराकार निरंजन।

यों नाम खुदाए के, बोहोत धरे फिरकन।।

खु. १०/२५,२७,२८

पारब्रह्म तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेश्वर कहावें।
अनेक पंथ सब्द सब जुदे जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावें।।

कि. ६/७

केते आप कहावें परमेश्वर, केते करत हैं पूजा।
साध सेवक होए आगे बैठे, कहें या बिन कोई नहीं दूजा।।

कि. ६/१०

१४३. छत्रसाल जी की महिमा

करे हिन्दू लड़ाई मुझ से, दूजे सरीयत मुसलमान।
पाया अहमद मासूक हक का, अब छोड़ो नहीं फुरकान।।

छत्ते आगा लिया इन समें, जब दोऊ सों लागी जंग।
हुकम लिया सिर आकीन, छोड़ दुनी का संग।।

खु. १/१००,१०१

बातने सुनी रे बुंदेले छत्रसाल ने, आगे आए खड़ा ले तरवार।
सेवाने लई रे सारी सिर खैंच के,सांइए किया सैन्यापति सिरदार।।

कि. ५८/२०

कहे छत्ता मगज मुसाफ के, जिनस जंजीरां जोर।
सब सिफत खास गिरोह की, ए समझें एही मरोर।।

कि. ७२/५

इन महंमद के दीन में, जो ल्यावेगा ईमान।
छत्रसाल तिन ऊपर, तन मन धन कुरबान।।

कि. ११८/१६

१४४. श्री कृष्ण ही महंमद है।

ए सब मुखथें कहें महंमद को, ए अव्वल ए आखिर।
बड़े काम नजीकी हक के, ए किन किया महंमद बिगर।।
एक खुदा हक महंमद, हर जातें पूजें धर नाऊँ।
सो दुनियाँ में या बिना, कोई नहीं कित काऊँ।।
ओ खासी गिरो और महंमद,आए दो बेर माहें जहूदन।
गिरो बचाई काफर डुबाए, ए काम होए ना महंमद बिन।।

खु. २/१६,२०,२१

श्री ठकुरानी जी रूहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम।
सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम।।

खु. १२/५३

लिखी अनेकों बुजरकियां, पैगंमरों के नाम।
ए मुकरर सब महंमद पे, सो महंमद कह्या जो स्याम।।

खु. १३/३७

श्री कृष्णजीएँ बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम।।

खु. १३/७५

त्रिगुन तिर्थंकर अवतार, कई फरिस्ते पैगंमर।
तिन सबकी सोभा ले स्याम, आया महंमद पर।।
नूर नामे में पैगंमर, एक लाख बीस हजार।
सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद स्याम सिरदार।।

कि. ६१/२,३

सो सिफत सब महंमद की, सो महंमद कह्या जो स्याम।
अव्वल आखिर दोऊ दीन में , एही बुजरक महंमद नाम।।

कि. १२१/५

१४५. लैलत कदर के तीन तकरार

रूहें अर्स से लैलत कदर में, हक हुकमें उतरे बेर तीन।

सुध खास गिरो न महंमद, कहे हम महंमद दीन।।
एक बेर गिरो हूद घर, बेर दूजी किस्ती पर।
तीसरी बेर मास हजार लों, सदी अग्यारहीं हिसाब फजर।।
खु. २/२३,२४

हजार साल कहे दुनी के, सो खुदाए का दिन एक।
लैलत कदर का टूक तीसरा, कह्या हजार महीने से विसेक।।
सौ साल रात अग्यारहीं लग, एक दिन के साल हजार।
अग्यारैं सदी अंत फजर, एही गिरो है सिरदार।।
खु. २/२६,२७

दो बेर डुबाई जहान को, गिरो दो बेर बचाई तोफान।
तीसरी बेर दुनी नई कर, आखिर गिरो पर ल्याए फुरमान।।
खु. २/४८

दो बेर लैलत कदर में, खेल में तुम उतरे।
चाहे मनोरथ मन में, सो हुए नहीं पूरे।।
सो ए पट सब खोल के, दे साहेदी किताब।
कह्या तीसरा तकरार, ए जो खेल दुख का अजाब।।
खु. १०/४२,४३

कहे फुरमान नूर बिलंद से , खेल में उतरे मोमिन।
खेल तीन देखे तीन रात में, चले फजर इनका इजन।।
कि. ६४/१०

हुकमें मांग्या हुकम पे, सो हुकमैं देवनहार।
सो हुकम फैल्या सबमें हक का, सो हकै खबरदार।।
प. १८/१५

दिन रब का दसमी सदी लग, दुनियां के साल हजार।
मास हजार लैल के, तीसरे तकरार।।
कछू मास हजार से बेहेतर, ए जो कही लैलत कदर।
ए फरदा रोज कयामत, ए जो कही फजर।।
मा.सा. १५/४,५

आए एक साइत लैलत कदर में, उसी साइत में दूजी बेर।
उसी साइत में तीसरे इन इंड, महंमद आए इत फेर।।
मा.सा. १५/१६

१४६. इस्राफील जिब्रील की पहचान

बुजरकी पैगंमरों, पाई जबराईल से।
हुए नजीकी हक के, सो सब न्यामत दई इनने।।
सो जबराईल जबरूत से, आगे लाहूत में न जवाए।
नूरतजल्ला की तजल्ली, पर जलावत ताए।।
खु. २/५३,५४

नूर मकान जबरूत जो, पोहोंच्या जबराईल जित।
अर्स अजीम जो लाहूत, हक हादी रूहें बसत।।
आगूं जबराईल जाए ना स क्या, वाकी हद जबरूत।
पोहोंच्या न ठौर रूहन के, जित नूर बिलंद लाहूत।।
खु. ३/४५,४६

कई जोर किया जबराईलें, आया एक कदम महंमद खातिर।
तो भी आगूँ आए न सक्या, कहे जलें मेरे पर।।
खु. ३/५५

कह्या मीठा दरिया उजला, जो देख्या नबी नजर।
तिन किनारे दरखत, जित बैठा जानवर।।
अन्दर मुरग जो कह्या, बैठा हुकम के दरखत।
इत ना पोहोंच्या जबराईल, सो मोमिन खोले मारफत।।
खु. ३/५८,५६

ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबराईल जोस देत।
ए झूठों इस्क देखाए के, कायम सबों कर लेत।।
क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर है महंमद।
ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद।।
खु. १६/५३,५४

जबराईल नूर मकान लग, आगूं न सक्या चल।

ना तो ल्यावने वाला मुसाफका, कहे आगूं जाऊं तो जाए पर जल।।
जबराईल जबरूत से, याकी असल नूर मकान।
सोहोबत करी महंमद की, तो ल्याया हक फुरमान।।
चल न सक्या जबराईल, रह्या हद जबरूत।
मासूक कह्या महंमद को, तो पोहोंच्या बका हाहूत।।
सो ए वतन रूह मोमिनों, जित पोहोंच्या न जबराईल।
एक महंमद संग आखिरी, बीच पोहोंच्या असराफील।।
इत और न कोई पोहोंचिया, ए हक हादी मोमिनों वतन।
तो असराफील आइया, करने बका सबन।।

मा.सा. ५/१५,१६,१८,१९,२०

१४७. कर्मकाण्ड से धनी की पहचान नहीं हो पाती

सो पेहेचान क्यों कर सके, जो पकड़े पुलसरात।
छोड़े न वजूद नासूती, जान बूझ के कटात।।
ल्याए फुरमान इसारतें इत थें, सो नासूती क्यों समझाए।
मारफत अर्स अजीम में, ए पुलसरातें अटकाए।।

खु. २/५१,५६

सरीयत खूबी नासूत में, याको ए पांचों पाक करत।
ए जाहेर पांच बिने से, ऊंचे चढ़ न सकत।।

खु. ४/३८

१४८. इश्क रब्द

कौल अलस्तो - बे - रब का, किया रूहों सों जब।
हक इलम ले देखिए, सोई साइत है अब।।
तब वले कह्या अरवाहों ने, अर्स से उतरते।
किया जवाब हक ने, रूहों याद किया चाहिए ए।।
तुम माहों माहें रहियो साहेद, मैं केहेता हों तुम को।
याद राखियो आप में, इत मैं भी साहेद हों।।
और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल।
फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल।।

मेयराज हुआ महंमद पर, तोलों हलता है उजू जल।
बैठक गरमी ना टरी, बेर ना भई एक पल।।
खु. ३/२ से ५

दिया निमूना अरवाहों को, एक पलक बेर जान।
वले जवाब रूहों कह्या, अजूं सोई अवाज बीच कान।।
खु. ३/७

आप अर्स देखाइया, ज्यों देखिए नींद उड़ाए।
जरा सक दिल ना रही, यों अ र्स दिया बताए।।
फेर देखो सुपन को, तो अजूं रह्या है लाग।
फरामोसी नींद ना गई, जानों किन ने देख्या जाग।।
जो देखूं अर्स जागते, तो इत नाहीं जरा सक।
फेर देखूं तरफ सुपन की, तो यों ही खड़ा मुतलक।।
ए बातें नूरजमाल की, इनमें कैसा तअजुब।
जनम लाख देखावें पल में, जानों ढ़ांप के खोली अब।।
एक खस-खस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक।
तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक।।
ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन।
देख दिन में ल्यावें रात को, और रात में ल्यावें दिन।।
ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अर्स माहें।
रूह बकाएँ लई देह नासूती, जो मुतलक कछुए नाहें।।
तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसबत।
कजा चौदे तबक की, इन तन पे करावत।।
ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबान।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत में सुभान।।
खि. १०/१७ से २५

रूहें बड़ी रूह सों मिलके, बहस किया हकसों।

हम तुमारे आसिक, इस्क है हममों।।
बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम।।
फेर जवाब रूहन को, इन बिध दिया हक।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक।।
हक आसिक बड़ीरूह का, और रूहों का आसिक।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बन्दों का आसिक हक।।
रूहों चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ीरूह के।
और बड़ीरूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।।
तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इस्क जो मेरे दिल।
ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल।।

खि. ११/२ से ७

तब हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊं अपना इस्क।
और देखांऊं साहेबी, रूहें जानत नहीं मुतलक।।
तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूरजलाल।
तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखों इस्क नूरजमाल।।
कैसा इस्क बड़ीरूह सों, कैसा इस्क साथ रूहन।
बड़ीरूह का इस्क हक सों, इस्क हक सों कैसा है सबन।।
एह रब्द हमेसा रहे, बड़ीरूह रूहें और हक।
अब घट बढ़ क्यों कर जानिए, वाहेदत पूरा इस्क।।

खि. ११/८,९,१०,११

पसु पंखी सब बन में, घेरों घेर फिरत।
कई तले कई बन पर, कई विध खेल करत।।

प. २७/२०

ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोको जाओ भूल।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल।।
जैसा साहेब केहेत हो, ऐसी कबूं हमसे न होए।

सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए।।
मिनों मिने करें हुसियारियां, हक खेल देखावें जुदागी।
एक कहे दूजी को मुख थें, रहिए लपटाए अंग लागी।।
जो तूं भूले मैं तुझको, देऊंगी तुरत जगाए।
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।।

खि. ११/१६,३३,३६,४४

इस्क का अर्स अजीम में, रब्द हुआ बिलंद।
तो फरामोसी में इस्क का, बेवरा देखाया खावंद।।
दिया बीच ब्रह्मांड जुदागी, अजूं इनसे भी दूर दूर।
निपट द ई ऐसी नजीकी, बैठे अंग सों लाग हजूर।।

खि. ११/५०,५५

ना मांग्या ना दिल उपज्या, दिल हकें उठाया एह।
तो मांग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इस्क सनेह।।

खि. १/६

अपन सामी हाँसी करें हकसों, चले ना खेल को बल।
अपन आगूं चेतन हुइयाँ, रहिए एक दूजी हिल मिल।।

खिलवत १४/२१

इत बोहोत रेतीमें सखियां, दौड़ दौड़ देत गुलाटें।
कूदें दौड़े ठेकत हैं, रेत उड़ावें पांउँ छांटें।।
कबूं दौड़त राज सखियां, सबे मिलके जेती।
हाँसी करत जमुना त्रट, जित बोहोत गड़त पांउँ रेती।।

प. ७/४२,४३

रूहें बड़ी रूह सों मिलके, बहस किया हकसों।
हम तुमारे आसिक, इस्क है हममों।।
बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम।।
फेर जवाब रूहन को, इन बिध दिया हक।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक।।

हक आसिक बड़ीरूह का, और रूहों का आसिक।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बन्दों का आसिक हक।।
रूहों चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ीरूह के।
और बड़ीरूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।।
तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इस्क जो मेरे दिल।
ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल।।

खि. ११/२ - ६

कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हाँसी का ए।।

प. १७/२०

दूर तो कहूं जाए नहीं, बैठे पकड़ हक चरन।
तो फरामोसी बल क्या करे, आपन आगूं हुइयां चेतन।।
कहें रूहें एक दूजी को, नजीक बैठो आए।
जिन कोई जुदी परे, रहिए अंग लपटाए।।

खि. १४/२४,२५

हम हमेसा एक दिल, जुदियां होवें क्यों कर।
हक खेल देखावहीं, कर आगे से खबर।।
अंग जुदे ना हो सकें, तो क्यों होए जुदे दिल।
एक जरा जुदे ना होए सकें, अंग यों रहें हिल मिल।।
रूहें कहें एक दूजी को, जिन अंग जुदा करो कोए।
इन विध रहो लपटाए के, सब एक वजूद ज्यों होए।।

खि. १४/२७,२८,२६

एता हम जानत हैं, जो सौ फरेब करो तुम।
ऐसा इस्क क्यों होवहीं, तुमको भूलें हम।।
तुम कूदत हो अर्स में, अपने इस्क के बल।
तब सुध जरा ना रहे, रहे न एह अकल।।

खि. १५/१६,१७

तब रूहों मुझ आगे कह्या, ऐसा इस्क हमारा जोर।
फरामोसी क्या करे हम को, इस्क देवे सब तोर।।
ए मजकूर भई रूहनसों, मुझसों किया रब्द।
और कछुए न ल्यावें दिल में, आप इस्क के मद।।
बातें बोहोत करी रूहनसों, मेरा कह्या न ल्याइयां दिल।
सुन्या न आगूं इस्क के, बहस किया सबों मिल।।

खि.१५/२७,२८,२९

मैं कह्या इस्क मेरा बड़ा, हादी रूहों आप माफक।
एह बात जब मैं करी, तब तुम उपजी सक।।
कहे हादी इस्क मेरा बड़ा, कहें रूहें बड़ा हम प्यार।
ए बेवरा बीच अर्स के, ए होए नहीं निरवार।।
सुकन मेरा मानो नहीं, सबें भरी इस्क के जोस।
सबे बोलें नाचें कूदहीं, हमें कहा करे फरामोस।।
हार दिया तब मैं इनों को, रब्द न किया हम।
जाए फंदियां झूठ में, नेक देखाया तिलसम।।

खि.१५/३०,३१,३८,३९

रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम।
इस्क पूरा है हममें, ए नीके जानो तुम।।
और आसिक बड़ी रूह के, इनमें नाहीं सक।
इस्क हमारे रूहन के, जानत हैं सब हक।।
बड़ी रूह कहे मुझ में, हक का पूरा इस्क।
रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक।।
एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहन को, पेहेले दिल में लिया हक।।

पोहोर दिन से चार घड़ी लग, बरस्या हक का नूर।
इस्क तरंग सबों अपने, रोसन किए जहूर।।
एह बातें असल की, करते इस्क सों प्यार।
हँसते खेलते बोलते, एही चलत बार बार।।
गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए।।

खि. १६/८ ,६,१०,११,१७,१६,२१,४३

मैं हक अर्स में जुदे जानती, ल्यावती सब्द में बरनन।
जड़ में सिर ले ढूंढती, हक आए दिल बीच चेतन।।

श्रृं.३/५८

दायम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान।
याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान।।

श्रृं.१६/१०५

याद करो हक मोमिनों, खेल में अपना खसम।
हकें कौल किया उतरते, अलस्तो- बे -रब कुंम।।
तब रूहों वले कह्या, बीच हक खिलवत।
मजकूर किया हकें तुमसों, वह जिन भूलो न्यामत।।

श्रृं.२१/१,२

अलस्तो बे रब कह्या हक ने, तब जवाब दिया रूहन।
कोई और होवे तो देवहीं, ए फुरमान कहे सुकन।।
तुम रूहें जात नासूत में, जाओगे मुझे भूल।
तब तुम ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल।।
तुम माहों माहें रहियो साहेद, इत मैं भी साहेद हों।
ए जिन भूलो तुम सुकन, मैं फुरमान भेजों तुमको।।
और साहेद किए हैं फरिस्ते, सो भी देवेंगे साहेदी।
सो रसूल याद देसी तुमें, जो मेरे आगूं हुई इतकी।।

श्रृं.२७/२६,२७,२८,२६

ए मजकूर अव्वल का, हँसते करें सब कोए।
पर काम ज्यादा वाहेदत में, बेवरा क्योएन होए।।
हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन।
ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बन्दे मोमिन।।
चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादी के।
रूहें हादी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।।

मा. सा. प्र० १,३२,३३,३४

मैं हक अर्स में जुदे जानती, ल्यावती सब्द में बरनन।
जड़ में सिर ले ढूंढती, हक आए दिल बीच चेतन।।

श्रृं.३/५८

दायम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान।
याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान।।

श्रृं.१६/१०५

याद करो हक मोमिनों, खेल में अपना खसम।
हकें कौल किया उतरते, अलस्तो - बे - रब कुंम।।
तब रूहों वले कह्या, बीच हक खिलवत।
मजकूर किया हकें तुमसों, वह जिन भूलो न्यामत।।

श्रृं.२१/१,२

अलस्तो बे रब कह्या हक ने, तब जवाब दिया रूहन।
कोई और होवे तो देवहीं, ए फुरमान कहे सुकन।।
तुम रूहें जात नासूत में, जाओगे मुझे भूल।
तब तुम ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल।।
तुम माहों माहें रहियो साहेद, इत मैं भी साहेद हों।
ए जिन भूलो तुम सुकन, मैं फुरमान भेजों तुमको।।
और साहेद किए हैं फरिस्ते, सो भी देवेंगे साहेदी।
सो रसूल याद देसी तुमें, जो मेरे आगूं हुई इतकी।।

श्रृं.२७/२६,२७,२८,२६

ए मजकूर अव्वल का, हँसते करें सब कोए।
पर काम ज्यादा वाहेदत में, बेवरा क्योंएन होए।।
हक आसिक हादीय का, और आसिक रूहन।
ऐसा हक का सुकन, क्यों सहें बन्दे मोमिन।।
चाहिए मोमिन आसिक हक के, और आसिक हादी के।
रूहें हादी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।।

मा. सा. प्र० १,३२,३३,३४

१४६.आखिरत के निसान

लिखे पहाड़ कर ईसा महंमद, ए निसान आखिर के।
हक बका अर्स देखावहीं, दिन जाहेर करसी ए।।

खु. ३/१७

१५०. निजानन्द सम्प्रदाय का महत्व

सिर बदले जो पाइए, महंमद दीन इसलाम।
और क्या चाहिए रूहन को, जो मिले आखिर गिरोह स्याम।।

खु. ३/२५

असल खुलासा इसलाम का, सब राह करत रोसन।
झूठ से सांच जुदा कर, देसी आखिर सुख सबन।।
मगज मुसाफ और हदीसें, हादी हिदायत देखें मोमिन।
ए खुलासा बिने इसलाम का, सबों देखावें बका वतन।।

खु. ४/१,२

इन महंमद के दीन में, सक सुभे जरा नाहें।
सो हकें दिया इलम अपना, ए सिफत होए न इन जुबांए।।

खु. ४/१०

जेते कोई फिरके कहे, सब छोड़ देसी कुफर।
आवसी दीन इसलाम में, दिल साफ होए कर।।
एह पट जिनको खुले, सो आए बीच इसलाम।
लिया दावा हकीकी दीन का, सिर ले अल्ला कलाम।।

खु. १०/७५,७६

ए सुकन बातून जिन को, दिल बीच सोहाए।
सो सुनके तबहीं, एक दीनमें आए।।
मा.सा. २/३६

मारसी सबों का सैतान, तब होसी एक दीन।
सुभेसक भाने लदुन्नी, होसी सब दिलों पाक आकीन।।
मा.सा. १२/६६

जो कह्या सरा दीन महंमदी, तामें सकसुभे कोई नाहें।
सो सब सुध देवे हक बका,सकसुभे न अर्स दिल माहें।।
ना सक महंमद दीन में, ना सक महंमद सरीयत।
ना सक सुंनत जमात में, कहें यों आयतें हदीसें सूरत।।
मा.सा. १३/२६,३०

बसरी मलकी और हकी, ए कही सूरत तीन।
इनों किया हक इलम से, महंमद बेसक दीन।।
मा.सा. १७/११०

१५१. हादी की पहचान

हक अर्स नजीक सेहेरग से, दोऊ हादी खोले द्वार।
बैठाए अर्स अजीम में, जो कह्या मेयराजें नूर पार।।
किन तरफ न पाई अर्स हक की, मांहें चौदे तबक।
सो खोल दिए पट हादिएँ, इलम ईसे के बेसक।।
खु. ३/५१,५२

चुटकी खाक ले चोंच में, मुरग बैठा दरखत पर।
पर ना जलें इन मुरग के, सो कोई देवे एह खबर।।
हादीएँ पूछा हक से, क्यों खाक धरी चोंच में।
खेल उमतें मांगिया, गुनाह वजूद हुआ तिनसे।।
लिख्या दरिया नींद इसारतें, जो देखाई कर मेहेरबानगी।
मोहे रूह अल्ला पट खोलिया, दई महंमदें मेयराज में साहेदी।।
ए जो मुरग मेयराज में अंदर, हर साइत यों केहेता था।
जो छोडूं खाक चोंच से, तो दरिया होए जाए अंधेरा।।

दरिया उजला दूध सा, मेहेर मीठा मिश्री।
ए दरिया कबूं न होए अंधेरा, ए हकें रूहों पर मेहेर करी।।
कह्या खाक वजूद नासूती, हादी बैठा वजूद धर।
दुनी दरिया अंधेरी, हादी चले ना होए क्यों कर।।
हकें देखाया दरिया मेहेर का, सो अंधेरा क्यों ए ना होए।
करसी कायम चौदे तबक, बरकत हादी रूहों सोए।।
खु. ३/६० - ६६

रूहें आइयां खेल देखने, आए महंमद मेंहेदी देखावन।
तीनों हादी खेल देखाए के, दोऊ गिरो ले आवें वतन।।
खु. ४/१६

ले ग्वाही दोऊ हादियों की, किया हक बरनन।
सब कौल किताबों के, हक हुकमें किए पूरन।।
श्रृं ३/३५

दोऊ हादियों दई साहेदी, मिलाए दिए निसान।
तो भी लज्जत ना पाई रूहों ने, हाए हाए जो एती भई पेहेचान।।
श्रृं ३६/११३

१५२. खेल मागने के गुनाह की हकीकत

मोतिन के मुंह ऊपर, कुलफ लिख्या मांहें फुरमान।
इन गुन्हेगारों के दिल को, अपना अर्स कर बैठे मेहेरबान।।
सो कुलफ कह्या फरामोस का, कह्या गुनाह रूहों का दिल।
खेल मांग्या फरामोस का, कर एक दिल सब मिल।।
फरामोस गुनाह दिल मोमिनों, सोई कुलफ गुनाह इनों दिल।
याकी कुंजी दिल महंमद, सो टाले फरामोसी दे अकल।।
खु. ३/७० - ७२

हांसी न होसी हुकम पर, है हांसी रूहों पर।
जाको गुनाह पोहोंच्या खिलवतें, कहे कलाम अल्ला यों कर।।
मोमिन बैठे खेल में, अजूं बीच ख्वाब।
गुनाह पेहेल` पोहोंच्या अर्स में, करें मासूक रूहें हिसाब।।

गुनाह नूरतजल्ला मिनें, पोहोंच्या रूहों का जित।
कह्या गुनाह कुलफ मुंह मोतिन, दिल महंमद कुंजी खोलत।।
हिसाब जिनों हाथ हक के, अर्स - अजीम के माहें।
अर्स तन बीच खिलवत, ताको डर जरा कहूं नाहें।।

श्रृं. २७/१५,१६,२०,२१

१५३. वाहेदत में इस दुनिया का कोई भी नहीं जा सकता।

दूजा ढिग वाहेदत के, आए न सके कोए।
आगे ही जल जात है, बका न देखे सोए।।
जो देख न सक्या जबराईल, तो क्यों कहूं औरन।
ए हक खिलवत महंमद रूहें, सो जाने बका बातन।।

खु. ४/१५,१६

जो रूहें अंग अर्स के, तिन चीज न कोई सोभाए।
वाहेदत में बिना वाहेदत, और कछू ना समाए।।

प. ६/३८

और कोई अर्स अजीममें, पोहोंच ना सकत।
जित हक हादी रूहें, महंमद तीन सूरत।।

मा.सा. १७/४१

१५४. इस्राफील और जिब्रील मोमिनों के लिए आये

असराफील जबराईल, भेज दिया आमर।
निगहबानी कीजियो, मेरे खासे बंदों पर।।

खु. ४/६०

भिस्ती देखें दोजखियों दुख, देखें मोमिन होवे सुख।
यों कह्या बीच मिसल जादिल, पावे ईमान बीच मिसल।।
जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें।।
ए जो कहे भिस्त वारस, रेहेने वाले भिस्त हमेस।

इन आदम की पैदास, किया बीच खलक के खास।।

बड़ा क्या. ८/३६,४०,४१

१५५. भिस्तों का व्योरा

भिस्त हाल चार कुरान में, कह्या आठ होसी आखिर।
ए भी सुनो तुम बेवरा, देखो मोमिनों सहूर करा।
तिन भिस्त हाल चार का बेवरा, एक मलकूती भिस्त।
दो भिस्त अव्वल लैल में, चौथी महंमद आए जित।।
आखिर भिस्तों का बेवरा, जो नैयां होसी चार।
जो होसी बखत कयामत के, तिनका कहूं निरवार।।
भिस्त अव्वल रूहों अक्स, ए जो होसी भिस्त नई।
भिस्त होसी दूजी फरिस्तों, जो गिरो जबरूत से कही।।
पैगंमरों भिस्त तीसरी, जिनों दिए हक पैगाम।
चौथी भिस्त जो होएसी, पावे खलक जो आम।।
जिन किन राह हक की, लई सांच से सरीयत।
भिस्त होसी तिनों तीसरी, सच्चे ना जलें कयामत।।
जो सरीयत पकड़ के, चल्या नहीं सांच ले।
सो आखिर दोजख जल के, भिस्त चौथी पावे ए।।
रूहों अक्स कहे नई भिस्त में, ताए असल रूहों के तन।
सो अरवा अर्स अजीम में, उठें अपने बका वतन।।

खु. ५/११ - १८

१५६.अर्स या दुनिया में केवल एक मिलता है।

सो मोमिन क्यों कर कहिए, जिन लई ना हकीकत।
छोड़ दुनी को ले ना सक्या, हक बका मारफत।।

खु. ५/२६

१५७. महमंद की सिफारिश

अब कहूँ सिफायत की, जो आखिर महंमद की चाहे।
नेक सुनो सो बेवरा, देऊँ रूहों को बताए।।

जित पोहोंची सिफायत महंमद की, सो तबहीं दुनी को पीठ दे।
सो पोहोंच्या महंमद सूरत को, आखिर तीसरी हकी जे।।
जिन छोड़ दुनी को ना लई, हकीकत मारफत।
सो अर्स बका में न आइया, लई ना महंमद सिफायत।।
जो दुनी को लग रहे, ताए अर्स बका सुध नाहें।
महंमद सिफायत लई मोमिनों, जाकी रूह बका अर्स माहें।।

खु. ५/२०,२१,२२,२३

पोहोंची सिफायत जिनको, तिन छोड़ी दुनियां मुतलक।
कदम पर कदम धरे, पोहोंच्या बका अर्स हक।।
हकीकत मारफत की, हक बातें बारीक।
जित नहीं सिफायत महंमद की, सो लरे लीक ले लीक।।
तरक करे सब दुनी को, कछू रखे ना हक बिन।
वजूद को भी मह करे, ए महंमद सिफायत मोमिन।।

खु. ५/२९,३०,३१

जाए पूछो मोमिन को, जरे जरे बका की बात।
देखो अर्स अरवाहों में, ए महंमद की सिफात।।
किन बिध रूहें लाहूती, क्यों जबरूती फरिस्ते।
जिन लई सिफायत महंमद की, सो बताए देवें सब ए।।
इलम खुदाई लदुन्नी, सब अर्सों की सुध तिन।
एक जरे की सक नहीं, लई सिफायत हादी जिन।।
अर्स रूहें सब विध जानहीं, हौज जोए जिमी जानवर।
महंमद की सिफायत से, मोमिनों सब खबर।।

खु. ५/३४ - ३७

मंहमद सिफायत जिन लई, सो इत हुए खबरदार।
हक बका अर्स सबका, तिन इतहीं पाया दीदार।।

खु. ५/४६

अर्स उमत होसी जाहेर, और जाहेर हक जात।
करसी दुनियां कायम, ए महंमद की सिफात।।

खु. १७/१६

१५८. अर्स और सबका धनी एक है।

एक कह्या वेद कतेब ने, जो जुदा रह्या सबन।
तिनको सारों ढूंढ़िया, सो एक न पाया किन।।
एक बका सब कोई कहे, पर कोई कहे न बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर।।
सब किताबों में लिख्या, एक थें भए अनेक।
सो सुकन कोई न केहेवहीं, जो इस तरफ है एक।।

खु. ६/२,३,४

सो हक किनों न पाइया, जो कह्या एक हजरत।
ढूंढ़ ढूंढ फिरके फिरे, पर किनहूं न पाया कित।।
ना कछू पाया एक को, ना उमत अर्स ठौर।
ना पाया हौज जोए को, जाए लगे बातों और।।
लिख्या है फुरमान में, खुदा एक महंमद बरहक।
तिनको काफर जानियो, जो इनमें ल्यावे सक।।

खु. ६/५,६,१२

जो ठौर चित्त में चितवें, हम जाए पोहोंचें इत।
खिन एक बेर न होवहीं, जानों आगे खड़े हैं तित।।

प. २७/२०

मेहेरबान ना देवे दुख किन को, मारे सबों तकसीर।
क्या राए राने पातसाह, क्या मीर पीर फकीर।।

मा.सा. १६/११

१५९.परब्रह्म का स्वरूप

हाए हाए देखो मुस्लिम जाहेरी, जिन पाई नहीं हकीकत।
हक सूरत अर्स माने नहीं, जो दई महंमद बका न्यामत।।
आसमान जिमी की दुनियां, करी सबों ने दौर।
तरफ न पाई हक सूरत, पाई ना अर्स बका ठौर।।

खोज करी सब दुनियां, किन पाई न सूरत हक।
खोज खोज सुन्य में गए, कोई आगूं न हुए बेसक।।
दौड़ थके सब सुन्य लो, किन ला हवा को न पायो पार।
तब खुदा याही को जानिया, कहे निरंजन निराकार।।
पीछे आए रसूल, कहे मैं पाई हक सूरत।
बोहोत करी रद - बदलें, वास्ते सब उमत।।
अर्स बका हौज जोए, पानी बाग जिमी जानवर।
और देखी अरवाहें अर्स की, कहे मैं हक का पैगंमर।।
बोहोत देखी बका न्यामतें, करी हकसों बड़ी मजकूर।
ख्वाब जिमी झूठी मिने, किया हक बका जहूर।।
कौल किया हके मुझसे, हम आवेंगे आखिरत।
हिसाब ले भिस्त देयसी, आखिर करसी कयामत।।
वास्ते खास उमत के, मैं ल्याया फुरमान।
सो आखिर को आवसी, तब काजी होसी सुभान।।

खु. ७/१-६

हाए हाए गिरो महंमदी कहावहीं, कहे हक को निराकार।
जो जहूदों न पकड़या, इनों सोई किया करार।।
जो कहे खुदा को बेचून, तब बरहक न हुआ महंमद।
खुदा महंमद वाहेदत में, सो कलाम होत है रद।।

महामत कहे सुनो मोमिनों, दीन हकीकी हक हजूर।
हक अमरद सूरत माने नहीं, सो रहे दीन से दूर।।

खु. ७/२३,२४,२८

साहेदी खुदाए की, रूह अल्ला दई जब।
खुले अन्दर पट अर्स के, पाई सूरत खुदाए की तब।।
हक सूरत ठौर कायम, कबहूं न पाया किन।
रूह अल्ला के इलम से, मेरी नजर खुली बातन।।

खु. १०/४६,४८

१६०. अक्षर अक्षरातीत

सो नूर नूरजमाल के, दायम आवें दीदार।
ए जुबां अर्स अजीम की, क्यों कहे सिफत सुमार।।
नूर - जलाल की सिफत को, जुबां ना पोहोंचत।
तो नूरजमाल की सिफत को, क्यों कर पोहोंचे तित।।
जुबां थकी बल नूर के, ऐसी सिफत कमाल।
तो इत आगूं जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजमाल।।
जाके नूर की ए रोसनी, ऐसी करी सिफत।
तिन का असल जो बातून, सो कैसी होसी सूरत।।
ऐसी खूबी सोभा सुन्दर, जो सांची सूरत हक।
नामै आसिक इन का, सब पर ए बुजरक।।

खु. ६/११,१२,१३,१५,१६

नूर बका इत दायम, आवे हक के दीदार।
तले झरोखे झांकत, आए उलंघ जोए के पार।।
नूर - जमाल के दीदार को, आवें नूर-जलाल।
नूर - जमाल के अर्स में, इत रूहें रहें कमाल।।

खि. १/११,१२

नूर - जलाल दीदार बाहेर से, करके पीछे फिरत।
नूर - जमाल के कदमों, बड़ीरूह रूहें बसत।।
ए ना खबर नूरजलाल को, सुख नूरजमाल कदम।
इन बातों सब बेसक करी, मोहे रूह - अल्ला इलम।।

खि. १०/६३,६४

जो किनहूं पाया नहीं, सो जात रोज दरबार।
साहेब अर्स - अजीम के, करने उत दीदार।।

खि. १२/६

अक्षरातीत के मोहोल में, प्रेम इस्क बरतत।
सो सुध अक्षर को नहीं, जो किन विध केलि करत।।

कि. ७४/२६

१६१. अक्षर ब्रह्म की कुदरत

तबक चौदे मलकूत से, ऐसे पलथें कई पैदास।
ऐसी बुजरक कुदरत, नूरजलाल के पास।।
ऐसे पल में पैदा करे, पल में करे फनाए।
ऐसा बल रखे कुदरत, नूरजलाल के।।
इनमें कोई कायम करे, जो दिल आए चढ़त।
सो इंड सारा नूर में, जो दिल दीदों देखत।।
कायम होत जो नूर से, सो आवे न सब्द माहें।
तो रोसनी नूरमकान की, क्यों आवे इन जुबांए।।
जब थक रही जुबां इतहीं, ए जो नूरें किया ख्याल।
तो आगे जुबां क्यों कर कहे, बल सिफत नूरजलाल।।
ए बल नूर - जलाल को, जिन की एह कुदरत।
एह जुबां ना केहे सके, बुजरक बल सिफत।।

खु. ६/५ से १०

ए जो सब कहियत है, हक बिना कछु ए बात।
सो सब नूर की कुदरत, जो उपज फना हो जात।।

खु. ६/१७

जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत।
ए सब बेसक तोलिया, सक न पाइए कित।।

सा. १३/२

ऊपर तले माहें बाहेर, ए जो कादर की कुदरत।
सो कादर काहू न पाइया, जिनके हुकमें ए होवत।।

प. ३२/४

कई इंड पलथें पैदा फना, जिन कादर ए कुदरत।
ए आवें मुजरे इन सरूपके, जाकी असल हक निसबत।।

सि. ६/६

१६२. कयामत के सात निशान

बड़े निसान आखिरत के, आजूज माजूज दोए।
बेटे कहे याफिस के, इनहूं न छोड़या कोए।।
कहे बड़े सबन से, सौ गज का आजूज।
और तंग चसम कह्या, एक गज का माजूज।।
चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन।
अर्थ ऊपर के आखिरत, क्यों पावें रात दिन।।
ए तो गिनती कही दिनन की, आखिरत बड़े निसान।
माएने मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान।।
काल याही दिन कहे, सो पोहोंचे कौल पर आए।
तब पिंड या ब्रह्मांड, देत सबे उड़ाए।।
दाभ - तूल - अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर।
एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर।।
सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन।।
उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर।।
कही दाभा वास्ते वह जिमी, पेहेले हुती सबे कुफरान।
जोलों स्याम बरारब ना हतें, ना रसूल खबर फुरमान।।
जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन।
कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन।।
ल्याए बंदगी केहेलाए कलमा, बरस्या खुदा का नूर।
सो नूर फिरया खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर।।
सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक।
तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक।।
मोमिन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह।
यों मसरक और मगरब, दोनों दुरस्त कह्या।।
रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब।
सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब।।

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब।
जाहेरी ढूंढ़े सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब।।
ज्यादा चौदे तबक से, दज्जाल गधा इन हद।
काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद।।
ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ।
आखिर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ।।
दम दज्जाल सबन में, रहत दुनी दिल पर।
ए जो पातसाह अबलीस, करत सबों में पसर।।
ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल।
जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल।।
आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर।
फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर।।
गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर।
तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित धर।।

खु. १५/२५ - ४५

सेर छाती पीठ गीदड़, मुरग गरदन हाथी कान।
सिर सींग तीखे आंखें सुअर, ए कह्या मुंह आदमी बिना ईमान।।
सब अंग कहे हैवान के, और मुंह कहे इनसान।
होसी गए आकीन ए तबीयतें, ए देखो खुलासे निसान।।
दाभतूल का निसान, ए देखो दिल धर।
इनका तालिब न देखे इने, माएने खुले बिगर।।
हैवान अकल दाभा जिमी, होसी लोक जाहेर सिफली के।
सो दाभा ताबे दज्जाल के, देखो निसान खुलासे।।

मा.सा. ८/५,६,७,१०

गधा एता बड़ा तो हैं नहीं,कह्या हवा तारीक मकान।
ए जो कुंन केहेते पैदा हुई, सिफली दुनी जहान।।
ना तो एता बड़ा गधा, होसी कैसा कद दज्जाल।
सो दज्जाल गधा जब गिर पड़े, तले दुनी रहे किन हाल।।

लानत जो अजाजील की, ले अबलीस बैठा दिल।
सो राह न लेने देवे बातून, जो जोर करें सब मिल।।
इन बिध लगी लानत, अजाजील की दुनी को।
जैसी हुई सिरदार से, हुई तैसी ताबे हुएसों।।
मा.सा. ९/४,५,६,११

१६३. परब्रह्म का स्वरूप

हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा न पाया किन।
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुंन।।
और नाम धरया हक का, बेचून बेचगून।
कहे हक को सूरत नहीं, बेसबी बेनिमून।।
खु. १२/२,३

दुनी कहे हक को, वजूद नहीं मुतलक।
तो ए हुकम किनने किया, जो सूरत नाहीं हक।।
खु. १७/२४

महंमद बातें हकसों, पोहोंच के करी हजूर।
दुनी न माने हक सूरत, जासों एती भई मजकूर।।
खु. १७/३२

अर्स देख्या रूहअल्ला, हक सूरत किसोर सुन्दर।
कही वाहेदत की मारफत, जो अर्स के अंदर।।
सा. ४/३

देखी अमरद जुल्फें हक की, और बोहोत करी मजकूर।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंच के हक हजूर।।
सा. ५/६

जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का।
ए सबथें न्यारा सुभान जो, अर्स अजीम में बका।।
मलकूत ऊपर हवा सुन्य, तिन पर नूर अछर।
नूर पार नूरतजल्ला, ए जो अछरातीत सब पर।।
अर्स ठौर हमे सगी, हमेसा हक सूरत।

सिनगार सबे हमे सगी, ना चल विचल इत।।

सा. ५/१३,१४,१५

१६४. मोमिनों की सिफ्त

बड़ी बड़ाई इन की, कोई नहीं इन समान।
रहे हजूर हक के, ए निसबत करी पेहेचान।।

खु. १०/६२

चरन रज ब्रह्मसृष्ट की, ढूंढ थके त्रैगुन।
कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन।।
करसी पाक चौदे तबक को, लाहूती उमत।
देसी भिस्त सबन को, ऐसी कुरान में सिफत।।

खु. १३/५५,५६

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक।
सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक।।

प. २/१७

जो न्यामत हक के दिल में, तिन का क्योंए ना निकसे सुमार।
सो सब इस्क हक का, रूहों वास्ते इस्क अपार।।
ए इलम आया जब रूह को, तब पेहेचान आई मुतलक।
जो हरफ निकसे दुनी का, सो सब देखे इस्क हक।।
जब ए इलम रूहों पाइया, इस्क हो गया चौदे तबक।
और देखे न कछुए नजरों, सब देखे इस्क हक।।

श्रृं. २/३१,३२,३३

सरभर एक मोमिन के, कई कोट मिलो खलक।
जाको मेहेर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं दोजक।।

श्रृं. १/४३

ए साहेदी जाहेर सुनो, जो लिखी माहें फुरमान।
अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब पेहेचान।।
हक हादी रूहें अर्स में, इस्क इलम बेसक।
जोस हुकम मेहेरबानगी, हकीकत मारफत मुतलक।।

श्रृं. २/३,४

दीजे परिकरमा अर्स की, मोमिन दिल ना सखत।
सूते भी कदम ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।

श्रृं. ८/५

सब के हक हमको किए, हक रसनाएं बीच बका।
ए सुख इन मुख क्यों कहूं, जो दिया हादी रूहोंको भिस्तका।।

श्रृं. १६/४६

१६५.निगम की हकीकत

कई खोज करी निगम, पर पाई नाहीं गम।
ए पैदा जिनके हुकम, सो पाया न किन खसम।।
नेत नेत कर तो गाया, जो ब्रह्म न नजरों आया।
जित देख्यो तित माया, तब नाम निगम धराया।।
ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार।
ढूंढ़्या कैयों कई प्रकार, पर चल्या न आगे विचार।।
कह्या इतथें आगे सुंन, निराकार निरगुन।
भी कह्या निरंजन, तार्थे अगम रह्या सबन।।

खु. ११/६,८,१०,१२

जो नेत नेत कह्या निगमे, सब लगे तिन सब्द।
माएने निराकार पार के, क्यों समझे दुनियां हद।।
निगमें गम कही ब्रह्म की, क्यों समझे ख्वाबी दम।
सो ए करूँ सब जाहेर, रूह अल्ला के इलम।।

खु. १२/३३,३६

वेद अगम केहे उलटे पीछे, नेत नेत कर गाया ।
खबर न परी बिंद उपज्या कहां थे,तार्थे नाम निगम धराया ।।

कि. २/२

जोलों ताला खुले नहीं, द्वार अथरवन कतेब।

पाई ना तरफ हक बका, ना कछू खेल फरेब।।
खि. १४/६६

सत वाणी छे वेद तणी, जो ते कोई जुए विचारी।
ए कोहेडो रचियो रामतनो , सघला ते माहें अंधारी।।
कोई दोष मां देजो रे वेद ने, ए तो बोले छे सत।
विश्व पडी भोम अगनान माहें, ए भोम फेरवे छे मत।।
कि. १२६/६६,६७

१६६.श्री प्राणनाथ जी के आगमन की भविष्यवाणी

पेहेले लिख्या फुरमान में, आवसी ईसा इमाम हजरत।
मारेगा दज्जाल को, करसी एक दीन आखिरत।।
वेदों कह्या आवसी, बुध ईस्वरों का ईस।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस।।
बुध ब्रह्मसृष्टी वास्ते, आवसी कह्या वेद।
ए बात है उमत की, कोई और न जाने भेद।।
खु. १२/३०,३१,३२

बुध नेहेकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजूर।।
विजिया - अभिनंद - बुध जी, लिखी एही सरत।
ब्रह्मसृष्ट जाहेर होए के, सब को देसी मुक्त।।
ईसे के इलम से, होसी सबे एक दीन।
ए दज्जाल को मार के, देसी सबों आकीन।।
खु. १३/५२,५३,५४

वेद कहे बुध इनपे, और बुध सुपन।
एही सब को जगाए के, देसी मुक्त त्रैगुन।।
हिन्दू कहे धनी आवसी, वेदों लिख्या आगम।
कह्या हमारा होएसी, साहेब आगे हम।।
मुसलमान कहें आवसी, सो हमारा खसम।
लिख्या है कतेब में, आगे नबी हमारा हम।।

ईसा अल्ला आवसी, कहे किताब फिरंगान।
किल्ली भिस्त जो याही पे, खोल देसी नसरान।।
खु. १३/७६-८२

ए बंध धनिएं पेहेले बांधे, सो लिखे मांहें फुरमान।
इन जिमी साहेब आवसी, दीदार होसी सब जहान।।
फुरमान महंमद ल्याइया, किया अति घना सोर ।
कह्या रब आलम का आवसी, रात मेट करसी भोर।।
रूह अल्ला की आवहीं, जो ईश्वरों का ईस।
सो इन जिमी में पातसाही, करसी साल चालीस।।
मारेगा कलजुग को, ए जो चौदे तबक अंधेर।
तिनको काट काढ़सी, टालसी उलटो फेर।।
कि. ६६/२३,२६,२७,२८

१६७.जगदीश का अर्थ प्राणनाथ

वेदों कह्या आवसी, बुध ईस्वरों का ईस।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीस।।
खु. १२/३१

१६८. वेद कतेब का ज्ञान समान है।

नाम सारों जुदे धरे, लई सबों जुदी रसम।
सबमें उमत और दुनियाँ, सोई खुदा सोई ब्रह्म।।
लोक चौदे कहे वेद ने, सोई कतेब चौदे तबक।
वेद कहे ब्रह्म एक है, कतेब कहे एक हक।।
तीन सृष्ट कही वेद ने, उमत तीन कतेब।
लेने न देवे माएने, दिल आड़ा दुस्मन फरेब।।
दोऊ कहे वजूद एक है, अरवा सबमें एक।
वेद कतेब एक बतावहीं, पर पावे न कोई विवेक।।
जो कछू कह्या कतेब ने, सोई कह्य ा वेद।
दोऊ बंदे एक साहेब के, पर लड़त बिना पाए भेद।।

खु. १२/३८-४२

मलकूत कह्या बैकुंठ को, मोहतत्व अंधेरी पाल।
अछर को नूरजलाल, अछरातीत नूरजमाल।।
ब्रह्मसृष्ट कहे मोमिन को, कुमारका फरिस्ते नाम।
ठौर अछर सदरतुलमुंतहा, अरसुल्अजीम सो धाम।।
श्री ठकुरानी जी रूहअल्ला, महंमद श्री कृष्ण जी स्याम।
सखियां रूहें दरगाह की, सुरत अछर फरिस्ते नाम।।
बुध जी को असराफील, विजया अभिनन्द इमाम।
उरझे सब बोली मिने, वास्ते जुदे नाम।।

खु. १२/५१-५४

१६९. वेद कतेब की सफकत बुध जी छीन लेंगे।

सो बुध जी सुर असुरन पे, लेसी वेद कतेब छीन।
कहे असुराई मेट के, देसी सबों आकीन।।
वेद कतेब सबन पे, लेसी छीन बुधजी।
खोल माएने देसी मुक्त, बीच बैठ ब्रह्मसृष्टी।।

खु. १३/३२,३४

अर्स बका की हकीकत, माहें लिखी कतेब वेद।
खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद।।

सि. ३/५०

मनसूख कही जो किताबें, रात में आई जे।
इन उमतें सब रानी कही, जिनों मांगे माजजे रात के।।
एक करी किताबें मनसूख, वाही नाम की करी हक।
तिन उमतें सब रानी गई, अब कहो क्यों भागे सक।।
करी अगली किताबें मनसूख, आखिर सोई पैगंमर ल्याए।
नफा पाया तासों खलको, आखिर चारों किताब पढ़ाए।।
अब कौन मनसूख को हक, ए दुनी सिफली क्यों समझाए।
एक हरफ बिना लदुन्नी, बिन वारस न बूझा जाए।।

मा.सा. ३/१२,१३,१४,१६

लिया दुनी पे ईमान, और दुनियां की बरकत।
खैंच लिया कुरान को, और फकीरों की सफकत।।
मा.सा. १२/८

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान।
बाकी इसलाम में क्या रह्या, जो रह्या न काहू ईमान।।
मा.सा. १४/११

१७०. पाँचो स्वरूप का वर्णन

ए केहेती हों प्रगट, ज्यों रहे न संसे किन।
खोल माएने मगज मुसाफ के, सब भाने विकल्प मन।।
श्री कृष्णजीएँ बृज रास में, पूरे ब्रह्मसृष्टी मन काम।
सोई सरूप ल्याया फुरमान, तब रसूल केहेलाया स्याम।।
चौथा सरूप ईसा रूह अल्ला, ल्याए किल्ली हकीकत धाम।
पाँचमां सरूप निज बुध का, खोल माएने भए इमाम।।
ए भी पाँच सरूप का, है बेवरा मांहें कुरान।
जो कछू लिख्या भागवत में, सोई साख फुरमान।।
खु. १३/ ७४ - ७७

१७१. तीन कार्य करने के लिए धनी आये

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन।।
क्रोध सुर असुरों को, दूजे जादे पैगंमर और।
वेद कतेब छुड़ावने, धनी आए इन ठौर।।
दो बेटे रूह अल्ला के, एक नसली और नजरी।
भई लड़ाई इन वास्ते, मसनन्द पैगंमरी।।
वेद आया देवन पे, असुरन पे कुरान।
मूल माएने उलटाए के, कई जाहेर किए तोफान।।
मेटन लड़ाई बन्दन की, और जादे पैगंमर।
धनी आए वेद छुड़ावने, ए तीन बातें चित्त धर।।

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन विध।
मन चाह्या सरूप होए के, कारज किए सब सिध।।

खु. १३/ ८६ से ६४

१७२. सारा ब्रह्माण्ड निराकार से परे का ज्ञान नहीं जानता

मोह तत्व अहं उड़यो, जो परदा ऊपर त्रैगुन।
ए सब बीच द्वैत के, निराकार निरंजन सुंन।।
वचन थके सब इतलों, आगे चले न मनसा वाच।
सुपन सृष्ट खोजे सास्त्रों, पर पाया न अखंड घर सांच।।

खु. १३/१०४,१०५

मूल प्रकृती मोह अहं थें, उपजे तीनों गुन।
सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भवन।।
प्रले प्रकृती जब भई, तब पांचों चौदे पतन।
मोह अहं सबे उड़े, रहे सरगुन ना निरगुन।।
तब जीव को घर कहां रह्यो, कहां खसम वतन।
गुर सिष्य नाम बोहोतों धरे, पर ए सुध परी न किन।।

कि. २१/२,३,४

१७३. अलिफ लाम मीम का अर्थ

महंमद आय ा ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम।।
अल्लफ कह्या महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम।
मीम मेंहेदी पाक सें, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम।।
महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम।

बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम।।

खु. १५/२१,२२,२३

१७४. परमधाम में सबका एक ही स्वरूप है।

जब खावंद अर्स देखिए, तब तो एही एक।
इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख।।
जो कछू अर्स में देखिए, सो सब जात खुदाए।
और खेलौने बगीचे, सो सब जातै के इप्तदाए।।
न अर्स जिमिएँ दूसरा, कोई और धरावे नाउ।
ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूं।।
और खेलौने जो हक के, सो दूसरा क्यों केहेलाए।
एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इप्तदाए।।

खु. १६/८१,८२,८३,८४

आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक।
सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक।।

सा. ४/२६

आतम चाहे बरनन करूं, जुगल किसोर विध दोए।
ए दोए बरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोए।।

सा. ५/१०

ना समारत्या अर्स को, ना किए नूर मन्दिर।
ना किए हौज जोए को, ना पर्वत बन जानवर।।
ना समारी जिमी जल को, ना आकास चांद सूर।
वाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर।।
है नूर सब नूरजमाल को, फरिस्ते नूर सिफात।
रूहें नूर बड़ीरूह को, ए सब मिल एक हक जात।।
दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूरजमाल।
ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल।।

प. ३२/८१,८२,८३,८४

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।
मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।

प. २/१२

१७५. साधुओं की भूल

समझे साध कहावें दुनी में, बाहेर देखावें आनन्द।

भीतर आग जले भरम की, कोई छूट न सके या फंद।।

परत नहीं पेहेचान पिंड की, सुध न अपनों घर।

मुखथें कहे मोहे संसे मिटया, मैं देखे साध केते या पर।।

साध सुने मैं देखे केते, अगम कर कर गावें।

नेहेचे जाए करें निराकार, या ठौर चित ठेहेरावें ।।

कि. ४/५,६,७

जो तूं चाहे प्रतिष्ठ, धराए वैरागी नाम ।
साध जाने तोको दुनियां , वह तो साधों करी हराम।।
मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान।।

कि. १०३/१,२

गोप रेहेसे साध एणे सगें, ते प्रगट केणी पेरे थाय।
वेख वधारया बहु विध तणां , ते खोल्या केम करी जाय।।
सरखा सरखी सर्वे पृथ्वी, माहें विध विध ना वहे नारायण।
नहीं आकार फरे साध तणो , प्रगट नहीं एधाण।।
आ भोम अंधेर माहें आमला , जीव वेध्यो सघली ब्राध।
जेने ते जई ने पूछिए , ते मुख थी कहे अमें साध।।

कि. १२६/३,४,५

१७६. ब्रह्मसृष्टि की पहचान

लगी वाली और कछु न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं।
ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं।।

कि. ६/४

बादल बरस्या रूह-अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन।
और कोई न ले सके, बिना अर्स रूहन।।
जिन पिआ मस्ती तिन की, बीच दुनी के छिपे नाहें।
सो मस्ती मोमिनों जाहेर हुई, चौदे तबकों माहें।।

खि. ६/२६,३०

जो होसी रूहें अर्स की, तिन आवे ईमान अव्वल।
आखिर तो सब ल्यावसी, दोजख की आग जल।।

खि. १४/६४

अव्वल इस्क जिनों आइया, सोई अर्स अरवाहें।
नाहीं मुतलक मोमिन, जिनों लगे न बेसक घाए।।
बेसक इलम आइया, पाई बेसक हक दिल बात।
हुए बेसक इस्क न आइया, सो क्यों कहिए हक जात।।

खि. १६/१०२,१०३

कुरबानी को नाम सुन, मोमिन उलसत अंग।
पीछे हुते जो मोमिन, दौड़ लिया तिन संग।।

कि. ६०/६

मोमिन एही परीछा, जोस न अंग समाए।
बाहेर सीतलता होए गई, मांहें मिलाप धनी को चाहे।।
सुनत कुरबानी मोमिन, होए गए आगे से निरमल।
इत एक एक आगे दूसरा, जाने कब जासी हम चल।।

कि. ८०/१०,११

इस्क नेहेचे मिलावे पिउ, बिना इस्क न रहे याको जिउ।
ब्रह्मसृष्टी की एही पेहेचान , आतम इस्कै की गलतान।।

प. १/१२

बिन खुदी बिन गुमान, और साफ दिल ईमान।
सरे दो साहेद चाहिए, ऐसे सिदक मुसलमान।।

मा.सा. ६/३८

इसारतें रमूजें अल्लाह की, सो लेकर हक इलम।
सो खोले रूहअल्लाह की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम।।

मा.सा. ११/३५

१७७. माया की हकीकत

कोई सुध न पावे याकी, ऐसी माया सपरानी।
आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे - मांझ उरझानी।।

कि. १०/६

पेहेले पेड़ देखो माया को, जाको न पाइए पार।
जगत जनेता जोगनी, सो कहावत बाल कुमार।।
मात पिता बिन जनमी, आपे बंझा पिंड।
पुरुख अंग छूयो नहीं, और जायो सब ब्रह्मांड।।
आद अंत याको नहीं, नहीं रूप रंग रेख।
अंग न इन्द्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख।।
जल जिमी न तेज वाए, न सोहं सब्द आकास।

तब ए आद अनाद की, जब नहीं चेतन प्रकास।।

पढ़ पढ़ थाके पंडित, करी न निरने किन।

त्रिगुन त्रिलोकी होए के, खेले तीनों काल मगन।।

कि. २७/ ३ से ७

ए माया आद अनाद की , चली जात अंधेर।
निरगुन सरगुन होए के व्यापक, आए फिरत हैं फेर।।
प्रकृति पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम।।
कि. ६५/१,१०

१७८.दुख की उपयोगिता

इन अवसर दुख पाइए, और कहा चाहियत है तोहे।

दुख बिना चरन कमल को, सखी कबहूं न मिलिया कोए।।

जिन सुख पिउजी न मिले, सो सुख देऊं रे जलाए।

जिन दुख मेरा पिउ मिले, मैं सो दुख लेऊं बुलाए।।

दुख को निबाहू न मिले, और सुख को तो सब ब्रह्मांड।

इन झूठे दुख थें भाग के, खोवत सुख अखंड।।

इन सुपने के दुख से जिन डरो, दुख बदले सत सुख।

अपने मासूक सों नेहड़ा, तोको देयगो बनाए के दुख।।

कि. १६/२,३,५,१०

बड़ी मत के जो धनी कहे, होए गए जो आगे।

तिन भी धनी मिलन को, दुख धनी पें मांगे।।

दुख बिना न होवे जागनी, जो करे कोट उपाए।
धनी जगाए जागहीं, न तो दुख बिना क्यों ए न जगाए।।

दुखतें विरहा उपजे, विरहे प्रेम इस्क।
इस्क प्रेम जब आइया, तब नेहेचे मिलिए हक।।

सुख माया को मूल है, सो चाहे बढ़यो विस्तार।
तिन साधो सुख तजिया, वास्ते अपने करतार।।

बारीक बातें दुख की, जो कदी लगे मिठास।
तो टूट जात है ए सुख, होत माया को नास।।

कि. १७/७,१४,१६,२२,२३

ए दुख बातें सोई जानहीं, जाको आई वतन खुसबोए।
ए दुख जानें अर्स अंकूरी, माया जीव न जाने कोए।।

जो माया मोह थें उपजे, सो क्या जाने दुख के सुख।
जो माया को सुख जानहीं, तार्थे हुए बेमुख।।

जो साहेब सनकूल होवहीं, तो दुख आवे तिन।
इन दुनियां में चाह कर, दुख न लिया किन।।

कि. १७/२४,२५,३०

१७६. आतम रोग

सखी री आतम रोग बुरो लग्यो, याको दारू ना मिले तबीब।

चौदे भवन में न पाइए, सो हुआ हाथ हबीब।।

आतम रोग कासों कहिए, जिन पीठ दई परआतम।

ए रोग क्यों ए ना मिटे, जो लों देखे ना मुख ब्रह्म।।

सो हबीब क्यों पाइए, कई कर कर थके उपाए।

सास्त्र देखे सब सब्द, तिन दुख दिया बताए।।

कि. १७/१,२,३

अब चरन कमल चित्त देय के, बैठ बीच खिलवत।
देख रूह नैन खोल के, ज्यों आवे अर्स लज्जत।।
इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे।
नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए।।

कि. २१/२१०,२११

१८०. दुनिया ज्ञान नहीं सुनना चाहती

चल्यो जुग जाए री सुध बिना।

सुध बिना सुध बिना सुध बिना,चल्यो जुग जाए री सुध बिना।।

कि. २१/१

दुनी दुनी पें चाहे दुनियां, तार्थे करामात ढूंढ़े ।

पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिच्छा और मूंडें ।।

कि. २०/२

रे हो दुनियां बावरी, खोवत जनम गमार।

मदमाती माया की छाकी, सुनत नाहीं पुकार।।
अपनी छायासों आप बिगूती, बल खोए चली हार।
आग बिना जलत अंग में, जल बल होत अंगार।।
सत सब्द को कोई न चीन्हे, सूने हिरदे नहीं संभार।
समझे साध जो आपको देखे, तामें बड़ी अंधार।।

कि. २२/१,२,३

रे हो दुनियां को तूं कहा पुकारे, ए सब कोई है स्याना।
ए मदमाती अपने रंग राती, करत मन का मान्या।।
रे हो याही फंद में साध संत री, पुकार पुकार पछताना।
कोई कहे दुनियां बुरी करत है, कोई भली कहे भुलाना।।
रे हो बोहोत दिन बिगूती यामें, कर कर ग्यान गुमाना।
चुप कर चतुराई लिए जात है, तूं न कर निंदा न बखाना।।
रे हो तूं कर तेरी होत अबेरी, आप न देखे उरझाना।
अब तूं छोड़ सकल बिध, जात अवसर तेरा जान्या।।

कि. २३/१,२,३,४

रे मन भूल ना महामत, दुनियां देख तूं आप संभार।
ए नाहीं दुनियां बावरी, ए रच्यो माया ख्याल।।
रे मन त्रिखा न बूझे तेरी झांझुए, प्रतिबिंब पकरयो न जाए।

ज्यों जलचर जल बिना ना रहे, जो तूं करे अनेक उपाए।।

रे मन सृष्ट सकल सुपन की, तूं करे तामें पुकार।

असत सत को ना मिले, तूं छोड़ आप विकार।।

रे मन सुपन का घर नींद में, सो रहे न नींद बिगर।

याको कोट बेर परबोधिए, तो भी गले नहीं पत्थर।।

कि. २४/१,२,३,४

दुनी दुनी पें चाहे दुनियां, तार्थे करामात ढूंढ़े।

पीछे दोऊ बराबर संगी, तब दे सिच्छा और मूंडें।।

कि. २०/२

१८१. जागनी अभियान की शोभा

सतगुर मेरा स्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूं।
सनमंध मेरा याही सों, मैं तार्थे सदा सुख लहूं।।

कि. ५२/१

भी कह्या बानीय में, पांच सरूप एक ठौर।
फुरमान में भी यों कह्या, कोई नाहीं या बिन और।।
कहे सुन्दरबाई अछरातीत से , खेल में आया साथ।
दोए सुपन ए तीसरा, देखाया प्राणनाथ।।

कि. ६४/२८,२६

१८२. पदमावती पुरी की महिमा

ठौर ठौर थाने दिए , मेला हुआ है मध देस।
छत्रपति नमे नेहसों, राए राने पृथी के नरेस।।

कि. ५५/१२

जाए इलम पोहोंच्या हक का, ताए हुई हक हिदायत।
सो आया फिरके नाजी मिने, झण्डा दीन हकीकी जित।।

मा.सा. १३/१

अब दुनियां पीछी क्यों रहे, जब हुई हक कजाए।
हुआ सब पर हुकम महंमदी, सो सब लेसी सिर चढ़ाए।।

मा.सा. १३/२६

बेसक मेला इत होएसी, महंमद सरा अदल।
तिन कायम करी दुनी फानी को, ले हक इलम अकल।।

मा.सा. १३/२८

सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम।
इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम।।

मा.सा. १४/६

यों झण्डा नूर बिलंद का, किया खड़ा हक हादी मोमिन।
देखावे नामे वसीयत, नूर हिंद में बरस्या रोसन।।

मा.सा. १४/२०

कलीम अल्ला कह्या मूसे को, फुरमाया सब कहे।
सो कलाम अल्ला की रोसनी, ताबे हादी के रहे।।

कि. ६१/७

सो नूर झण्डा खड़ा हुआ, बीच हिंदुस्तान।
जित जबराईल ले आइया, न्यामत चारों कुरान।।

मा.सा. १६/१०७

जो उठी कयामत को, सो क्यों सोवे ऊगे दिन।
आया असल तन में, बीच बका वतन।।

छो.क्या. १/८६

एक से इसारत दूसरे, बिलंद अस्थाने खुसखबरे।
इन देहरी की सब चूमसी खाक, सिरदार मेहेरबान दिल पाक।।

ब.क्या. १२/७

१८३. श्री कृष्ण की हकीकत हम जानते हैं।

वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपण ने अविनास।
नाम तत्व कहयूं श्री कृष्ण जी, जे रमे अखंड लीला रास।।
एहने सरणे सोप्या वैष्णवने, जिहां विध विध ना विलास।
हवे नेहेचल रंग कीजे ते पुरूख सों, दई प्रेमनो पास।।
पुरुखपणें ए दृष्टें न आवे, ए अबलापणें कीजे अंग।
पुरुख नथी ए विना कोई बीजो, जे रमे नेहेचल लीला रंग।।
ए प्रीछो तो पारब्रह्म चित आवे, समझे सुपन परूं थाय।
अखंड तणां सुख एणी पेरे लीजे, लाहो मायामां लेवाय।।
सत वस्त घणूं स्या ने प्रकासूं, अर्थी बिना नव कहिये।
एहेना नेहेचल नेहड़ा गोप भला, आ उलटीमां प्रगट न थैये।।
अर्थी होय ते आवी ने पूछे, मोटी मत तेहेने दाखूं।
ए निध देवा जोग नहीं, तेथीं अंतर राखूं।।
गुण मुख बोली भलूं न मनावूं, अवगुण न राखूं छानो।
सत वस्त देवाने सत भाखूं, एमा दुख मानो ते मानो।।
पतलीने तमें पगला भरिया, लाग्यो स्वाद संसार।
पुरूखपणे रमया माया मां, तो आड़ी आवी अंधार।।
सत कहे संतोख उपजे, कुली तणे कांधे चढ़या।
ते वैष्णव नहीं तेथी रहिए वेगला, जे ए निध मूकी पाछा पडया।।
कि. ६४/७ - १४,२२

१८४. मैं खुदी को दूर करना

हकें पोहोंचाई इन मजलें, और दोष हक को देवत।
एही मैं मारी चाहिए, जो बीच करे हरकत।।
मैं मैं करत मरत नहीं, और हक को लगावे दोस।
अब मेहेर हक ऐसी करें, जो इन मैं थें होऊं बेहोस।।
ए मैं मैं क्योंए मरत नहीं, और कहावत है मुरदा।
आड़े नूर जमाल के, एही है परदा।।

खि. २/२०,२२,२८

मारा कह्या काढ़ा कह्या, और कह्या हो जुदा।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा।।
पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर।।
एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें।
तो सुख जीवत अर्स का, लेवे ख्वाब के माहें।।
महामत कहे ए मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार।
खसम करावे कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार।।

खि. २/३०,३१,३२,३५

मैं बिन मैं मरे नही, मैं सों मारना मैं।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे।।
मैं दुनी की थी सो मर गई, इन मैं को मास्या मैं।
अब ए मैं कैसे मरे, जो आई है खसम से।।
मैं चल आई कदमों, ऐसा दिया बल तुम।
इन विध मैं मरत है, ना कछू बिना खसम।।
केहेत केहेलावत तुम ही, करत करावत तुम।
हुआ है होसी तुमसे, ए फल खुदाई इलम।।

खि. ३/१,५,६,१३

ए मैं है हक की, ए है हक का नूर।
खास गिरो जगाए के, पोहोंचत हक हजूर।।
ए मैं इन विध की, सो मैं मरे क्योंकर।
पोहोंचे पोहोंचावे कदमों, जाग जगावे घर।।
ए जो मैं हक की, सो भी निकसे हक हुकम।
इन मैं में बंधन नहीं, बंधाए जो होवे हम।।

खि. ३/१५,१६,२०

हम बंधे बंधाए मिट गए, कछू र ह्या न हमपना हम।

यों पोहोंचाई बका मिने, इन विध मैं को खसम।।
मैं ना अव्वल ना बीच में, ना कछू मैं आखिर।
कियाकराया करत हैं, सो सब हक कादर।।
अब खसम ख्वाब की सुध परी, और सुध परी हुकम।
तब मैं में जरा ना रही, मैं बैठी तले कदम।।
महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में।
ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से।।

खि. ३/२१,२७,४४,६२

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे।।
जोलों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए।
ए मैं मांगे तुमारी तुम पे, तुम मंगावत जे।।
मैं मांगत डरत हों, सो भी डरावत हो तुम।
मैं मांगे तुमारी तुम पे, ना तो क्यों डरे अंगना खसम।।

खि. ४/१,३,४

हजरत ईसे मांगया, हक अपनायत कर।
तिन पर ए गुनाह लिख्या, ए देख लगत मोहे डर।।
फुरमान देख के मैं डरी, देख रूह अल्ला पर गुना।
ए खासी रूह खुदाए की, मोमिनों रह्या न आसंका।।
तो डर बड़ा मोहे लगत, जो गुनाह कह्या इन पर।
माफक रूह अल्लाह के, कोई मरद नहीं बराबर।।
ए खावंद है अर्स अजीम का, हादी हमारा सोए।
इस मानंद चौदे तबक में, हुआ न होसी कोए।।

खि. ४/५,६,७,८

ना तो ए मैं ऐसी नहीं, जो निकसे किए उपाए।
मेहेनत कर त्रिगुन थके, कोई सके न मैं को फिराए।।
ए दुनियां चौदे तबक में, किन जान्यो न मैं को बल।
किन मैं को पार न पाइया, कई दौड़ाए थके अकल।।

इन मैं में डूब्या सब कोई, याको पार न पावे कोए।
याको पार सो पावहीं, जाको मुतलक बकसीस होए।।
खि. ५/२८,२९,३०

पोहोंचे नहीं अंग दिल के, तार्थे रूह अंग लीजे जगाए।
तो लों आपा ना मरे, जोलों खुदी न देवे उड़ाए।।
जब उठें अंग रूह के, सो तूं जागी जान।
आई अर्स अंग लज्जत, तिन पूरी भई पेहेचान।।
छो.क्या. १/४०,४१

१८५. धनी के हुक्म से ही रूहें कुछ भी करती है।

हकें किया हुकम वतन में, सो उपजत अंग असल।
जैसा देखत सुपन में, ए जो बरतत इत नकल।।
कहे लदुन्नी भोम तलेय की, हक बैठे खेलावत।
तैसा इत होता गया, जैसा हजूर हुकम करत।।
खि. ५/३७,३९

जोस गिरो मोमिनों पर, हकें भेज्या जबराईल।
रूहें साफ रहें आठों जाम, और अबलीस दुनी दिल।।
और बेवरा कह्या जाहेर, दुनियां और मोमिन।
दुनी पैदा जुलमत से, मोमिन असल अर्स तन।।
खु. १/८५,९१

दिल अर्स मोमिन कह्या, जामें अमरद सूरत।
खिन न छूटे मोमिन से, मेहेबूब की मूरत।।
खु. ३/३१

दिल मजाजी दुनी का, मोमिन हकीकी दिल।
हक हादी रूहें निसबत, कही अबलीस दुनी नसल।।
आदम औलाद दिल अबलीस, बैठा पातसाह दुस्मन होए।
कह्या हवा खुदाए इन का, उलंघ जाए क्यों सोए।।
खु. ४/२२,४३

१८६. अक्षर ब्रह्म को सत्स्वरूप कहा जाना।

सुख दुख बंने जोइया, तोहे कांईक रह्यो संदेहजी।
ते माटे वली सत सरूपे, मंडल रचियो एहजी।।

क.गु. ६/२५

सुपन सत सरूप को, तुम कहोगे क्यों कर होए।
ए बिध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए।।

क.हि. २४/२८

१८७. निज बुद्धि जागृत बुद्धि से अलग है-

पार बुध पाम्या पछी, एहेनों मान मोटो थासे।
अछर खिण नव मूके अलगी, मारी संगते एम सुधरसे।।

क.गु. ७/३४

अब एह वचन कहूं केते, देसी दुनियां को उद्धार।
मेरे संग आए बड़ी निध पाई, सो निराकार के पार।।
पार बुध पाए पीछे, याको होसी बड़ो मान।
अछर नेक ना छोड़े न्यारी, ए उदयो नेहेचल भान।।

क.हि.१८/३४,३५

१८८. इश्क सुख लज्जत

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए।
हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिए।।
हक आसिक रूहन का, इन इस्क का आब जे।
इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले।।
नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब।
हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब।।
कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान।।

खि.८/१ से ४

रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल।

मुंह पकड़ तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल।।
कई विध मेहेर करत है, मासूक जो मेहेरबान।
उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत में सुभान।।
रूहों के दिल कछू ना हुता, कछू कहें न मांगें हक से।
ना कछू चित्त में चितवन, ना मुतलक रूहों मन में।।
कई सुख दिए निसबत कर, ए झूठा तन कर यार।
क्यों कहूं सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार।।

खि.८/५,७,८,२१

ए नाबूद वजूद जो नासूती, अर्स उमत धरे आकार।
लिख्या हकें कुरान में, ए तन मेरे यार।।
यों हकें लिख्या कुरान में, ए अरवाहें मेरे अहेल।
ए झूठे वजूद जो खाक के, निपट गंदे सेहेल।।
औलिया लिल्ला दोस्त कर, नूर जमाल लिखत।
ऐसे निजस तन नासूती, कहे यासों मेरी निसबत।।

खि.८/३५,३६,३७

कहे नूर - जमाल कुरान में, छोड़ के एह अंधेर।
एक साद करो मुझको, मैं तुमें जी जी कहूं दस बेर।।
यों हकें लिख्या कुरान में, हक रूहों की करें जिकर।
पीछे आपन करत हैं, रूहें क्यों न देखो दिल धर।।
हकें लिख्या कुरान में, पेहेले मेरा प्यार।
जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार।।
ला मकान का सागर, लग तले तेहेतसरा।
ऐसे अंधेर अथाह बीच पैठ के, मोहे काढ़ी होए मरजिया।।

खि.८/३८,३९,४०,४६

इलम मेरा लेय के, निसंक दुनी से तोड़।

सोई भला इस्क, जो मुझ पे आवे दौड़।।

खि.१६/३२

कलाम अल्ला या हदीसे, सास्त्र पुरान या वेद।
ए सब सुख लेवें मोमिन, हक रसना के भेद।।

श्रृं. १६/ १६

१८६. धनी की साहेबी

अर्स की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या।।
ए बातें नूरजमाल की, इनमें कैसा तअजुब।
जनम लाख देखावें पल में, जानों ढ़ांप के खोली अब।।
एक खस - खस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक।
तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक।।
तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसबत।
कजा चौदे तबक की, इन तन पे करावत।।

खि. १०/ १५,२०,२१,२४

ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कंहू झूठी जुबान।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत में सुभान।।
दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन।
निसबत तुमसों तो कहूं, जो देख्या बका वतन।।

खि. १०/२५,२६

दोऊ तन तले कदम के, आतम परआतम।
इनमें सक कछू ना रही, यों कहें हक इलम।।

खि.१०/ ४५

महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम।।

खि.१०/८०

ऐसा साहेब बुजरक, जो हमेसा कायम।
सो तले झांकत नूरजमाल के, आवे दीदारें दायम।।

खि.१२/८१

१६०.खेल मांगने का गुनाह

खसम खसम तो केहेती हों, जानों खुदी रहे ना मुझ माहें।
गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें।।

खि. १०/४२

मोमिन दिल अर्स कर के, आए बैठे दिल माहें।
खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमिनों सिर नाहें।।
फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत।
ए बेवरा है कलस में, मोमिन लेसी देख तित।।
रूहें मोमिन इत आई नहीं, तिन वास्ते नहीं गुना।
पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अर्स का।।

श्रृं. २२/१५७,१५८,१५९

अब भूल हमारी जरा नहीं, और हक कर थके हांसी।
बात आई सिर हुकम के, अब काहे बिलखे रूह खासी।।
लाड़ हमारे अर्स के, हम से न छूटें खिन।
अक्स हमारे के अक्स, क्यों लगे दाग तिन।।
अब जो दिन राखो खेल में, सो याही के कारन।
इस्क दे बोलाओगे, ऐसा हुकमें देखें मोमिन।।

श्रृं.२३/ १४,१७,१८

रंग लाल कहूं के उज्जल, के देख खूबियां होत खुसाल।
सो देखन वाले नाम धराए के, हाए हाए ओ जले न माहें क्यों झाल।।
नाजुक सलूकी मीठी लगे, नैना देखत ना तृपिताए।
हाए हाए ए अनुभव दिल क्यों भूलै, ए हुकमें भी क्यों पकराए।।
नाम जो लेते विरह को, मेरी रसना गई ना टूट।

सो विरहा नैनों देख के, हाए हाए गैयां न आंखां फूट।।
हक बानी कानों सुनती, कानों सुन के करती मैं बात।
सो अवसर हिरदे याद कर, हाए हाए नूर कानों का उड़ न जात।।
क्या वस्तर क्या भूखन, असल अंग के नूर।
हाए हाए रूह मेरी क्यों रही, करते एह मजकूर।।

श्रृ. २२/२२,२३,२४,२५,२७

१६१.रूहों का मेला अभी होना है

साथ आए मेला मिलसी, सो सब हाथ हुकम।
ए सक इलमें ना रखी, अब कहा कहूं खसम।।

खि. १०/४८

ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक, खेल त्यों त्यों होवे दूर।
यों करते छूट्या खेल नजरों, तो रूहें कदमैं तले हजूर।।
नजर खेल से उतरती देखिए, त्यों अर्स नजीक नजर।
यों करते लैल मिटी रूहों, दिन हुआ अर्स फजर।।

श्रृ. २४/१३,१४

१६२. झूठे खेल में रूहें भूल जायेंगी

कहां है हमारा वतन, कौन जिमी ए ठौर।
क्यों कर हम आए इत, बिना मलकूत है कोई और।।
पढ़ोगे सब साहेदियां, जो मैं लिखोंगा इसारत।
सो दिल में ल्याओगे, पर छूटेगी नहीं गफलत।।
मैं लिखोंगा रमूजें, और सिखाऊंगा मेरा इलम।
तिन इलम से चीन्होगे, पर छूटे न झूठी रसम।।
तुम जाए झूठे खेल में, कर बैठोगे जुदे जुदे घर।
मैं आए इलम देऊं अर्स का, पर तुम जागो नहीं क्योंए कर।।

खि. ११/२२-२५

मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेख लेसी तुम माफक।

देसी अर्स की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक।।
हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।।
खि.११/२६,२७

समझाईयां समझ नहीं, मानें नहीं फुरमान।
कहें कौन तुम कौन हम, अपने कैसी पेहेचान।।
खि.१३/२०

जो हुए होवें मुरदे, तिनको देत उठाए।
इन विध इलम लदुन्नी, पर तुमें न सके जगाए।।
ऐसी देखोगे दुनियां, हक न काहूं खबर।
ना सुध अर्स न आपकी, कई ढूंढत सहूर कर।।
एक दूजी आपुस में, रहे ना रूह चिन्हार।
ना चीन्हों बड़ी रूह को, ना कछू परवरदिगार।।
खि.१४/१३,१४,१६

१६३. महंमद साहब की भविष्यवाणी

ऐसे में आए रसूल, हाथ लिए फुरमान।
फैलाया नूर आलम में, वास्ते मोमिनों पेहेचान।।
आगूं आए खबर दई, आखिर आवेगा साहेब।
रूहअल्ला इमाम उमत, होसी नाजी - मजहब।।
पुकार करी सबन में, कह्या आवेगा सुभान।
हिसाब ले भिस्त देयसी, ठौर हक बका पेहेचान।।
खि.११/६४,६५,६६

१६४.सांसारिक रिश्ते स्वार्थ के होते हैं

सो भी कबीले स्वारथी, दुख आए न कोई अपना।

जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना।
आइयां झूठे कबीले में, भूल गईयां बका वतन।
सुख अर्स अजीम के, हाए हाए करेब दिया दुनी इन।।
खि.१४/३४,३७

१६५. दुनिया वालों की भूल

खेल ऐसा फरेब का, सब हवा को पूजत।
सुध दोऊ को ना परी, कायम बका सुख कित।।
ए तेहेकीक किने ना किया, कहावें सब बुजरक।
जेती बात ल्यावें इलम की, तिन सबों में सक।।
सब पूजें खाहिस अपनी, याही फना की वस्त।
मिट्टी आग पानी पत्थर, करें याही की सिफत।।
नासूत और मलकूत लग, इनकी याही बीच नजर।
देख किताबें यों कहें, हम पाई नहीं खबर।।
जान बूझ पूजें फना को, कहें एही हमारा खुदाए।
हम छोड़े ना कदीम का, जो बड़कों पूज्या इप्तदाए।।
खि.१४/४४,४५,५०,५२,५४

इस्क लगावें तिनसों, जो दुख रूपी दिन रात।
कायम सुख अर्स का, कहूँ सुपने न पाइए बात।।
ऐसी देखाई दुनियां, जानें सांच है हमेसगी।
सांचो विचार जब कर दिया, तब झूठों भी झूठ लगी।।
खि.१४/५५,५६

कई चालें बोली जुदियां, माहें मजहब भेख अपार।
पूजें आग पानी पत्थर, इनमें खुदा हजार।।
खाहिस से बनावहीं, अपने हाथ समार।
जुदा जुदा कर पूजहीं, जिनको नाहीं पार।।

खि. १५/२०,२१

जोगारम्भी या कसबी, पोहोंचे ला मकान।
मोहतत्व क्योंए न छूटहीं, कह्या परदा ऊपर आसमान।।
एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान।
तित बुध न पोहोंचे सब्द, ए भी थके इन मकान।।

कि. ६६/४,५

१६६.जो कुरान को न माने वह मोमिन नहीं

जो मुनकर हुकम सों, मोमिन कहिए क्यों ताए।
दयो फरामोसी हम को, देखो सौ बेर अजमाए।।

खि.१६/४५

१६७. मोमिन, दुनी एवं ईश्वरीय सृष्टि की रहनी

इलम हक का सुनत ही, इस्क न आया जिन।
तिनको नसीहत जिन क रो, वह मुतलक नहीं मोमिन।।
है तीन वज्हे की उमत, इस्क बन्दगी कुफर।
सो तीनों आपे अपनी, खड़ियां मजल पर।।
सो तीनों लेवें नसीहत, पर छूटे नहीं मजल।
जैसा होवे दरखत, तिन तैसा होवे फल।।
कोई बुरा न चाहे आप को, पर तिन से दूसरी न होए।
बीज बराबर बिरिख है, फल भी अपना सोए।।

खि.१६/१०६-१०९

कोई आगे पीछे अव्वल, इस्क लेसी सब कोए।
पेहेले इस्क जिन लिया, सोई सोहागिन होए।।

खि.१६/११५

त्रिगुन से पैदा हुई, ए जो सफल जहान।

सो खेले तीनो गुन लिए, नाहीं एक दूजे समान।।
मोह अहं गुन की इन्द्रियां, करे फैल पसु परवान।
फिरे अवस्था तीन में, ए जीव सृष्ट पेहेचान।।

कि.७६/५,७

और सृष्ट जो ईश्वरी, कही जाग्रत सृष्ट आतम।
सुबुध अंग करनी सुध, चले फुरमान हुकम।।
एही सृष्ट ईश्वरी जाग्रत, आई अछर नूर से जे।
मेहेर ले मेहेबूब की, रहे तुरी अवस्था ए।।
ब्रह्मसृष्टी आई अर्स से, जीत इंद्री सुध अंग।
छोड़ मांहें बाहेर दृष्ट अंतर, परआतम धनी संग।।
एक सुख नेहेचल धाम को, और सुख अखंड अछर।
तीसरो बैकुंठ सुपनों, ए त्रिधा सृष्ट यों कर।।

कि.७६/१०,११,१२,१३

मोमिन बल धनी का, दुनी तरफ से नाहें।
तो कहे धनी बराबर, जो मूल सरूप धाम मांहें।।

कि.६०/१६

जो नकल हमारे की नकल, तिनका होए ए हाल।
तो पीछे पाऊं हम क्यों देवें, हम सिर नूरजमाल।।

कि.६१/४

पीछे ईमान सब ल्यावसी, ए जो चौदे तबक।
अव्वल आकीन ब्रह्मसृष्ट का, जिनमें ईमान इस्क।।

कि.६६/४

कहावत हैं ब्रह्म सृष्ट में, धनी सों छिपावें बात।

दिल की करें औरन सों , ए कौन सृष्ट की जात।।

ए जो दोए दिल राखत हैं, ए तो दुनियां की रीत।
मांहे मैले बाहेर उजले , ए जीव सृष्ट की प्रीत।।
एकै बात ब्रह्मसृष्ट की, दोए दिल में नाहें ।
सोई करें धनी सों जाहेर, जैसी होए दिल मांहें।।
मिनों मिनें गुझ करें, निस दिन एही चितवन।
बुरा चाहें तिनका, जिन देखाया मूल वतन।।
पीठ चोरावें धनी सों, करें मिनों मिने खोल।
ए देखो अंदर की जाहेर, देखावें अपना मोल।।
करें धनी सों चोरियां, चारों सों तेहेदिल।
यों जनम खोवें फितुए मिने, रात दिन हिल मिल।।

कि. १०५/६-११

याके प्रेम श्रवन मुख बान, याको प्रेम सेवा प्रेम गान।
याको ग्यान भी प्रेम को मूल, याको चलन न होए प्रेम भूल।।
याको प्रेमैं सहेज सुभाव, ए प्रेमैं देखे दाव।
बिना प्रेम न कछुए पाइए, याके सब अंग प्रेम सोहाइए।।

परि. १/३४,३५

एक ईमान दूजा इस्क, ए पर मोमिन बाजू दोए।
पट खोल पोहोंचावे लदुन्नी, इन तीनों में दुनीपे न कोए।।
ए दुनी चले चाल वजूद की, उमत चले रूह चाल।

लिख्या एता फरक कुरान में, दुनी उमत इन मिसाल।।
कह्या दुनियां दिल मजाजी, सो उलंघे ना जुलमत।
दिल अर्स हकीकी मोमिन, ए कहे कुरान तफावत।।
इनमें रूह होए जो अर्स की, सो क्यों रहे दुनीसों मिल।
कौल फैल हाल तीनों जुदे, यामें होए ना चल विचल।।
जो मोमिन देखें राह दुनी की, सो रूह नहीं अर्स तन।
दुनियां घर जुलमत से, मोमिन अर्स वतन।।
दिल हकीकी जो मोमिन, सो लें माएने बातन।
हक इलम इस्क हजूरी, रूहें चलें बका हक दिन।।

छोटा. क्या.१/ १८,१६,२०,२१,२२,३४

देख बिछोहा हादी का, पीछा साबित राखे पिंड।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, सो नहीं वतनी अखंड।।
ए जाहेर देखावें दोस्ती, जाए रूह न अंदर पेहेचान।
ए मोमिन रूहें जान हीं, जाको अर्स दिल कह्यो सुभान।।
रूहें दम बिछोहा न सहें, जो होए बका की असल।
रूह हादी की चलते, अरवा आगूं हीं जाए चल।।
दिल हकीकी रहे ना सकें, जो आया लदुन्नी दरम्यान।
दिल मजाजी क्या करे, हुआ फरक जिमी आसमान।।
जो रूह होसी मोमिन, चल्या चाहिए सावचेत।
कह्या काफर स्याह मुंह आखिर,मुख मोमिन नूर सुपेत।।
मोमिन उतरे नूर बिलंद से, ए दुनी पैदा जुलमत।
सांच झूठ क्यों मिल सके, क्यों रास आवे सोहोबत।।
सांचे सांचा मिल चले, मिले झूठा झूठों माहें।
जो जैसा तैसी सोहोबत, इनमें धोखा नाहें।।

छोटा. क्या. १/ ४५,४६,४७,४८,६५,६६,१००

जेता कोई रूह मोमिन, जाए पोहोंच्या हक इलम।
सो बात समझे हक अर्स की, जिन दिल पर लिख्या बिना कलम।।
और जाहेर दिल जो मजाजी, सो भी कहे गोस्त टुकड़े।

सो क्यों सुनसी केहेसी क्या, जो कहे अंधे बेहेरे मुरदे।।
दिल मोमिन अर्स कह्या, उतरे भी अर्स से।
हक बैठक इनों दिल पर, ए सिफत न आवे जुबां में।।
कह्या दुनी निकाह अबलीस से, दिल मजाजी तिन पैदास।
जेती औलाद आदम की, पूजे हवा चले लिबास।।

छोटा. क्या. २/३३,३४,३५,३६

या अपना या बिराना, सब परहेज किया दिल माना।
तिस वास्ते ऐसी जानी, हाथ साहेब के बिकानी।।

बड़ा. क्या. ८/ २५

ए पैदास अमानत हक, इत रोजा रबानी बेसक।
याही बीच निमाज असल, रखे आपा कर गुसल।।
इनके साथ बीच हक, कोई बांधे कौल खलक।
निगाह रखे खड़ा रहे आप, सुरत आयत करे मिलाप।।
कोई निगाह रखे निमाज करे, हमेसां कबहूं ना फिरे।
रखे अदब बंदगी सरत, फुरमाया अदा सोई करत।।

बड़ा. क्या. ८/३१,३२,३३

उमत लाहूती कही अंगूर, दूजी जबरूती कही खजूर।
मलकूती को खेती कही, इनको बड़ाई उनथें भई।।

बडा. क्या. ८/७८

आखिर मोमिन आकिल, कहा जिनका दिल अर्स।
तो हक दिल का जो इस्क, सो मोमिन पीवें रस।।

श्रृं.२/१४

सोई कहिए मोमिन, जिन दिल हक अर्स।
सो ना मोमिन जिन ना पिया, हक सुराही का रस।।
हकें दिल को अर्स तो कह्या, करने मोमिन पेहेचान।
कहे मोमिन उतरे अर्स से, तन अर्स एही निसान।।
रूहें उतरी अपने तनसे, और कह्या उतरे अर्स से।
तन दिल अर्स एक किए, हकें कदम धरे दिलमें।।

श्रृं.६/२०,२१,२२

रूहें इन कदम के वास्ते, जीवते ही मरत।
सो क्यों छोड़ें प्यारे पांउं को, जाकी असल हक निसबत।।
रूहें होवें जिन किन खिलके, हक प्रगटे सुनत।
आए पकड़ें कदम पल में, जाकी असल हक निसबत।।

श्रृं.७/५६,६१

अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत।।
हम अरवाहें जो अर्स की, तिन सब अंगों इस्क।
सो क्यों जावे हम से, जो आड़ा होए न हुकम हक।।
अर्स रूहें पेहेचान जाहेर, इनों कौल फैल हाल पार।
सोई जानें पार वतनी, जाको बातून रूहसों विचार।।
अर्स अल्ला दिल मोमिन, और दुनी दिल सैतान।
दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान।।

श्रृं.२३/१,६,४०,४८

जो मोमिन होते इन दुनी के,तो करते दुनी की बात।
चलते चाल इन दुनी की, जो होते इन की जात।।
जो यारी होती मोमिन दुनी सों, तो दुनी को न करते मुरदार।
रूहें इनसे जुदी तो हुई, जो हम नाहीं इन के यार।।
दुनी चलन इन जिमी का, चलना हमारा आसमान।
मोमिन दुनी बड़ी तफावत, ए जानें मोमिन विध सुभान।।
हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल।।
चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।
आदमी छोड़ वजूद को, ले न सके रूह की चाल।
दुनियां बंदी हवाए की, मोमिन बंदे नूरजमाल।।

श्रृं.२३/५८,५९,६०,६१,६२,६३

दुनी रूहें एही तफावत, चाल एक दूजे की लई न जाए।
रूह मोमिन पर ईमान के, दुनी पर बिन क्यों उड़ाए।।
मोमिन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क।
इस्क आए पीछे बंदगी, ए जानें मासूक या आसिक।।
आसिक की एही बंदगी, जाहेर न जाने कोए।
और आसिक भी न बूझहीं, एक होत दोऊ से सोए।।
कहे पर इस्क ईमान के, सो मोमिन छोड़ें न पल।
सो दुनी को है नहीं, उत पांउं न सके चल।।
हकें फुरमाया चौदे तबक, है चरकीन का चरकीन।
सो छोड़े एक मोमिन, जिनमें इस्क आकीन।।
सो दुनी को है नहीं, जासों उड़ पोहोंचे पार।
ईमान इस्क जो होवहीं, तो क्यों रहें बीच मुरदार।।
दुनी दिल मजाजी कह्या, मोमिन हकीकी दिल।
बिना तरफ दुनी क्यों पावहीं, जो अर्सें रहे हिल मिल।।
श्रृं .२३/६५,६७,६८,७३,७४,७५,७७
ए बारीक बातें रूह मोमिनों, सो समझें रूह मोमिन।
सो आदमी कहे हैवान, जो इस्क इमान बिन।।
मोमिन तन असल से, अर्स मता कछू न छिपत।
तो बका सूरज फुरमान में, कह्या फजर होसी इत।।
ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमिनों की सरभर।
हक देखे जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर।।
हक देखे जो खड़ा रहे, तो दूजा कह्या जाए।
दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नींद उड़े उड़ जाए।।
ए इलमें सुनो अर्स बारीकियां, जो सहे अर्स हक रोसन।
ताए भी दूजा क्यों कहिए, कहे कुल्ल मोमिन वाहिद तन।।
दुनी दिल पर अबलीस, और पैदास कही जुलमात।
काम हाल इनों अंधेर में, हवा को खुदा कर पूजत।।
मोमिन उतरे अर्स अजीम से, दुनी तिन सों करे जिद।

ए अर्स से आए हक पूजत, दुनी पूजना हवा लग हद।।
बैठे बातें करे बका अर्स की, सोई भिस्त भई बैठक।
दुनी बातें करे दुनी की, आखिर तित दोजक।।

श्रृं.२६/८६,९०,११४,११५,११६,१२६

रूह का एही लछन, बाहेर अन्दर नहीं दोए।
तन दिल दोऊ एकै, रूह कहियत है सोए।।

श्रृ.२३/८

सोई मोमिन जाको सक नहीं , और दिल अर्स हक हुकम।
पट खोले नूर पार के, आए दिल में हक कदमें।।

श्रृं.२६/४५

ए और कोई बूझे नहीं, बिना अर्स के तन।
जो नूर बिलंद से उतरी, दरगाही रूहें मोमिन।।

मा.सा.२/११

१९८. बेहद का मार्ग

वाटडी विसमी रे साथीडा बेहदतणी, ऊवट कोणे न अगमाय।
खांडानी धारे रे एणी वाटें चालवूं , भाला अणी केहेने न भराय।।
इहां हस्ती थई ने एणी वाटे हीडवूं , पेसवूं सुईना नाका मांहें।
आल न देवी रे भाई आकार ने, झांप तो भैरव खाए।।
वेहद वाटे रे कपट चाले नही, राखे नहीं रज मात्र।
जेने आवो रे ते तो पेहेलूं आगमी, पछे ने करूं प्रेम ना पात्र।।

कि. ६७/१,३,८

जिहां अटकल तिहां भ्रांतडी, अने भ्रांत तो थई आडी पाल।
पार जवाय पूरण दृष्टे, इहां रज न समाय पंपाल।।
वाट बिना इहां चालवूं, अने पग बिना करवूं पंथ।
अंग विना आउध लेवा, जुध ते करवूं निसंक।।
एम ने अखण्ड सुख उदे थयूं,ज्यारे समझया सुपन मरम।
जागी साख्यात बेठा थैए, त्यारे आगल पूरण पारब्रह्म।।
वचने कामस धोई काढिए, राखिए नहीं रज मात्र।

जोगवाई सर्वे जीतिए, त्यारे थैए प्रेमना पात्र।।
ए पगले एणे पंथडे, प्रेम विना न पोहोंचाय।
वैकुण्ठ सुन्य ने मारगे, बीजी अनेक कथनी कथाय।।
ए तो हद नहीं आ तो वेहद, इहां अनेक अटकलो तणाय।
अनेक सूरा संग्राम करे, अनेक उथडता जाय।।
कि.६८/२,५,७,८,६,१०

पारब्रह्म पाम्यां तणां, अनेक उदम करे साध।
चढ़ी वैकुण्ठ आघा वहे, तिहां तो आडी छे अगम अगाध।।
केटलाक जोर करे जुध करवा, पण पग पंथ सब्द न कोय।
सूं करे साध सनंध विना, मोटी मत वाला जोय।।
आ पांचे तणूं मूल कोय न प्रीछे, अनेक करे छे उपाय।
साध मोटा पोहोंचे सुन्य लगे, पण सत सुख केणे न लेवाय।।
कि. ६८/१३,१६,१७

१६६. अनुभव व्यक्त नहीं होता

जो सुख परआतम को, सो आतम न पोहोंचत।
जो अनुभव होत है आतमा, सो नाहीं जीव को इत।।
जो कछू सुख जीव को, सो बुध ना अंतस्करन।
सुख अंतस्करन इंद्रियन को, उतर पोहोंचावे मन।।
जो सुख मन में आवत, सो आवे ना जुबां मों।
और जो सुख जुबां से निकसे, सो क्यों पोहोंचे परआतम को।।
तो कहया तीत सब्द से, जो कछू इत का पोहोंचे नाहें।
असत ना मिले सत को, ऐसा लिख्या सास्त्रों मांहें।।
जो कछू पिंड ब्रह्मांड की, सब फना कही सास्त्रन।
अखंड के पार जो अखंड, तहां क्यों पोहोंचे झूठ सुपन।।
कि. ७३ ७,८,६,१०,११

आतम मेरी हद में, जीव कहे बुधें उतर।
बुध मन पें कहावे जुबान सों, सो जुबा कहे क्यों कर।।
असलें आतम न पोहोंचहीं, क्यों पोहोंचे जीव ग्यान।

जो मन देत जुबान को, सो जुबां करत बयान।।
कि. ७३/ १५,१६

२००. शास्त्र वेद

जिन जानो सास्त्रों में नहीं, है सास्त्रों में सब कुछ।
पर जीव सृष्ट क्यों पावहीं, जिनकी अकल है तुच्छ।।
और भी साख नीके देऊं, कर देखो विचार।
आखिर अथर्वन वेद पर, सब सृष्टों का मुद्दार।।
तीनों वेदों ने यों कहया, वेद अथर्वन सबको सार।
ए वेद कुली में आखिर, त्रिगुन को उतारे पार।।
कि. ७३/२६,३१,३२

२०१. धनी की मेहर

कृपा करनी माफक, कृपा माफक करनी।
ए दोऊ माफक अंकूर के, कई कृपा जात ना गिनी।।
धाम अंकूर एक विध को, कई विध कृपा केलि।
ए माफक कृपा करनी भई, करने खुसाली खेलि।।
भिस्त होसी आठ विध की, और आठ विध का अंकूर।
हर अंकूर कृपा कई बिध, ले उठसी नेहेचल नूर।।
करनी छिपी ना रहे, न कछू छिपे अंकूर।
मेहेर भी माफक अंकूर के, उदे होत सत सूर।।
कि.७६/१५,१६,१८,२०

ए छल जिमी करम करावहीं, आपको बुरा न चाहे कोए।
तो भी मेहेर न छोड़े मेहेबूब, पर करनी छल बस होए।।

कदी सौ बरस रहो साथ में, धनी अनुभव सौ बेर।
मूल अंकूर दया बिना, ले करमें डाले अंधेर।।

कि.७६/ २४,२६

इन बिध कई रंग साथ में यों बीते कई बीतक।
सब पर मेहेर मेहेबूब की, पर पावे करनी माफक।।

कि. ७८/१३

सखी री मेहर बड़ी मेहेबूब की, अखंड अलेखे।
अंतर आंखां खोलसी, ए सुख सोई देखे।।
मेरे दिल की देखियो, दरद न कछू इस्क।
ना सेवा ना बंदगी, एह मेरी बीतक।।
क्यों मेहेर मुझ पर भई, ए थी दिल में सक।
मैं जानी मौज मेहेबूब की, वह देत आप माफक।।
सब मिल साख ऐसी दई, जो मेरी आतम को घर धाम।
सनमंध मेरा सब साथ सों, मेरो धनी सुंदरवर स्याम।।

कि.८२/१,३,५,१०

तू नाम निरगुन कहावहीं, सब सरगुन के सिरे।
सब नंग मोती तेरे तले, कोई नाहीं तुझ परे।।

कि.११०/ २

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग।।
पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत।।

सा. १५/२,३

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर।।
मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें।
आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें।।
मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व।
पिंड ब्रह्माण्ड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत।।
मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित।
इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित।।
अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक।
मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक।।
जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद।।
ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत।।
जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए।
मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए।।
सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब।

ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूँ किताब।।
ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर।
ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर।।
सा.१५/६,७,१२,१३,१४,१६,३८,४३,४४

२०२. मोमिनों के प्रतिबिम्ब की पूजा होगी

आगे हुई ना होसी कबहूं, हमें धनिएं ऐसी सोभा दई।
सब पूजें प्रतिबिम्ब हमारे, सो भी अखण्ड में ऐसी भई।।
धनिएं भिस्त कराई हमपे, किल्ली हाथ हमारे।
लोक चौदे हम किए नेहेचल, सेवें नकल हमारी सारे।।
कि. ८१/३,४

हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमिनों नाम।
सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम।।
श्रृ.२१/८८

खुदाए कर पूजेगें, बका मिनें बेसक।
पाक होसी हक इलम सों, करें बदंगी होए आसिक।।
श्रृ.२३/१४०

सो ए करे तुमारी बंदगी, एही इनों जिकर।
इनों सिर ह क एक तुम हीं, और कोई ना वाहेदत बिगर।।
श्रृ.२६/ ६१

तुम खेल में आए वास्ते, करी कायम जिमी आसमान।
तिन सब के खुदा तुमको किए, बीच सर भर लाहूत सुभान।।

श्रृ. २६/१२६

सो भी पूजें तुमारे अक्स को, तुम आए असल वतन।
तिन सबकी लज्जत तुमें आवसी, सब तले तुमारे इजन।।

श्रृ. २६/१२७

पेहेला दीदार होए मोमिनों, बीच आखिरी पैगंमर।
ए मुसाफ कहया आखिरी, देवे दीदार आखिर।।

मा.४/५५

२०३. परआतम के अनुसार ही आतम करती है

चढ़ते चढ़ते रंग सनेह, वढ़यो प्रेम रस पूर।
बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर।।

कि. ८२/१३

ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन।
वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन।।
उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर।
अदंर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर।।
सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम।
ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम।।

सा.३/२,३,४

जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम।
सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम।।
सा. ७/४१

परआतम के अन्तस्करन, पेहेले उपजत है जे।
पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए।।
सा११/४५

इन सुपन देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस।
ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस।।
अर्स तनका दिल जो, सो दिल देखत है हम को।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों।।
श्रृं.२१/६२,६३

खेल खावंद कैसी सरभर, जो रूहें अंग हादी नूर।
हादी नूर हक जात का, मोमिन देखे अर्स सहूर।।
श्रृं.२२/८०

सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाकें अक्स का दिल अर्स।
हक सुपनें में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस परस।।
श्रृं. २२/८१

२०४. हमारे धनी श्याम श्यामा जी हैं

मद चढ़यो महामत भई, देखो ए मस्ताई।
धाम स्याम स्यामा जी साथ, नख सिख रहे भराई।।
कि. ८३/११

धंन धंन सखी मेरी सेज रस भरी, धंन धंन विलास मैं कई विध करी।
धंन धंन सखी मेरे सोई रस रंग,धंन धंन सखी मै किए स्याम संग।।

धंन धंन सखी मोको कहे दिल के सुकन,धंन धंन पायो मैं तासों आनन्द घन।
धंन धंन मनोरथ किए पूरन, धंन धंन स्यामें सुख दिए वतन।।

कि. ८४/५,६

मैं आग देंऊ तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम।
मैं पिंड न देखूं ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम।।

कि. ८८/ १०

चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम।
मूल वतन धनिएँ बताया, जित ब्रह्म सृष्ट स्यामा जी स्याम।।

कि.८६/१

मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और।।

कि. ८६/२

ए दुनी न जाने सुपन की, न जाने मलकूती फरिस्तन।
ए अछर को भी सुध नहीं, जाने स्याम स्यामा मोमिन।।

कि. ६०/२३

सोई चाल गत अपनी, जो करते माहें धाम।
हँसना खेलना बोलना, संग स्यामा जी स्याम।।

कि. ६३/११

जो सैयां हम धाम की, सो जानें सब को तौल।

स्याम स्यामाजी साथ को, सब सैयों पे मोल।।

कि. ६५/६

मूल वतन धनिएं बताइया, जित साथ स्यामा जी स्याम।

पीठ दई इन घर को, खोया अखंड आराम।।

कि.६६/२

चरचा सुनें वतन की, जित साथ स्यामा जी स्यामा।

सो फल च रचा को छोड़ के, जाए लेवत हैं हराम।।

कि. १०५/१३

सुन्दर सरूप स्याम स्यामा जी को, फेर फेर जाऊ बलिहारी।

इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी।।

कि. ११६/२

स्यामाजी स्याम के संग, जुवती अति जोर जंग।

करती पूरन रंग, परआतम परे।।

कि.१२३/१

इन विध साथ जी जागिए, बताए देऊं रे जीवन।

स्याम स्यामा जी साथ जी, जित बैठे चौक वतन।।

कि. ७/१

सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि।।

कि. ७/३

खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम।।

कि. ८/६

याके प्रेम सेज्या सिनगार वाको वार न पाइए पार।
प्रेम अरस परस श्यामा श्याम, सैंयां वतन धनी धाम।।

परि. १/३९

दई आज्ञा सबों बड भागी, आइयां मन्दिर चरनों लागी।
राज श्यामा जी सेज्या पधारे, कोई बस्तर भूखन बघारे।।

परि. ३/१५५

२०५. जागनी

ए जो जाग्रत वचन, सुपन रहे ना आगूं जाग।
पर लिया ना सिर अपने, तो रही सुपन देह लाग।।
अब तो आतम ने ए दृढ़ किया, देह उड़े ना बिना इस्क।
जोस इस्क दोऊ मिलें, तब उड़े देह बेसक।।
दुख ना दीजे देह को, सुखे छोड़िए सरीर।

ए सिध इन विध होवहीं, जो जोस इस्क करे भीर।।
हंसे खेले बिध तीन में, छोड़े देह सुपन।
महामत कहें सुख चैन में, धनी साथ मिलन।।

कि. ८५/४,१४,१५,१८

साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर।।
ए भी फेर विचारिया, सांच आगे न रहे अनित।
एह बल हुकम के, देह सुपन ना रहे इत।।
जो कोई होवे ब्रह्मसृष्ट का, सो लीजो वचन ए मान।
अपने पोहोरे जागियो, समया पोहोंच्या आन।।
सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए।
बैठा ठाढा होइयो, ठाढ़ा पाँउ भरे आगे सोए।।

कि.८६/१,११,१७,१८

अब हुकम धनीय के, सब्द बिध दई पोहोंचाए।
चेत सको सो चेतियो, लीजो आतम जगाए।।
अब भली बुरी इन दुनीय की,ए जिन लेओ चित ल्याए।
सुरत पकी करो धाम की , परआतम धनी मिलाए।।
दुख सुख डारो आग में, ए जो झूठी माया के।

पिंड ना देखो ब्रह्मांड, राखो धाम धनी सुरत जे।।

कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।

सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन।।

कि.८६/१३,१४,१५,१६

क्यों कहूं सुख हाँसीय को, जो ख्वाब में दैयां भुलाए।

ऊपर फेर फेर याद देत हैं, पर फरामोसी क्यों ए न जाए।।

ए हाँसी फरामोसीय की, होसी बडो विलास।

जागे पीछे आनंद को, अंग न मावत हाँस।।

अनेक सुख देने को, साहेबें दई फरामोसी।

जगावते भी जागे नहीं, एही हाँसी बड़ी होसी।।

परि. ११/५५,६८,६६,

महामत कहे हुकमें इलम, जो हक सिखावें कर हेत।

सो केहेवे आगूं अर्स तन के, अपने दिल अर्स में लेत।।

परि.१४/६४

क्यों कहूं सुख रूहन के, हक इन विध हांसी करत।
आप देत भुलाए के, आपै जगावत।।
क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें कौल से किए हुसियार।
दिल नींद दे ऊपर जगावत, करने हाँसी अपार।।
हाँसी इसही बात की, फेर फेर होसी ए।
उठ उठ गिर गिर पड़सी, बखत जागने के।।

परि.३३/७८,१४

देखो महामत मोमिनों जागते, जो हक इलमें दिए जगाए।
करे सो बातें हक अर्स की, तूं पी इस्क तिनों पिलाए।।

परि. ४४/२७

दोऊ माहों माहें जब बोलहीं, तब मीठे कैसे लगत।
कोई रूह जाने अर्स की, जित हक हुकम जाग्रत।।

श्रृं.२०/१२६

तेरा दिल लग्या ज्यों सूरत को, त्यों जो सूरतें रूह लगे।
तो अबहीं ले रूह लज्जते, एक पलक में जगे।।

श्रृं.२२/८२

२०६. श्री प्राणनाथ जी और बिहारी जी

तोड़त सरूप सिंघासन, अपनी दौड़ाए अकल।
इन बातों मारे जात हैं, देखो उनकी असल।।
बिना दरद दौड़ावे दानाई, सो पड़े खाली मकान।
इस्क नाहीं सरूप बिना, तो ए क्यों कहिए ईमान।।

कि. ६४/१३,१४

ए तो पातसाही दीन की, सो गरीबी से होए।
और स्वांत सबूरी बिना, कबहूं न पावे कोए।।
ए लसकर सारा दिल का, सो दिलवरी सब चाहे।
दिल अपना दे उनका लीजिए , इन विध चरनों पोहोंचाए।।
जो कोई उलटी करे, साथी साहेब की तरफ।
तो क्यों कहिए तिन को, सिरदार जो असरफ ।।

कि. ६५/१२,१३,१४

गिरो एक बुजरक कही, रूह अल्ला आये तिन पर।
इत जादे पैगंमर दो भए, एक नसली और नजर।।
तिनसे राह जुदी हुई, गिरो दोए हुई झगर।

एक उरझे दीन जहूद के, उतरी किताबें दूजे पर।।
सो भाई न माने किताब को ,रोसनाई ढांपे फेर फेर।
तब आया दूजे पर महंमद, सब किताबें ले कर।।
एही फिरका नाजी कह्या, दे साहेदी फुरमान।
एक नाजी नारी बहत्तर, एही नाजी की पेहेचान।।
एही गिरो खासी कही , जिनमें महंमद पैगंमर।
हकीकत मारफत खोल के , जाहेर करी आखिर।।

कि. १२१/ ८,६,१०,११,१२

सो हकीकत सब कुरान में, कई ठौरों लिखी साख।
जो ग्वाही लिखी आप साहेबें, कहूं केती हजारों लाख।।
हम दोऊ बंदे रूहअल्लाह के, दोऊ गिरो जुदी भई।
तीसरी सृष्ट जो जाहेरी, सब मजकूर इनकी कही।।

कि. १२२/५,६

थें हम दोऊ बंदे स्यामाजीय के, एक नसली और नजरी।
झगड़ दोऊ जुदे हुए, देने खबर पैगंमरी।।
तब केतिक गिरो उधर भई, और केतिक मेरे साथ।
दई जाहेर मसनंद नसलिएं, दूजी बातून मेरे हाथ।।
उतरी किताबें हम पे, गिरो नसली न माने सोए।
तब आया पैगंमर हममें, अब कह्या महंमद का होए।।

कि.१२२ /२,३,४

एक मक्के का काला पत्थर, कुरान और खुदाए का घर।
और ठौर कहया इभराम, और यार महंमद आराम।।
पीछले जेते गए दिन, बाकी कोई न रेहेवे किन।
एक बेर फना सब किए, फेर कायम उठाए के लिए।।

ब. क्या. ८/७४,७५

काफर दिल में कीना आने, अंजील तौरेत पर मारे ताने।
जो खुदाए का पैगंमर, तिनसे फिरे सो हुए काफर।।
हक ताला ने किया फुरमान, डांटत हैं कीने कुफरान।

अंजील तौरेत से जो फिरे, सोई काफर हुए खरे।।

ब. क्या. १०/४,३

तिनमें बाजे कहे बेसुध, तिनको कबूं न आवे बुध।
इनमें खुदाएं किए दोए, कयामत काम दूजे से होए।।

ब. क्या. २०/४

२०७.गादीपतियों की भूल (वाणी के दुश्मन)

कहा कुराने बंद करसी, इन के जो उमराह।
आधीन होसी तिनके, जो होवेगा पातसाह।।

कि. ९५/१५

२०८. श्री प्राणनाथ जी के आगमन की भविष्यवाणी

यों लिख्या फुरमान में, आखिर बीच हिंदुअन।
मुलक होसी नबियन का, धनी दई बड़ाई इन।।
फुरमान जाहेर पुकारहीं, बीच हिंदुओं भेख फकर।
पातसाही करसी महंमद, आखिरी पैगंमर।।
विजिया अभिनंद बुधजी, और नेहेकलंक इत आए।
मुक्त देसी सबन को, मेट सबे असुराए।।
दिन भी लिखे जाहेर, बीच किताब हिंदुआन।
जो साख लिखी इनमें, सोई साख फुरमान।।

कि.९६/३२,३३,३७,३८

कह्या साहेब इत आवसी, सो झूठ न होय फुरमान।
सब का हिसाब लेय के , कायम करसी जहान ।।
पूछो अपनी आतम को, कोई दूजा है इप्तदाए।
रूह - अल्ला इलम ल्याए के, केहेलावें इत खुदाए।।

कि. ९८/३,४

बीते नब्बे साल हजार पर, मुसाफ मगज न पाया किन।
तो गए एते दिन रात में, हुआ जाहेर न बका दिन।।

श्रृं.२३ /१२७

२०९. विनम्रता

साथ जी सुनो सिरदारो, मुझ जैसी ना कोई दुष्ट।
धाम छोड़ झूठी जिमी लगी, चोर चंडाल चरमिष्ट।।
अनेक अवगुन किए मैं साथसों, सो ए प्रकासूं सब।
छोड़ अहंकार रहूं चरनों तले, तोबा खैंचत हों अब।।
एते दिन धनी धाम छोड़ के, दई साथ को सिखापन।
अब साथें मोको समझाई, तिन थें हुई चेतन।।
कृपा करी साथ सिरदारों, मुझ पर हुए मेहेरबान।
निरगुन होए न्यारी रहूं, छोड़ बड़ाई गुमान।।
दिन कयामत के आए पोहोंचे, अब कैसी ठकुराई।
धिक धिक पड़ो तिन बुध को, जो अब चाहे बड़ाई।।
अब हुकम चढ़ाऊं सिर साथ को, बकसो मेरी भूल।
भी दीजो सिखापन मुझको, ज्यों होऊं सनकूल।।
इन जिमी में साथ में, जिनों करी सिरदारी।
पुकार पुकार पछताए चले, जीत के बाजी हारी।।
सो देख के ना हुई चेतन, मूढ़मती अभागी।
अब लई सिखापन साथ की, महामत कहे पांऊं लागी।।

कि.१०१/१,५,७-११

२१०. मानव जन्म उत्तम

वृथा का निगमों रे, पामी पदारथ चार।
उत्तम मानखो खंड भरथनों, सृष्ट कुली सिरदार।।

कि. १२५/१

जनम मानखो खंड भरथनो, अने सृष्ट कुली सिरदार।
ए वृथा कां निगमो, तमे पामी उत्तम आकार।।
चार पदारथ पामिया रे, ए थी लीजिए धन अखंड।
अवसर आ केम भूलिए, जे थी धणी थाय ब्रह्माण्ड।।

कि. १२८/४८,४९

२११. धनी के दिखाने से ही परमधाम दिखता है

नेक देखाए रंग अर्स के, कई खूबी रंग अलेखे।
रूह सहूर करे हक इलमें, हक देखाएं देखे।।
सा.१/१४

इलम होवे हक का, और हुकम देवे सहूर।
होए जाग्रत रूह वाहेदत, कहू तब पाइए नूर जहूर।।
श्रृं.२१/२४

२१२. परमधाम का तेज

नाम निसान इत झूठ है, तो भी तिन पर होत साबूत।
जोत झूठी देख नासूत की, अधिक है मलकूत।।
सो मलकूत पैदा फना पल में, कई करत खावंद जबरूत।
सो रोसनी निमूना देख के, पीछे देखो अर्स लाहूत।।
इन बिध सहूर जो कीजिए, कछू तब आवे रूह लज्जत।
और भांत निमूना ना बनें, ए तो अर्स अजीम खिलवत।।
आगूं नूर - मकान की कंकरी, देखत ना कोट सूर।
तिन जिमी नंग रोसनी, सो कैसो होसी नूर।।
सा.१/२३,२४,२५,२६

ए नूर मकान कह्या रसूलें,आगूं जाए ना सके क्योंए कर।
तिन लाहूत में क्यों पोहोंचहीं, जित जले जबराईल पर।।
ए देखो तुम रोसनी, हक अर्स इन हाल।
जित पर जले जबराईल, कोई फरिस्ता न इन मिसाल।।
मेयराज हुआ महंमद पर, नेक तिन किया रोसन।
अब मुतलक जाहेर तो हुआ, जो अर्स में मोमिनों तन।।
सा. १/२७,२८,२९

२१३. परमधाम की वहदत

जिमी जात भी रूह की, रूह जात आसमान।
जल तेज वाए सब रूह को, रूह जात अर्स सुभान।।
पसु पंखी या दरखत, रूह जिनस हैं सब।
हक अर्स वाहेदत में, दूजा मिले ना कछुए कब।।
दूजा तो कछू है नहीं, दूजी है हुकम कुदरत।
सो पैदा फना देखन की, फना मिले न माहें वाहेदत।।
जो कछुए चीज अर्स में, सो सब वाहेदत माहें।
जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नाहें।।
ए खिलवत हक नूर की, नूर आला नूर मकान।
बिछौना सब नूर का, सब नूरै का सामान।।

सा. १/४०,४१,४२,४३,४४

इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए।
एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग न उमंग समाए।।
वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से।
दिल दूजी के यों आवत, ए सब सुख लिया मैं।।
एकै बात के वास्ते, सुख दूजी को उपज्या यों।
यों सबन की एक दिली, जुदा बरनन होवे क्यों।।
एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए।
जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए।।
अरस - परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए।
अति सुख पावें बड़ीरूह , ए तिनके अंग सब कोए।।

सा.४/७,८,६,१०,११

सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार।
सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार।।

परि. २६/५५

एक रूह बात करे हकसों, सुख लेवे रस रसनाएं।
सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के माहें।।

श्रृं.२१/१०५

जो सुख पावत बड़ीरूह, सब तिनके सुख सनकूल।
ज्यों जल मूल में सींचिए,पोहोंचे पात फल फूल।।
त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बड़ीरूह को।
बड़ीरूह का सुख रूहन, आवत है सब मों।।
जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत।
जो इलम विचारे हक का, ताको इस्क बढ़त।।
हादी नूर है हक का, और रूहें हादी अंग नूर।
इन विध अर्स में वाहेदत, ए सब हक का जहूर।।

सा.४/ १२,१३,२५,३२

दरखत करत हैं सिजदा, छोटा बड़ा घास पात।
पहाड़ जिमी जल सिजदें, इस्क न इनों समात।।

परि.२८/३१

महामत साहेबी हक की, मैं खसम अगंका नूर।
अंग रूहें मेरा नूर हैं, सब मिल एक जहूर।।

परि.२६/१००

घास करत हैं सिजदा, करें सिजदा दरखत।
तो क्यों न करें चेतन, यों फुरमान फुरमावत।।

परि. ३२ चौ० ३६

अर्स अरवाहें जो वाहेदत में, सो सब तले हक नजर।
इस्क सुराही हाथ हक के, रूहों पिलावे भर भर।।

परि. ३/६

और काम हक को कोई नहीं, देत रूहों सुख बनाए।
वाहेदत बिना हक दिल में, और न कछुए आए।।
सुख देना लेना रूहों सों, और रूहों सो बेहवार।
ए अर्स बातें इन जिमिएं, कोई बिना रूहन लेवनहार।।

श्रृं. १६/ ५१,५२

दूजे तो हम हैं नहीं, ए बोले बेवरा वाहेदत का।
ज्यों खेलावत त्यों खेलत, ना तो क्या जाने बात बका।।

श्रृं.२३/३६

तरफ भी किन पाई नहीं, पावे तो जो दूसरा होए।
तुम तो बीच वाहेदत के, और जरा न कित काहूं कोए।।
तुम जानो हम जाहेर, होएं जुदे हक बिगर।
हम तुम अर्स में एक तन, तुम जुदे होए सको क्यों कर।।
दुनी जुदे तुमें तो जानहीं, जो तुम जुदे हो मुझ सें।
हम तुम होसी भेले जाहेर, आपन वाहेदत हैं अर्स में।।

श्रृं.२६/ ७०,७१,७२

२१४. परमधाम का नूर

नूर चंद्रवा क्यों कहूं, नूरै की झालर।
तले तरफें सब नूर की, देखो नूरै की नजर।।
रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा नूर भर।
थंभ तकिए सब नूर के, कछू और ना नूर बिगर।।
तखत सोभित बीच नूर का, नूर में जुगल किसोर।
बैठे हक बड़ी रूह नूर में, नूर सोभा अति जोर।।
नूर सरूप रूप नूर के, नूर वस्तर भूखन।
सोभा सुन्दरता नूर की, सब नूरै नूर रोसन।।

सागर प्र० १ चौ० ४५,४६,४७,४८,४६,

रूहें बड़ी रूह नूर में, नूर हक के सदा खुसाल।
हक नूर निसदिन बरसत, नूर अरस परस नूरजमाल।।
नाम ठाम सबनूर के, कहूं जरा ना नूर बिन।
मोहोल मन्दिर सब नूर के, मांहे बाहेर नूर पूरन।।
अर्स भोम सब नूर की, नूरै के थंभ दिवाल।
द्वार बार कमाड़ नूर के, नूर गोख जाली पड़साल।।
मेहेराब झरोखे नूर के, जरे जरा सब नूर।
अर्स मांहें बाहेर सब नूर में, नूर नजीक नूर दूर।।
नूर नाम रोसन का, दुनी जानत यों कर।
सो तो रोसनी जिद अंधेर की, दुनी क्या जाने लदुन्नी बिगर।।

सा.१/५०,५१,५२,५३,५४

भोम उज्जल कई नकस, कहा कहूं जिमी इन नूर।
जानों कोटक उदे भए, अर्स के सीतल सूर।।
कई थंभ हैं मानिक के, कई पाच कई पुखराज।
नूर रोसन एक दूसरे, मिल जोतें जोत बिराज।।

सा.१/८४,८६

ए निरने करना अर्स का, तिन में भी हक जात।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात।।

श्रृं.२२/१२४

२१५. श्री राज जी के वस्त्र एवं आभूषण

सेत जामा अंग लग रहा, मिहि चूड़ी बनी दोऊ बाहें।
दावन क्यों बरनन करूं, इन अंग की जुबाएं।।

सा.५/५४

इजार रंग जो केसरी, झांई जामें में लेत।
दावन जड़ाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत।।

सा. ५७

एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक।
एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां विसेक।।
इन हारों बीच दुगदुगी, नूर नंग कह्यो न जाए।
जोत अम्बर लों उठ के, अवकास रह्यो भराए।।
ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबन्ध।
इन जुबां सोभा क्यों कहूं, झूलें फुन्दन भली सनन्ध।।
दोए पोहोंची दोए जिनस की, मनी मानिक मोती पुखराज।
हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही बिराज।।
एक पोहोंची एक दुगदुगी, और सात सात दूजी को।
सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों।।
पाच पांने हीरे पोखरे, मुंदरी अंगुरियों सात।
नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात।।
एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर।
सो ए एक मानिक की, जुड़ बैठी अंगूठे भर।।

सा.५/६२,६३,६५,६६,६७,६८,६९

अजब रंग आसमानी का, जुड़ी जामें मिहीं चादर।
ए भूखन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर।।
नेफे मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग।
लाल नीली पीली चूनियां, सोभित कंचन संग।।

सा.५/७१,७४

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस।

नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अर्स।।
हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए।
कई कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहे जे।।
पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर।
जोत हीरा पोहोंचे आकास लों,पीछे पाच रहे क्यों कर।।
मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज।
नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज।।
ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहुं ओर।
बाहें चोली और दावन, सोभा देत सब ठौर।।
पीला पटुका कमरें, रंग रंग छेडे किनार।
बेल पात फूल नकस, होत आकास उछोत कार।।
पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत।
चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतन्त।।

सा.८/४१,४८,५८,५६,५२,८३,८६

ए नरम अंगुरियां अतन्त, नख सोभित तेज अपार।
ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार।।
कडियां दोऊ काडो सोहे, सोभा तेज धरत।
लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत।।
पोहोंची पांचों नंग की, जुबां केहे न सके जिनस।
पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस।।
बाजूबंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर।
कई मिहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर।।

सा. ८/ १००,१०२,१३०,१०४

कलंगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर।

बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर।।
जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कई रंग।
जोत पोहोंचे आकास में, जाए करत मिनो मिने जंग।।
याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर।
करें चित्त चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर।।
चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत।
तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरे लेहेरें जोत चलत।।
कहें हार हम हैड़े पर, अति बिराजे अंग लाग।
सुख देत हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग।।
जोत अति जवेरन की, बांहों पर बांजू बन्ध।
जात चली जोत चीर के, कई विध ऐसी सनंध।।
सा. १०/ ८,३६,४०,४२,४४,४७
कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर।
कई रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर।।
और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत।
नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्दोत।।
काड़े कोमल हाथ पांउं के, फने पीड़ी अंग माफक।
उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक।।
अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए।
पैदास भूखन इन विध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे।।
घड़े जड़े न समारे, ना सांध मिलाई किन।
दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन।।
ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत।।

सा.१०/ ७४,७५,७८,८४,८६,८७

२१६. श्री राजजी का श्रृंगार

सुन्दरता इन मुख की, सब्द न पोहोंचे कोए।
नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूं रंग सोए।।
ए उज्जल रंग अंग अर्स का, माहें गेहेरी लालक ले।
मुख चौक छबि इनकी, किन विध कहूं मैं ए।।
तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर।
चारों तरफों करकरी, सोहे लाल बिंदी अंदर।।
नैनन की मैं क्यों कहूं, नूर रंग भरे तारे।
सेत माहें लालक लिए,सोहे टेढ़े अनियारे।।
नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहें।।
जिन देख्या सो जानहीं, वाके चुभ रहे हैड़े माहें।।

सा. ५/३६,३७,३८,४०,४२

कटि कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस।
गरदन केस पेंच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अर्स।।
नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुन्दर।
ए देखत हीं आसिक अंगों, चुभ रहत हैड़े अन्दर।।

सा.५/ ४७,५१

हार कण्ठ गिरवान जो, अति सुन्दर सुखदाए।
लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोड़ी न जाए।।
छबि सरूप मुख छोड़ के, देख सकों न लांक अधुर।
ए लाल की लालक क्यों कहूं, जो अमृत अर्स मधुर।।
ए मुख अधुर लांक छोड़ के, क्यों कर दन्त लग जाए।
देत नाम निमूना इत का, सों इन सरूपें क्यों सोभाए।।

सो दन्त अधुर लांक छोड़ के, जाए न सकों लग गाल।
सो गाल लाल मुख छोड़ के, आगूं नजर न सके चाल।।
भृकुटी तिलक सोभा छोड़ के, जाए न सकों लग कान।
सो कान कोमल अति सुन्दर, सुख पाइए हिरदे आन।।
सा. /१०६,१११,११२,११३,११५
नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल।
स्याम उज्जल लालक लिए, ए क्यों कहूं सुपन अकल।।
निलवट सुन्दर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद।
ए छबि कही न जाए एक अंग की, ए तो सोभा सागर खावंद।।
मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान।
हाथ पांउ अंग हैड़ा, सब मुसकत केहेत मुख बान।।
सा.११६,१२३,१२६
उज्जल लाल तली पांउं की, रंग रस भरे कदम।
छब सलूकी अंग अर्स की, रूह से छूटे क्यों दम।।
देख सलूकी अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी।
उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी।।
लाल लांकें लाल एड़ियां , पांउं तली अति उज्जल ।
ए पांउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल ।।
कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेंच बनाए।
गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए।।
कण्ठ खभे दोऊ बांहोंड़ी, पेट पांसली बीच हैड़ा।
रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भरया।
हस्त कमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कई रंग।
लाल उज्जल रंग केहेत हों, इन रंग में कई तरंग।।

सा.११,१५,१७,६०,६१,६३

नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ वालत।
ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत।।
क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर।
देत न देखाई कछुए, जो होवे कोटक सूर।।
अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत।
ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत।।
देख हरवटी अति सुन्दर, और लाल गाल गौर।
लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर।।
मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान।
खैंच लेत अरवाह को, ए जो बानी अर्स सुभान।।
कटि कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर।
चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा चुभ्या रूह के अन्दर।।

सा. ६६,६७,६८,६६,७२,७८

नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर।
भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैंच मरोर।।
हँसत सोभित हरवटी, अंग भूखान कई विवेक।
मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक।।
गौर मुख अति उज्जल, और जोत अंतत।
ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत।।
अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए।
अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए।।
बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी।

लेत अंगुरियां छबिसों, बलि जाऊं सबे अंगुरी।।
मरकलड़े मुख बोलत, गौर हरवटी हँसत।
नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत।।

सा.१० /१३,१४,१६,१७,२५,२६

कटि कोमल कही जो पतली, कछु ए सलूकी और।
ए जुबां सोभा तो कहे, जो कहूं देखी होए और ठौर।।
और पेट पांसली हककी, ए कौन भांत कहूं रंग।
रूह देखे सहूर अर्स के, और कौन केहेवे हक अंग।।
छाती निरखों हककी, गौर अति उज्जल।
देख हैड़ा खूब खुसाली, तो मोमिन कह्या अर्स दिल।।
जिन देख्या हक हैड़ा, क्यों नजर फेरे तरफ और।
वाको उसी सूरत बिना, आग लगे सब ठौर।।
हक हैड़े में इस्क, सब अंगों सनेह।
रूह देखसी हक मेहेर से, निसबती होसी जेह।।

श्रृं.११/११,१२,१६,२०,३८

२१७. श्री श्यामा जी के वस्त्र एवं आभूषण

या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए।
सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे।।
अंग संग भूखन सदा, दिलके तअल्लुक असल।
ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अर्स में नाहीं नकल।।
ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने।
दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने।।

सा.६/२५,२६,२७

लाल साड़ी कटाव कई, कई छापे बेली नकस।
क्यों कहूं छेड़े किनार की, सोभित अति सरस।।

चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक।
जड़तर कंठ उर बांहें, कहां लग कहूं विवेक।।
चरनी नीली अतलस, माहें अनेक बिध के रंग।
चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग।।

सा.६/३२,३६,३९

सिर पर सोहे राखड़ी, जोत साड़ी में करे अपार।
फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार।।
तिन नंगों के फूल बने,आगूं सिर पटली कांगरी ।
बेनी गूंथी एक भांत सों ,पीठ गौर ऊपर लेहेकत ।
देत देखाई साड़ी मिने ,फिरती घूंघरड़ी घमकत ।।
पाच हीरे मोती मानिक, बेना चौक टीका सोभित।
सेंथें लाल तले मोती सरे, नूर रोसन तेज अंतत।।
जड़ित पानड़ी श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत।
ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत।।
कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए।
काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए।।

सा.६/ ४४,५०,५२,५६,५७,६२

ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर।
छब फब बनी कोई भांत की, सेंथे लवने झाल ऊपर।।
मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत।
मुरली नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत।।
एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत।
तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत।।
चौथा हार हीरन का, पांचमा सुन्दर नीलवी।

इन हारों बीच दुगदुगी, देखत सोभा अति भली।।
पांचों ऊपर हार हेंम का, मुख मोती सिरे नीलवी।
ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली।।
पांच पाने पुखराज, जरी मांहें जड़ित।
चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत।।

सा. ६/६८,७२,७७,७८,८०,८१

सात हार के फुमक, जगमगे सातों रंग।
मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग।।
कंचन जड़ित जो कन्कनी, माहें बाजत झनझनकार।
बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार।।
निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग।
अर्स रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग।।

सा. ६/८४,८६,६०

आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी।
एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी।।
मानिक मोती लसनिएं, पाच पांने पुखराज।
गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज।।
अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार।
ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार।।

सा. ६/ ६३,६४,६५

सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए।
आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले।।
बेनी सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के।
सब देत देखाई साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए।।

सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार।
तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार।।
मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए।
निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए।।
श्रवनों सोहे पानड़ी, मानिक के रंग सोए।
और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए।।
मुरली सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल।
निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल।।

सा.६/४०,५२,५४,५६,६२,६४

स्याम चोली अंग गौर पर, सोभा लेत अतंत।
सोहे बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत।।
मोहोरी पेट और खड़पे, चोली नकस कटाव।
बाजू खभे उर ऊपर, मानो के फूल जड़ाव।।
पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन।
नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन।।
मोती मानिक पांने लसनिएं, पाच हेम पुखराज।
और भूखन कई सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज।।
कण्ठ-सरी इन ऊपर, रही कण्ठ को मिल।
न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल।।
स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू-बंध और फुमक।
तिन फुन्दन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत।।

सा. ६/ ८३,८४,८५,६०,६३,६७

२१८.श्री श्यामा जी का श्रृंगार

एक नख के तेज सों , ढांपत कई कोट सूर।

जो कहूं कोटान कोटक ,तो न आवे एक नख के नूर।।
कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खाभे।
हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे।।
सुच्छम वय उनमद अंगे, सोभा लेत किसोर।
बका वय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर।।
भौं भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान।
हाथ पाँउं उर कंठ हँसे, सब नाचत मिलन सुभान।।
तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक।
कहा कहूं मुखारबिंद की, नेक नेक से नेक।।
मुख मीठी अति रसना, चुभ रेहेत रूह के माहें।
सो जानें रूहें अर्स की, न आवे केहेनी में क्याहें।।
सा. ६/ १०६,१११,११४,११८,११६,१२५

न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन।
उज्जल माहें लालक लिए, अतंत तेज तारन।।
भौं भृकुटी अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर।
केहेनी जुबां न आवत, कछू अर्स रूहें जानें जहूर।।
सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक।
लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक।।
मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल।
कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल।।
नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर।
ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अर्स सहूर।।
बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब।
बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब।।

सा. ६ /६५,६६,७०,७१,८१,८२

मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत।
नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतन्त।।
डोरे कंचन रंग के, तिन आगूं नवघरी।
नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी।।
पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छबि अंगुरी।
दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुन्दरी।।
पाच पांने कंचन के, नीलवी और हीरे।
लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखारे।।
दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन।
कर सिनगार तामें देखत, नख सिख लग होत रोसन।।
नीली अतलस चरनियां, कई बेल कटाव नकस।
चीन किनारे जो देखों, जानों एक पे और सरस।।

सा. ६/ ९८,१०२,१०५,१०६,१०७,११०

अर्स में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन।
जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन।।
अब कहूं भूखन चरन के, कांबी कड़ली घूंघरी।
झलके नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी।।
कई बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव।
मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जड़ाव।।
कहूं अनवट पाच के, माहें करत आंभलिया तेज।
निरखत नखासिख सिनगार, झलकत रेजा रेज।।
और अंगुरियो बिछिए, करे स्वर रसाल।
हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल।।

सलूकी नखान की, और छबि अंगुरियों।
खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों।।

सा. ६/११४,१२२,१२३,१२६,१३०,१३३

२१६. चितवनी के लिये

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन।।
सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन।।
चारों जोडे चरन के, और अनवट विछिया रोसन।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे,मेरे जीव के एही जीवन।।
ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूं बीच तारन।
पकड़ राखूं पल ढ़ांप के, मेरे जीव के एही जीवन।।

सा. ६/ २,३,६,८

प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर।
सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिल को अर्स कर।।

सा. ८/२४

छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन।
बासा करो तिन पर, तुमसों निसबत अर्स तन।।
मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम।
इतहीं सेज बिछाए देऊं, जुदे करो जिन दम।।
रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पाँउं कोमल।
इत सुख देऊँ मासूक को, सुख यों लेऊँ नेहेचल।।
चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल।

निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊं बीच पल।।

सा. ६/ २०,२१,२२,२४

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए।।

सा.६/१४७

सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत।
हाए हाए रूह रेहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत।।
चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखान।
ए लिए हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन।।

सा.१०/६५,६६

एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर।
फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर।।
जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जाग्रत।
अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत।।

सा. ११/ २६,३६

पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन।।
आतम अन्तस्करन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख।
बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, परआतम सनमुख।।
इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन।
नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन।।
तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए।
तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए।।

सा. ११/ ४०,४१,४२,४३

तार्थे हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल।।

सा.११/ ४६

हक देखें पुतली अपनी, मैं देखूं अपनी पुतलियां।
मैं हक देखूं हक देखें मुझे, यों दोऊ अरस-परस भैयां।।
हक देखें मेरे नैन में, पुतली जो अपनी।
मैं अपनी देखूं हक नैन में, यों दोऊ जुगलें जुगल बनी।।

श्रृं.१४/ ३५ ,३६

२२०.नैनों की पुतली में माशूक

तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस।
पिउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस परस।।

सा. ६/६३

तखत धरया हकें दिल में, राखू दिल के बीच नैनन।
तिन नैनों बीच नैना रूह के, राखों तिन नैनों बीच।।
तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों मांहें।
राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊं क्याहें।

सा. ८/२५,२६

मेरी रूह नैन की पुतली, बीच रांखू तिन तारन।
खिन एक न्यारी जिंन करो, ए चरन बसे निसदिन।।
चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल।
निसदिन राखों इन पर, जिन आवने देऊ बीच पल।।
या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन।
इत रहे सेज्या निसदिन, धरों उज्जल दोऊ चारन।।

सा. ६/२३,२४,२५

जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात।
सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात।।

सा. ६/ ३७

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन।।
महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन।
या रूह नैन की पुतली,बीच राखों तिन तारन।।

सा.६/१४६,१४६

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन नैन पुतली के नैन।
मासूक राखूं तिन बीच में,तो पाऊं अर्स सुख चैन।।

श्रृं.१४/२२

२२१. इश्क

इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर।।
नैनों नैन मिलाए के, अमीरस सींचत।
अपने अंग रूहें जान के, नेह नए नए उपजावत।।
कई सुख मीठी बान के, हक देत कर प्यार।
ज्यों मासूक देत आसिक को, एक तन यार को यार।।
ए सुख सागर पांचमा, इस्क सागर दिल हक।
पेहेले चार देखें सागर, कोई ना हक दिल माफक।।
सुख हक इस्क के, जिनको नाहीं सुमार।
सो देखन की ठौर इत है, जो रूह सों करो विचार।।
इस्क पाइए जुदागिएं, सो तुम पाई इत।
वतन हकीकत सब दई, ऐसा दाव न पाइए कित।।

सा. १२/२,५,८,१५,३०,३३

अब कहूं रे इस्क की बात, इस्क सब्दातीत साख्यात।
जो कदी आवे मिने सब्द, तो चौदे तबक करे रद।।
ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग।

ब्रह्मसृष्टी ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अतिरंग।।
एते दिन गए कई बक, सो तो अपनी बुध माफक।
अब कथनी कथूं इस्क, जाथें छूट जाए सब सक।।
वोए वोए इस्क न था एते दिन, कैयों ढूंढ्या गुन निरगुन।
धिक धिक पड़ो सो तन, जो तन इस्क बिन।।
इस्क नाहीं मिने सृष्ट सुपन, जो ढूंढ्या चौदे भवन।
इस्क धनिएँ बताया, इस्क बिना पिउ न पाया।।
इस्क है हमारी निसानी,बिना इस्क दुल्हा मैं रानी।
इस्क बिना मैं भई वीरानी, बिना इस्क न सकी पेहेचानी।।

परि.१/ १,२,३,४,५,७

इस्क पिया को बतावे विलास, इस्क ले चले पिउ के पास।
इस्क मिने दरसन, इस्क होए न बिना सोहागिन।।
पिया इस्क रस, ब्रह्मसृष्ट को अरस परस।
काहूं और न इस्क खोज, औरों जाए न उठाया बोझ।।
बात इस्क की है अति घन, पर पावे सोई सोहागिन।
ब्रह्मसृष्ट बिना न पावे, सनमंध बिना इस्क न आवे।।
इस्क बतावे पार के पार, इस्क नेहेचल घर दातार।
इस्क होए न नया पुराना, नई ठौर न आवत आना।।
इस्क आगूं न आवे माया, इस्कें पिंड ब्रह्मांड उड़ाया।
इस्कें अर्स वतन बताया, इस्कें सुख पेड़ का पाया।।
कोई नहीं इस्क की जोड़, ना कोई बांधे इस्क सों होड़।
इस्क सुध कोई न जाने, दुनी ख्वाब की कहा बखाने।।

परि.१/ १४,१६,१७,२०,२६,२७

इस्क सोभा बड़ी है अत, इस्क दृष्टें न पाइए असत।
जो कदी पेड़ होवे असत, इस्क ताको भी करे सत।।
इस्क की सोभा कहूं मैं केती, ए भी याही जुबां कहे एती।
याको जाने सृष्ट ब्रह्म, जाको इस्कै करम धरम।।

जो कोई पिउ के अंग प्यारा, ताको निमख न करे प्रेम न्यारा।
प्रेम पिया को भावे सो करे, पिया के दिल की दिल धरे।।
पिया के दिल की सब जाने, पिया जी को दिल पेहेचाने।
अंग पिउजी के दिल आने, पिउ बिना आग जैसी कर माने।।
पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पोहोंचावे मिने पलक।
जब आतम प्रेमसों लागी, दृष्ट अंतर तबहीं जागी।।
जब चढ़े प्रेम के रस, तब हुए धाम धनी बस।
जब उपजे प्रेम के तरंग, तब हुआ धाम धनी सों संग।।
परि.१/ २६,३०,४४,४७,५३,५६

जब प्रेम सबों अंग पिआ, अपना अनुभव कर लिया।
तब वार फेर जीव दिया, अब न्यारे न जीवन जिया।।
जब प्रेम हुआ झकझोल, तब अंतर पट दिए खोल।
जब चढ़े प्रेम के पुन्ज, निज नजरों आया निकुंज।।
इस्कै में पोहोंचाया, इस्कें धाम में ले बैठाया।
इस्कें अंतर आंखें खुलाई, धनी साथ मिलावा देखाई।।
कहे महामत प्रेम समान, तुम दूजा जिन कोई जान।
ले उछरंग ते घर आए, पिया प्रेमें कंठ लगाए।।
परि. १/ ६०,६२,६५,६६

चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन।
निमख एक ना छोड़िए, कर मन वाचा करमन।।
एही अपनी जागनी, जो याद आवे निज सुख।
इस्क याही सों आवहीं, याही सों होइए सनमुख।।
परि. ४/ ६,७

क्यों कंहू इन सुख की, जो आगूं इन धनी के आए।
प्याले आप धनीय को, सामी देत भर भर।।
क्यों कहूं इन सुख की, जो हकसों नैनों नैन मिलाए।
फेर फेर प्याले लेत है, आंगू इन धनी के आए।।
क्यों कहूं इन सुख की, जो दूर बैठत हैं जाए।

तिनथें धनी बोलाए के, ढ़िग बैठावत ताए।।

परि. ११/३७,३८,३९

क्यों कहूं सुख रूहन के, जिनका साकी ए।
हक प्याले इस्क के, भर भर रूहों को दे।।

परि. ११/ ५१

धनी इनों के कारने, सरूप धरें कई करोर।
लें दिल चाह्या दरसन, ऐसे आसिक हक के जोर।।

परि. २८/ ८

सोभा क्यों कहूं हक सूरत की, जाको नामैं नूर जमाल।
ए दिल आए इस्क आवत, याकों सहूरै बदले हाल।।

सिन. २०/ ६१

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, रूहें उतरी लाहूत से।
अहेल अल्ला तो कहे, जो इस्क है इनों में।।
इस्क है वाहेदत में, कहूं पाइए न दूजे ठौर।
दूजे ठौर तो पाइए, जो होवे कोई और।।
इस्क निसानी हक की, सो पाइए सांच के माहें।
सांच अर्स आगूं वाहेदत के, ए झूठ जरा भी नाहें।।
ए झूठा फरेब कछुए नहीं, जामें आए अहमद मोमिन।
एह निसानी इस्क की, जाके असल अर्स में तन।।
इस्क नाम अर्स से, खेल में ल्याए महंमद।
ए क्या जानें नसल आदम, जो खाकीबुत सब रद।।
ए जाने अरवाहें अर्स की, जिनकी इस्क बिलात।
ए क्या जाने पैदा कुंन की, हक आसिक मासूक की बात।।
अर्स इस्क हक हादी रूहें, याकी दुनी न जाने कोए।
इस्क अर्स सो जानहीं, जो कायम वतनी होए।।
दुनियां चौदे तबकों, किन निरने करी न सूरत हक।
तिन हक के दिल में पैठ के, करूं जाहेर हक इस्क।।

श्रृं./२०/१११-११८

दोऊ सरूप अति उज्जल, कई जोत खूबियों में खूब।
इस्क कला सब पूरन , रस इस्क भरे मेहेबूब।।
सब इंद्रियां इस्क की, इस्क तत्व रस धात।
पिंड प्रकृत सब इस्क के, इस्क भीगे अंग गात।।
मोहोल मन्दिर सब इस्क के, ऊपर तले इस्क।
दसों दिस सब इस्क, इस्क उठक या बैठक।।
यों अर्स सारा इस्क का, और इस्क रूहों निसबत।
इस्क बिना जरा नहीं, सब हक इस्क न्यामत।।

श्रृं.२०/१२२,१३३,१३७,१३८

झूठ हम देख्या नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर।
पट आड़े खेल देखाइया, सो देने इस्क खबर।।
हम जानें इस्क न हमपे, हम पर हंससी नूरजमाल।
हमारे इस्कें ब्रह्मांड का, किया जो ऐसा हाल।।

श्रृं.२०/१४७,१५१

बिरिख मोमिन आग इस्क, और आग इस्क अर्स।
सब पीवें आग इस्क रस, दिल आगै अरस-परस।।
घर मोमिन आग इस्क में, हक अगनी के पालेल।
सोई इस्क आग देखावने, ल्याए जो माहें खेल।।
जो पैदा हुआ आग का, सो आग में जलत नाहें।
वह वजूद आग इस्क के, रहें हमेसा आग माहें।।
सोई बात करें हक अर्स की, सहूर या बेसहूर।
हुए सब विध पूरन पकव, हक अर्स दिन जहूर।।
जो हक देखे टिक्या रहे, सोई अर्स के तन।
सोई करें मूल मजकूर, सोई करे बरनन।।

श्रृं.२२/७,८,९,१०,११

और जित आया हक इलम, अर्स दिल कह्या सोए।
हक न आवें इस्क बिना, और हक बिना इस्क न होए।।

श्रृं.२४/४१

इस्क नूर जमाल बिना, और जरा न कछुए चाहे।
इस्क लज्जत ना सुख दुख, देवे वाहेदत बीच डुबाए।।

श्रृं.२४/४५

यों हकें छिपाइयां खेल में, दे इलम करी खबरदार।
रब्द किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार।।
इस्क हमारा कहां गया, जो दिल बीच था असल।
तिन दिलें सहूर क्यों छोड़िया, जो विरहा न सेहेता एक पल।।

श्रृं.२५/३,११

खेल का जोस आया सबों, इस्क न रह्या किन।
सब चाहें साहेबी खेल की, हक इस्क न नजीक तिन।।

श्रृं.२७/३४

मैं जान्या प्रेम आवसी, विरहे के वचनों गाए।
सो अव्वल से ले अबलों, विरहा गाया लड़ाए लड़ाए।।
सो गाए विरहा न आइया, प्रेम पड़्या बीच चतुराए।
हांसी कराई हुकमें, वचनों प्यार लगाए।।
सो गाए गाए हुआ दिल सखत, मूल इस्क गया भुलाए।
मन चित्त बुध अहंकारें, गुझ अर्स कह्या बनाए।।
अर्स मता जेता हुता, किया जाहेर नजर में लें।
हमें न आया इस्क सुपने, ए किया वास्ते जिन के।।
हक खिलवत गाए सें, जान्या हम को देसी जगाए।
इस्क पूरा आवसी, पर हकें हांसी करी उलटाए।।
जो देते हम को इस्क, तो क्यों सकें हम गाए।
दिल अर्स पोहोंचे रूह इस्कें, तो इत क्यों रह्यो रूहों जाए।।
सब अंग हमारे हक हाथ में, इस्क मांगें रोए रोए।
सब अंग हमारे बांध के, हक आप करें हांसी सोए।।

श्रृं . २७/५०,५१,५२,५३,५५,५६,५७

जो जोरा होए इस्क का, तो निकसे ना मुख दम।

सो गाए के इस्क गमाइया, जोरा कराया इलम।।

श्रृं.२८/२

२२२. परमधाम में धनी का नाम आसिक है

हक असिक बड़ीरूह का, और रूहों का आसिक।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बन्दों का आसिक हक।।

खि.११/ ५

इस्क काहूं ना हुता, तो नाम आसिक कह्या हक।
सो बल इन कुंजीय के, पाया इस्क चौदे तबक।।

सा. १३/ ५

नाम खुदाए का कुरान में, लिख्या है आसिक।
पढ़ें इस्क औरों में तो कहें, जो हुए नहीं बेसक।।
आसिक नाम अल्लाह का, तो लिख्या इप्तदाए।
इस्क न पाइए और कहूं, बिना एक खुदाए।।

परि. प्र.३६/६,७

हकें आसिक नाम धराइया, वाको भी अर्थ ए।
मासूक उलट आसिक हुआ, सो भी बल कानन के।।
हक कहे मेरा नाम आसिक, सो भी सुनके गुझ मोमिन।
ए जानें अरवा अर्स की, कहूं केते कानों गुन।।

श्रृं. १३/ ७,८

इस्क सुख अर्स बिना, कहूं पैदा दुनी में नाहें।
तो हकें नाम धराया आसिक, जो इस्क आपके माहें।।

श्रृं.२०/१०६

हमारे फुरमान में, हके केते लिखो कलाम।
मासूक मेरा महंमद, आसिक मेरा नाम।।

श्रृं.२१/११७

जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग।
हक खिन में कई रूप बदलें, याही विध हादी रंग।।

श्रृं. २१/ ११६

२२३. हमारे धनी श्यामा श्याम हैं

इत धरया जो सिंघासन, राजस्यामाजी के दोऊ आसन।
ताको रंग सोभित कंचन, जड़े मानिक मोती रतन।।

परि.३/१७०

कई चाकले चित्रकारी, ता पर बैठे श्री जुगल बिहारी।
दोऊ सरूप चित में लीजे, फेर फेर आतम को दीजे।।

परि. ३/१७५

स्याम स्यामा जी साथ सोभित, क्यों न देखो अंतरगत।
पीछला चार घड़ी दिन जब, ए सोई घड़ी है अब।।

परि.३/१६१

निस दिन रंग-मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम।।
एह बल जब तुम किया, तब अलबत बल सुख धाम।
अरस परस जब यों हुआ, तब सुख देवें स्यामा स्याम।।

परि.५/५,१७

आए दरवाजे आगे खड़े, खेलौने अति घन।
स्याम स्यामा जी साथ को, पसु पंखी लेवें दरसन।।
झीलन स्यामा संग राज सों, साथें किए जल केलि।
इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेलि।।

परि. ५/१४,१८

बीच बैठक राज स्यामा जी, साथ गिरदवाए घेर।
साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूँ इन बेर।।
कहा कहूं वस्तर भूखन की, नूर रोसन जोत उजास।
स्याम स्यामाजी साथ की, अंग अंग पूरत आस।।

परि. ५/२२,५०

जब खेलें इत सखियां, स्याम स्यामाजी संग।
तब सोभा इन बन की, लेत अलेखे रंग।।

परि. ६/१३

तले दस घड़नाले पोरियां, बीच नेहेरें ज्यों चलत।
स्याम स्यामाजी सखियां, इन मोहोलों आए खेलत।।
इत कई चौक छाया मिने, कहूं चांदनी चौक।
स्याम स्यामा जी सखियन सो, खेल करे कई जौक।।

परि. ७/३,

राजस्यामा जी सखियां, जब इत आए हींचत।
इन समें बन हिंडोले, सोभा क्यों कर कहूँ सिफत।।
हिंडोले हजार बारे, स्याम स्यामाजी हींचत।
अखंड सुख धनी धाम बिना, कौन देवे इन समें इत।।
अनेक रामत रेतीय में, बहुविध इन ठौर होत।
ए बन स्याम स्यामाजी को, है हाँसी को उद्दोत।।
केते खेल कहूं सखियन के, जो करत बन नित्यान।
खेल करें स्याम स्यामाजी, सखियों खेल अमान।।

परि.७/३४,३६,४४,४८

कबूं दौड़त राज सखियां, सबे मिलके जेती।
हाँसी करत जमुना त्रट, जित बोहोत गड़त पाउँ रेती।।

परि ७/४३

ऊपर चांदनी कठेड़ा, बीच जोड़ सिंघासन।
राज स्यामा जी बीच में, फिरती बैठक रूहन।।

परि. ८/२२

कई विरिख कई हिंडोले कई, जुदी जुदी जिनस।
स्याम स्यामा जी साथ जी, सुख लेवे अरस-परस।।

परि. १०/२२

रूहें राज स्यामा जी विराजत, निपट सोभा है इत।
ऊपर तले बीच सुन्दर, खूबी खुसाली करत।।

परि. १३/२३

राज स्यामाजी साथ सों, खेलत हैं इन बन।

ए जो ठौर कहे सब तुमको, तुम जिन भूलो एक खिन।।

कबूं राज आगूं दौड़त, ताली स्यामाजी को दे।
पीछे साथ सब दौड़त, करत खेल हाँसी का ए।।
परि.१७/१८,२०

हाथी इत कई रंग के, अस्वारी के सिरदार।
कबूं कबूं राजस्यामा रूहें, बड़े बन करत विहार।।
परि. २७/४५

कबूं कबूं राज रूहन सों, मन वेगी सुखपाल।
बड़े बन मोहोलन में, करत खेल खुसाल।।
परि.२७/४६

पसु पंखी जो बन में, सब आवें करने दीदार।
राज स्यामाजी रूहें, जब कबूं होवे अस्वार।।
परि.२६/१०

जो दिल चाहे तखतरवा, हजार बारे ले बैठत।
राज स्यामा जी बीच में, आकास में उड़त।।
परि.२६/७१

राज स्यामा जी बैठत, बनथें फिरती बखत।
इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत।।
परि. ३१/७

राज स्यामा जी बीच में, बैठक सिंघासन।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन।।
परि.३१/५२

सुख बड़ो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार।
बीच मोहोल स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार।।
भोम पांचमी मध की, इत पौढ़त हैं रात।
स्याम स्यामा जी साथ सब, जोलों होए प्रभात।।
परि. ३१/७८,१०१

राज स्यामाजी बीच में, बैठें सिंघासन ऊपर।

ए तखत हक अर्स का, ए सिफत करूं क्यों कर।।
परि.३१/१५४

क्यों न होए प्रेम इन को, जाके घर एह धाम।
स्याम स्याम जी साथ में, जाको इत विश्राम।।
परि. ४०/१०

स्याम स्यामा जी आए देख्यों खेल बनाए, सब उठियां हँसकर।
खेले महामती देखलावें इन्द्रावती, खोले पट अन्तर।।
परि. ४०/१०

कहियत नेहेचल नाम, सदा सुखदाई धाम।
साथ जी स्यामा जी स्याम, विलसत आठों जाम री।।
परि.४२/१

श्रवन अन्दर सुख क्यों कहूं, जो सुख सागर आराम।
क्यों निकसे रूह इन से, ए अंग सुख स्यामा स्याम।।
श्रृं २०/१२५

हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमिनों नाम।
सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम।।
श्रृं २१/८८

२२४. परमधाम में मोमिनों के सेवक

जिन जानों रूहन को, अर्स में सेवक नाहें।
हुकमें काम करावत, जो आवत दिल माहें।।
एक एक मोमिन के, अलेखे सेवक।
बड़ी साहेबी बका मिने, बंदे तिन माफक।।
पुतलियां जवेरन की, सोभा सुन्दरता अत।
कहूं केती सेवा बंदगी, सब अग्या सों करत।।
परि. १४/५४,५५,५६

कई पुतलियां जवेरन की, खड़ियां तले इजन।
हजार दौड़े एक हुकमें, आगूं इन रूहन।।
हर रूहों आगूं दौड़हीं, कई खूबी लेत खुसाल।

रात दिन कबूं न काहिली, रहें हमेसा बीच हाल।।
बंदियां खूब-खुसालियां, जाए फिरें ज्यों मन।
काम कर दसों दिस, आए खड़ियां वाही खिन।।
ए दौड़ें रूहों के मन ज्यों, खड़ियां हुकम बरदार।
एक रूह मनमें चितवे, वह जी जी करें हजार।।
मुख केहेने की हाजत ना पड़े, जो उपजे रूहों के दिल।
सो काम कर ल्यावें खिन में, ऐसा इनों का बल।।
सरूप रूहों के मनके, जो कछुए मन चाहें।
ऊपर तले माहें बाहेर, एक पल में काम कर आएं।।
कई ले खड़ियां रूमाल, कई ले खड़ियां पान डब्बे।
बंदियां बारे हजार की, आगूं अलेखे।।

परि. १४/६०,६१,६२,६३,६४,६५,६६

ए जो फौज रूहों के दिल की, सो आवत सांच समान।
तिन आगे त्रैगुन यों कर, ज्यों चली जात खेल की जहान।।
उपजत रूहों के दिल से, राखत ऐसा बल।
कई कोट ब्रह्मांड के खावंद, चले जात माहें एक पल।।
ए सुध अर्स में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन।
तो खेल हकें देखाइया, ऊपर मेहेर करी मोमिन।।

परि. १४/८३,८४,८५

२२५. महालक्ष्मी कैसे

नजरों होत अछर के, कोट चले जात माहें खिन।
मैं सुन्या मुख धनी के, खेल पैदा फना रात दिन।।
एक इन वचन का बसबसा, तबका रेहेता था मेरे मन।
लखमीजी का गुजरान, होत है विध किन।।
खेल दुनियां अर्स खेलौने, करें बाल चरित्र भगवान।
या खेल या बिन साहेबी, होए लखमीजी क्यों गुजरान।।
सो संसे मेरा मिट गया, हक इलमें किए बेसक।
दिलमें संसे क्यों रहे, जित हकें अपनी करी बैठक।।

अर्स कह्या दिल मोमिन, दिया अपना इलम सहूर।
सक ना खिलवत निसबत, ताए काहे न होवे जहूर।।
जैसी साहेबी रूहन की, विध लखमीजी भी इन।
वाहेदत में ना तफावत, पर ए जानें रूहें अर्स तन।।

परि.१४/८६-६१

२२६. एक हिंडोले में राज श्यामा जी व १२००० रूहें बैठती हैं

बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत।
एकै छप्पर खाटके, हक हादी साथ हींचत।।

परि.२४/२

२२७. पशु पक्षियों की बोली

अनेक बानी मुख बोलहीं, अनेक अलापें गाए।
ऐसे बचन कई बोलहीं, किसी आवे न औरों जुबाएं।।
छोटे बड़े पसु पंखी, सब रिझावें साहेब।
लड़े खेलें बोलें बानी, विद्या कई विध साधें सब।।
और गत पसुअन की, खेल बोल इनों और।
क्यों कहूं सिफत इनों की, जो बसत सबे इन ठौर।।

परि. २७/३६,३७,४१

मच्छ कच्छ मुरग मेंडक, कई रंग करें अपार।
जुदी जुदी बानी बोलत, स्वर राखात एक समार।।
कई रंगों गुन गावते, सब स्वर बांधे रसाल।
जस धनी को गावहीं, जिकर करें माहें हाल।।
अनेक जानवर जल के, सो केते लेऊं नाम।
जल किनारे रटत हैं, पिउ जस आठों जाम।।

परि. २८/२३,२४,२६

कई पिउ पिउ कर पुकारहीं, कई करें खसम खसम।
कई धनी धनी मुख बोलहीं, कई कहें भी तुम भी तुम।।
इन विध मैं केते कहूं, बोलें जुबां अनेक।
पर सबों एही जिकर, कहें मुख वाहेदत एक।।

परि.३२/३७,३८

कई रंग जिमी केती कहूं, और कई रंग नूर दरखत।
सोई जिमी रंग पसु पंखियों, कर तुहीं तुहीं जिकर करत।।
ना गिनती नाम जो हक के, सो हर नामें करें जिकर।
मुख चोंच सुन्दर सोहनें, बोलें बानी मीठी सकर।।

परि. ४३/३१,३२

२२८. बेसुमार ल्याए सुमार में

इंतहाए नहीं जिन चीज को, ताकी सिफत न होए जुबांए।
सहूर इत सो क्या करे, जो सिफत न सब्द माहें।।
हक ल्याए हिसाब में, जो कहावे अर्स अपार।
सो अर्स दिल मोमिन का, ए किन बिध कहूं सुमार।।
यों अर्स जिमी अपार के, सोभित गिरदवाए द्वार।
रूह के दिल से देख फेर, ज्यों तूं सुख पावे बेसुमार।।
नूर जिमी या तूल चौड़ी, इंतहाए न तरफ आवत।
कहूं जुबां अर्स गिनती, अंग अर्स के जानें सिफत।।
एक जिमी सिफत जो देखिए, तो जाए निकस नूर उमर।
अपार जिमी इंतहाए सिफत, ए आवत नहीं क्योंए कर।।

परि.४३/१७,१८,२०,२८,२९

२२९. धनी की मेहर

अन्दर बाहेर किनार सब, देख सब ठौरों खूबी देत।
ए सोभा सांच सोई देखेगा, जाको हक नजर में लेत।।
जब हक याद जो आवहीं, तब रूह देख्या चाहे नजर।
दिल अर्स मारया इन घाव से, सो ए मुरदा सहे क्यों कर।।

परि. ४४ चौ० १४

एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर।
इन बूंद की सिफत देखियो,ऐसे हक दिलमें कई सागर।।
एक बूंद ने बका किए,तो होसी सागरों कैसा बल।
तो काहूं न पाई तरफ किने,कई चौदे तबक गए चल।।

श्रृ.११/४५,४६

एक नुकते इलम अपने, दुनी बका कराई मुझसे।
तो गंज अंबार जो सागर, कैसे होसी हक दिल में।।
जो कोई सब्द बीच दुनियां, सो उठे हुकम के जोर।
ए गुझ सुख हक रसना, कछू मोमिन जाने मरोर।।

श्रृ. १६/४४,४५

ए मेहेर करें चरन जिन पर, देत हिरदे पूरन सरूप।
जुगल किसोर चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप।।

श्रृ. २१/२२७

२३०. श्री देवचन्द्र जी और श्री प्राणनाथ जी

लिख्या अव्वल फुरमान में, जाहेर होसी कयामत।
जो लों होए इलम मुकैयद, तोलों जाहेर न हक मारफत।।

श्रृ.१/५४

ए जो अर्स बारीकियाँ, अर्स सहूरें रूह जानत।
जिन पट खुल्या सो न जानहीं, बिना हक सिफत।।

श्रृ. ४/१४

अव्वल कहा इलम ल्यावसी, आया तिनसे ज्यादा बेसक।
सो नीके लिया मोमिनों, पाई अर्स मारफत हक।।

श्रृं. २६/४३

२३१. हुकम का विवरण

हम सिर हुकम आइया, अर्स हुआ दिल हम।
एही काम हम इलम का, तो सुख काहे न लेवें खसम।।
मेरे सब अंगों हक हुकम, बिना हुकम जरा नाहें।
सोई हुकम हक में, हक बसें अर्स में तांहें।।
कह्या अर्स हमारे दिल को, हैं हमहीं हक हुकम।
क्यों न आवे इस्क हक का, यों बेसक हैयाती इलम।।

श्रृं. २/८,११,६

हुकमें चले हुकम, हुकमें जाहेर निसबत।
हुकमें खिलवत जाहेर, हुकमें जाहेर वाहेदत।।
हुकमें दिल में रोसनी, सुध हुकमें अर्स नूर।
मुकैयद मुतलक हुकमें, हुकमें अर्स सहूर।।
कोई दम न उठे हुकम बिना, कोई हले ना हुकम बिना पात।
तहां मुतलक हुकम क्यों नहीं, जहां बरनन होत हक जात।।
हक बातें रूह हुकमें सुने, हुकमें होए दीदार।
हुकमें इलम आखिरी, खोले हुकमें पार द्वार।।
ए बरनन होत सब हुकमें, आया हुकमें बेसक इलम।
हुकमें जोस इस्क सबे, जित हुकम तित खसम।।
जब ए द्वार हुकमें खोलिया, हुकमें देख्या हक हाथ।
तब रही ना फरेबी खुदी, वाहेदत हुकम हक साथ।।
हक रूहें बीच अर्स के, नहीं जुदागी एक खिन।
हुकमें नैन कान दीजिए, अब देखो नैनों सुनो वचन।।
अब हकें हुकम चलाइया, खुदी फरेबी गई गल।
रास खेल रस जागनी, हुआ रूहों सुख असल।।

श्रृं.३/६०,६१,६२,६३,६४,६५,६८,६६

हुकमें ए कुंजी ल्याया इलम, हुकमें ले आया फुरमान।
दई बड़ाई रूहों हुकमें , हुकमें दई भिस्त जहान।।
हुकमें हादी आइया, और हुकमें आए मोमिन।
और फुरमान भेज्या इनपे, हकें कुंजी भेजी बैठ वतन।।
और भी हुकमें ए किया, लिया रूह अल्ला का भेस।
पेहेचान दई सब अर्सों की, माहें बैठे दे आवेस।।

श्रृ.२१/३,४,५

सुनते नाम हक अर्स का, तबहीं अरवा उड़ जात।
हाए हाए ए बल देख्या हुकम का, अजूं एही करावे बात।।
कहे इलम रूहें इत हैं नहीं, है हुकम तो हक का।
हुए बेसक हुकम क्यों रहे, ले हुज्जत रूह बका।।

बेसक हुए जो अर्स से , और बेसक हुए वाहेदत।
मुतलक इलम पाए के, हाए हाए हुकम क्यों रह्या ले हुज्जत।।
श्रृ.२२/१४४,१४७,१४८

जो कदी मोमिन तन में हुकम, तो हुकम भी रहे ना इत।
क्यों ना रहें इत हुकम, हुकम हुकम बिना क्यों फिरत।।
श्रृ.२४/२१

यों हुकम नूरजमाल का, अर्स सुख देत रूहों इत।
चुन चुन न्यामत हक की, रूहों हुकम पोहोंचावत।।
श्रृ.२४/५८

हुकम कहे सो हुकमें, अर्स बानी बोले हुकम।
रूहों दिल हुकम क्यों रेहे सके, ए तो बैठी तले कदम।।
खेल तन में हुकम ना रेहे सके, हुज्जत लिए रूहन।
हुकम हमारे खसम का, क्यों देवे दाग मोमिन।।
प्याला हुकम पिलावहीं, करें हुकम रखोपा ताए।
ना तो इन प्याले की बोए से, तबहीं अरवा उड़ जाए।।
श्रृ.२४/ ७३,७४ ८०

हुकम जो प्याला देवहीं, सो संजमें संजमें पिलाए।
पूरी मस्ती न हुकम देवहीं, जानें जिन कांच सीसा फूट जाए।।
ना तो ए प्याला पीय के, ए कच्चा वजूद न रख्या किन।
पर हुकम राखत जोरावरी, प्याला पिलावे रखे जतन।।
जिन जेता हजम होवहीं, ज्यों होए नहीं बेहोस।
तब हीं फूटे कुप्पा कांच का, पाव प्याले के जोस।।
सही जाए न बोए जिनकी, सो क्यों सकिए मुख लगाए।
सो पैदरपे क्यों पी सके, पर हुकम करत पनाह।।
श्रृं.२४/८३,८४,८७,८८

कस्या दिल अर्स मोमिन का, दिल कस्या न हुकम का।
देखों इनों का बेवरा, हिस्से रूह के हैं बका।।
मोमिन तन में हुकम, तामें हिस्से रूह के देख।

दिल अर्स हक इलम रूह की, हुज्जत नाम भेख।।
जो कदी रूहें इत हैं नहीं, तो भी एता मता लिए आमर।
सो अर्स बका हक बिना, ले हुज्जत रहे क्यों कर।।
एता मता रूह का, हुकम के दरम्यान।
तिन का जोरा चाहिए, जो हक आगूं होसी बयान।।

श्रृं.२७/११,१२,१३,१४

झूठ न आवें अर्स में, सांच नजरों रहे न झूठ।
देख्या अंतर मांहें बाहेर, कछू जरा न हुकमें छुट।।
देख्या देखाया हुकमें, और हम भी भए हुकम।
ना हुआ ना है ना होएगा, बिना हुकम खासम।।
हुकमें दिखाया हुकम को, तिन हुकमें देख्या हुकम।
भिस्त दोजख उन हुकमें, आखिर सुख सब दम।।
जिन नाम धराया हुकमें, रूहें फरिस्ते सिर पर।
पोहोंचे अपनी निसबतें, द्वार बका खोल कर।।

सिन्धी १६/८,६,१०,११

२३२. आतम का फरामोशी से जागना

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए।।
नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक।
मेहेर इलम जोस हुकमें , हक देखिए बेसक।।
पर जेता हिस्सा नींद का, रूह तेती फरामोस।
जो मेहेर कर हुकम देखावहीं, तब देखे बिना जोस।।
रूह तेती जागी जानियो, जेता दिल में चुभे हक अंग।
जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग।।

श्रृं.४/१,८,६,२०

मोहे दिल में हुकमें यों कह्या, जो दिल में आवे हक मुख।
तो खड़ा होए मुख रूह का, हक सों होए सनमुख।।

अधुर हरवटी नासिका, दंत जुबां और गाल।
जो अंग आया हक का दिल में, उठे रूह अंग उसी मिसाल।।
जो तूं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन।
तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन।।
ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक।
तेते अंग रूह के, उठ खड़े होंए बेसक ।।
श्रृं.४/२३,२४२५,२८

हक हैड़ा हिरदे ग्रहिए, दिल में रहे दायम।
सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ कायम।।
जो हक अंग दिल में नहीं, सो अंग रूह का फरामोस।
जब हक अंग आया दिल में, सो रूह अंग आया माहें होस।।
कटि पेट पांसे हक के, पीठ खभे कांध केस।
ए दिलमें जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस।।
बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ।
हक के अंग हिरदे आए, तब रूह खड़ी हुई हक साथ।।
श्रृं.४/३१,३२,३३,३४

जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक अंग सब हिरदे आए, तब रूह जागे अंग परवान।।
आए वस्तर हिरदे हक के, रूह अपने पेहेने बनाए।
तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए।।
हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल।
चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल।।
मुख बीड़ी आरोगें पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल।
ए रूह दृष्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल।।
श्रृं.४/३७,४७,५४,५५

भूखान हक श्रवन के, और हक कण्ठ कई हार।
सोई कण्ठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार।।
सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर।

जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर।।
हक के भूखन की क्यों कहूं, रंग नंग जोत सलूक।
आतम उठ खड़ी तब होवहीं, पेहेले जीव होए भूक भूक।।
रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार।
ए सोभा जुगल किसोर की, जुबां केहे न सके सुमार।।
श्रृं.४/६१,६२,६५,६६
वस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर।
त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर।।
सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान।
तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान।।
जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा माहें दिल।
तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल।।
जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान।
हक आए दिल अर्स में, रूह जागे के एही निसान।।
श्रृं.४/६८,६६,७०,७२
जो हक करें मेहेरबानगी, तो इन विध होए हुकम।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम।।
महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए।
रूह जागे का एह उद्दम, तो ले हुकम सिर चढ़ाए।।
श्रृं.४/७४,७५

२३३. दोनों तन धनी के कदमों में

रखो वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे।
रूहों खोल देखावने, कई विध जुगल बनाए।।
श्रृं. ४/१६

मोमिन असल तन अर्स में, और दिल ख्वाब देखत।
असल तन इन दिल से, एक जरा न तफावत।।

श्रृं.४/२५

इन जिमी आसिक क्यों रहे, वह खिन में डारत मार।
तो लों रहे सहूर में, जो लों रखे रखनहार।।

श्रृं.१८/६६

सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाके अक्स का दिल अर्स।
हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस-परस।।
ए जो मोमिन अक्स कहे, जानों आए दुनियां माहें।
हक अर्स कर बैठे दिल को, जुदे इत भी छोड़े नाहें।।

श्रृं.२१/८१,८२

मेहेबूब आसिक एक कहें, वाहेदत भी एक केहेलाए।
अर्स भी दिल मोमिन कह्या, ए तो मिली तीनों विध आए।।

श्रृं.२२/१३१

एक तन हमारा लाहूत में, नासूत में और तन।
असल तन रूहें अर्स बीच में, तन नासूत में आया इजन।।
अर्स तन देखें तन नासूती, तन नासूत में जो हुकम।
सो सुध दई अर्स अरवाहों को, इने सेहेरग से नजीक हम।।

श्रृं.२४/३२,३३

२३४.केवल पढ़ने से ही धनी नहीं मिलते

कोई वेद पाँचों मुख पढो, कई त्रैगुन जात पढ़त।
पर ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत।।

श्रृं.७/३३

२३५. याद करने के योग्य

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी पहाड़ से गिरत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी सिर लेत करवत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनियां आग पीवत।

तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी भैरव झंपावत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी हेम में गलत।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत।।
श्रृं. ७/६४,६५,६६,६७,६८

अति गौर हस्त कमल, अति नरम अति सलूक।
ए हस्त चकलाई देख के, जीवरा होत नहीं टूक टूक।।
ए जो कोमलता कण्ठ की, क्यों कहूं चकलाई गौर।
नेक कह्या जात ख्वाब में, जो हकें दिया सहूर।।
भौं भृकुटी पल पापण, मुसकत लवने निलवट।
इन विध जब मुख निरखिए, तब खुलें हिरदे के पट।।
बल बल जांउं मुख हकके, सोभा अति सुन्दर।
ए छबि हिरदे तो आवहीं, जो रूह हुकमें जागे अंदर।।
कहे जांए न गौर गलस्थल, और अधुर लालक।
मुख चकलाई हक की, सब रस भरे नूर इस्क।।
दोऊ छेद्र चकलाई नासिका, गौर रंग उज्जल।
तिलक निलाट कई रंगों, नए नए देखत माहें पल।।
श्रृं.१२/१०,१५,२२,२५,२८,३१

हक आसिक हुआ याही वास्ते, सो रूहें क्यों न सुनें हक बात।
ए कौन जाने अर्स रूहों बिना, कान गुन अंग अख्यात।।
ए गुन सब कानन के, कई गुझ सुख रूह परवान।
रूहें कई सुख कानों लेत हैं, रेहेमत इन रेहेमान।।
कई अंग ताबे कानके, कान अंग सिरदार।
कोई होसी रूह अर्स की, सो जानेगी जाननहार।।
हुकम इलम ताबे कान के, मेहेर दिल ताबे इस्क के।
क्यों कहूं इनसे आगे वचन, कानों ताबे भाए सागर ए।।

जो गुन मैं केहेती हों, हक अंग गुन अपार।
अर्स रूहें गिनें गुन अंग के, सो गुन आवे न कोई सुमार।।
एक अंग में कई खूबियां, सो एक खूबी कही न जाए।
तिन खूबी में कई खूबियां, गिनती होए न ताए।।
श्रृं.१३/१०,१५,२२,२५,२८,३१

मुख गौर झरे कसूंबा, सोभा क्यों कहूं बड़ो विस्तार।
रंग कहूं के सलूकी, ए न आवे माहें सुमार।।
के कहूं सागर तेज का, के कहूं सागर सरम।
के नूर सागर कहूं बिलंद, के चंचल गुन नरम।।
कोई मोमिन केहेसी ए क्यों कह्या, हक मुख सोभा सागर।
सुच्छम सरूप अति कोमल, ललित किसोर सुन्दर।।
सोभा हक सूरत की, सागर भी कहे न जांए।
ए सोभा अति बड़ी है, पर सो आवे नहीं जुबांए।।
कोमलता चरन अंगुरी, और चरन तली कोमल।
ए दिल रोसन देख के, हाए हाए खाक न होत जल बल।।
सब सागर सुख मई, सब सुख पूरन परमान।
अति सोभित मुख सुन्दर, ए जो वाहेदत का सुभान ।।
श्रृं.२०/६,१२,२४,२६,६७,७७

हरवटी गौर मुख मुतलक, खुसरंग बिन्दा ऊपर।
बीच लांक तले अधुर, चार पांखड़ी हुई बराबर।।
गौर पांखड़ी दो लांक की, लाल पांखड़ी दो तिन पर।
अधुर अधुर दोऊ जुड़ मिले, हुई लांक के सरभरा।।
नेक अधुर दोऊ खोलहीं, दन्त लाल उज्जल झलकत।
अधुर लाल दो पांखड़ी, जानों के नित्य मुसकत।।
दन्त उज्जल ऐनक ज्यों, माहें जुबां देखाई देत।
देख दन्त की नाजुकी, अति सुख मोमिन लेत।।
दोऊ नेत्र टेढ़े कमल ज्यों, अनी सोभा दोऊ अतन्त।

जब पांपण दोऊ खोलत, जानों कमल दो विकसत।।
नासिका के मूल से, जानो कमल बने अदभूत।
स्याम सेत झांईं लालक, सोभा क्यों कहूं अंग लाहूत।।
श्रृं.२०/१३८,१३६,१४४,१४५,१५१,१५२

गौर गलस्थल गिरदवाए, और बीच नासिका गौर।
स्याह पांखड़ी कमल पर, सोभित टेढ़ियां नूर जहूर।।
और मुकट सिर हक के, केहेनी सोभा तिन।
सो न आवे सोभा सब्द में, मुकट क्यों कहूं जुबां इन।।
एह मुकट इन भांत का, पल में करे कई रूप।
जो रूह जैसा देख्या चाहे, सो तैसा ही देखे सरूप।।
वस्तर भूखन किन ना किए, हैं नूर हक अंग के।
ए क्यों आवें इन केहेनी में, अंग सांई के सोभावें जे।।
इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे।
नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए।।
चारों जोड़े चरन तो कहूं,जो घड़ी साइत ठेहेराय।
खिन में करें कोट रोसनी, सो क्यों आवे माहें जुबांए।।
श्रृं.२१/१५४,१६२,१७६,१६६,२११,२१६

दिल सखत बिना इन सरूप की, इत लज्जत लई न जाए।
ए हुकम करत सब हिकमतें, हक इत ए सुख दिया चाहें।।
चकलाई दोऊ खभन की, अंग उतरता सलूक।
देख कमर कटि पतली, हाए हाए दिल होत ना टूक टूक।।
मैं देख्या अंग जामे बिना, नाजुक जोत नरम।
ए केहेनी में न आवहीं, ए अंग होएं न मांस चरम।।
गौर हरवटी अति सुन्दर, या देख के लांक सलूक।
लाल अधुर देख ना गया, लोहू मेरे अंग का सूक।।
मुख चौक छबि सलूकियां, सुन्दर अति सरूप।
गाल लाल अति उज्जल, सुखदायक सोभा अनूप।।
अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत।

ए सोभा मुख क्यों कहूं, कानों मोती लाल लटकत।।
अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत।
ए सोभा मुख क्यों कहूं, कानों मोती लाल लटकत।।
कहे गौर गलस्थल हक के, कई छब नाजुक कोमलता।
हाए हाए रूह इत क्यों रही, मुख देख मासूक बका।।

श्रृं.२२/३६,४३,४४,६२,६३,६८,६२

२३६. तारतम और जागृत बुद्धि

एक नुकता इलम हक दिल से, आया मेरे दिल माहें।
इन नूर नुकते की सिफत, केहे न सके कोई क्यांहें।।
ले नूर नुकते की रोसनी, मैं ढूंढ़े चौदे भवन।
इनमें कहूं न पाइया, माहें त्रैलोकी त्रैगुन।।
इन इलम नुकते की रोसनी, नहीं कोट ब्रह्मांडों कित।
सो दिया मोहे सुपने दिलमें ,जो नहीं नूर अछर जाग्रत।।
खाक पानी आग वाएको,ए चौदे तबक हैं जे।
सो मेरे दिल कायम किए,बरकत नुकते इलम के।।
क्यों कहिए सोभा हककी, ना कछू झूठ में आए हम।
लेहेजे हुकमें झूठे बैराटको, सांचे किए नुकते इलम।।

श्रृं.११/४१,४२,४३,४४,४६

२३७.झूठे खेल में रूहें भूल जायेंगी

सुपन होत दिल भीतर, रूह कहूं ना निकसत।
ए चौद तबक जरा नहीं, ए तो दिल में बड़ा देखत।।

श्रृं.११/८०

इस वास्तें खेल देखाइया, वास्ते बेवरे इस्क के।
कोई आया न गया हममें, बैठे अर्स में देखों ए।।

श्रृं.२०/१५२

२३८. सबको हक बनाया

सब के हक हमको किए, हक रसनाए बीच बका।
ए सुख इन मुख क्यों कहूं, जो दिया हादी रूहों को भिस्त का।।
श्रृं.१६/४६

अर्स के सुख तो हमेसा , घट बढ़ इत नाहें।
पर ए नया सुख नई साहेबी, कायम कर दिया भिस्त माहें।।
अर्स सुख और भिस्तका सुख, ए खेल में दिए सुख दोए।
इन दोऊ में दिए सुख खेलके, ए हक रसना बिना क्यों होए।।
दई भिस्त चौदे तबक को, सबों पूरा इस्क इलम।
सो सब सेवें हम को, सबों बल रसना खसम।।
श्रृं.१६/५०,५१,५२

सो आठों भिस्त कायम कर, दिए अर्स पट खोल मारफत।
तिनमें पुजाए सुख दिए, कर जाहेर हक निसबत।।
श्रृं.१६/६२

२३६.जागनी अभियान का कार्य

जो तोहे कहे हक हुकम, सो तू देख महामत।
और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत।।
श्रृं प्र० १६ चौ० ६५

२४०. मोमिनों की बुजरकी

बड़ी बड़ाई इनकी, जिन इस्कें चौदे तबक।
करम जलाए पाक किए, तिन सबों पोहोंचाए हक।।
श्रृं.२१/८६

और भी कहूं सो सुनो, मोमिन अर्स से आए उतर।
इलम दिया हकें अपना, अब इनों जुदे कहिए क्यों कर।।
फुरमान आया इनों पर, अहमद इनों सिरदार।
हक बिना कछुए ना रखें, इनों दुनियां करी मुरदार।।
ए सब बुजरकी इनों की, क्यों जुदे कहिए वाहेदत।

इने कुन्नकी दुनी क्या जानहीं, रूहें अर्स हक निसबत।।
तिन से अर्स मता क्यों छिपा रहे, जो दिल अर्स कह्या मोमिन।
एक जरा न छिपे इन से, ए देखो फुरमान वचन।।
श्रृं.२२/१३२,१३३,१३४,१३५
ए जो देत देखाई वजूद, रूह मोमिन बीच नासूत।
ए दुनी जाने इत बोलत, ए बैठे बोलें माहें लाहूत।।
श्रृं.२४/१५
जब भेख काछा रूह का, फैल सोई किया चाहे तिन।
नाम धराए क्यों रद करें, हक एती देत बड़ाई जिन।।
श्रृं.२७/८
हकें दोस्त कहे औलिए, भए ऐसी बुजरक।
इनों को देखे से सवाब, जैसे याद किए होए हक।।
श्रृं.२७/४
२४१. अंग्रेजी शब्द का प्रयोग
दोऊ नेत्र किनारी सोभित, घट बढ़ कोई न केस।
उज्जल स्याह दोऊ लरत हैं, कोई दे ना किसी को रेस।।
श्रृं.२१/१२३
२४२.मोमिनों की सिफत
जिन मोमिन की सिफायत, करी होए मेंहेदी महमद।
सो जानें अर्स बारीकियां, और क्या जाने दुनी को रद।।
श्रृं.२१/१६०
२४३. परमधाम का वर्णन असम्भव है
ए निरने करना अर्स का, तिन में भी हक जात।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात।।
जवेर पैदा जिमीय से, सो भी नहीं कह्या अर्स में।
चौदे तबक उड़ावे अर्स कंकरी, इत भी बोलना नहीं तार्थे।।
जित चीज नई पैदा नहीं, ना कबूं पुरानी होए।

तित सब्द जुबां जो बोलिए, सो ठौर न रही कोए।।
जो कहूं हक दिल माफक, तो इत भी सब्द बंधाए।
ताथें अर्स बारीकियां, सो किसी विध कही न जाए।।
श्रृं.२२/१२४,१२५,१२६,१२७

२४४. धनी का प्यार

एकै नजर मोमिन की, हक सुख दिया चाहें दोए।
रूहें अर्स सुख लेवें खेल में, और खेल सुख अर्स में होए।।
श्रृं.२४/४७

ए अंग लगे प्याला जिनके, सब खलड़ी जाए उतर।
ना तो ए प्याला हजम क्यों होवहीं, पर हक राखत पनाह नजर।।
ए प्याला कोई न पी सके, जुबां लगते मुरदा होए।
पर हक राखत हैं जीव को, ना तो याकी खैंच काढ़े खुसबोए।।
प्याले पर प्याले पिलावहीं, ताकी निस दिन रहे खुमार।
देवे तवाफ निस दिन, हुकम मेहेर को नहीं सुमार।।
श्रृं.२४/८९,९०,९१

हक केहेवे नेकों को, दोस्त रखता हों मैं।
या खुदी या हुकम, टेढ़ी होए नहीं इनों सें।।
श्रृं.२७/६

सो तुमें याद आवसी, ओ तुमें करसी याद।
तुमें पूजें जिमी बका मिने, अजूं इनका केता ल्योगे स्वाद।।
तुम मांगी है बुजरकी, तिनसे कोट गुनी दई।
दे साहेबी ऐसे अघाए, चाह चित्त में कहूं न रही।।
क्यों देवें तुमको साहेबी, बीच जिमी फना मिने।
तिनसे तुमारी उमेदें, होएं न पूरन तिने।।
श्रृं.२९/१३०,१३१,१३२

अव्वल से बीच अब लग, तरफ पाई न बका की।
महंमद एता ही बोलिया, जासों ईसा पावें साहेदी।।

सिंधी प्र० ६ चौ० ५०

२४५. रूहों की नजर के आगे ब्रह्मांड नहीं रहेगा

जो रूह हमारी आवे खेल में, तो खेल रहे क्यों कर।
याको उड़ावे अर्स कंकरी, झूठ क्यों रहे रूहों नजर।।

श्रृं.२४/५२

२४६. मोमिनों की सरियत हकीकत मारफत

मोमिन उजू जब करें, पीठ देवें दोऊ जहान को।
हौज जोए जो अर्स में, रूहें गुसल करे इनमों।।
दम दिल पाक तब होवहीं, जब हक की आवे फिराक।
अर्स रूहें दिल जुदा करें, और सबसे होए बेबाक।।
चौदे तबक को पीठ देवहीं, ए कलमा कह्या तिन।
कलाम अल्ला यों केहेवहीं, ए केहेनी है मोमिन।।
ला फना सब ला करें, और इला बका ग्रहें हक।
ए कलमा हकीकत मोमिनों, और हक मारफत बेसक।।
नूर के पार नूर तजल्ला, रसूल अल्ला पोहोंचें इत।
मोमिन उतरे नूर बिलंद से, सो याही कलमें पोहोंचें वाहेदत।।
जब हक बिना कछू ना देखो, तब बूझ हुई कलमें।
जब यों कलमा जानिया, तब बका होत तिनसें।।

श्रृं.२५/४७,४८,४६,५०,५१,५२

ए मोमिनों की सरीयत, छोड़ें ना हकको दम।
अर्स वतन अपना जानके, छोड़ें ना हक कदम।।
इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकात ज्यारत।
साथ हकी सूरत के, मोमिनों सब न्यामत।।
मोमिन हक बिना न देखें, एही मोमिनों ताम।
बन्दगी तवाफ सब इतहीं, मोमिनों इतहीं आराम।।
खाना पीना सब इतहीं, इतहीं मिलाप मजकूर।
इतहीं पूरन दोस्ती, इत बरसत हक का नूर।।
सरूप ग्रहिए हक का, अपनी रूह के अन्दर।

पूरन सरूप दिल आइया, तब दोऊ उठे बराबर।।
ए सरीयत अपनी मोमिनों, और है हकीकत।
क्यों न विचार के लेवहीं, हक हादी बैठे तखात।।
जो कदी दिल में हक लिया, कछू किया ना प्रेम मजकूर।
क्यों कहिए ताले मोमिन, जाको लिख्या बिलन्दी नूर।।
श्रृं.२५/५३,५८,५९,६०,६१,६२,६३
ए हकीकत मोमिनों, और ले न सके कोए।
बेसक होए बातें करें, तो मजकूर हजूर होए।।
जो तूं ले हकीकत हक की, तो मौत का पी सरबत।
मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजूकर खिलवत।।
जो लों जाहेरी अंग ना मरें, तो लों जागें ना रूह के अंग।
ए मजकूर रूह अंग होवहीं, अपने मासूक संग।।
रूह नैनों दीदार कर, रूह जुबां हक सों बोल।
रूह कानों हक बातें सुन, एही पट रूह का खोल।।
बेसक होए दीदार कर, ले जवाब होए बेसक।
एही मोमिनों मारफत, खिलवत कर साथ हक।।
रूह हकसों बात विचार कर, दिल परदा दे उड़ाए।
रूह बातें वतन की, कर मासूक सों मिलाए।।
श्रृं.२५/६४,६५,६८,७०,७१
जो गुझ अपनी रूह का, सो खोल मासूक आगूं।
यों कर जनम सुफल, ऐसी कर हक सों तूं।।
सब अंग सुफल यों हुए, करी हकसों सलाह सबन।
देख बोल सुन खुसबोए सों, जिनका जैसा गुन।।
जेते अंग आसिक के, सो सारे किए सुफल।
सोई असल रूह आसिक, जिन मोमिन अर्स दिल।।
ए निसबत बिना होए नहीं, मासूक सों मजकूर।
ए मजकूर इन बिध होवहीं, यों कहे हक सहूर।।
मोमिनों हकीकत मारफत, इनमें भी विध दोए।

एक गरक होत इस्क में, और आरिफ लदुन्नी सोए।।
एक इस्क दूजा इलम, ए दोऊ मोमिनों हक न्यामत।
इस्क गरक वाहेदत में, इलमें हक अर्स लज्जत।।
मारफत लदुन्नी जिन लई, सो करे हक सहूर।
सहूर किए हाल आवहीं, सो हाल बीच हक मजकूर।।
श्रृं.२५/७२,७३,७४,७५,७६,७७,८१
पीछे हक सब करसी, रूह सुख लिया चाहे अब।
सुख लेने को अवसर, पीछे लेसी मोमिन सब।।
मारफत हुई हाथ हक के, क्यों ले सकिए सोए।
ए दोस्ती तब होवहीं, जब होए प्यार बराबर दोए।।
मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार।
इस्कें मिलिए हकसों, इस्कें खुले पट द्वार।।
हांसी करी रूहन पर, दे इलम बेसक।
मासूक हंस के तब मिले, जब हकें दिया इस्क।।
श्रृं. /८३,८५,८६,८८

२४७. इश्क और इलम का मार्ग अलग अलग है

इस्क हमसे जुदा किया, दिया दुनी को सुख कायम।
वचन गवाए हमपे, जो हमेसगी दायम।।
नैन श्रवन या रसना, जो अंग किए बरनन।
तिन इस्क देखाया हक का, और देख्या ना या बिन।।
जो अंग देखे आखिर लग, तिनसे देखे चौदे तबक।
और काहूं न देख्या कछुए, बिना हक इस्क।।
सब अंग देखे ऐसे हक के, ऐसा दिया इलम।
हक इस्क सबों में पसरया, इस्क न जरा माहें हम।।
हक फेर फेर ऊपर जगावहीं, बिना हुकम न जागे अंदर।
फेर फेर बड़ाई मांगे इत, हक हांसी करें इनों पर।।
रूहों लज्जत मांगी हकपे, अर्स की दुनियां माहें।
तो इलम दिया सबों अपना, बिना इलम लज्जत नाहें।।

जो हक देवें इस्क, तो इस्क देवे सब उड़ाए।
सुध न लेवे वार पार की, देवे वाहेदत बीच डुबाए।।
जब इलम सबों आइया, सो कछू सखती देवे दिल।
तिन सखती तन अर्स की, पाइए लज्जत असल।।
ऐसा इलम हकें दिया, हुआ इस्क चौदे भवन।
मूल डार पात पसरया, नजरों आया सबन।।

श्रृं.२८/४,५,६,६,१३,२३,२४,२५,३५

२४८. बंदगी क्या है

बंदगी मजाजी और हकीकी, ए जो कहियां जुदियां दोए।
एक फरज दूजा इस्क, क्यों न देख्या बेवरा सोए।।
ए जो फरज मजाजी बंदगी, बीच नासूत हक से दूर।
होए मासूक बंदगी अर्स में, कही बका हक हजूर।।
अव्वल दोस्ती हक की, लिखी माहें फुरमान।
पीछे दोस्ती बंदन की, क्यों करी ना पेहेचान।।

श्रृं.२६/१७,१८,२०

सरीयत बिने इसलाम की, पाक करे वजूद।
तरीकत पोहोंचे मलकूत लों, आगे होंए न बका मकसूद।।
बिने इसलाम हकीकत, सो खोले बातुन रूह नजर।
पोहोंचे बका नूर मकान, खास गिरो फरिस्तों फजर।।
इसलाम बिने हक मारफत, पोटों चावे तजल्ला नूर।
ए मकान आसिक रूहों, गिरो खासलखास हजूर।।

मा.सा.४/२८,२६,३०

कही निमाज करे छे विध की, दो सरीयत एक तरीकत।
आगूं एक हकीकत, दोए बका मारफत।।

मा.सा. ४/३८

अब बेवरा तीन निमाज का, खोले भेद की हकीकत।
करत निमाज जबरूत में,बीच बका फरिस्तें पोहोंचत।।
बंदगी रूहानी और छिपी, जो कही साहेदी हजूर।

ए दोऊ बंदगी मारफत की, बीच तजल्ला नूर।।
मा. सा. ४/४१,४२

२४९. रूहों के ऊपर धनी का व्यंग्य

स्याबास तुमारी अरवाहों को, स्याबास हैड़े सखत।
स्याबास तुमारी बेसकी, स्याबास तुमारी निसबत।।
धंन धंन तुमारे ईमान, धंन धंन तुमारे सहूर।
धंन धंन तुमारी अकलें, भले जागे कर जहूर।।
अर्स बताए दिया तुमको, और बताए दई वाहेदत।
सहूर इलम कुंजी सब दई, बैठाए माहें खिलवत।।
एता मता जिन दिया, तिन आप देखावत केती बेर।
पर तुमें राखत दोऊ के दरम्यान, ना तो क्यों रहे मोह अंधेर।।
श्रृं.२६/१२०,१२१,१२२,१२३

२५०. ब्रह्मसृष्ट ईश्वरी एवं जीव सृष्टि

हादी मोमिनों बीच में, पाइए हक इस्क ईमान।
ए पाकी हैं मोमिनों, होए खाली सोर जहान।।
मा. सा. प्र० ४/५४

एक छोटी बड़ी बूंद पानी की, सो भी फरिस्ता सब ल्यावत।
या जड़ों दरखतों फरिस्ते, या पर पेट पांउं चलत।।
फरिस्तों अजाजील सिरदार, अबलीस जिनों वकील।
पोहोंचाया सबों सय दिलों, पलक न करी ढील।।
ना किया अजाजीलें सिजदा, तो सब रहे सिजदे बिन।
सब दुनियां ताबे तिन के, ताथें किया न सिजदा किन।।
मा. सा. ५/३९,४०

२५१. वसीयतनामा

करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर देखाए।
तीसरे उठाया झण्डा आकीन, चौथे हिंद में खड़ा किया आए।।

मा. १४/ ८

कह्या झण्डा उठया ईमान का, कौल किया जिन सरत।
महंमद मेंहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत।।

मा.१४/ १

हाए हाए देख्या न हक हादी सामी, ना हदीसे कुरान।
तो आए लिखे नामें वसीयत, इत ना रह्या किन का ईमान।।
जो कह्या था रसूल ने, सोई हुआ बखात।
आए लिखो नामें वसीयत, जाहेर करी कयामत।।
तो आए नामें वसीयत, जो पेहेले फुरमाए।
सो ए देखो बीच आयतों, दिलसों अर्थ लगाए।।
वसीयत नामें आए के, इत करी पुकार।
राह बीच की छोड़ बहत्तर हुए, छूट गया करार।।

मा.१६/८८, ६१,६२ १०३

२५२.झण्डे के निसान

लिख्या जाहेर हदीस में, नूर झण्डा निसान।
सो हदीस देखे सेती, करसी दिल पेहेचान।।
अव्वल झण्डा कह्या सरीयत, जाके तले दुनी पाक होए।
जो रहे तले फुरमाए के, ताकी सिफत करे सब कोए।।
पर सरीयत झण्डा नासूत में, पोहोंच्या न लग मलकूत।
पकड़ें पुल-सरात ने, छोड़ ना सके नासूत।।

मा.१३/१२,१३,१४,३६

मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार।
झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार।।
अजूं चाहे दुनियां माजजा, देखे ना खड़ा झण्डा नूर।
तब उतथें अक्स पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर।।
फुरमान जबराईल ल्याइया, बरारब से बीच हिंद।
आए नूर झण्डा खड़ा किया, गया कुफर फरेबी फंद।।
मुसाफ मता महंमदी मोमिनों, पोहोंच्या वारसी आखिरी इमाम।

झण्डा पोहोंच्या अर्स अजीम लग, देखाए हक बका अर्स तमाम।।

मा.१४/३,१६,१८,२१

जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत।।

मा. १४/२५

झण्डा खाड़ा था दीन का, मक्के मदीने।
सो जमात ले सरीयतें, पकड़्या था अकीने।।७४।।

मा. १६/ ८५

२५३.परआतम के अनुसार ही आतम करती है

सेहेरग से नजीक कहे इनको, जाकी असल हक कदम।
जो हुआ असल पर हुकम, सोई नकल देत इत दम।।

मा. सा.१६/२७

२५४.मोमिन क्या ढूंढते है

ढूंढे अपने रसूल को, और अपना फुरमान।
और ढूढ़े हक इलम को, जासों बातून होए बयान।।
राह देखें रूह अल्लाह की, और ढूढ़े आखिरी इलाम।
हक हकीकत मारफत, चाहे फल कयामत तमाम।।

मा. सा. १६५२,५३

२५५.कुरान के छिपे मायने

अव्वल फुरमाया रसूल को, कहो हरफ तीस हजार।
राह रात की चलाओं सरीयत, बका फजरें रखो करार।।
राह रात की चलाओ सरीयत, ले तरीकत पोहोंचे हकीकत।
तब फजर दिल महंमदें, दिन होसी मारफत।।
दुनी हजार साल हक दिन के, कही सौ साल एक रात।
बारैं फरदा रोज फजर, होंए जाहेर हादी हक जात।।
और पेहेले छिपे रखाए हक ने, ए जो हरफ तीस हजार।

सो दिल बीच रखे महंमदें, कह्या तुमहीं पर अखत्यार।।
तीस हजार और गुझ कहे, ताकी आई न किन को बोए।
जबराईल से छिपाए, ए आखिर जाहेर किए सोए।।
मा.१६/६३,६४,६७,६८,६६

२५६. मोमिन एवं दुनिया में दुश्मनी क्यों

ना पेहेचान ना निसबत, दुनी गिरो असल दुस्मन।
एक हक न छोड़ें उमत, दुनी दुनियां बीच वतन।।
निसबत इन तफावत, ए भेले चलें क्यों कर।
दुनी जिमी गिरो आसमानी, दुनी के पांउं गिरो के पर।।
छोटा. क्या.१/ १६,१७

२५७. कहनी सुननी रहनी

कदी केहेनी कहे मुख से, बिन रेहेनी न होवे काम।
रेहेनी रूह पोहोंचावहीं, केहेनी लग रहे चाम।।
केहेनी सुननी गई रात में, आया रेहेनी का दिन।
बिन रेहेनी केहेनी कछुए नहीं, होए जाहेर बका अर्स तन।।
केहेनी करनी चलनी, ए होंए जुदियां तीन।
जुदा क्या जाने दुनी कुफर की, और ए तो इलम आकीन।।
छोटा. क्या. १/ ५५,५६,५७

२५८. बाह्य और आन्तरिक भक्ति

जो लों कछुए आपा रखे, तो लों सुख अखंड न चखे।
तसबी गोदड़ी करवा, छोड़ो जनेऊ हिरस हवा।।
दोऊ जहान को करो तरक, एक पकड़ो जो साहेब हक।
या हँस कर छोड़ो या रोए, जिन करो अंदेसा कोए।।
जो ए काम तुमसे होए, तब आई वतन खुसबोए।
और फैल झूठे जो कोई, काफर गुस्सेसों कहे सोई।।
बड़ा. क्या. ८/ १७,१८,१६

२५९. इन्द्रियों के सुख झूठे हैं

और सुख ना नफसों आराम, और रह्या न चाहें बेकाम।
और जेता कोई बद काम, सो नफसानी हिरस हराम।।
जो ए काम ढूंढे बदफैल, काफर चाहे उलटी गैल।
ऐसे जो हैं सितमगार,पाया न समया हुए खुआर।।
और जो कोई पाक गिरो आकीन, किया अमानत बीच अमीन।
इत कही जो इसारत,ए जो पाक कही उमत।।

बड़ा. क्या. ८ /२८,२९,३०

२६०.जिकरिया और एहिया

करम खुदाए का साहेब सिजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वायदे।
इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे।।
खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या।
ए बेटा तुझे बकसिया, कह्या नाम उसका एहिया।।
पैदा किया एहिया को देख, आगूं वह मैं नाम एक।
बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल।।
आगूं इस के ऐसा नहीं नाम, ना माफक इस के कोई काम।
बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इस्म।।
बल्कि एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक।
ना कछू मेहेतारी ने पाले, बाप के ना हुए हवाले।।
पीछे उस के एते नाम लेवे, खासोंमें खासगी देवे।
भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तुवार।।

बड़ा. क्या. १४/ ८,९,१०,११,१२,१४

हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली।।
अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरकी पाइए इन सेती।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर।।
मोहे गरीबी और नातवान, ए बड़ाई आपसों हुई पेहेचान।

होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए।।
कहे फरिस्ते खुदा के हुकम, ए जिकरिया कह्या जो तुम।
ए बात यों ही कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे।।
ए तेरे खुदाए ने कह्या, पैदा करने काम फरजंद का भया।
कह्या बीच इस सिनसे, आसान खुदा के दो सकसों से।।
तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूद सेंती बूद में लिया।
बुजरकी सों खुदाए ने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही।।
खुसखबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले ना सुध थी वजूद इन हाल।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे।।
कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे।
मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह।।
कह्या खुदाए ने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी।
मरदोंसे बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन।।
ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन वीर।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजर का खबरदार।।
ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी।।

बड़ा. क्या.१४/ १७,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२५,२६,२७

२६१. साहेब शब्द का प्रयोग

साहेब तेरी साहेबी भारी।
कौन उठावे तुझ बिन तेरी, सो दई मेरे सिर सारी।।

कि. ६१/ १

फुरमान मेरे मेहेबूब का, ले आया अर्स से रसूल।
भेज्या अपनी अरवाहों पर, साहेब होए सनकूल।।
जाहेर महंमद पुकारहीं, फुरमान ल्याया मैं।
कई हजारों बातें करी, साहेब की सूरत सें।।
आसिक अर्स अजीम की, चाहे मिलना हमेसगी।
चाहे साहेब और उमत, उनकी एही बंदगी।।

जब लीजे अंदर के माएने, तब न कछू साहेब बिन।
साहेब बिना सब दोजख, चौदे तबक अगिन।।
कि. १०८/ १,१३, २३,३८

नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ।
तिन साहेब कर पूजिया, अर्स का एही गुझ।।
कि. १०६/ २१

जो साहेब मैं देखिया, सो मिले होए सुख चैन।
तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन।।
कि. ७५/ ५

ए आद के संसे अबलों, किनहूं न खोले कब।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब।।
कहे कतेब साहेदी साहेब की, दे न सके कोई और ।
खुदाए की खुदाए बिना, किन पाया नाहीं ठौर।।
ए कतेब यों कहत है, हादी सोई हक।
बिना साहेब साहेब वतन की, कोई और न मेटे सक।।
संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए।
सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए।।
तुम देखत मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर।
अंतरगत ब्रह्मांड तें , सदा साहेब के हजूर।।
महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।
दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन।।
कि. ६५/८,१३,१४,१५,१८,२०

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत ।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत।।
कि. ५६/ ८

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन।।
खु. १३/ ८६

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए।।
खु.१४/ ६

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।।
खु. १५/ ४७

महंमद मेंहेंदी आवसी, करसी इमामत।
बका पर सिजदा गिरोह को, करावसी आखिरत।।
खु. १७/ २१

खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक।
जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक।।
खु. १७/ ७५

२६२. मुहम्मद भी माशूक हैं

तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक।
हकें मासूक कह्या तो भी न समझें, क्या करे आम खलक।।
खु. २/ ७१

और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल।
फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल।।
खु. ३/५

अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों ।।
श्रृं. २१/ ६३

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर।।
तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर।
ए याद करो इन इस्क को, जो अपन करी मजकूर।।
चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ।

सो कदम तले बैठावत , ऐसा इलम का सरफ।।

खि. १३/ ४४,४५,५७

तो कह्या मोमिन खाना दीदार, पानी पीवना दोस्ती हक।
तवाफ सिजदा इतहीं, करें रूह कुरबानी मुतलक।।
जो दीदारन होता दुनी को, तो क्यों करते इमाम इमामत।
क्यों जानते कयामत को, जो जाहेर न होती निसबत।।
जब रूह को जगावे हुकम, तब रूह आपै छिप जाय।
तब रहे सिर हुकम के, यों हुकमें इलम समझाए।।
हुकमें बेसक इलम, और हुकमें जोस इस्क।
मेहेर निसबत मिलाए के, बरनन करे अर्स हक।।

श्रृं. २/ ११,१४,५४,५६

कहें हुकमें महामत मोमिनों, हके पोहोंचाई इन मजल।
कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल।।

श्रृं. ३/ ७०

एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें।
सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाए।।
जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।।

श्रृं.१०/ ७० ८८

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत।।

श्रृं. १४/ ३

कि. ६१/ १

फुरमान मेरे मेहेबूब का , ले आया अर्स से रसूल।
भेज्या अपनी अरवाहों पर , साहेब होए सनकूल।।
जाहेर महंमद पुकारहीं , फुरमान ल्याया मैं।

कई हजारों बातें करी , साहेब की सूरत सें ।।
आसिक अर्स अजीम की, चाहे मिलना हमेसगी।
चाहे साहेब और उमत, उनकी एही बंदगी।।
जब लीजे अंदर के माएने , तब न कछू साहेब बिन।
साहेब बिना सब दोजख , चौदे तबक अगिन।।

कि. १०८/ १,१३, २३,३८

नर नारी बूढ़ा बालक , जिन इलम लिया मेरा बूझ।
तिन साहेब कर पूजिया , अर्स का एही गुझ।।

कि. १०६/ २१

जो साहेब मैं देखिया, सो मिले होए सुख चैन।
तब लग आतम रोवत, सूके लोहू पानी नैन।।

कि. ७५/ ५

ए आद के संसे अबलों, किनहूं न खोले कब।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब।।
कहे कतेब साहेदी साहेब की, दे न सके कोई और ।
खुदाए की खुदाए बिना, किन पाया नाहीं ठौर।।
ए कतेब यों कहत है, हादी सोई हक।
बिना साहेब साहेब वतन की, कोई और न मेटे सक।।
संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए।
सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए।।
तुम देखत मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर।
अंतरगत ब्रह्मांड तें , सदा साहेब के हजूर।।
महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।
दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन।।

कि. ६५/८,१३,१४,१५,१८,२०

साहेब के हुकमें ए बानी, गावत हैं महामत ।
निज बुध नूर जोस को दरसन, सबमें ए पसरत।।

कि. ५६/ ८

साहेब आए इन जिमी, कारज करने तीन।
सो सब का झगड़ा मेट के, या दुनियां या दीन।।

खु. १३/ ८६

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए।
साहेब बिना ए माएने, और खोल न सके कोए।।

खु.१४/ ६

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।।

खु. १५/ ४७

महंमद मेंहेंदी आवसी, करसी इमामत।
बका पर सिजदा गिरोह को, करावसी आखिरत।।

खु. १७/ २१

खेल तो झूठा फना कह्या, साहेब हमेसा हक।
जैसा साहेब बुजरक, खेल भी तिन माफक।।

खु. १७/ ७५

२६२. मुहम्मद भी माशूक हैं

तब पावें रसूल की बुजरकी, जब पेहेचान होवे हक।
हकें मासूक कह्या तो भी न समझें, क्या करे आम खलक।।

खु. २/ ७१

और साहेद किए फरिस्ते, जिन जाओ तुम भूल।
फुरमान भेजोंगा तुम पर, हाथ मासूक रसूल।।

खु. ३/५

अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों ।।

श्रृं. २१/ ६३

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर।।

तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर।
ए याद करो इन इस्क को, जो अपन करी मजकूर।।
चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ।
सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ।।

खि. १३/ ४४,४५,५७

तो कह्या मोमिन खाना दीदार, पानी पीवना दोस्ती हक।
तवाफ सिजदा इतहीं, करें रूह कुरबानी मुतलक।।
जो दीदारन होता दुनी को, तो क्यों करते इमाम इमामत।
क्यों जानते कयामत को, जो जाहेर न होती निसबत।।
जब रूह को जगावे हुकम,तब रूह आपै छिप जाय।
तब रहे सिर हुकम के, यों हुकमें इलम समझाए।।
हुकमें बेसक इलम, और हुकमें जोस इस्क।
मेहेर निसबत मिलाए के, बरनन करे अर्स हक।।

श्रृं. २/ ११,१४,५४,५६

कहें हुकमें महामत मोमिनों, हके पोहोंचाई इन मजल।
कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल।।

श्रृं. ३/ ७०

एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें।
सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाए।।
जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।।

श्रृं.१०/ ७० ८८

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत।।

श्रृं. १४/ ३

इति